भूतलीला

□

हरिमोहन शर्मा



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

Lokodaya Series Title No 368
BHOOTLEELA
(Short Stories)
HARIMOHAN SHARMA
First Edition July 1974
Price Rs 14.00



BHARATIYA JNANPITH
B/45-47 Connaught Place
NEW DELHI-110001

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी/४५-४७ कॅनॉट प्लेस, नयी दिल्ली-११०००१
प्रथम सस्करण जुलाई १९७४
मूल्य चौदह रुपये

मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-२२१००५

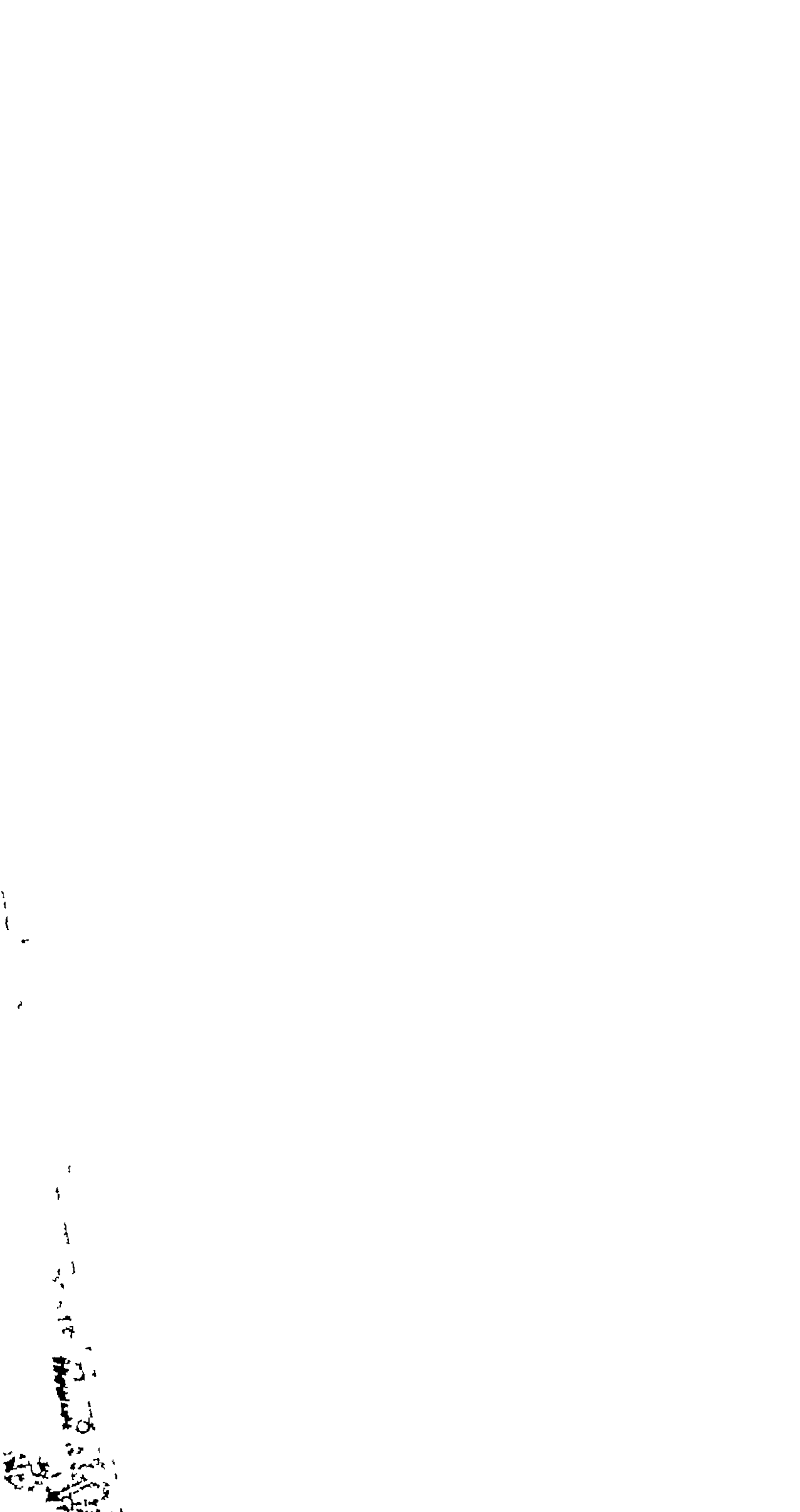
अनुक्रम



कलाकार और भूत

साधारण जन और भूत





भूतलीला

□

कहानियाँ सुनने से पहले

तो आप भूतों में विश्वास नहीं करते। तब तो विश्वास मानिए, आपको इन सच्ची भूतकथाओं को पढ़ने में और भी अधिक आनन्द आयेगा। और, इसका कारण सीधा-सादा है। अच्छी भूतकथाएँ सबको अच्छी लगती हैं। और ये भूतकथाएँ अच्छी भी हैं और सच्ची भी।

दिक्कत यह है साहब कि भूत आपके (और मेरे) अविश्वास के बावजूद मौजूद हैं, और बाज नहीं आते। और जब-जब वे बाज नहीं आते तब-तब अपने आप, एक कहानी बन जाती है।

और जो लोग भूतों को लेकर बहुत ज्यादा परेशान हैं, या रह चुके हैं वे भी बाज नहीं आते अपनी भूतकथाएँ सुनाने से। जब इन लोगों से पूछा जाता है 'पर, आपकी भाँति हमें भूत क्यों नहीं दिखाई देते ? तो वे इस प्रश्न का सीधा उत्तर देने के बजाय, उल्टा प्रश्न करने लगते हैं : पर हमें भूत क्यों दिखाई देते हैं ? और फिर मैं भी पहले भूतों में विश्वास नहीं करता था पर एक दिन क्या हुआ कि कहकर अपनी पहली भूतकथा सुनाना आरम्भ कर देते हैं।

अपनी-अपनी भूतकथाएँ

आपकी बात तो मैं नहीं जानता पर जहाँतक मेरा सवाल है, मेरा कोई ऐसा परिचित नहीं है जिसके पास सुनाने के लिए, कम से कम अपनी एक भूत कहानी न हो। ब्रिटेन के 'सन्' नामक लोकप्रिय दैनिक ने पिछले दिनों अपने पाठकों से भूतसम्बन्धी आपबीतियाँ भेजने को कहा। एक सप्ताह के अन्दर सत्रह हजार से अधिक आपबीतियाँ उसके सम्पादक की मेज पर जमा हो गयीं। यह उस देश का हाल है जिसे हम अपने देश से अधिक सभ्य आधुनिक और प्रगतिशील मानते हैं। उधर एक अन्य सभ्य आधुनिक और प्रगतिशील देश अमरीका के एक भूत-विशेषज्ञ का दावा है कि अमरीका का शायद ही कोई ऐसा प्राचीन भवन हो जो भूतों से आक्रान्त न हो।

क्या आपने विश्व की सबसे छोटी भूतकथा सुनी है? नहीं सुनी तो सुनिए

'तुम भूतों में विश्वास करते हो?

''नहीं।

कहानियाँ सुनने से पहले

तो आप भूतों में विश्वास नहीं करते। तब तो विश्वास मानिए, आपको इन सच्ची भूतकथाओं को पढ़ने में और भी अधिक आनन्द आयेगा। और, इसका कारण सीधा-सादा है। अच्छी भूतकथाएँ सबको अच्छी लगती हैं। और ये भूतकथाएँ अच्छी भी हैं, और सच्ची भी।

दिक्कत यह है साहब कि भूत आपके (और मेरे) अविश्वास के बावजूद मौजूद हैं, और बाज नहीं आते। और जब-जब वे बाज नहीं आते, तब-तब अपने आप, एक कहानी बन जाती है।

और जो लोग भूतों को लेकर बहुत ज्यादा परेशान हैं या रह चुके हैं वे भी बाज नहीं आते अपनी भूतकथाएँ सुनाने से। जब ऐसे लोगों से पूछा जाता है "पर, आपकी भाँति हमें भूत क्यों नहीं दिखाई देते ? तो वे इस प्रश्न का सीधा उत्तर देने के बजाय उलटा प्रश्न करने लगते हैं : पर हमें भूत क्यों दिखाई देते हैं ? और फिर मैं भी पहले भूतों में विश्वास नहीं करता था पर एक दिन क्या हुआ कि ...' कहकर अपनी पहली भूतकथा सुनाना आरम्भ कर देते हैं।

अपनी-अपनी भूतकथाएँ

आपकी बात तो मैं नहीं जानता पर जहाँतक मेरा खयाल है, मेरा कोई ऐसा परिचित नहीं है, जिसके पास सुनाने के लिए, कम से कम अपनी एक भूत कहानी न हो। ब्रिटेन के 'सन्' नामक लोकप्रिय दैनिक ने पिछले दिनों अपने पाठकों से भूतसम्बन्धी आपबीतियाँ भेजने को कहा। एक सप्ताह के अन्दर सत्रह हजार से अधिक आपबीतियाँ उसके सम्पादक की मेज पर जमा हो गयीं। यह उस देश का हाल है, जिसे हम अपने देश से अधिक सभ्य, आधुनिक और प्रगतिशील मानते हैं। उधर, एक अन्य सभ्य आधुनिक और प्रगतिशील देश अमरीका के एक भूत-विशेषज्ञ का दावा है कि 'अमरीका का शायद ही कोई ऐसा प्राचीन भवन हो जो भूतों से आक्रान्त न हो।

क्या आपने विश्व की सबसे छोटी भूतकथा सुनी है ? नहीं सुनी, तो सुनिए

'तुम भूतों में विश्वास करते हो ?

''नहीं।'



"मैं भी नहीं करता," कहकर वह अन्तर्धान हो गया।

भूतकथाओ की प्राचीन परम्परा :

भूतकथाओ की परम्परा बहुत पुरानी है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थो में उनका उल्लेख मिलता है।

विश्व की पहली भूतकथा आज से प्राय- चार हजार वर्ष पूर्व लिखी गयी थी। मिट्टी के बारह फलको पर लिखी गयी इस भूतकथा का शीर्षक है 'बेबीलोन की बाढ और गिलगानिश का आख्यान।' इसमें एक भूत अपनी रामकहानी सुनाता है।

ऋग्वेद में अनेक स्थानो पर भूतो और पिशाचो का उल्लेख है। एक स्थान पर ऋषि कहते हैं, "हे श्मशान-घाट के पिशाचादिको, यहां से हटो, दूर हो जाओ।"

ईरानी धार्मिक पुस्तक 'अवस्ता' की यमपुरी में पुण्यात्मा उसी प्रकार निवास करते हैं, जिस प्रकार ऋग्वेद की यमपुरी में।

महाभारत में भूतों, पिशाचो, पितरो तथा जीव के शरीरान्तर-गमन का कई बार उल्लेख हुआ है। उसमें प्रेत-कर्म और श्राद्ध-विधियो का वर्णन भी है, जो भूतो को शान्त करने के लिए की जाती थी।

शान्तिपर्व में एक प्रसग आता है। एक बार देवर्षि नारद ने बुद्धिमान् वृद्ध असित देवल से पूछा, "ब्रह्मन्! यह स्थावर-जगमरूपी विश्व किससे उत्पन्न हुआ है, और प्रलय के समय किसमें लीन होगा?" देवल ने कहा, "नारद, सृष्टि के समय, परमात्मा ने जिन वस्तुओं से प्राणियो की उत्पत्ति की है, उन वस्तुओ को विज्ञानवान् महात्मा लोग पंचमहाभूत कहते हैं। परमात्मा से प्रेरित होकर जीवात्मा इन महाभूतो के द्वारा अन्यान्य प्राणियो की सृष्टि करता है। जो लोग परमात्मा, जीवात्मा और पचमहाभूतो के सिवा अन्य किसी चेतन या अचेतन को सृष्टि का कारण बताते हैं, उनकी बातें निर्मूल हैं। ये पंचभूत तेजस्वरूप, नित्य और निश्चल हैं। जीव उनका छठा अग है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश—यही पांच महाभूत हैं, जिनके अलावा ससार में कोई और पदार्थ नही है। शरीर पचमहाभूतों से ही बना है। पंचभूत, जीव, पूर्व-संस्कार और अज्ञान—यही आठ प्राणियो के जन्म-मरण के कारण है। मरने पर प्राणियो के शरीर पांच भागो में विभाजित हो जाते है। जीव पाचभौतिक शरीर का आश्रय करता है, और प्रारब्ध का नाश होने पर शरीर को त्याग देता है। इसके बाद शरीर के द्वारा किये गये पुण्य-पाप को लेकर फिर शरीर धारण करता है। जो मनुष्य इन बातो को भलीभांति समझ जाता है, वह पुत्र, स्त्री आदि कुटुम्बियो के मरने पर खेद नही करता।"

अश्वमेधपर्व में काश्यप नाम के धर्मात्मा ब्राह्मण सिद्ध महर्षि से पूछते हैं, 'भगवन्, जीवात्मा को शुभ-अशुभ कर्मों का फल किस प्रकार भोगना पड़ता है?' सिद्ध महर्षि उत्तर देते हैं 'शरीर त्यागते समय शरीर के भीतर की आग वायु के वेग से कुपित होकर सारे शरीर को तपाने लगती है, और प्राणवायु को रोककर मर्मस्थानों में घोर पीड़ा पहुँचाती है जिससे व्याकुल होकर जीवात्मा शरीर से निकल जाता है। जीव के निकल जाने पर शरीर मृत हो जाता है। जीवात्मा इन्द्रियों द्वारा रूप रस आदि विषयों का भोग करता है, किन्तु वह उनके द्वारा प्राण को नहीं जान सकता। शरीर त्याग देने पर भी जीवात्मा उस शरीर द्वारा किये हुए कर्मों को नहीं त्याग सकता और उनके कारण उसे फिर जन्म लेना पड़ता है। जिस तरह मनुष्य अँधेरे में उड़ रहे खद्योत को देखता है, उसी प्रकार ज्ञानवान् सिद्ध महात्मा ज्ञानदृष्टि द्वारा जीव के जन्म मरण और गर्भ प्रवेश आदि सब कार्यों को देखते रहते हैं।

मृत्यु के पार द्वार

स्वर्गारोहण पर्व में धर्मात्मा युधिष्ठिर स्वर्ग पहुँचने पर इन्द्र से अपनी पत्नी और अपने भाइयों के बारे में पूछते हैं, तो इन्द्र उनसे कहते हैं ...मनुष्य मात्र को पाप और पुण्य का फल भोगना पड़ता है। जो पहले स्वर्ग का सुख भोग लेता है, उसे पीछे से नरक भोगना पड़ता है और जो पहले नरक की यन्त्रणा भोग चुकता है, वह बाद में स्वर्ग का अधिकारी होता है।

स्वर्गारोहण पर्व की आगे की घटनाओं से पता चलता है कि 'जीव अपने अपने कर्मानुसार भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेता है। यह आवश्यक नहीं कि *मनुष्य फिर मनुष्य ही पैदा हो। चौरासी लाख योनियों में भटकने की बात* मात्र कल्पना नहीं है। कर्म और फल का नियम क्रिया और प्रतिक्रिया का सिद्धान्त सृष्टि के प्रत्येक परमाणु में सतत अविच्छिन्न और अटल है।

इस पर्व के अन्त में वैशम्पायन जनमेजय से कहते हैं, 'महाराज कर्मों का फल भोग चुकने पर भी सभी जीव अपनी-अपनी प्रकृति को प्राप्त नहीं हो जाते। महाभारत के संग्राम में मरे हुए वीरों को जो गति मिली है वह इस प्रकार है द्रोणाचार्य बृहस्पति के शरीर में प्रविष्ट हो गये। कृतवर्मा मरुद्गण में मिल गये। .. महाराज विराट् द्रुपद धृष्टकेतु, निशठ, अक्रूर कंस उग्रसेन वसुदेव आदि विश्वेदेवगण के शरीर में प्रविष्ट हो गये। महात्मा विदुर और युधिष्ठिर धर्म में प्रविष्ट हो गये....

परलोकगत पितरों (मृतों) का महाभारत-काल में कितना अधिक आदर किया जाता था यह अनुशासन पर्व के इस प्रसंग से स्पष्ट है। युधिष्ठिर द्वारा श्राद्ध की विधि जानने की इच्छा व्यक्त करने पर भीष्म कहते हैं, ...देवता

गन्धर्व, दानव, मनुष्य, सर्प, राक्षस, पिशाच और किन्नर आदि सबको पहले पितरो की पूजा करके देवताओ की पूजा करनी चाहिए। पण्डितो ने प्रत्येक अमावास्या को पितरो के लिए पिण्डदान करने की श्राद्ध की सामान्य विधि बतायी है, किन्तु सब तिथियों में श्राद्ध करने से पितर सन्तुष्ट होते हैं। . श्राद्ध में ब्राह्मण के द्वारा श्राद्धीय देवताओं और पितरो की तृप्ति होती है। बैलगाडी या नाव पर बैठकर नदी के पार जाते समय पितरो का तर्पण अवश्य करना चाहिए।.. पिण्डदान करने से पितर प्रेतयोनि से मुक्त हो जाते हैं।

पितरो का श्राद्ध करने की प्रथा भारत के अलावा, दक्षिण अमरीका, मगोलिया, उत्तरी अफ्रीका आदि देशो में भी प्रचलित है।

भूत-विद्या :

प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थो में भी भूत-विद्या का वर्णन मिलता है। 'चरक सहिता' के तीसरे भाग में ऐसे व्यक्ति के लक्षण बताये गये हैं, जिसे भूत-प्रेत लगे हो। श्रीमद्‌भागवत में धुन्धुकारी नामक भयकर प्रेत की कथा है।

बाइबिल पढ जाइए, उसमें आपको अनेक भूतकथाएँ मिलेंगी।

हेरोदोतस, प्लूटॉर्क और तर्तूलियन जैसे क्लैसिक लेखको ने भी अपनी रचनाओ में भूतो और उनके चमत्कारो के वर्णन किये है। ईसा के जन्म से १४० वर्ष पूर्व लिखी गयी दो पुस्तको The shepherd of Hermes और The Teaching of the Twelve Apostles में भी भूतो और उन्हें 'शान्त' करने की विधियो का उल्लेख है।

शेक्सपीयर के नाटको में भूतो की भरमार है। शेक्सपीयर पर शोध करने-वाले विद्वान् आलोचक प्रो हरवर्टसन का मत है कि शेक्सपीयर ने स्वयं इन भूतो की सृष्टि नही की, सैकडो साल पहले की ब्रितानी लोककथाओ का ही पुनर्सृजन किया है।

और जिन अन्य प्रख्यात विदेशी लेखको और कहानीकारो ने भूतो के बारे में या तो कुछ लिखा है, या उनकी कहानियाँ सुनायी है, उनमे प्रमुख है—गेटे, ह्यूगो, टेनिसन, रस्किन, थॉकरे, वाल्टर स्कॉट (जिनकी Letters on Demonology and Witchcraft को भूतो के विषय में लिखी गयी अन्यतम कृति माना जाता है), कोल्डवल, किपलिंग, कॉनन डॉयल, एच जी वेल्स, डेनियल डेफ़ो, गोल्डस्मिथ, यीट्स और राबर्ट लुई स्टीवेन्सन।

इतिहास-प्रसिद्ध 'जॉन ऑव आर्क' 'भूतो से सन्देश प्राप्त करती थी।' बन्दी नेपोलियन को उसकी पत्नी के भूत ने उसकी आसन्न मृत्यु की पूर्व सूचना दे दी थी।

अमरीका के प्रख्यात मनोवैज्ञानिक डॉ हरबर्ट कैरिंगटन ने डॉ फ़ोदोर के

सहयोग से 'भूतोपसृष्ट व्यक्ति सन् १३५ से १९८० तक' नामक एक पुस्तक लिखी है, जिसमें उन्होंने इस अवधि की १७५ प्रामाणिक भूतकथाओं का वर्णन कर, उनकी व्याख्या भी प्रस्तुत की है।

भूतप्रेतों पिशाचों, चुड़ैलों आदि पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शोध करनेवाले विश्वविख्यात मनोवैज्ञानिक युंग ने The Structure and Dynamics of the Psyche नामक अपने ग्रन्थ में एक स्थान पर लिखा है 'भूत या तो सार्वभौमिक विभाव हैं, या सार्वभौमिक सत्य।' ये वास्तव में कौन और क्या हैं, यह जानने का प्रयास पूर्व की भाँति पश्चिम में भी अनेक चिन्तकों ने किया है।

भूतों का 'जन्म'

भूतों में विश्वास अन्तःप्रेरणात्मक प्रतीत होता है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक भूतों में विश्वास प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय जाति और देश की एक विशेषता रही है। नोबुल-पुरस्कार-विजेता फ्रान्सीसी लेखक जेक्स मोनोद ने अपनी पुस्तक सम्भाव्यता और आवश्यकता' में भूतों के जन्म के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि 'अपने निपट एकाकीपन को दूर करने और प्रकृति तथा अपने परिवेश से निकट सम्पर्क स्थापित करने के उद्देश्य से-आदि मानव ने कल्पना की कि उसे दिखाई पड़नेवाली प्रत्येक वस्तु में प्रेतात्माओं का वास है। फिर वह प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या इन प्रेतात्माओं के सन्दर्भ में, अपनी सीमित ज्ञान-परिधि में करने लगा। और, इस प्रकार जन्म हुआ— भूतों का।

इसी कल्पना ने जन्म दिया बेबीलोन के इतिहासप्रसिद्ध 'मस्किम' नाम से जाने जानेवाले सात कुख्यात भूतों को जो सात नक्षत्रों के दुष्टतापूर्ण विपरीत अंश थे। मस्किमों के बारे में मान्यता थी कि वे सदा आदमी को चैन न लेने देते हैं, और मौका मिलते ही उसपर टूट पड़ते हैं। अरब देशों के भूत—'घुल (Ghul) के बारे में भी वहाँ ऐसी ही मान्यता थी।[1]

बाइबिल में भूतों से बचने के लिए इन पंक्तियों का पाठ करने की सिफ़ारिश की गयी है 'Thou shalt not be afraid for the terror by night; nor for the arrow that flieth by day nor for the pestilence that walketh in darkness nor for the destruction that wasteth at noonday' (Psalm 91)

भूतों के विषय में The Catholic Encyclopaedia में कहा गया है 'ईसाई सम्प्रदाय इस बात से इनकार नहीं करता कि ईश्वर के विशेष आदेश से मृतात्मा जीवित व्यक्ति के रूप में दिखाई दे सकती है, और उन बातों को अभि

१ The Black Arts (Routledge & Kegan Paul)

व्यक्त कर सकती है, जिनका पता उसे जीवितावस्था में भी नहीं था। भूत न होते, तो भूतसिद्धि (necromancy) का जन्म और विकास कैसे हो पाता।"

भूतसिद्धि का उपयोग शकुन निकालने के लिए भी किया जाता था। प्राचीन यूरोप में ऐसी मान्यता थी कि भौतिक सीमाओं से मुक्त मृतात्मा, (यों भूत के लिए मृतात्मा शब्द का प्रयोग ग़लत है, क्योंकि आत्मा कभी नहीं मरती) भावी घटनाओं के दर्शन कर सकती है।

भाँति-भाँति के भूत .

पाँचवीं सदी में, प्रोक्लस नामक एक जादूगर-चिन्तक ने भूतों को पाँच वर्गों में विभाजित किया था। पहले चार वर्ग अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी से सम्बन्धित थे, और पाँचवाँ वर्ग भूमिगत रहता था। ग्यारहवीं सदी में सेलस ने छठे वर्ग को भी शामिल किया। इस छठे वर्ग का नाम था Lucifugum (अन्धकारवासी)। "अग्नि-वर्गवाले भूत अन्तरिक्ष में रहते हैं, और आदमियों से कोई सम्पर्क नहीं रखते। वायु-वर्गवाले भूत बडे उपद्रवी और हिंसक होते हैं। वे मनुष्यों से घृणा करते हैं, तूफ़ानों की सृष्टि करते हैं, और वायु में से अवतरित होते हैं। जल-वर्गवाले भूत बेरहम और धोखेबाज़ होते हैं, और महिलाओं के रूप में प्रकट होते हैं। वे जहाज़ों और तैराकों को डुबाते हैं। पृथ्वी-वर्ग के भूत जगलों में रहते हैं। उनमें से कुछ मनुष्यों के मित्र हैं, पर कुछ यात्रियों को भुलावा देने के लिए कुख्यात हैं। भूमिगत भूत भूकम्पों का कारण बनते हैं, और खानों में काम करनेवाले मज़दूरों के प्राण लेते हैं। अन्धकारवासी भूत सबसे अधिक क्रूर, अशान्त और रहस्यमय होते हैं, और उनपर क़ाबू पाना प्राय असम्भव है, क्योंकि वे अन्धेरे में, बिना किसी चेतावनी के, आदमी पर आक्रमण करते हैं।"[1]

"इन 'काल्पनिक' भूतों का जन्म आदि-मानव के इस विश्वास का परिणाम है कि प्रकृति भी उतनी ही चेतन है, जितना मनुष्य, और मृत्यु के बाद आदमी भूत बनकर जलधाराओं, पर्वतों, वृक्षों, आकाश, गुफाओं आदि स्थानों में निवास करता है। प्रकृति का एक अंग बनकर, वे प्रकृति की भाँति ही अप्रत्याशित, क्रूर और शरारती बन जाते हैं। प्रकृति की भाँति भूत भी कभी-कभी सदय हो जाते हैं, पर अधिकतर वे क्रूर ही रहते हैं।"[2]

सन् १०० से ४०० के बीच लिखे गये Testament of Solomon में एक ऐसे देवता की कथा वर्णित है, जो ईश्वर से एक जादुई अँगूठी लेकर बुद्धि-

१. Baroja : World of the Witches (N. G W & Nicholson, London)

२. Williams Witchcraft (Meridian Books.)

नाम् सम्राट् सोलोमन के पास आया था और जिसे पहनकर सोलोमन ने दुनिया भर के भूत-पिशाचों को अपने वश में कर लिया था, और उन्हें अपने वास्तविक नाम बताने को बाध्य कर दिया था। सबसे पहले जिन भूतों ने अपने नाम बताये उनमें प्रमुख थे—भूतों के राजकुमार बील्ज़ेबाउल और कामुक भूत एस्मोडियस जो आधा भूत और आधा आदमी था। बाद में भारत, ग्रीस मिस्र, असीरिया, बेबीलोन और फ़ारस के भूतों ने अपने नाम बताये। तत्पश्चात्, सोलोमन ने कार्य के अनुसार भूतों को श्रेणीबद्ध किया। कोई भूत रोगों को जन्म देता था, कोई फ़सलों को नष्ट करता था और कोई नवजात शिशुओं के गले घोंटता था। 'टेस्टामेण्ट' के बाद के एक संस्करण में कुछ नये भूतों को सम्मिलित किया गया।

भूतों की निर्देशिकाएँ

आगे चलकर भूतों की कुछ अन्य निर्देशिकाएँ भी तैयार हुईं। इनमें से Grimorium Verum Grand Grimoire, Leme geton और Pseu domonarchia Daemonum को काफ़ी लोकप्रियता मिली। इन सभी निर्देशिकाओं में बील्ज़ेबुब लूसिफ़र और अस्थारोथ नाम के भूतों को सब भूतों के सरदार के रूप में स्वीकार किया गया है। सोलहवीं सदी में जॉन वेयर नाम के भूतशास्त्री ने बील्ज़ेबुब को नरक में वास करनेवाले भूतप्रेतों का प्रमुख माना है, और उसे शैतान से भी अधिक नारकीय माना गया है। शैतान को बील्ज़ेबुब के अधीन माना गया है।

इन निर्देशिकाओं के अनुसार, अन्य उल्लेखनीय भूत हैं—यूरोनिमाउस (मृत्युलोक के राजकुमार) मोलोच (अग्निलोक के राजकुमार) प्लूटो (अग्नि लोक के राजकुमार) आदि। कुछ भूतों को भूतलोक के 'राजदूत' बनाकर विभिन्न देशों में भेजा गया। ऐसे कुछ भूत थे मेमन (इंग्लैण्ड) बिलायल (टर्की) रिमन (रूस) और थामुज (स्पेन)।

वेयर के अनुसार, सब भूत पहले या तो हेत्रु क्षेत्र में रहनेवाले देवता थे या उन क्षेत्रों के देवता जिनपर हेत्रु लोगों ने विजय पायी थी। पूर्वविधान (ओल्ड टेस्टमेण्ट) में जेहोवाह के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में प्रस्तुत किये जाने के कारण, उन्हें पैशाचिक वृत्तिवाला माना जाने लगा।

ईसा-काल में यहूदी लोग बीज़्ज़ेबल को भूतों का राजकुमार मानते थे।[1] एक किंवदन्ती के अनुसार भूतों का राजकुमार बनने से पहले वह एक्रोन नगर का देवता था। मोलोच नामक भूत को प्रसन्न करने के लिए यूरोपीय देशों में शिशुओं की बलि दी जाती थी। थामुज़ नामक भूत भी पहले एक देवता था।

---

१ Trachtenberg : The Devil and the Jews (Meridian)

व्यक्त कर सकती है, जिनका पता उसे जीवितावस्था में भी नही था। भूत न होते, तो भूतसिद्धि (necromancy) का जन्म और विकास कैसे हो पाता।"

भूतसिद्धि का उपयोग शकुन निकालने के लिए भी किया जाता था। प्राचीन यूरोप में ऐसी मान्यता थी कि भौतिक सीमाओ से मुक्त मृतात्मा, (यो भूत के लिए मृतात्मा शब्द का प्रयोग ग़लत है, क्योकि आत्मा कभी नही मरती) भावी घटनाओ के दर्शन कर सकती है।

भाँति-भाँति के भूत :

पाँचवी सदी में, प्रोक्लस नामक एक जादूगर-चिन्तक ने भूतो को पाँच वर्गों में विभाजित किया था। पहले चार वर्ग अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी से सम्बन्धित थे, और पाँचवाँ वर्ग भूमिगत रहता था। ग्यारहवीं सदी में सेलस ने छठे वर्ग को भी शामिल किया। इस छठे वर्ग का नाम था Lucifugum (अन्धकारवासी)। "अग्नि-वर्गवाले भूत अन्तरिक्ष में रहते हैं, और आदमियो से कोई सम्पर्क नही रखते। वायु-वर्गवाले भूत बडे उपद्रवी और हिंसक होते हैं। वे मनुष्यो से घृणा करते है, तूफानों की सृष्टि करते है, और वायु में से अवतरित होते है। जल-वर्गवाले भूत बेरहम और धोखेबाज़ होते है, और महिलाओ के रूप में प्रकट होते हैं। वे जहाजो और तैराको को डुवाते है। पृथ्वी-वर्ग के भूत जगलों में रहते हैं। उनमें से कुछ मनुष्यो के मित्र हैं, पर कुछ यात्रियो को भुलावा देने के लिए कुख्यात है। भूमिगत भूत भूकम्पो का कारण वनते है, और खानो में काम करनेवाले मज़दूरो के प्राण लेते हैं। अन्धकारवासी भूत सवसे अधिक क्रूर, अशान्त और रहस्यमय होते हैं, और उनपर क़ाबू पाना प्राय असम्भव है, क्योकि वे अन्धेरे में, विना किसी चेतावनी के, आदमी पर आक्रमण करते हैं।"[१]

"इन 'काल्पनिक' भूतो का जन्म आदि-मानव के इस विश्वास का परिणाम है कि प्रकृति भी उतनी ही चेतन है, जितना मनुष्य, और मृत्यु के वाद आदमी भूत वनकर जलधाराओ, पर्वतो, वृक्षो, आकाश, गुफाओं आदि स्थानो में निवास करता है। प्रकृति का एक अग वनकर, वे प्रकृति की भाँति ही अप्रत्याशित, क्रूर और शरारती वन जाते हैं। प्रकृति की भाँति भूत भी कभी-कभी सदय हो जाते हैं, पर अधिकतर वे क्रूर ही रहते है।"[२]

सन् १०० से ४०० के वीच लिखे गये Testament of Solomon में एक ऐसे देवता की कथा वर्णित है, जो ईश्वर से एक जादुई अंगूठी लेकर वुद्धि-

१ Baroja . World of the Witches (N. G. W & Nicholson, London)

२. Williams . Witchcraft (Meridian Books.)

नाम् सम्राट् सोलोमन के पास आया था और जिसे पहनकर सोलोमन ने दुनिया भर के भूत-पिशाचों को अपने वश में कर लिया था और उन्हें अपने वास्तविक नाम बताने को बाध्य कर दिया था। सबसे पहले जिन भूतों ने अपने नाम बताये उनमें प्रमुख थे—भूतों के राजकुमार बील्ज़ेबाउस और कामुक भूत एस्मोदियस जो आधा भूत और आधा आदमी था। बाद में भारत, चीन, मिस्र, असीरिया, कैल्डिया और फ़ारस के भूतों ने अपने नाम बताये। तत्पश्चात्, सोलोमन ने कार्य के अनुसार भूतों को श्रेणीबद्ध किया। कोई भूत रोगों को जन्म देता था, कोई फ़सलों को नष्ट करता था और कोई नवजात शिशुओं के गले घोंटता था। 'टेस्टामेण्ट' के बाद के एक संस्करण में कुछ नये भूतों को सम्मिलित किया गया।

भूतों की निर्देशिकाएँ

आगे चलकर भूतों की कुछ अन्य निर्देशिकाएँ भी तैयार हुईं। इनमें से Grimorium Verum, Grand Grimoire, Lemegeton और Pseudomonarchia Daemonum को काफ़ी लोकप्रियता मिली। इन सभी निर्देशिकाओं में बील्ज़ेबुब, लूसिफ़र और अस्तारोथ नाम के भूतों को सब भूतों के सरदार के रूप में स्वीकार किया गया है। सोलहवीं सदी में जॉन वेयर नाम के भूतशास्त्री ने बील्ज़ेबुब को नरक में वास करनेवाले भूतप्रेतों का प्रमुख माना है, और उसे शैतान से भी अधिक मारकीय माना गया है। शैतान को बील्ज़ेबुब के अधीन माना गया है।

इन निर्देशिकाओं के अनुसार अन्य उल्लेखनीय भूत हैं—यूरोनिमाउस (मृत्युलोक के राजकुमार) मोलोच (अश्रुलोक के राजकुमार) प्लूटो (अग्निलोक के राजकुमार) आदि। कुछ भूतों को भूतलोक के 'राजदूत' बनाकर विभिन्न देशों में भेजा गया। ऐसे कुछ भूत थे मेमन (इंग्लैण्ड) बिलायल (टर्की) रिमन (रूस) और थामुज़ (स्पेन)।

वेयर के अनुसार, सब भूत पहले या तो हेदन क्षेत्र में रहनेवाले देवता थे या उन लोगों के देवता जिनपर हेदन लोगों ने विजय पायी थी। पूर्वविधान (ओल्ड टेस्टामेण्ट) में जेहोवाह के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में प्रस्तुत किये जाने के कारण उन्हें पैशाचिक वृत्तिवाला माना जाने लगा।

ईसा-काल में यहूदी कौम बील्ज़ेबल को भूतों का राजकुमार मानते थे।[1] एक किंवदन्ती के अनुसार, भूतों का राजकुमार बनने से पहले वह एक्रोन नगर का देवता था। मोलोच नामक भूत को प्रसन्न करने के लिए यूरोपीय देशों में शिशुओं की बलि दी जाती थी। बालमीम नामक भूत भी पहले एक देवता था।

---

१ Trachtenberg The Devil and the Jews (Meridian)

नर्गल नाम का कुख्यात और निरंकुश भूत भी पहले बेबीलोन का युद्ध-देवता था। तामूज नामक भूत पहले सुमेर-प्रदेश का एक देवता था।

प्राचीन यहूदी साहित्य में एस्मोदीयस नामक भूत को लम्पटता और उच्छृं-खलता का प्रतीक माना गया है। Book of Tobit के अनुसार, उसने साराह के सात पतियो की निर्मम हत्या की थी। कुछ भूतशास्त्री मानते हैं कि मूलत वह फ़ारस का एक भूत था, कुछ उसे हेब्रु मानते हैं। पर, इस बारे में सब एकमत है कि उसका आह्वान नगे सिर करना चाहिए[1]।

प्राचीन रोम में यह मान्यता थी कि मई महीने के कुछ विशेष दिनों में परलोकगत मानव भूतो का रूप धारण करके अपने पुराने निवासस्थानो को लौट आते हैं। उन्हें भगाने के लिए गृहस्वामी आधी रात के बाद, पानी से अपने हाथ साफ करने के बाद, अपने घर की परिक्रमा करता था, और परिक्रमा करते-करते काली सेम अपने पीछे फेंकता-फेंकता नौ बार कहता था "These I cast, with these beans I redeem me and mine" नौ बार ऐसा कहने के बाद, वह फिर नौ बार यह कहता था . "Ghost of my fathers, go forth" ऐसी मान्यता थी कि ऐसा करने से भूत वह घर छोडकर चले जाते थे, और गृहस्वामी उनके दुष्प्रभावो से मुक्त हो जाता था।

यहूदियो का भूत-प्रमुख

हेब्रु भाषा में beli ya'al शब्द के अर्थ हैं 'बेकार और असत्य।' इसी शब्द से बना है बेलियल (या बेलियर) जिसे यहूदी अपने भूतो का प्रमुख मानते हैं। यह असत्य, विवाद और विनाश का प्रतीक माना जाता है, और सदा अन्धकार में ही रहना पसन्द करता है। जब उसका आह्वान किया जाता है, तो वह एक आकर्षक देवता के रूप में अवतरित होता है। यहूदी लोग मैमॅन नाम के भूत को धनलोलुपता का प्रतीक मानते थे। उसे अधर्म का प्रतीक माना जाता था। इसीलिए, ईसामसीह ने उसके बारे में कहा था, "Ye cannot serve God and Mammon" (तुम एक साथ ईश्वर और मैमॅन के सेवक नही बन सकते)[2]।

प्राचीन रोम का भूत-प्रमुख था प्लूटो और प्राचीन ग्रीस का भूत-प्रमुख था यूरोनीमाउस। यूनान के डेल्फी के विख्यात मन्दिर में एक विशाल कलाकृति टॅंगी थी, जिसमें यूरोनीमाउस को भी अंकित किया गया है। गीध की त्वचा पर बैठा यूरोनीमाउस, इस कलाकृति मे, शवो के गोश्त को चबा रहा है। फीनिक्स (अमरपक्षी) को, जो एक कवि भी था, भी भूतो की श्रेणी में रखा गया है।

१ Ovid Fasti (J G Frazer)

२ Levi Key of the Mysteries. (Rider)

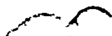
मिस्र में पहले एमन नामक एक देवता की पूजा की जाती थी। बाद में, उसे भूत माना जाने लगा और उसे सर्प के समान सिरवाले ऐसे भेड़िये के रूप में अंकित किया जाने लगा जिसके मुँह से आग की लपटें निकलती रहती हैं। अफ्रीका में सिमेरीज नामक भूत की पूजा की जाती थी। अफ्रीका का भूत प्रमुख माना जानेवाला यह भूत सदा एक काले घोड़े पर सवार रहता था। बाइबिल में बाल्म नाम के एक भूत का भी उल्लेख आता है। तीन सिरोंवाला यह भूत सदा एक भालू पर सवार रहता था।

सब देशों के भूतों को भयानक और क्रूर दिखाया जाता था। अधिकांश भूतों के शरीर के कुछ भाग पशु-पक्षियों के शरीर के भागों से मिलते थे। कभी लोकवासियों का खयाल था कि भूतों के प्रकट होने पर उनके सामने कोई दर्पण नहीं रखना चाहिए, क्योंकि उसमें अपनी डरावनी शक्ल देखकर वे भाग जायेंगे।

प्राचीन यूरोप और अफ्रीका में ऐसी मान्यता थी कि भूतों का जन्म ईश्वर के रोष के परिणामस्वरूप हुआ था। कुछ भूतशास्त्री यह भी मानते थे कि ब्रह्माण्ड की रचना के समय जो मैल बच गया था उससे भूतों और पिशाचों का जन्म हुआ।

तेरहवीं सदी तक यूरोप के प्रायः सभी धर्मों में ऐसा माना जाने लगा कि सर्वाधिक दुष्ट भूत-पिशाच दस हैं, जो सामेल नामक महा-पिशाच के नेतृत्व में काम करते हैं। क्रमानुसार इनके नाम इस प्रकार थे १ शतान और मोलोक (मलेच्छ ?) २ बीलजेबब ३ लूसीफ्यूज ४ अस्तारोथ ५ एस्मोडियस ६ बेलफेगोर ७ बॉल ८ अद्रममेलैक ९ लिलिथ और १० नामाह।

यहूदियों की मान्यतानुसार लिलिथ और नामाह ऐसी भूतनियाँ थीं जो नव जात शिशुओं के गले घोंटती और सोते हुए पुरुषों का खून चूसती थीं। नामाह की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका पता नहीं है, पर लिलिथ के बारे में ऐसा माना जाता है कि वह मूलतः एक अशरीरिणी भूतनी थी जिसके पंख थे और बाल लम्बे और अस्तव्यस्त रहते थे। ऐसी किंवदन्ती भी है कि राजा सोलोमन को यह सन्देह था कि स्वयं उनकी महारानी शेबा वास्तव में लिलिथ हैं क्योंकि उनके पाँव बालदार थे। एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार लिलिथ आदम की पहली पत्नी थी, जिसका सृजन ईश्वर ने मैल-मिट्टी से किया था। एस्मोडियस तथा अन्य भूत आदम और लिलिथ की ही सन्तान माने जाते हैं। हव्वा का जन्म उनके जन्म के बहुत बाद में हुआ। यह कहानी बाइबिल में नहीं मिलती पर Genesis 5 3 में कहा गया है कि आदम १३० वर्षों तक जिया और उसने हव्वा के साथ मिलकर 'देखने में अपने समान' पुत्र उत्पन्न किया। इस उक्ति से कुछ भूतशास्त्रियों ने यह अनुमान लगाया कि उसके पहले पुत्र—भूत—देखने में उसके समान नहीं थे।



भूत—यूरोप के इतिहास मे :

यूरोपीय देशो के मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास में भूतों की भरमार है। ऐसे सैंकडो उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। विलियम स्टीवेन्स नामक इतिहासकार ने फ्रान्स की यूजीन नाम की सम्राज्ञी के बारे में लिखा है कि उसके साम्राज्य का पतन होने के बाद, वह अपने पुत्र लुई के साथ इग्लैण्ड आयी। कुछ समय बाद, लुई ब्रिटिश सेना में भरती होकर, सेनाधिकारी के रूप में, लडने के लिए दक्षिण अफ्रीका गया। वहाँ १८७९ में जूलू लोगो ने युद्ध में उसकी हत्या कर दी। उसका शव इग्लैण्ड भेज दिया गया, और उस स्थान पर जहाँ उसकी हत्या हुई थी, वहाँ पत्थर का एक स्तूप बनाया गया। युद्ध की समाप्ति पर जब महारानी ने उस स्तूप को देखने की इच्छा व्यक्त की, तो ब्रिटिश सरकार ने कुछ लोगो के साथ उन्हें दक्षिण अफ्रीका भेजा। जहाँ स्तूप बना था, वहाँ काफी घना जगल उग आया था। बहुत प्रयत्न करने पर भी, महारानी के साथ गये लोग उस स्तूप को नही खोज पाये। उन्होने महारानी को वापस इग्लैण्ड लौटने की सलाह दी, पर महारानी उस स्तूप को देखने के लिए व्यग्र थी। एक रात उन्होंने सपने में एक भूत को उस स्तूप की रक्षा करते पाया। उसने ही महारानी को स्तूप तक पहुँचने की राह बतायी। उसके दिशा-निर्देश से लाभ उठाकर, महारानी ने अन्तत उस स्तूप का पता लगा ही लिया।

ब्रिटेन के हर किले के भूतो की कहानियाँ आपको सुनने को मिल जायेंगी। (एक कहानी आप आगे पढेंगे भी)। सबसे अधिक प्रसिद्ध है, आठवें हेनरी की पाँचवी पत्नी कैथरीन के भूत की कहानी, जो ब्रिटेन का बच्चा-बच्चा जानता है। इतिहास साक्षी है कि स्काटलैण्ड के राजा - जेम्स चतुर्थ को एक भूत ने प्रकट होकर चेतावनी दी थी कि इग्लैण्ड पर आक्रमण होनेवाला है। जेम्स ने इस चेतावनी की कोई परवाह न की। परिणामस्वरूप, उसे युद्ध भूमि में पराजय का मुख देखना पडा।

युद्ध और भूत

इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि युद्ध के दिनो में भूत अधिक दिखाई देते है। प्रथम विश्वयुद्ध के दिनो में मित्र-राष्ट्रों के सैनिको को बेल्जियम की खाइयो में 'Angel of Mons' नाम की एक भूतनी दिखाई दिया करती थी, जिसे देखकर सैनिकों को बडी सान्त्वना मिलती थी। स्पेन के गृहयुद्ध के दिनो में राजभक्त सैन्यदल ने जब विरोधीदल पर आक्रमण किया, तो उसने पाया कि एक घुडसवार, आगे बढकर उनके विरोध के लिए सबसे आगे बढा चला आ रहा है। बाद में पता चला कि वह घुडसवार वास्तव में स्पेन के कल्पित हीरो

'एस्क्विज' का भूत था।

दूसरे महायुद्ध के दिनों में, उत्तरी ओण्टेरियो कनाडा की एक अधेड़ महिला अचानक नींद से जाग उठी। उठते ही उसने पाया कि उसका छोटा भाई उसके बिस्तर के पास खड़ा है। भाई को देखकर, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उन दिनों उसका भाई कनाडा की शाही वायुसेना में एक वायुयान-चालक था। उसने आँखें मलकर देखा उसका भाई वायुसेना की ही पोशाक में था, और अत्यन्त गम्भीर था। वह महिला अपने भाई को देखकर कुछ कहना चाहती ही थी कि उसका भाई धीरे-धीरे उसकी आँखों के सामने से लुप्त हो गया। वह महिला चिल्ला पड़ी, और चीख-चीखकर कहने लगी मेरा भाई नहीं रहा मेरा भाई नहीं रहा!

महिला का यह पूर्वबोध सत्य निकला। कुछ घण्टे बाद, उसे तार मिला कि उसके भाई की एक हवाई हमले में मृत्यु हो गयी है। जिस समय मृत्यु हुई ठीक उसी समय उसकी बहन को उसका भूत अपने कमरे में दिखाई दिया था।[2]

ब्रिटेन के भुतहा घर :

प्रथम महायुद्ध के बाद से ब्रिटेन में भूतों और परलोकगत लोगों के प्रति दिलचस्पी काफ़ी बढ़ी। विश्वविख्यात रहस्यकथा लेखक शर्लाक होम्स ने ब्रितानी लोगों में इस दिलचस्पी को जाग्रत् करने में काफ़ी योगदान दिया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात्, उनके पुत्र डेनिस कॉनन डायल ने लन्दन के एक लोकप्रिय दैनिक में प्रामाणिक भूतकथाएँ प्रकाशित करवायीं जो ब्रिटेन के साधारण लोगों के प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित थीं। इन भूतकथाओं के कारण इंग्लैण्ड में भूतों के प्रति रुचि और अधिक बढ़ी। आज भी इस रुचि में कोई कमी नहीं हुई। पीछे हम बता आये हैं कि कुछ समय पूर्व ब्रिटेन के लोकप्रिय दैनिक 'सन' ने अपने पाठकों से भूत-सम्बन्धी अपने अनुभव भेजने को कहा था। एक सप्ताह के अन्दर १०००० से अधिक स्वानुभव 'सन' के सम्पादक की मेज़ पर जमा हो गये।

जितने भुतहा घर ब्रिटेन में हैं, उतने उत्तरी अमरीका को छोड़कर शायद ही किसी देश में हों। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से भुतहा घर ब्रिटेन आनेवाले सैलानियों के लिए प्रमुख आकर्षण-केन्द्र बन गये थे। ब्रिटेन की सरकार ने इन घरों को देखने का फ़ीस निश्चित करके काफ़ी रकम सैलानियों से वसूल की थी।

१९३४ में विश्वविख्यात वैज्ञानिक सर ओलिवर लॉज के नेतृत्व में भूतों तथा

---

१ Danton Walker I believe in Ghosts. (Pyramid)

२ Allen Spragett : The Unexplained. (Slynet)

अन्य अलौकिक रहस्यो के विपय में वैज्ञानिक शोधकार्य करने के उद्देश्य से ब्रितानी वैज्ञानिको और मनोवैज्ञानिको के एक दल का गठन हुआ। इस दल ने बी बी सी पर 'अज्ञात की शोध' विपय पर प्रसारण आरम्भ किये, जिनकी शुरुआत ऑक्सफोर्ड के सर अर्नेस्ट बेनेट ने 'भूत और भुतहा घर' विपय पर प्रसारण से हुई। अपने प्रसारण के अन्त में उन्होंने श्रोताओ से अपील की कि वे 'विज्ञान के हित में' भूतों और भुतहा घरो के विपय में अपने अनुभव इस दल को भेजें।

जिन १३०० श्रोताओं ने, इस अपील पर ध्यान देकर, अपने अनुभव इस दल को भेजे, उनमें एक लार्ड मुख्य न्यायाधीश के अलावा अनेक व्यापारी, इजीनियर, वकील और पादरी भी शामिल थे। इन १३०० अनुभवों में से पचास ऐसे अनुभव चुने गये, जिनकी साक्षी दो से अधिक व्यक्तियो ने की थी। इन पचास अनुभवो में 'सोसायटी फॉर सायकॉलोजिक रिसर्च' द्वारा सग्रहीत पचास को सम्मिलित करके, इस दल ने एक पुस्तक का प्रकाशन कराया जिसका नाम था 'Apparitions and Haunted Houses A Survey of Evidence (भूत और भुतहा घर : प्रमाण सर्वेक्षण)। इसकी भूमिका सेण्ट पॉल्स केथेड्रल के डीन ने, जिनकी सत्यनिष्ठा में कोई सन्देह नही किया जा सकता, लिखी है

(अलौकिक रहस्यो में बुद्धिजीवियो और साधारण लोगो की बढती हुई रुचि को देखकर, केम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने भूत तथा अन्य अलौकिक रहस्यो पर वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक शोध करने के लिए एक स्वतन्त्र विभाग की स्थापना की। ऐसा विभाग स्थापित करनेवाली यह प्रथम अँगरेजी भापी शैक्षणिक सस्था थी।)

आइए, भूतनगर चले

वैसे, इतिहास का सबसे अधिक चर्चित और विख्यात भुतहा घर ईसाइयो के नियमवाद (Methodism) के संस्थापक जॉन वेस्ले का है, जहाँ भाँति-भाँति के भूत सदियो से अपनी लीलाएँ दिखाते चले आ रहे हैं।

पर, अपनी लीलाएँ करते-करते क्या भूत कभी थक नही जाते, बीमार नही पड़ते ? अवश्य पडते हैं। इसीलिए, तो १९६९ में इग्लैण्ड के डोनाल्ड पेज नामक एक सज्जन के मन में विचार आया कि थके और बीमार भूतो का एक आश्रयस्थल खोला जाये। तो साहब, यह आश्रयस्थल खोला गया, और मई, १९७९ तक इस आश्रयस्थल में ५०० से अधिक भूतो को आश्रय मिल चुका था। इतना ही नही, थके और बीमार भूतो को 'पकडने' के लिए एक 'भूत-टुकडी' भी बनायी है, पेज साहब ने।

इतना ही नहीं, इटली में बाकायदा एक भूतनगर भी है, जो बिकाऊ भी है। पिसियाकेवो नामक इस भूतनगर की कीमत सिर्फ पौने दो लाख रुपये है। यह भूतनगर स्विटजरलैण्ड और इटली की सीमा पर दोमोग्नेसोला के पूर्व में स्थित है। एक हजार वर्ष पुराने इस नगर में १९५० से कोई आदमी नहीं रहता। सदियों पहले इसी भूतनगर में पलेस्ट्रा नामक एक इतिहास-प्रसिद्ध डॉक्टर रहता था, जिसने नेपोलियन की पत्नी जोसेफाइन को मौत के चंगुल से बचाया था।

१९६९ में पिसियोकेवो में पासक्वल नामक एक बूढ़ा किसान रहता था। बेचारा बूढ़ा तो था ही कुरूप भी था। लोग उसे यह कह-कहकर छेड़ा करते थे कि अमुक लड़की तुमपर जान देती है। यह सुनते ही बेचारा पासक्वेल अपना गिटार लेकर उस लड़की के घर क सामने पहुँच जाता और प्रेमगीत गाने लगता। लड़की के भाई-पिता तथा अन्य रिश्तेदार उसका अपमान करके उसे भगा देते। एक दिन उसने इन अपमानों से तंग आकर आत्महत्या कर ली। तब से उसका भूत वहाँ मँडराता रहता है, और किसी को भी चैन से नहीं बैठने देता। उसकी देखादेखी अन्य भूत भी वहाँ आकर रहने लगे। अब इसका मालिक–मारियो पेडेन्दो इसे सिर्फ पौने दो लाख में बेचकर अपनी जान बचाना चाहता है।

अमरीका में भूतनगर तो नहीं है, पर एक ऐसा विशाल भुतहा भवन अवश्य मौजूद है, जिसे पिछले दस वर्षों से भूतों ने अपना अड्डा बना रखा है। डॉक्टर जॉन मार्टिन के नेतृत्व और साइकिकल रिसर्च फ़ाउण्डेशन के तत्त्वावधान में, अमरीका के कुछ गण्यमान्य वैज्ञानिकों का एक दल, जिसमें कुछ प्रख्यात मनोवैज्ञानिक भी सम्मिलित है, भूतों का वैज्ञानिक अध्ययन कर रहा है। कहा जाता है कि भूतों को लेकर इतना विशद वैज्ञानिक अध्ययन आज तक नहीं किया गया। यह दल ऐसे प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास कर रहा है—क्या एक ही भूत एक ही समय पर एक साथ, कई व्यक्तियों को दिखाई दे सकता है, भूतों की आदतें, पोशाक बोलियाँ आयु आदि आदि।

पर, इस दल की परेशानी यह है कि भूतगण उसकी इच्छानुसार उसकी वैज्ञानिक प्रमाणशाला में आने को तैयार नहीं होते। वह चुटकुला सुना होगा आपने। एक साहब ने अपने नये नौकर से कहा 'देखो भाई हम ज्यादा बोलने की आदत नहीं है। वैसे ही सिर हिलायें फ़ौरन हाज़िर हो जाया करो। नौकर ने कहा 'साहब हमें भी ज्यादा बोलने की आदत नहीं है। जब हम सिर हिला दें तो समझ लीजिए, हमारा आने का मूड नहीं है।

भूत और वैज्ञानिकों के आपसी सम्बन्ध भी क़रीब-क़रीब ऐसे ही है।

भूतों पर वज्ञानिक दृष्टिपात

भूतों और उनकी लीलाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करनेवाले कुछ अन्य

वैज्ञानिको का कथन है कि जबतक आदमी को मात्र एक रासायनिक यन्त्र समझा जाता रहेगा, तबतक भूत क्या, किसी भी पारलौकिक रहस्य को नही समझा जा सकता ।

हाँ, यदि यह मान लिया जाये (और यह एक वैज्ञानिक तथ्य को ही मान्यता प्रदान करने के बराबर होगा) कि आदमी एक विद्युद्रंगिक प्राणी भी है, तो इन पारलौकिक रहस्यो को—विशेष रूप से भूतो और उनकी लीलाओ के रहस्य को—समझने में काफी आसानी हो सकती है ।

जीवन के विद्युद्रंगिक सिद्धान्त के अनुसार, प्रत्येक मानव सदा अदृश्य शक्तियो के सागर में तैरता है, और उसकी इन्द्रियाँ इन शक्तियो को 'ग्रहण' करके, उनमें आवश्यक परिवर्तन करके उनका प्रक्षेपण करती रहती हैं ।

विद्युत्-शक्ति ऐसी भौतिक शक्ति है, जो सर्वत्र उपलब्ध है, और वह प्रकाश, ताप, गति तथा रासायनिक पुनर्मिश्रण आदि रूपो में प्रकट होती है । पर, अभी तक वैज्ञानिको को यह ज्ञात नही हो पाया है कि उसका आदि स्रोत और आदि स्वरूप क्या है ? वे केवल इतना जानते है कि कोई पदार्थ ऐसा नही है, जिसमें विद्युत्-शक्ति का अत्यल्पांश भी मौजूद न हो । आधुनिक इलेक्ट्रॉन सिद्धान्त भी इस बात की पुष्टि करता है ।

भूतलीला की वैज्ञानिक व्याख्या .

वैज्ञानिक अब यह जानने का प्रयत्न कर रहे हैं कि इस अदृश्य शक्ति का उद्गम और स्वरूप क्या है ? कुछ भौतिक-शास्त्रियो का अनुमान है कि देह-ताप जब गतिमूलक शक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाता है, तब इस अदृश्य शक्ति का जन्म होता है । भूतो से सम्पर्क का दावा करनेवाले माध्यमो के शरीर का तापमान बहुत कम हो जाता है, पर 'भूतशापित' लोगो के साथ हमेशा ऐसा नही होता ।

जिसे 'भूतलीला' की संज्ञा दी जाती है, उसकी वैज्ञानिक व्याख्या इस प्रकार है "जब मन को एक स्थान के आधार पर एकाधिक स्थानो पर एकाग्र किया जाता है, तो देह मे एक अदृश्य शक्ति विसर्जित होती है, जो आणविक प्रस्फोट से विसर्जित शक्ति के समान होती है ।"

भूतो और भूतलीला के बारे में जिन मनोवैज्ञानिको और मानस-रोग-विशेषज्ञो ने शोध कार्य किया है, वे अन्तत इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उनका 'जन्म' आदमी के अन्तर्जगत् मे ही होता है, बाह्य-जगत् की किसी घटना के कारण नही । भूतो के बारे में शोध करनेवाले भौतिकशास्त्री भी ऐसा ही मानते हैं । उनका कहना है कि यदि कोई बाहरी कारण होता, तो भूतलीला से प्रभावित व्यक्ति की देह का तापमान कम न होता ।

हर प्रकार की मूतमीमांसा के पीछे सक्रिय शक्ति वास्तव में वह शक्ति है जो चेतापदीय (न्यूरोमस्क्यूलर) केन्द्र कोशिकाओं से प्राप्त करते हैं। किसी अज्ञात विधि से शरीर की गरमी विद्युत्-शक्ति में परिवर्तित हो जाती है। यही शक्ति अन्तिम छत्तय पर परमाणुओं के सतत प्रवाह के रूप में प्रसारित होती है, या की जाती है। यह विद्युत्-विकिरण लेसर-किरणों के प्रक्षेपणों के समान ही होता है।

एक भौतिक-शास्त्री ने कुछ समय पूर्व अनुमान लगाया था कि यदि प्रत्येक कोशिका १/१० वोल्ट विद्युत् का भी जन्म दे तो भी एक घन इंच कोशिकाएँ ४०० ००० वोल्ट विद्युत् के जन्म का कारण बन सकती हैं। पर, बाद में डॉक्टर अन्द्रीया पुटारिच ने प्रयोग करके मालूम किया कि कुछ असामान्य परिस्थितियों में एक अकेले पोटेशियम अयन के आसपास के विद्युत्-क्षेत्र की तीव्रता प्रति सेण्टीमीटर १६ ००० ००० वोल्ट के लगभग होती है।

मानसिक शक्ति के बल पर वस्तुओं का स्थानान्तरण

ऊपर से देखने पर यह शक्ति सतत धारा के रूप में प्रवाहित होती लगती है, पर वैज्ञानिक प्रयोगों से पता चला है कि इस शक्ति का प्रवाह, विद्युत् की चरम सीमा से फूटनेवाली विद्युत् की चिनगारियों के समान अनियन्त्रित होता है।

वोल्टेज और एम्पीयरेज अलग-अलग चीजें हैं। यदि एम्पीयर अपेक्षाकृत कम हो तो कोई भी वस्तु कितना भी वोल्टेज सहन कर सकती है। विद्युत् शक्ति के शरीर से मुक्त होते ही या उसके सम्पर्क से सम्पर्क करते ही एम्पीयरेज काफी तेजी से बढ़ जाता है। इस बात का प्रमाण तब देखने को मिलता है जब यह शक्ति किसी स्थान-विशेष पर केन्द्रित होकर अत्यन्त तीव्र और प्रखर हो जाती है। आग लगने पर ऊँचे वोल्टेज के दर्शन होते हैं, पर न जलनेवाले पदार्थ पर कम एम्पीयरेज रहता है।

एम्पीयरेज के बढ़ने पर वह पदार्थ जलने लगता है, और उसमें से लपटें निकलने लगती हैं। जब मानसिक शक्ति के बल पर छोटी-छोटी वस्तुओं को स्थानान्तरित किया जाता है, तो परमाणुओं की हलचल के कारण ये वस्तुएँ गरम हो जाती हैं। ऐसी हालत में मस्तिष्क में जो हलचल होती है, वह इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटिंग मशीन की क्रियाशीलता से काफी मिलती है।

वैज्ञानिकों को ऐसे अशिक्षित और मानसिक दृष्टि से दुर्बल व्यक्तियों का पता है जो मामूली हिसाब नहीं लगा सकते पर क्षण भर में इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं कि १९८९ की ९ जुलाई को कौन-सा दिन होगा। 'लाइफ' के १८ मार्च, १९६६ के अंक में २६ वर्ष के दो जुड़वाँ बच्चों का समाचार प्रकाशित हुआ था जो ऐसा चमत्कार करके दिखा सकते थे।

वैज्ञानिक सिद्धान्त, जो भूतलीला के चमत्कारो पर प्रकाश डालता है :

१९४४ की वसन्त ऋतु की एक सुहानी सुवह को अमरीका के उत्तरी डकोटा क्षेत्र के रिचर्डटन नामक नगर में 'वाइल्डप्लम' नामक स्कूल की शिक्षिका श्रीमती पॉलिन रेवेल अपनी कक्षा के आठ विद्यार्थियो को पढा रही थी कि सहसा कुछ ऐसी घटनाएँ घटी, जिनसे कक्षा की शान्ति और मर्यादा भग हो गयी। वाद में प्रत्यक्षदर्शी फायर-मार्शल चार्ल्स स्वार्ज ने पत्रकारो को वताया, "ये घटनाएँ सचमुच आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय थी।"

अचानक घटनेवाली ये घटनाएँ इस प्रकार थी ·

○ कमरे में रखी हुई अँगीठी के कोयले अपने-आप वडी तेजी से जलने लगे।

○ कुछ क्षण वाद, ये कोयले अँगीठी से निकलकर दीवारों तक जाने लगे, और फिर दीवारो से टक्कर खाकर अँगीठी में वापस जाने लगे।

○ एक जलता हुआ कोयला जैक स्टीनर नाम के विद्यार्थी के सिर में ज़ोर से लगा, जिससे उसके वालो में आग लगते-लगते रह गयी, और सिर झुलस गया।

● फिर, एक विस्फोट-सा हुआ, और अँगीठी उलट गयी।

● कितावो का एक शेल्फ अपने-आप धूँधूँ करके जलने लगा।

● शेल्फ़ में रखा एक मोटा शब्दकोश, अपने-आप, शेल्फ़ से नीचे उतर आया।

● कमरे की खिड़कियाँ अपने-आप झुलसने लगीं।

श्रीमती रेवेल ने तुरन्त हेडमास्टर को फोन किया। हेडमास्टर ने फायर-स्टेशन को फोन किया, और अपने सहायकों के साथ भागे-भागे घटनास्थल पर आये। जलते-सुलगते कोयलो का ताण्डव-नृत्य उस समय भी चल रहा था।

जवतक फायर-ब्रिगेड आया, तवतक यह ताण्डव-नृत्य जिस प्रकार सहसा आरम्भ हुआ था, उसी प्रकार समाप्त हो चुका था। पर, जलते हुए कोयले कमरे में अभी तक यहाँ-वहाँ दिखाई पड़ रहे थे।

विद्यार्थियो को तत्काल उनके घर भेज दिया गया, और स्कूल अस्थायी रूप से वन्द हो गया।

कुछ कोयलो की जाँच स्कूल के विज्ञान-शिक्षको ने की, और कुछ की अमरीका की खुफिया पुलिस के वैज्ञानिको ने। प्रयोगो से किसी असामान्य वात का पता न चला। श्रीमती पालिन रेवेल और उनके आठो विद्यार्थियो से अलग-अलग काफ़ी देर तक पूछताछ की गयी। सवने घटनाओं का यथा-तथा वर्णन किया। सुविख्यात समाचार साप्ताहिक 'टाइम' ने, जो ऐसी 'अन्धविश्वासपूर्ण घटनाएँ कभी प्रकाशित नही करता, इस घटना का पूरा विवरण अपने २४ अप्रैल,

१९४४ के अंक में प्रकाशित किया।

'टाइम' का यह हृदय-परिवर्तन आकस्मिक नहीं था। कारण, १९४४ के आरम्भ में अमरीका के प्रख्यात भौतिक-शास्त्री प्रोफ़ेसर जार्ज गैमो (जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय) का परमाणुओं के व्यवहार से सम्बन्धित एक सिद्धान्त प्रकाश में आ चुका था, और वह इस अलौकिक घटना का समर्थन करता प्रतीत होता था। इतना ही नहीं, उससे पूर्व अमरीका के ही एक अन्य भौतिक-शास्त्री जेम्स क्लर्क मैक्सवेल भी इस सिद्धान्त को प्रतिपादित कर चुके थे। वैज्ञानिकों में मैक्सवेल 'डेमन' के नाम से प्रसिद्ध था। 'टाइम' के सम्पादकीय विभाग को इस सिद्धान्त का पता था। संक्षेप में, यह सिद्धान्त इस प्रकार है

तापवैगिकी (थर्मोडायनैमिक्स) के एक मूलभूत नियम से बना है—क्रमिक उत्क्रम—माप (इंक्रीजिंग एन्ट्रोपी) का सिद्धान्त। साधारणतया पदार्थ में परमाणुओं का गमन काफ़ी अव्यवस्थित होता है। पर पदार्थ में शक्ति (अर्थात् ताप) का समान वितरण इस प्रकार की अव्यवस्था से ही सम्भव हो पाता है। प्रोफ़ेसर गैमो के सिद्धान्त के अनुसार जब संयोग से किसी पदार्थ के परमाणु व्यवस्थित रूप से गमन करने लगते हैं, तो शक्ति का वितरण असमान और अव्यवस्थित हो जाता है।

व्यवस्था के कारण हुई अव्यवस्था

इसी सिद्धान्त के कार्यकरण का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए प्रोफ़ेसर गैमो कहते हैं, 'सैद्धान्तिक रूप से यह सम्भव है कि किसी कमरे में व्याप्त वायु के सब परमाणु अचानक एक कोने में जमा हो जायें, और कमरे का शेष भाग वायु-विहीन रह जाये। यह भी सम्भव है कि परमाणुओं के एक वर्ग के समाघात के अन्तर्वर्तित प्रतिरूप धारण कर लेने के कारण सारी शक्ति एक स्थान पर संकेन्द्रित हो जाये। ऐसी दशा में सूप का प्याला सूप छलका सकता है, या गिलास में रखी शराब अपने-आप उबल सकती है।

प्रोफ़ेसर गैमो के अनुसार, पदार्थ जितना बड़ा होगा यह सम्भावना उतनी ही कम होगी। छोटे पदार्थों में इस प्रकार की 'व्यवस्था के कारण हुई अव्यवस्था' की सम्भावना काफ़ी बढ़ जाती है। वायु-परमाणुओं की आदत है कि वे बिन्दु विशेषों पर संकेन्द्रित हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप जन्म होता है, अत्यल्प 'इनहोमोजिनिटीज' का जिन्हें स्थिति की 'सांख्यिकीय अनियमितता (स्टेटिस्टिकल फ़्लक्चुएशन्स ऑव डेस्टिनी) भी कहा जाता है। सूरज की किरणों के वायु मण्डल में से गुज़रते समय प्रकाश की किरणों से आकृत वर्णक्रम (स्पेक्ट्रम) जिसमें रंग अपनी निवर्तनीयता क अनुसार, क्रम में व्यवस्थित रहते हैं, की नीली किरणों का विकिरण ऐसी 'इनहोमोजिनिटीज' के कारण ही होता है।

मैक्सवेल और गैमो दोनों मानते हैं कि मात्र संयोग से इस सिद्धान्त की

सक्रियता करोडो अवसरो मे एक-दो वार ही सम्भव है। पर, यदि कोई अवचेतन मन अपनी शक्ति-तरगो का प्रक्षेपण करके किसी वाहरी पदार्थ के परमाणुओ को प्रभावित कर सके, तो यह परमाणुओं को व्यवस्थित रूप से गमन कराके, शक्ति को एक स्थान पर सकेन्द्रित करने की इरादी कोशिश होगी।

ऐसी इरादी कोशिशो या मात्र सयोग के कारण हुई अलौकिक और असाधारण घटनाओ को ही 'भूतलीला' का नाम दिया जाता है।

अवचेतन मन का चकमा : भूतलीला का एक कारण :

आदमी का अवचेतन मन सम्मोहन के प्रभाव में स्वय उसे ही (अर्थात् उसके चेतन मन को) किस प्रकार 'चकमा' दे सकता है, इसके अनेक उदाहरण सामने आ चुके हैं।

स्वीडन की एक महिला को सम्मोहन में यह 'सुझाव' दिया गया कि उसे रोज एक निश्चित समय पर अपने कमरे के दरवाज़े पर खटखटाहट सुनाई देगी, जो करीव एक मिनट तक चलेगी।

इस सुझाव के वाद, उस महिला को रोज उसी समय पर, अपने दरवाज़े पर खटखटाहट सुनाई देने लगी—एक मिनट तक। जव दूसरे लोग, जिन्हें यह खटखटाहट नही सुनाई देती थी, उससे पूछते थे, तो वह महिला दृढतापूर्वक कहती थी कि उसे यह खटखटाहट स्पष्ट सुनाई देती है। अव ये लोग यदि उस महिला को 'भूतो के वश में' मान लें, तो क्या आश्चर्य।

भूतलीला—मस्तिष्क-कोशिकाओ मे निहित विद्युत्-शक्ति का कौतुक

हमारा मस्तिष्क एक पेचीदा सयन्त्र है। पिछले साठ-सत्तर वर्षों से वैज्ञानि
और मनोवैज्ञानिक दोनो मस्तिष्क के रहस्यो को जानने का अथक प्रयास कर रहे

अमरीका की ब्रेन रिसर्च इन्स्टीट्यूट की स्पेस वायोलोजी लैवोरेटरी
डॉक्टर डब्ल्यू रॉस आदे ने अपने सहयोगियो की सहायता से आश्चर्यजनक प्र
किये थे। एक ऐसे विशाल कम्प्यूटर की सहायता से, जो पूरे कमरे में समा
था, डॉ आदे ने मस्तिष्क की कोशिकाओ का सूक्ष्म अध्ययन किया, तो प
'ये कोशिकाएँ नाचती, थिरकती और स्फुरण करती रहती हैं, और गतिशू
हैं, जैसा कि पहले समझा जाता था।' इन प्रयोगो से डॉ आदे और उ
योगियो को यह विश्वास हो गया कि मस्तिष्क की सवेदनशीलता, क
और वाह्य वस्तुओं को प्रभावित करने की शक्ति असीम है, और प्रत्येक
अनीमित सम्भावनाओं का केन्द्र है। डॉ आदे के अनुसार, मस्तिष्क

इच्छित व्यक्ति या वस्तु के परमाणुओं को अनियमित कर सकता है—निहित विद्युत् शक्ति को उस व्यक्ति या वस्तु पर केन्द्रित करके। जब-जब ऐसा होता है तब-तब वह वस्तु या व्यक्ति की गरमी काफ़ी बढ़ जाती है। शक्ति का केन्द्रीमकरण अधिक हो जाने से वे जलने लगते हैं, या अजीब तरीक़ों से पेश आने लगते हैं।

मानव-मस्तिष्क अपनी पेचीदी सर्वविद्यमान और अतिसूक्ष्म विचार-प्रणाली से सब कल्पनीय और अकल्पनीय कार्य करने में सक्षम है, इस बात का पता रूसी वैज्ञानिकों को भी लग चुका है। उन्हें इस दिशा में वैज्ञानिक विश्लेषण करने को बाध्य किया मास्को के निकट रहनेवाली नेली मिखाइलोवा नाम की एक महिला के आश्चर्यजनक प्रदर्शनों ने।

एक प्रदर्शन में वह मेज़ के पास एक कुरसी पर बैठती है और मेज़ पर रखी वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है। तदनन्तर ये वस्तुएँ अपने आप उसकी ओर सरकने लगती हैं। ऐसे प्रदर्शन और वैज्ञानिक प्रयोग उसने अनेक रूसी वैज्ञानिकों के सामने करके दिखाये हैं। पर, वैज्ञानिक सबसे अधिक प्रभावित हुए उसके उन प्रयोगों के प्रदर्शन से जो उसने काकोद्‌गी नामक व्यक्ति के सामने किये थे।

एक मेज़ के दोनों ओर रखी कुरसियों पर काकोद्‌गी और मिखाइलोवा बैठे। मेज़ पर ये वस्तुएँ रखी थीं—क़लम का ढक्कन, कागज़ का एक टुकड़ा और पानी से भरे कई जार। प्रयोग से पहले कार्लोद्‌गी ने मिखाइलोवा और मेज़ पर रखी वस्तुओं के बीच हाथ डालकर यह निश्चय कर लिया कि उन दोनों के बीच कोई सम्बन्ध-सूत्र नहीं है। प्रयोग के आरम्भ में मिखाइलोवा ने क़लम के ढक्कन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। ऐसा करते समय उसका चेहरा तनावपूर्ण हो गया, और माथे की रेखाएँ और ज्यादा गहरी हो गयीं। कुछ समय बाद ढक्कन में हरकत आयी और वह धीरे-धीरे मिखाइलोवा की ओर बढ़ने लगा। उसके पीछे-पीछे पानी से भरा एक जार भी उसकी ओर बढ़ने लगा।

जब इस प्रयोग के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए तो कुछ लोगों ने अनेक सन्देह व्यक्त किये। किसी ने कहा कि शायद मिखाइलोवा ने मेज़ के कपड़े को धीरे धीरे अपनी ओर खींचा हो। पर, काकाद्‌गी ने इस सन्देह का निराकरण करते हुए कहा कि यदि मिखाइलोवा ने ऐसा किया होता तो मेज़ पर रखे अन्य जार भी उसकी ओर बढ़ते। पर ऐसा नहीं हुआ।

एक सन्देह यह व्यक्त किया गया कि सम्भवतः मिखाइलोवा ने गहरी साँस लेकर इन दोनों वस्तुओं को अपनी ओर खींचा था। पर, कालोद्‌गी ने इसके उत्तर में यह तर्क पेश किया कि यदि ऐसा होता तो जार के पास रखा काग़ज़ का टुकड़ा सबसे पहले उसकी ओर खिंचता जो वास्तव में नहीं हुआ।

एक अन्य प्रयोग में कलम के ढक्कन को जार के नीचे दवा दिया गया, ताकि यदि ढक्कन हिले, तो साथ में जार भी हिले। पर, मिखाइलोवा ने सिर्फ ढक्कन पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया, और वह ही खिचकर उसके पास आ गया, और जार नहीं।

मिखाइलोवा के मस्तिष्क की आकर्पण-शक्ति के वारे में सन्देह व्यक्त करने-वाले लोग फिर भी चुप न वैठे। अव उन्होंने यह कहा कि उसने कालोदनी को सम्मोहित (हिप्नोटाइज़) कर दिया था। इसलिए, अगले प्रयोग की फिल्म उतारने की योजना वनी। फिल्म वनाते समय, मेज़ पर एक जेवी कम्पास को छोड़कर कोई और वस्तु नही रखी गयी।

कम्पास की सूई—उत्तर दिशा के विपरीत :

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कम्पास की सूई हमेशा उत्तर दिशा ही दरसाती है। पर, मिखाइलोवा ने अपना ध्यान कम्पास की ओर केन्द्रित करके उसकी सूई को कम्पास का पूरा चक्कर लगाने को मजवूर कर दिया। फिल्म देखने से पता चलता है कि सूई ने कम्पास के कई चक्कर लगाये।

इन प्रयोगो के वाद, रूसी वैज्ञानिको ने मिखाइलोवा के मस्तिष्क की अद्‌भुत आकर्पण-शक्ति का वैज्ञानिक विश्लेपण आरम्भ किया। इस विश्लेपण के परि-णामस्वरूप, वे इस नतीजे पर पहुँचे कि मिखाइलोवा के मस्तिष्क की विलक्षण आकर्पण-शक्ति का रहस्य स्वय उसके मस्तिष्क में ही विद्यमान है, और यह भी कि यह आकर्पण-शक्ति उस आकर्पण-शक्ति से वहुत मिलती है, जिसके वल पर पृथ्वी चन्द्रमा को अपने चारो ओर परिक्रमा लगाने पर वाध्य करती है, और जो परमाणु-कणो के वीच विद्यमान है।

पर, यह आकर्पण-शक्ति मिखाइलोवा जैसे इने-गिने व्यक्तियो में ही क्यो पायी जाती है, इस प्रश्न के उत्तर में रूसी वैज्ञानिको का कहना है कि किसी भी व्यक्ति के शरीर में ऐसी कोई वस्तु नही है, जिसका निर्माण भौतिक जगत् से भिन्न किन्ही तत्त्वो से हुआ है। यदि किसी व्यक्ति विशेप के मस्तिष्क के भौतिक-तत्त्वों का सयोजन विशिष्ट ढग से हुआ हो, या इस सयोजन को एक विशेप परिचालना प्राप्त हो, तो इसमें आश्चर्य करने की कोई वात नही है।

इस सदी के आरम्भ में, आइन्सटाइन ने पदार्थ, प्रकाश और ऊर्जा के परस्पर सम्बन्ध को दरसानेवाला एक सूत्र हमें दिया। इसलिए, रूसी वैज्ञानिको ने मिखाइलोवा के मस्तिष्क की आकर्पण और विचारणा-शक्ति को पदार्थ (Matter) की ही एक विशेपता मान लिया है। वे यह भी मानते हैं कि हमारे विचार या हमारे मस्तिष्क की विचारणा-शक्ति भौतिक पदार्थो से ही निर्मित है, और विशिष्ट परिस्थितियो में यह रहस्यमयी शक्ति अन्य पदार्थो को गतिमान् भी कर सकती है।

ब्रितानी वैज्ञानिक का समर्थन

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड के प्राध्यापक ए. आर. डी. ओवन भी मस्तिष्क की रहस्यमयी शक्तियों के बारे में काफ़ी दिनों से वैज्ञानिक अनुसन्धान कर रहे हैं। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि 'मस्तिष्क की मायावी-थिरकती कोशिकाओं में जो विद्युत्-शक्ति छिपकर अपना काम करती है, वह अपने स्वरूप को ताप देने के अतिरिक्त उसे गतिशील कर सकती है, उससे अजीब-अजीब आवाज़ें पैदा करा सकती है, उससे अजीब-अजीब हरकतें भी करा सकती है। सब कुछ इस बात पर निर्भर है कि उस स्वरूप के परमाणुओं को इस शक्ति ने किस सीमा तक प्रभावित किया है।

इस क्षेत्र में शोधरत विश्व के अन्य वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी इस दिशा में काफ़ी प्रयोग करने शेष हैं। परन्तु, अभी तक जो प्रयोग हो चुके हैं, उनके परिणामों से स्पष्ट है कि जिसे भूतलीला की संज्ञा दी जाती है, वह मस्तिष्क की कोशिकाओं में निहित विद्युत्-शक्ति के कौतुक ही हैं, और यह भी कि इस विद्युत्-शक्ति का बाह्य वस्तुओं या व्यक्तियों पर प्रक्षेपण करके ऐसे कौतुकों को सम्भव भी किया जा सकता है।

भूत—अर्थात् सूक्ष्म शरीर में आप

शब्दकोष में 'भूत' के अर्थ हैं—'मृतलोक में मृत व्यक्तियों की आत्मा प्रेत प्रतिच्छाया। पर, भूत की सबसे सटीक व्याख्या है—'सूक्ष्म शरीर में स्वयं आप।' थॉमस कार्लाइल ने एक बार ठीक ही कहा था। अरबों-खरबों भूत वर्तमान में हैं, अरबों-खरबों भूतकाल में थे और अरबों-खरबों आनेवाले हैं।

कितनी भयावह है यह कल्पना कि हमारे अन्दर एक भावी भूत तो मौजूद है ही हम वर्तमान में भी भूतकाल के कोई भूत हैं।

शायद भूतों में आपका विश्वास इतना सब कुछ पढ़ लेने के बाद अभी शायद नहीं हुआ। पर, विश्वास कीजिए, भूतों पर आपके इस अविश्वास का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। सेमुअल जॉन्सन की यह उक्ति सदा आपको परेशान करती रहेगी, 'सारे प्रमाण भूतों के विरुद्ध हैं, और सारे विश्वास उनके पक्ष में।"

हम भूतों को क्यों 'देखते' और 'सुनते' हैं? शायद इसलिए कि उनके माध्यम से हम अपने मन की 'मैजिक कार्पेट' पर बैठकर, भूतकाल में जाकर अपने परिवेश को नयी निगाहों से देखना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में जिस भूत को हम देखते हैं, वह स्वयं हमारा ही विकृत रूप है और भूत हमारे पास नहीं आते हम भूतों के पास जाते हैं।

पर, जबतक वैज्ञानिक भूतों के सम्बन्ध में किसी अन्तिम निष्कर्ष पर नहीं पहुँच जाते, तबतक इस बारे में अन्तिम रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

लेकिन आप भूत है या नहीं, भूत में थे या नही, भविष्य मे कभी होंगे या नही, उनके वारे में किसने क्या कुछ कहा और लिखा है किस वैज्ञानिक ने क्या शोध की है, इस चक्कर में न पड़कर, आइए, अब कुछ सच्ची भूतकथाओं का आनन्द लीजिए। भूतो के वारे में जानकारी देकर, कुछ प्रमाणित करने का या आपके सिर पर कोई भूत-सिद्धान्त थोपने का हमारा कोई इरादा नही है। हम तो सिर्फ इतना जानते हैं कि भूतकथाएँ सवको अच्छी लगती हैं, भूतो में विश्वास करनेवालो को भी, और भूतों में विश्वास न करनेवालो को भी। और, जब भूतकथाएँ सच्ची और प्रामाणिक भी हो, तो उन्हें पढने का आनन्द कई गुना बढ जाता है।

किसी भी भारतीय भूत की सत्यकथा को इस संकलन में सम्मिलित नहीं किया गया है, आपको यह प्रतीति कराने के लिए कि भूतों पर हम भारतीयों का ही सर्वाधिकार सुरक्षित नहीं है। यों, भारतीय भूतकथाएँ भी कम रोचक नहीं हैं। पर, उनके साथ न्याय करने के लिए, पृथक् सकलन की आवश्यकता होगी।

आप इन भूतकथाओ का आनन्द लें, इससे पहले आपसे एक वात और कहनी है।

भूत वेचारे जो कुछ भी करते हैं, सशयवादियो या श्रद्धालुओ के मनोरजन के लिए नही, अपनी अतृप्त इच्छाओ ..कामनाओ और भावनाओं के वशीभूत होकर ही करते है। वे वेचारे भोगे हुए कटु यथार्थ के शिकार हैं। उनपर हँसा जा सकता है, गुस्सा आ सकता है . .पर ज्यादातर उनपर तरस ही आता है।

. .जैसा कि आपको आगे दी गयी सच्ची भूतकथाओ को पढकर स्वय लगेगा।

अब, लीजिए, पढिए ये कहानियाँ ... . . .

हरिमोहन शर्मा

बम्बई, ८ मार्च, १९७४

आभार :

मैं उन सभी पत्र-पत्रिकाओ और पुस्तको के लेखको और प्रकाशको के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी सामग्री स्थान-स्थान पर, उनका हवाला देकर उद्धृत की गयी है।

हरिमोहन शर्मा

अभिनेत्री मे वेस्ट और उनका भूत दोस्त

भूतों में हॉलीवुड की सफलतम अभिनेत्री मे वेस्ट का विश्वास उन दिनों जाग्रत् हुआ था जब वे अपनी लोकप्रियता के चरमोत्कर्ष पर थीं।

उन दिनों वे एक धनी अभिनेत्री तो थी हीं एक सफल नाटक-लेखिका भी थीं। एक सफल अभिनेत्री और नाटक-लेखिका जिन सांसारिक सुखों की कामना कर सकती थीं वे सब उन्हें उपलब्ध थे। पर, कभी-कभी उन्हें लगता था—इन सुखों के बाद क्या? क्रमश: अध्यात्म और मरणोत्तर जीवन में उनकी रुचि जाग्रत् होने लगी। उनका काफ़ी समय धर्मोपदेशकों के साथ व्यतीत होने लगा।

१९४१ में एक दिन उन्होंने लॉस एंजिल्स के एक समाचार-पत्र में पढ़ा कि वहाँ शीघ्र ही एक धार्मिक सम्मेलन होने जा रहा है। वह अपने मैनेजर जिम टिमोनी और मिकी नामके एक नौजवान के साथ इस सभा में गयीं।

सभा के अध्यक्ष थे—जैक कैली। अपने भाषण के बीच में उसने S अक्षर से शुरू होनेवाला एक नाम लेकर मिकी की ओर इशारा किया। चकित मिकी ने टिमोनी से बुदबुदा कर कहा "यह तो मेरा मूल पारिवारिक नाम है। इसे कैसे मालूम पड़ा?'

आगे जैक कैली ने कहा 'S' अक्षर से शुरू होनेवाले नामवाले व्यक्ति के पिता भी यहीं मौजूद हैं। मेरा मतलब है कि उसके पिता की आत्मा यहाँ मौजूद है। वह अपने पुत्र को यह बताना चाहता है कि उसकी लाश पानी में फेंकने से पहले उसकी हत्या की गयी थी। (मिकी ने बाद में टिमोनी को बताया कि लोग यही समझते थे कि उसके पिता की मृत्यु पानी में डूबने की वजह से हुई थी। स्वयं उसका भी यही विश्वास था।)

जैक कैली की बातों से प्रभावित होकर मे वेस्ट ने स्वयं उससे मिलने का निश्चय किया। उन्होंने एक शाम कैली को अपने घर आने की दावत दी। इस अवसर पर उन्होंने अपने अनेक नामी मित्रों के अलावा अपनी बहन बेवरली वेस्ट को भी आमन्त्रित किया।

आने के बाद जैक कैली ने मे वेस्ट से कहा कि वह कमरे में उपस्थित लोगों के विगत वर्तमान और भावी जीवन के बारे में बतायेगा। पर, इसके

पहले उसने प्रार्थना की कि उसे उसकी कुरसी से बांध दिया जाये, और उसकी आंखें एक कपड़े से बन्द कर दी जायें, और ऐसा हो जाने पर कमरे के लोग अपने स्थान बदल लें।

यह व्यवस्था हो जाने के बाद, कैली ने कमरे में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के बारे में ऐसी गुप्त बातें बतानी आरम्भ की, जो खुद उन्हें ही मालूम थी। इनमें से कुछ बातें सुननेवालों के लिए काफ़ी परेशानी का कारण बनी।

सबसे अन्त में, कैली ने एक सीलबन्द लिफाफा उठाया। इसमें कुछ सवाल लिखे थे, जो मे वेस्ट ने कैली से पूछे थे।

पहला सवाल था—"क्या अमेरिका महायुद्ध में भाग लेगा ?"
इस प्रश्न के उत्तर में कैली ने उत्तर दिया, "अगले तीन महीनो में अमेरिका पर हवाई द्वीप मे अचानक हमला होगा।"

दूसरा सवाल था—"यह महायुद्ध कब तक चलेगा ?"

इसके उत्तर में कैली ने कहा, "पांच-छह साल तक।" और फिर आगे अपनी ओर से जोड दिया, "और प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट अपने चौथे सेवा-काल की अवधि में ही चल बसेंगे।"

तीसरा सवाल था—यदि अमेरिका ने महायुद्ध में भाग लिया तो क्या उसकी जीत होगी ?"

उत्तर मिला—"हां। अमेरिका और इग्लैण्ड मिलकर लडाई में जीतेंगे।"

अन्य प्रश्न व्यक्तिगत थे, पर, कैली ने उनके उत्तर भी एकदम सही दिये। मे वेस्ट को पूरा यक़ीन हो गया कि कैली की अद्‌भुत योग्यता का स्रोत या कारण कुछ भी हो, वह प्रामाणिक थी, इसमें कोई सन्देह नही था।

इस घटना के कुछ समय बाद, एक आदमी जो ब्रुकलिन में रहता था, मे वेस्ट की बहन के सेन फरनाण्डे घाटी में स्थित फ़ार्म में उससे मिलने आया। उसका कहना था कि वह वेस्ट के माता-पिता को अच्छी तरह जानता है। बेवरली वेस्ट को उस समय यह नही मालूम था कि यह आदमी अपनी पत्नी की हत्या करके आया है, हालांकि रेडियो और समाचारपत्र इस हत्या का समाचार प्रसारित कर चुके थे। इसका एक कारण यह भी था कि इस आदमी ने बेवरली के घर आनेवाले सब समाचारपत्रो का आना पिछले कई दिनो से बन्द कर दिया था, और रेडियो भी खराब कर दिया था। बेवरली का विश्वास प्राप्त करके वह उसके फार्म में काम करने लगा। वह एक मेहनती और लगन से काम करनेवाला मजदूर साबित हुआ।

इस आदमी को गिरफ्तार करने के लिए मुस्तैद पुलिस-कर्मचारी मे वेस्ट से भी मिलने आये, क्योंकि लॉस एंजिल्स में उनका घर इस आदमी के घर के बहुत पास था और उन्हें सूचना मिल चुकी थी कि यह आदमी उनकी बहन के घर

नौकरी करता है। इन लोगों को बेवरली के फ़ार्म का पता मालूम नहीं था।

पर, जब पुलिस-कर्मचारी बवरली के पुनर्वासन-केन्द्र में पहुँचे तो उन्हें मालूम हुआ कि वह आदमी दो-तीन दिन पहले फ़ार्म से चला गया है, और अपना कोई पता भी नहीं छोड़ गया है। तब मे वेस्ट ने जैक कैली की इस मामले में मदद लेने का निश्चय किया।

जब मे वेस्ट ने जैक कैली को फ़ोन करके सारी बातें बतायीं, तो कैली ने उत्तर में सिर्फ़ इतना ही कहा आप चिन्ता न करें। वह आदमी बीस मिनट पहले गिरफ़्तार हो चुका है।

मे वेस्ट ने यह बात पुलिस-कर्मचारियों को बतायी। उन्होंने लॉस एंजिल्स के पुलिस स्टेशन को फ़ोन किया तो उधर से जो उत्तर आया उससे पता चला कि सचमुच वह आदमी पचीस मिनट पहले गिरफ़्तार किया जा चुका है।

बाद में जैक कैली और लॉस एंजिल्स की एक महिला के निर्देशन में स्वयं मे वेस्ट ने प्रेत-विद्या का प्रशिक्षण और अभ्यास आरम्भ किया। इस बीच उनके मैनेजर और प्रिय मित्र जिम टिमोनी की मृत्यु हो गयी। जैक कैली की सहायता से मे वेस्ट ने जिम टिमोनी की प्रेतात्मा से सम्पर्क स्थापित किया। तब से जिम टिमोनी का भूत हमेशा मे वेस्ट के आसपास मँडराता रहता है। उसने अनेक अवसरों पर उनकी सहायता की है, और अनेक विपदाओं से उनकी रक्षा की है।

मे वेस्ट इस भूत को अपना सबसे प्यारा और विश्वसनीय मित्र मानती हैं।

उनके इसी दोस्त ने उन्हें नाटक-लेखिका बनाया। इस अनुभव को स्वयं उनके शब्दों में सुनिए

"मैं एक बार मुक्केबाजी का एक मुक़ाबला देख रही थी। अचानक मुझे लगा कि जिम टिमोनी मेरे कानों में एक कहानी सुना रहा है। कहानी के संवाद इतने सरल पर साथ ही चुभते हुए थे कि मुझे याद रह गये। घर आकर मैंने उसे एक नाटक के रूप में लिख डाला। यह नाटक आगे चलकर बहुत सफल हुआ और इससे मुझे अन्य नाटकों के लिखने की प्रेरणा भी मिली। मुझे आज भी टिमोनी के भूत से निर्देश और सन्देश प्राप्त होते रहते हैं, जो इतने ही सही निकलते हैं जितनी जैक कैली की भविष्यवाणियाँ। टिमोनी का भूत मेरा सबसे सच्चा और विश्वसनीय मित्र है।

विख्यात हास्य अभिनेत्री और शरारती भूत

अंगरेजी में एक शब्द है *Poltergeist*, जिसके अर्थ है—*गर्जनकारी दुष्ट प्रेत।* ब्रिटेन की प्रख्यात हास्य-अभिनेत्री बैट्रिस लिली—जो व्यक्तिगत जीवन में लेडी पील हैं—का भी एक ऐसा ही गर्जनकारी दुष्ट प्रेत है, जो हमेशा छाया की भाँति उनके साथ रहता है। वह कोई नुकसान तो नहीं करता पर उसकी शैतानियाँ

की वजह से लिली को कई वार वडी परेशानी का सामना करना,पडा है ।

यो तो यह प्रेत वर्षों से लिली के साथ था, पर उसने अपनी उपस्थिति का अहसास उस समय कराया, जव वे अमेरिका के पॉम वीचहाउस थियेटर में अपना विशेष कार्यक्रम 'ऐन ईवनिंग विद वैंट्रिम लिली' (वैंट्रिस लिली के साथ एक शाम) प्रस्तुत कर रही थी । उस वक़्त उनके साथ अभिनेत्री कॉन्सटैन्स कार्पेण्टर भी थी । इस अवसर पर उनके साथ दुष्ट प्रेत ने जो कुछ किया, उसका वर्णन स्वयं उनके शब्दो में सुनिए

"चूँकि मेरे ड्रेसिंग रूम में काफी जगह थी, इसलिए कॉन्सटैन्स ने भी अपनी पोशाक वहीं रखने का निश्चय किया । ड्रेसिंग रूम की चावी एक नौकरानी के पास रहती थी, जो मेरे पास कई वर्षो से थी, और पूर्णतया विश्वसनीय थी । एक दिन वडा तमाशा हुआ । एक प्रदर्शन से पहले कॉन्सटैन्स ने देखा कि उसकी स्कर्ट, जिसे वह हमेशा प्रदर्शन के समय पहनती थी, कुछ छोटी हो गयी हैं । उसने जल्दी मे उस स्कर्ट की वखिया उवेड दी, और किसी तरह उसे पहनने योग्य वना लिया । प्रदर्शन के वाद उसने स्कर्ट को ड्रेसिंग रूम में ही रख दिया ।

"वाद में उसने और मैंने यह मालूम करने की कोशिश की कि स्कर्ट को छोटा किसने किया था । नौकरानी ने शपथ लेकर कहा कि उसने ड्रेसिंग रूम की चावी किसी को नहीं दी थी । जव मैंने स्कर्ट को ध्यान से देखा तो पाया कि स्कर्ट की नयी वखिया, जिसके कारण वह सहसा छोटी हो गयी थी, पीले रग के धागे से की गयी थी, जो हमारी यूनिट के किसी व्यक्ति के पास नही था । वखिया का काम वडी निपुणता से किया गया था, मानो किसी निपुण दरजी का काम हो । वाद में, मुझे लगा, हो न हो, यह मेरे मित्र शरारती प्रेत का ही काम है ।

"अपने कार्य-क्रम के एक दृश्य में मुझे हाथ में काले रग का एक छोटा-सा पखा लेकर आना पडता था । एक वार, इस दृश्य से पहलेवाले दृश्य के वाद जव मैं ड्रेसिंग रूम में आयी, तो मैंने देखा कि पखा हमेशा की तरह मेज पर पडा है । मेरी नौकरानी ने ड्रेसिंग रूम का ताला वन्द कर दिया, और मेरे साथ स्टेज पर आ गयी । जव मैं उसके साथ अगले दृश्य के लिए लौटी, तो पखा मेज पर नही था । मेज पर ही नही, सारे ड्रेसिंग रूम में कही नही था । नौकरानी ने और मैंने सारा ड्रेसिंग रूम खोज मारा, पर पखा कही न मिला । हारकर मुझे दूसरे पखे से काम चलाना पडा । यह शरारत भी मेरे दोस्त प्रेत की ही थी ।

"अगले दिन, जव मैं नौकरानी के साथ ड्रेसिंग रूम में आयी, तो यह देखकर चकित रह गयी कि पखा मेज पर ठीक उसी जगह रखा हुआ है, जहाँ पहले रखा था । सिवाय हमारे दोस्त प्रेत के वन्द कमरे में प्रवेश करके कौन उसे वहाँ रख सकता था ?

"कार्य-क्रम के एक भग्य दृश्य में मुझे एक जापानी किरीट धारण करना पड़ता है। इस किरीट में, जो वास्तव में काले रंग की एक विग थी छोटे-छोटे अलंकृत टाँके लगे हुए थे। एक दिन मैंने देखा कि काफ़ी मजबूती से उस विग में लगे टाँके किसी ने उसमें से अलग कर दिये हैं। वे टाँके मुझे ड्रेसिंग रूम की मेज़ पर सजे हुए दिखाई पड़े। मेरी यूनिट के किसी भी सदस्य की यह हिमाक़त नहीं हो सकती थी कि उन टाँकों को विग से अलग करके मेज़ पर इस तरह सजा दे। सब मुझसे इतना प्यार करते थे। मुझे यह जानने में ज़्यादा वक़्त न लगा कि यह मज़ाक़ भी मेरे दोस्त प्रेत का ही है।

'और इन घटनाओं को तो मैंने मज़ाक़ समझकर टाल दिया पर जब एक दिन मेरी प्रिय अँगूठी जिसे मैंने ड्रेसिंगरूम की मेज़ पर उतारकर रखी थी, अचानक मेरे देखते-देखते ग़ायब हो गयी, तो मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैंने सारा ड्रेसिंगरूम छान मारा, पर अँगूठी कहीं न मिली। अन्त में जब मैं एक कुरसी पर बैठकर अपना माथा हाथ में लिये सोच रही थी, तो मुझे कानों में किसी की खिलखिलाहट भरी यह आवाज़ सुनाई पड़ी, ज़रा उस ऊँची शेल्फ़ पर चढ़कर तो देखो। यह खिलखिलाहट-भरी आवाज़ हमारे पूर्व-परिचित दोस्त की ही थी। मैंने शेल्फ़ पर चढ़कर देखा, तो वाक़ई अँगूठी वहीं रखी थी।

"जब मैं पाँम बीच थियेटर में अपना कार्यक्रम पूरा करके न्यूयॉर्क आयी तो वहाँ एक एपार्टमेण्ट लेकर रहने लगी। मेरे दोस्त ने यहाँ भी मेरा पीछा न छोड़ा और अपने करतबों से मुझे हँसाता और परेशान करता रहा।

'मेरा यह दोस्त अवश्य कोई प्रामाणिक भूत था और उसे यह गवारा नहीं होता था कि कोई नक़ली भूत हमारे घर में आकर रहे। इसका प्रमाण मुझे तब मिला जब मेरी बहन म्यूरियल ने ब्रिटेन के प्रख्यात कला-समीक्षक हैनन स्वैफ़र के निवास-स्थान पर एक 'मीडियम' के द्वारा अपने पति की आत्मा से साक्षात्कार करने का प्रयत्न किया था।

'यह 'मीडियम एक धोखेबाज़ 'मीडियम' था, और जब उसने हाथ की कोई सफ़ाई दिखाकर, भूत के आकार का कोई ढाँचा हमारे सामने छाये अँधेरे में खड़ा किया तो मेरे दोस्त ने ज़ोर से फूँक मारकर उस ढाँचे को बेनक़ाब कर दिया और उसकी असलियत हम सबको मालूम हो गयी। हो सकता है, यह मेरी कल्पना ही हो पर मुझे उस समय एक हल्की-सी खिलखिलाहट भी सुनाई दी थी। क्या अजीब संयोग है कि मुझ हास्य-अभिनेत्री को एक हास्यप्रिय भूत ही दोस्त के रूप में मिला।

एक भूत का पुनर्जन्म एक अभिनेत्री के घर में

हॉलीवुड की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री जॉन क्रॉफ़र्ड को भटीजी जॉन को भी

अमेरिकी रंगमंच की एक सुविख्यात अभिनेत्री है। उसकी शक्ल जॉन क्रॉफर्ड से बहुत मिलती है, और कभी-कभी लोगों को उसे देखकर जॉन क्रॉफर्ड का धोखा हो जाता है।

जॉन लो के पति हैं बरनार्ड साइमन, जो एक प्रतिभाशाली लेखक हैं। उन्होंने मध्यकालीन पेरू की इन्का भाषा और बोली का अध्ययन किया है, और उसे भलिभाँति पढ-लिख और समझ लेते हैं।

एक दिन जब साइमन अपने घर आ रहे थे, तो रास्ते में उन्हें पुरानी वस्तुओं की एक दुकान में प्राचीन काल के सिंहासनों के आकार और शक्ल की लकड़ी की बनी एक कुरसी दिखाई दी। उन्हें याद आया कि ऐसे सिंहासनों का प्रयोग पेरू के प्राचीन राजा किया करते थे। उन्होंने कुरसी की कीमत चुकाकर उसे खरीद लिया, और उसे घर ले आये।

कुछ दिनों तक यह सिंहासननुमा कुरसी बरनार्ड और उनके मित्रों में चर्चा का विषय बनी रही, लेकिन फिर सब उसे भूलने लगे—बरनार्ड भी, और उनकी पत्नी जॉन लो भी।

कुछ सप्ताह बाद, रात में बरनार्ड की आँखें अचानक खुल गयीं। उठते ही उन्होंने कमरे की हलकी रोशनी में एक लम्बे-चौडे आकर्षक पुरुष को सिंहासन-नुमा कुरसी पर बैठे देखा। वे पलंग से उठकर उसके पास बढे ही थे कि वह आदमी अचानक गायब हो गया। इस समय तक जॉन लो भी जाग गयी थी, और उसने भी इस लम्बे-चौडे पुरुष को अन्तर्धान होते देखा।

इसके बाद, पति-पत्नी को रात के समय, कई बार, इस पुरुष की उपस्थिति की अनुभूति हुई। पर, जब-जब उन्होंने उससे बातें करने या उसके पास जाने की कोशिश की, तब-तब उसे अचानक गायब हो जाते पाया। अन्त में, उन्होंने अपने एक मित्र की मदद से एक प्रख्यात 'मीडियम' द्वारा यह जानने की कोशिश की कि यह आदमी कौन है?

यह 'मीडियम' १५ नवम्बर को आनेवाली थी, पर १२ नवम्बर को एक विचित्र घटना घट गयी।

जॉन लो और उसके पति बरनार्ड साइमन गायब हो जानेवाले रहस्यमय पुरुष के बारे में बातें कर रहे थे। जॉन लो का मत था कि यह रहस्यमय पुरुष कोई भूत है। पर, बरनार्ड ने हँसकर कहा कि वे भूत-वूत में विश्वास नहीं करते। ऐसा कहकर, वे कमरे से बाहर चले गये। तभी जॉन लो ने देखा कि सामने मेज पर रखी एक लघुमूर्ति मेज से जमीन पर अचानक इतने जोर से गिरी कि गिरते ही उसके दो टुकडे हो गये।

तीन दिन बाद जब 'मीडियम'—श्रीमती मेयर्स—वहाँ आयी, तो सिंहासन-नुमा कुरसी पर बैठकर तन्मयावस्था में हो गयी। कुछ देर बाद उन्होंने पेरू की

प्राचीन भाषा में विदग्ध बरनार्ड भलिभाँति परिचित थे कुछ बातचीत शुरू किया।

जो कुछ श्रीमती मेयर्स ने कहा उसका आशय यह था कि यह पुरुष प्राचीन पेरू में राजा था, और उसका नाम हुआस्का था। बरनार्ड अपने एक पूर्वजन्म में हुआस्का के पुत्र थे। मृत्यु के बाद हुआस्का ने कोई जन्म नहीं लिया था और भूत बना घूमता था। पर बरनार्ड ने कई जन्म लिये थे और इस जन्म में वह जॉन स्मा का पति था। हुआस्का अपने 'पुत्र' से मिलने का इच्छुक था और उसी की 'प्रेरणा' के फलस्वरूप बरनार्ड ने पेरू की प्राचीन भाषा सीखी थी और अपने भूतपूर्व पिता का सिंहासन खरीदा था। इस प्रकार, वह अपने भूतपूर्व 'पुत्र' को अपनी उपस्थिति का अहसास कराना चाहता था।

इस रहस्योद्घाटन ने भूतों में विश्वास न करनेवाले बरनार्ड को कहीं गहरे में हिलाकर रख दिया। उसने मन ही मन अपने भूतपूर्व 'पिता को प्रणाम किया। इसके बाद हुआस्का के भूत ने कभी प्रकट होकर बरनार्ड और जॉन को को तंग नहीं किया। उसकी इच्छा पूरी हो चुकी थी।

जब एक भूत ने अपने रिश्तेदारों को फ़ोन किया

हॉलीवुड की एक अन्य विख्यात अभिनेत्री इडा लुपिना भी बड़े नाटकीय ढंग से कई बार भूतों से सम्पर्क कर चुकी हैं। भूतों से उसका पहला सम्पर्क तब हुआ था जब वे कुल नौ वर्ष की थीं।

उन दिनों वह अपनी दादी माँ और पिता के साथ लन्दन के एक उपनगर में रहा करती थी। उसके पिता के एक मित्र एण्ड्रयू मेयर अक्सर उसके घर आया करते थे। वे बहुत खुशमिज़ाज आदमी थे और वह उन्हें बहुत चाहती थी और उन्हें 'चचा एण्डी' कहा करती थी।

एक रात उसे सपना दिखाई दिया कि 'चचा एण्डी बड़े कष्ट में हैं, और उससे तथा उसके परिवार के सदस्यों से मिलना चाहते हैं। वह फ़ौरन जाग गयी और भागी-भागी रसोईघर में गयी जहाँ उसकी दादी उसके माता-पिता के लिए, जो कई दिन बाहर रहने के बाद घर आ रहे थे खाना बना रही थीं।

जब लुपिना अपनी दादी को अपने सपने के बारे में बता रही थी तभी फ़ोन की घण्टी बजी। लुपिना की दादी ने उससे कहा जाओ देखो कौन है? मेरे हाथ आटे में सने हैं।

लुपिना ने फ़ोन उठाया तो उसे एक बहुत महीन और अस्पष्ट आवाज़ सुनाई दी। वह फ़ोन रखनेवाली ही थी कि वह आवाज़ पहले से ज़्यादा भारी और स्पष्ट हो गयी। अब लुपिनो ने साफ़-साफ़ सुना, उसके 'चचा एण्डी कह रहे थे 'स्टैनले (लुपिनो के पिता) को बुलाओ। मुझे उससे बहुत ज़रूरी बातें करनी हैं।"

लुपिनो ने कहा, "अरे, आप है चचा एण्डी ! डैडी तो अभी तक घर नही आये हैं। आते ही होंगे। और, सुनाइए, आप कैसे हैं ? वहुत दिनों से हमारे घर नहीं आये ?"

चचा एण्डी यही कहते रहे, "स्टेनले को वुलाओ। मुझे उससे वहुत जरूरी वातें करनी हैं।"

अव लुपिनो ने कहा, "एक मिनट ठहरिए। मैं दादी को वुलाती हूँ।"

दादी आयी, और फोन पर चचा एण्डी से वातें करने लगी। लुपिनो ने सुना, वे कह रही थी, "क्या हुआ तुम्हे एण्डी ? क्या तुम वीमार हो, या कोई और तकलीफ है ? स्टेनले अभी तक आया नही है। जैसे ही आयेगा, तुमको फोन करने को कहूँगी।"

उधर से लाइन कट गयी, और दादी एण्डी से और वातें नही कर पायी।

दादी को लाइन के कट जाने से वडा गुस्सा आया। उन्होंने ऑपरेटर को फोन करके लाइन के कट जाने की वात वतायी। उनका यह गुस्सा तव और वढ गया, जव ऑपरेटर ने उनसे कहा कि पिछले आधा घण्टे से किसी ने उनके नम्वर पर कोई फ़ोन नही किया है। अव उनके लिए यह जानना मुश्किल हो गया कि एण्डी ने लन्दन के किस नम्वर से फोन किया था। वे गुस्से में भरी रसोईघर में आयीं, और खाना वनाने में लग गयी।

क़रीव आधा घण्टे वाद, जव स्टेनले अपनी पत्नी के साथ घर लौटे, तो लुपिनो ने अपने पिता को चचा एण्डी के फोन के वारे में वताया।

सुनकर, स्टेनले और उनकी पत्नी का चेहरा सफेद पड गया। दोनों काफी देर तक लुपिनो को एकटक देखते रहे, और फिर वोले, "तुमने सुनने में कुछ ग़लती की होगी। वह फोन चचा एण्डी का नही हो सकता।"

"क्यो नही हो सकता ?" दादी ने, जो अभी तक गुस्से में भरी थी, कहा, "मैंने खुद अपने कानो से उसकी आवाज़ सुनी थी। वह तुमसे कोई ज़रूरी वात करना चाहता था। पर, लाइन वीच में ही कट गयी, और यह न मालूम हो सका कि वह कहाँ से वोल रहा था ?"

"माँ तुम क्या कह रही हो ? एण्डी कैसे फोन करेगा ? उसे आत्महत्या किये तीन दिन हो चुके है।"

एक अशान्त भूत को शान्ति कैसे मिली ?

दस साल तक अपने घर में एक भूत की छेडखानियो से परेशान होकर अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार और कलाकार डेल्टन वॉकर उस घर को भूत के सिपुर्द कर और पडोस में एक नया घर वनवाकर वहाँ रहने लगे।

वॉकर का वह घर, जो उन्होंने भूत की छेडखानियो की वजह से छोडा,

अठारहवीं शताब्दी के द्वितीयार्द्ध में बना था। हालांकि सरकारी कागजों में यह दिखाया गया था कि इसे सबसे पहली बार अब्राम्स परिवार ने १८११ में खरीदा पर लोगों का कहना था कि १८११ से पहले भी इसके कई स्वामी बदल चुके थे।

१९४२ में जब बॉकर ने इसे खरीदने का निश्चय किया तब घर की हालत बहुत खस्ता थी। पर, बॉकर का यह घर इसलिए पसन्द था कि उसमें स्थान काफ़ी था और वहाँ रामपो पर्वत का नयनाभिराम दृश्य भी दिखाई देता था। उसकी मरम्मत कराने और उसे सजाने में बॉकर को कई वर्ष लगे, और काफ़ी पैसा भी खर्च करना पड़ा। पर, मरम्मत कराते समय और उसे सजाते समय बॉकर ने इस बात का खास ध्यान रखा कि उसका मूल सौन्दर्य नष्ट न होने पाये और उसमें प्रवेश करने के बाद मेहमान को लगे कि वह अठारहवीं शताब्दी के किसी आलीशान और आरामदेह घर में ही प्रवेश कर रहा है।

घर एक पहाड़ी पर बना है, जहाँ पहले खेती होती थी। जब अमेरिका में गृहयुद्ध हो रहा था तो औपनिवेशिक सेना का प्रधान कार्यालय यहीं स्थित था। १७७९ की 'स्टोनी प्वाइण्ट' की ऐतिहासिक लड़ाई इस घर से कुछ मील के फ़ासले पर ही लड़ी गयी थी। घर में हथियारों आदि को रखने के अलावा युद्धबन्दियों को भी रखा जाता था।

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में विल्सन नाम के एक बैंकर ने इस मकान को अब्राम्स-परिवार से खरीदा। पर उसने पहाड़ी और खेतों पर अधिक ध्यान दिया, और मकान की कोई परवाह नहीं की। धीरे धीरे काल और मौसम के प्रभाव के कारण मकान ढहने लगा। बाद में इस सूने घर में आसपास के इलाक़े के लोग आकर रहने लगे। ये लोग यहाँ रहे तो पर उन्होंने मकान की मरम्मत करने और उसे अच्छी हालत में रखने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

जब बॉकर ने इस घर को खरीदा था तब सिर्फ़ एक रसोईघर और उसके पास का एक छोटा-सा कमरा ही काम में आता था। बाक़ी कमरों में पुराना फ़र्नीचर और सामान भरा था। ऊपर के हिस्से में तीन छोटे-छोटे कमरे और एक अटारी थी। पर, इन सबमें गृहयुद्ध के ज़माने के हथियार, खिलौने और कपड़े वग़ैरह भरे थे।

जब बॉकर ने घर की मरम्मत करवायी थी तब उसे पास के एक छोटे-से होटल में जाकर रहना पड़ा था। पर, वह कभी-कभी आकर घर के ऊपर के हिस्से में बिछी अमेरिकी गृहयुद्ध के ज़माने की एक खाट पर जाकर सो जाता था। ऐसे अवसरों पर उसे यह स्पष्ट अनुभूति होती थी कि औपनिवेशिक सेना का कोई सिपाही भी कमरे में है।

मकान की मरम्मत के दौरान और उसके बाद बॉकर को अपने पड़ोसियों

से सुनने को मिला कि उसका घर भुतहा घर है। एक महिला ने उसे यह भी बताया कि उसके मकान में एक बूढ़े आदमी का भूत रहता है, जो कभी बच्चों को डराता है, और कभी पड़ोसियों के दरवाज़े खटखटाता है। इन अफ़वाहों के बावजूद, वॉकर ने वहीं रहने का फैसला किया।

वॉकर ने १९४४ में अपने भुतहा घर में आकर रहने का फैसला किया था। एक शाम जब वह आगे के कमरे में सो रहा था, तब उसने सुना कि कोई ज़ोर-ज़ोर से बाहर के दरवाज़े को खटखटा रहा है। बाद में ऐसा लगा, कोई लोहे के डण्डे से दरवाज़े को पीट रहा है। वॉकर को उस समय किसी के आने की कोई आशा नही थी, फिर भी उसने ज़ोर से कहा, "अन्दर चले आओ।" पर, कोई अन्दर नही आया। उसने उठकर दरवाज़ा खोला, और बाहर देखा। पर, बाहर, दूर-दूर तक कोई नही था।

अगले दिन, वॉकर के बटलर जॉनी ने उससे कहा कि घर तो अच्छा है, पर उसमें कोई ऐसी चीज़ ज़रूर है, जो उसे वहाँ आराम से नही रहने देती। पूछने पर उसने बताया, "मैं कल रात ऊपर के हिस्से के एक छोटे-से कमरे में सोया था। रात को मुझे तीन बार उठना पड़ा, क्योंकि मैंने साफ़-साफ़ सुना कि कोई बाहर का दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटा रहा है।"

घर की छोटी-मोटी मरम्मत करनेवाले एक इतालवी मजदूर ने, जो जॉनी के कमरे के पासवाले कमरे में सोता था, वॉकर को बताया कि उसे रात-भर किसी आदमी के भारी-भारी बूटों से फर्श पर चलने की आवाज़ मिलती रही। उसने उठकर सारे घर का चक्कर लगाया, पर उसे वहाँ कोई अजनबी दिखाई नही पड़ा।

वॉकर के पास एक रात ठहरने के लिए आनेवाले दो मेहमानों ने भी उससे शिकायत की कि उन्हें रात-भर किसी आदमी के भारी-भारी बूट पहनकर फर्श पर चलने की आवाज सुनाई देती रही थी। पर, खोज करने पर उन्हें कोई ऐसा आदमी घर में दिखाई नही पड़ा।

१९५० की बात है। एक दिन वॉकर अपनी सेक्रेटरी के साथ रसोईघर में बैठे रात का खाना खा रहे थे। रसोईघर के पास ही घर का प्रवेश-द्वार है। सहसा, वॉकर को लगा कि किसी ने ज़ोर से प्रवेश-द्वार को खटखटाया है। सेक्रेटरी ने उठकर दरवाज़ा खोला, पर उसे वहाँ कोई दिखाई नही दिया।

इसके बाद, १९५२ में, जब वॉकर अपने कई दोस्तों के साथ नीचे के एक कमरे में बैठा था, और ऊपर के हिस्से में कोई न था, सबको ऊपर के हिस्से में किसी के ज़ोर से गिरने की आवाज सुनाई दी। सबने फौरन ऊपर जाकर देखा, पर कोई दिखाई नही दिया।

पिछले आठ सालों में वॉकर तथा घर में रहनेवाले दूसरे लोगों को घर के

भूत की छेड़खानियाँ सुनाई तो थी थीं पर किसी ने कभी तक भूत को देखा नहीं था। अब सबको भूत की छेड़खानियों के नये-नये रूप दिखाई देने लगे।

एक दिन बटलर ने कहा कि एक दरवाज़े के काँच का एक बड़ा टुकड़ा ग़ायब है। टुकड़ा इतना बड़ा था, और इतनी मज़बूती से जड़ा था कि उसे आसानी से निकालना मुमकिन न था। फिर भी वह वहाँ से निकलकर न जाने कहाँ ग़ायब हो गया था। उसने टुकड़े की खोज में सारा घर छान मारा पर वह कहीं न मिला। एक सप्ताह बाद उसने उस टुकड़े को रसोईघर के फ़र्श पर रखा पाया। उन दिनों घर में बोंकर और बटलर को छोड़कर कोई नहीं रहता था।

एक अन्य अवसर पर, जब बोंनी सोने के कमरे तक जानेवाली सीढ़ियाँ साफ़ कर रहा था तब कोने में टँगी दो सौ साल पुरानी एक कलाकृति अचानक अपनी जगह से टूटकर उसके सिर पर आ गिरी। उसी दिन उस कमरे में सोनेवाली एक महिला ने जो बोंकर की मेहमान थी बोंकर को बताया कि किसी ने बिस्तर के पास रखी हुई बुकशेल्फ़ से एक मोटी किताब निकालकर उसकी तरफ़ फेंकी थी। कमाल यह कि उस वक़्त कमरे के अन्दर कोई नहीं था, और उसका दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। कमरे की एकमात्र खिड़की भी बन्द थी।

एक दिन, बोंकर को उसके बटलर ने दिखाया कि किस तरह उसने एक सुबह रसोईघर की सफ़ेद दीवारों पर बड़े-बड़े काले निशान पाये जो किसी भारी चीज़ को दीवार पर मारने की वजह से बने थे। घर के भूत के अलावा यह किसी और का काम नहीं हो सकता था।

एक बार बोंकर अपने मित्रों के साथ हॉल में बैठे थे कि सबको अचानक ज़ोरों की ठण्ड महसूस होने लगी। बाहर मौसम इतना सर्द नहीं था और काफ़ी खुशगवार था। जब यह ठण्ड क्रमशः बढ़ती गयी तो बोंकर को भूत का ध्यान आया। उसने इस कल्पित भूत का ध्यान कर कहा "अरे भाई अब हमपर रहम करो। ठण्ड फ़ौरन अपने आप कम हो गयी।

पर, सबसे अधिक आश्चर्यजनक घटना नवम्बर, १९५२ में घटी।

बोंकर के दो मित्र कुछ दिन के लिए उसके घर में ठहरे थे। दोनों का भूतप्रेतों-जैसी चीज़ों में कोई विश्वास न था। दोनों ने बोंकर से भूत के बारे में सुनकर कहा कि वे ऊपर के हिस्से में स्थित उसी कमरे में सोयेंगे जहाँ भूत की मौजूदगी ज़्यादा महसूस होती है। बोंकर ने उन्हें बहुत मना किया पर वे न माने। अन्त में उसने कहा "पर मेरा एक सुझाव अवश्य मानें। सारी रात बत्तियाँ जलती रहने दें।'

एक घण्टा बाद बोंकर का एक पड़ोसी भागा भागा उसके पास आया, और

उससे बोला, "मेहरबानी करके यह मज़ाक बन्द कीजिए।"

वॉकर ने पूछा, "कैसा मज़ाक ?"

इसपर उस पडोसी ने कहा, "आपके घर के ऊपर के हिस्से के कमरे में जल रही रोशनी कभी बुझती है, कभी जलती है। यह क्या तमाशा चल रहा है आपका ? आपके घर की और सब बत्तियाँ बराबर जल रही है।"

वॉकर ने पडोसी से कहा कि ऐसा बिजली की खराबी से हो सकता है, और वह कोई मज़ाक़-वज़ाक नही कर रहा है।

लेकिन, एक घण्टा बाद, वॉकर के एक मित्र को सोते-सोते ऐसा लगा कि किसी ने ज़ोर से उसके मुँह पर चाँटा मारा है। जैसे ही वह उठकर बैठा, उसने देखा कि सामने कुरसी पर रखी कमीज़ अपने आप उड रही है। कमरे की सब खिडकियाँ और दरवाज़े बन्द थे, इसलिए कमीज के तेज़ हवा के कारण उडने का कोई सवाल ही नही उठता था। यह भूत का ही काम था। उसके अलावा और किसका हो सकता था, क्योंकि कुरसी भी ज़ोर से हिल रही थी।

जब सुबह को उस दोस्त ने यह घटना वॉकर को सुनायी, तो वॉकर ने कहा, "तुम्हारी यह बात सुनकर मुझे एडिथ वॉरटन की एक भूत-कहानी की याद आ गयी। उसमें मेडफोर्ड नामक एक पात्र अचानक उठकर पाता है कि उसे किसी ने ज़ोर का झटका दिया है। फिर उसे लगा कि कोई उसके कमरे में मौजूद है। कोई दिखाई नही दे रहा था, और न किसी की आहट हो रही थी, पर एक अजीब-सी अनुभूति थी कि कोई न कोई कमरे में अवश्य है।"

फिर उसने कहा, "जब से मैं इस घर में आया हूँ, एक दिन भी यहाँ अकेला नही सोया। इसीलिए, मैंने यहाँ से कुछ दूरी पर अपने रहने-सोने के लिए एक अलग कमरा बनवाया है, जहाँ मुझे कोई भूत नही सताता। जब लोग मुझे चिढ़ाते हैं कि मैं भूतो से डरता हूँ, तो मैं उन्हें एक ही जवाब देता हूँ, अगर मैं भूतों से डरता होता, तो क्या यह जानते हुए भी कि यह एक भुतहा घर है, उसे नया बनाने में इतना पैसा खर्च करता ?"

"क्या तुम्हें भी इस घर के भूत का कोई तजुर्बा हुआ है ?"

मुझे कई बार ऐसा लगा है कि कोई इस घर में घुसने की कोशिश करता रहता है। इसीलिए हमें दरवाज़े पर बार-बार टक-टक सुनाई देती है, और लगता है, कोई ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़े को पीट रहा है। शुरू-शुरू में तो यह हालत थी कि मुझे यह देखने के लिए कि दरवाज़े पर कौन है, दिन में कम से कम बीस बार उठना पडता था। अब मैंने पुराने रास्ते के स्थान पर एक नया रास्ता बनवाया है, और अपने कमरे में बैठकर ही दूर से किसी को दरवाज़े तक आते हुए देख सकता हूँ।"

मित्र ने कहा, "तो इसके माने यह हुए कि भूत जान-बूझकर घर के किसी

आदमी को तंग नहीं करता। वह घर में आने की कोशिश करता है, और घर में आकर हर तरीक़े से सबका ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करता है।'

वॉकर अपने मित्रों के साथ काफ़ी देर तक भूत के बारे में बातें करता रहा। काफ़ी देर तक बातचीत करने के बाद तीनों ने यह निश्चय किया कि इस मामले की जाँच के लिए न्यूयॉर्क की पैरासायकोलोजी फ़ाउण्डेशन इनकारपोरेटेड को सिपुर्द कर देना चाहिए।

नवम्बर, १९५२ के एक दिन पैरासायकोलोजी फ़ाउण्डेशन से ये लोग इस मामले की जाँच के लिए आये फ़ाउण्डेशन के सेक्रेटरी-जनरल डॉ माइकल पोवर्स, श्रीमती आइलीन गैरेट (विख्यात मानसरोग विशारदा) हैन्स होल्जर और श्रीमती कैनोर डेविडसन और डॉ सियोनार्ड अमेरिका के प्रख्यात मनोवैज्ञानिक।

इन लोगों को शहर से पहाड़ी पर स्थित इस घर तक पहुँचने में क़रीब एक घण्टा लगा। उन्होंने देखा कि इस घर के आस-पास कोई और घर नहीं है। प्रवेश-द्वार के निकट लगे एक शिलालेख से इन लोगों को पता चला कि १७७९ में जब स्टोनी प्वाइण्ट का युद्ध हुआ था तब जनरल वायने का मुख्य कार्यालय यहीं था। इस स्थान को देखते ही पता चल जाता था कि यह किसी भी सेना का मुख्य कार्यालय होने के लिए आदर्श स्थान है। इसका ऐतिहासिक महत्त्व भी सबकी समझ में आ गया।

श्रीमती गैरेट एक विख्यात मानस रोग विशारदा होने के अलावा एक कुशल 'मीडियम' भी थीं। उन्होंने घर के भूत की आत्मा से सम्पर्क स्थापित करने का निश्चय किया।

दोपहर के क़रीब तीन बजे सब लोग श्रीमती गैरेट को घेरकर बैठ गये। श्रीमती गैरेट भारी लकड़ी की बनी एक कुरसी पर बैठ गयीं। खिड़कियों से आती हुई धूप उनके चेहरे पर पड़ रही थी। सम्मोहनिद्रा में सोने के बाद जब वे तन्मयावस्था में आ गयीं, तो लगता था कि उनकी आत्मा ने उनके शरीर का परित्याग कर दिया है, और वह किसी और शरीर में प्रवेश कर गयी है। यह शरीर, जैसा कि उपस्थित व्यक्तियों को बाद में पता चला उर्वानि नाम के एक भारतीय का था जो काफ़ी समय तक श्रीमती गैरेट के साथ रह चुका था। उर्वानि भूतों से सम्पर्क करने में उस्ताद था।

उर्वानि ने उपस्थित व्यक्तियों को भारतीयों की भाँति में हाथ जोड़कर नमस्कार किया, और फिर उनसे अँगरेजी में बोलने लगा। हालाँकि उसकी अँगरेजी काफ़ी निर्दोष थी पर उसके बोलने और अँगरेजी शब्दों के उच्चारण की शैली भारतीयों से बहुत मिलती थी।

इसी वक़्त एक टेपरेकॉर्डर चालू कर दिया गया और उर्वानि का प्रत्येक शब्द उसमें रेकॉर्ड होने लगा।

उर्वान : "मैं उर्वान हूँ। आप सबको मेरा नमस्कार। मेरी शुभकामनाएँ

डॉ लियोनार्ड . हम सब भी तुम्हे नमस्कार करते हैं। तुम्हार स्वागत है।

उर्वान · आप मेरे मित्र हैं। आपसे बातें करते हुए मुझे बडी खुशी है आप मुझसे क्या चाहते हैं ? मुझे आदेश दें।

डॉ लियोनार्ड : हम सब यहाँ बैठे श्री वॉकर के मित्र हैं। श्री वॉक इस घर के मालिक हैं। इस घर में पिछले कई वर्षों से कुछ ऐसी रहस्यपूण घटनाएँ घटी हैं कि उनकी जाँच के लिए हमें यहाँ आना पडा है। इस जाँच मे हमें तुम्हारी मदद की जरूरत है। श्रीमती गैरेट, जिनके माध्यम से हम तुमसे बात कर रहे हैं, का खयाल है कि किसी जमाने में यहाँ कोई व्यक्ति रहता होगा जिसका प्रभाव आज भी इस घर पर दिखाई देता है।

- उर्वान · हाँ, मेरा भी यही खयाल है। मैं यहाँ एक अजीब इनसान को देख रहा हूँ। ऐसा इनसान जो अजीब होने के अलावा काफी परेशान भी है उसे आप सनकी भी कह सकते हैं। देखिए, आप सब लोग शान्त हैं। मैं भ शान्त स्वभाव का हूँ। पर, इस उपद्रवी इनसान ने यहाँ के शान्त वातावरण क शान्ति भग कर दी है। आप यह नहीं देख सकते, पर मैं देख सकता हूँ (यहाँ उर्वान की आवाज़ काँपने लगी, और श्रीमती गैरेट का हाथ भी काँपन लगा।)

डॉ. लियोनार्ड ओह !

उर्वान ऐसी हालत में. बेहतर यही होगा कि.. आप लोग ही इस अशान्त प्राणी से खुद निबटें। इसीलिए, मैं हट जाता हूँ। इससे, मैं समझता हूँ वातावरण कुछ शान्त हो जायेगा। जब आप उससे बात कर चुकेंगे, तो मैं फिर प्रकट हो जाऊँगा। ठीक है न ?

डॉ लियोनार्ड ठीक है।

उर्वान जाते-जाते मैं इतना बता देना जरूरी समझता हूँ कि यह अशान्त प्राणी, यह भूत तरुण है, और काफ़ी परेशान है। उसने अपने जीवन में काफ़ी कष्ट सहे हैं, और मरने से पहले वह अपने होशोहवास खो बैठा था। अच्छा, अब मैं जाता हूँ ।

अब एक क्षण को ऐसा लगा कि श्रीमती गैरेट, जो अब तक उर्वान के शब्दो का उच्चारण कर रही थी, प्राणहीन हो गयी हैं। फिर धीरे-धीरे उनका शरीर किसी और व्यक्ति का शरीर बन गया, और श्रीमती गैरेट की आत्मा उसके माध्यम से बोलने लगी।

वह आवाज़ बडी डरी हुई और काँपती हुई थी। और तभी श्रीमती पर जैसे फ़ालिज़ गिर गया हो। उनकी आँखें, बिना झपके, बिना पहचाने

देख रही थीं और उनका चेहरा बुरी तरह सफ़ेद और विकृत हो गया था। वे कभी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती थीं, कभी चिल्लाने लगती थीं, और कभी लम्बी लम्बी साँस लिये जाती थीं।

फिर वह अचानक फ़र्श पर गिर पड़ीं। अब उनकी ज़बान से अजीब और अस्पष्ट शब्द निकल रहे थे। वह बार-बार फ़र्श पर से उठने की कोशिश कर रही थीं, पर उठा नहीं जाता था। फ़र्श पर एक बेंत पड़ी थी। उन्होंने उसके सहारे उठने की कोशिश की पर लड़खड़ाकर नीचे गिर पड़ी। ज़ाहिर था कि जिस अभागे जीव के शरीर में इस समय श्रीमती गैरेट की आत्मा ने प्रवेश किया था उसकी एक टाँग बुरी तरह घायल थी या उस पर फ़ालिज गिर गया था। बीच-बीच में वे अपने सिर को भी सँभाल लेती थीं जिससे लगता था कि उस अभागे प्राणी के सिर में भी काफ़ी चोट लगी है।

डॉ. विकोगाडे हम सब तुम्हारे दोस्त हैं, और तुम्हारी मदद करना चाहते हैं।

मूत हूँ —हूँ...हूँ... (सुबकियाँ और कष्टपूर्वक रोने की आवाज़)।

डॉ. विकोगाडे हमसे बात करो हमसे बात करो। क्या हम तुम्हारी मदद कर सकते हैं? (मूत की रोने की आवाज़) तुम हमसे बात कर सकते हो। शान्त हो जाओ। शान्त होकर तुम हमसे बात कर सकोगे। (मूत फ़र्श पर घिसटकर बॉकर के पास आ जाता है, और बात-चीत के दौरान बॉकर के घुटनों के पास ही बैठा रहता है। उसकी सुबकियाँ कम हो जाती हैं। वह अब अपेक्षाकृत शान्त दिखाई पड़ता है) क्या तुम अँगरेज़ी समझ सकते हो?

मूत (अँगरेज़ी में) दोस्त...मेरे दोस्त...दोस्त...रहम...रहम...मुझ पर रहम करो। (उसके अँगरेज़ी उच्चारण में पोर्तगालवासियों का उच्चारण मिला है। आवाज़ रूखी थी न भरी [illegible] पर फिर भी [illegible] है) —मैं जानता हूँ...जानता हूँ ...जानता हूँ (बॉकर की [illegible])।

डॉ. विकोगाडे [illegible] पहले भी कभी जानते थे?

मूत पत्थर...[illegible], उधर से पत्थर आ रहे हैं—[illegible]।

डॉ. विकोगाडे घबराओ मत। हम तुम्हें [illegible]।

मूत (चीख़ मारता है, फिर [illegible] है) [illegible]—

बॉकर तुम मुझसे बात करना [illegible]? [illegible] तैयार हूँ।

मूत मैं बोल नहीं सकता—

बॉकर बोल नहीं सकते? [illegible]

मूत (सिर हिलाकर) नहीं [illegible]।

डॉ. विकोगाडे तुम्हें [illegible]

भूत : (सिर हिलाकर) बोलो ! बोलो ! (वॉकर से) दोस्त ! तुम !

वॉकर : हाँ, दोस्त । हम सब दोस्त हैं ।

भूत . (अपने सिर और मुंह की ओर इशारा करते हुए) पत्थर....नहीं ?

डॉ. लियोनार्ड नही, हम तुम्हें पत्थर नही लगने देंगे ।

भूत : और पिटने से भी बचाओगे ?

डॉ लियोनार्ड हाँ, पिटने से भी बचायेंगे ।

भूत · जाना नही ।

वॉकर . कोई नही जायेगा ।

भूत मैं बात नहीं कर सकता .

वॉकर बात करो । डरो मत । हम सब दोस्त हैं ।

डॉ. लियोनार्ड हम जानते है कि तुम काफ़ी कष्ट में हो, पर उसके बावजूद तुम बोल सकते हो । तुम्हारे सामने तुम्हारे दोस्त मिस्टर वॉकर बैठे हैं । और तुम्हारा नाम क्या है ?

भूत वह मुझे बुलाते रहते हैं । मुझे जाना होगा । पर, मैं कहाँ जाऊँ, कहाँ जाऊँ ? (वॉकर के पाँव छूता है)

वॉकर मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । (भूत, अचानक, बैठ जाता है, मानो किसी ने उस पर कोई पत्थर फेंका हो) तुम्हें किस बात का डर है ?

भूत · पत्थर

वॉकर लोग तुम्हें पत्थर मारते हैं ?

डॉ. लियोनार्ड अब ऐसा नहीं होगा ।

भूत दोस्त ! वे लोग . जगली थे ..

वॉकर : कौन थे ? रेड इण्डियन लोग ?

भूत : नही । उनकी मार की वजह से मेरे दांत भी बाहर आ गये थे । (दिखाता है कि कैसे उसके मुँह पर मार पडी थी, और उसके दाँत बाहर आ गये थे)

वॉकर . दाँत बाहर आ गये ?

डॉ. लियोनार्ड उन लोगों ने तुम्हारे दाँत बाहर निकाल दिये थे ?

भूत : देखिए । मैं मेरी रक्षा कीजिए ।

वॉकर : हाँ, हाँ, हम तुम्हारी रक्षा करेंगे । अब तुम्हें कोई नही मारेगा, कोई तुमपर पत्थर नहीं फेंकेगा ।

डॉ. लियोनार्ड . तुम यहीं रहते हो ? तुम्हारा घर यही है ?

भूत . (जोर से हाथ हिलाकर, जोरदार आवाज में) नही, मैं यहाँ आकर छिपता हूँ ।

वॉकर . इस जंगली इलाक़े में ?

मृत यहाँ से मैं कहीं और जा नहीं सकता।

डॉ. लियोनार्ड किससे छिपकर तुम यहाँ आये हो?

मृत बड़े-बड़े... ताकतवर लोग ...

डॉ लियोनार्ड क्या तुम्हें मारनेवाला आदमी भी बड़ा और ताकतवर था?

मृत (चिल्लाकर) मैं सिर्फ इतना जानता हूँ....

डॉ लियोनार्ड तुम्हें उस आदमी का नाम मालूम है?

मृत (बॉकर के कन्धों पर हाथ रखकर) मुझे उनकी योजनाओं के बारे में मालूम है।

डॉ लियोनार्ड उस आदमी ने तुमसे योजनाओं के बारे में पूछा होगा। पर, तुमने नहीं बताया। इसी वजह से तुमपर मार पड़ी।

मृत (सिर हिलाकर) आह आह

डॉ लियोनार्ड इसी वजह से तुमपर पत्थर फेंका गया, तुम्हारे दाँत बाहर निकाले गये?

मृत (स्वीकृति में जोर से अपना सिर हिलाता है।)

बॉकर वे योजनाएँ कहाँ हैं?

मृत मैंने उन्हें छिपा दिया था बहुत दूर ..

बॉकर हम तुम्हारे दोस्त हैं। हमें यह बताने में कोई हर्ज नहीं है कि योजनाओं को तुमने कहाँ छिपाया था?

मृत मुझे यहाँ का एक नक्शा दीजिए।

(मृत को एक कागज और पेन दिया जाता है। वह अपने अस्थिर हाथों से उसपर कुछ लाइनें खींचता है।)

मृत देखा आपने?

बॉकर यह तो बैमन हाउस का नक्शा है।

मृत नहीं... लकड़ी का घर था

बॉकर लॉग हाउस?

मृत (सिर हिलाकर सहमति दिखाता है) योजनाएँ.. लॉग हाउस.... पत्थरों के नीचे... पन्द्रह पत्थर ..दरवाजे... योजनाएँ.. वे लोग हटाते हैं....

बॉकर क्या हटाते हैं? हथियार? गोला-बारूद?

मृत आदमी और हथियार... योजनाएँ फ्रान्सीसी लोगों के लिए थीं.... मैं उन्हें लॉग हाउस के जानेवाला था .. जहाँ जहाँ सूरज की किरणें खिड़की पर पड़ती हैं ..

डॉ लियोनार्ड दरवाजे से पन्द्रह पत्थरों की दूरी पर...

मृत जहाँ सूरज की किरणें खिड़की पर पड़ती हैं...पन्द्रह पत्थर... लॉग हाउस में नीचे.. वहाँ मैंने योजनाएँ रखी थीं... उन्हें कोई लेगा तो नहीं?

वॉकर नही, हम किसी को योजनाएँ नही लेने देंगे। हम तुम्हें अँगरेजों से बचायेंगे

भूत · (भावुकतापूर्ण स्वर में) आज तक किसी ने मुझसे यह नहीं कहा था... किसी ने मुझे अँगरेजों से बचाने की बात नहीं कही थी।

वॉकर हम तुम्हें जरूर बचायेंगे। अब कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

भूत . मुझे वापस नही भेजोगे ?

डॉ. लियोनार्ड नही, हम तुम्हें वापस नही भेजेंगे।

भूत मुझे बचाइए मेरी रक्षा कीजिए।

डॉ. लियोनार्ड तुम्हारा जन्म अमेरिका में हुआ था ?

भूत · नही।

डॉ लियोनार्ड तुम विदेशी हो ?

भूत नहीं। (क्रुद्ध स्वर में) कुत्ता वे मुझे कुत्ता कहते हैं

डॉ लियोनार्ड क्या तुम जर्मन हो ?

भूत (ज़ोर से सिर हिलाकर अस्वीकार करता है।)

डॉ. लियोनार्ड पोलैण्ड के रहनेवाले हो ?

भूत · हाँ।

डॉ लियोनार्ड यहाँ तब आये थे, जब बहुत छोटे थे ?

भूत (खुशी से) क्या तुम भी पोलैण्ड के हो ? तब तुम मेरे भाई हो, मेरे दोस्त हो।

वॉकर हाँ, मैं भी पोलैण्ड का रहनेवाला हूँ।

भूत (वॉकर के गले में हाथ डालकर) तुम मेरे भाई हो

वॉकर तुम्हारा नाम क्या है ?

भूत गोस्पोदिन! गोस्पोदिन (पोलैण्ड में गोस्पोदिन 'मालिक' को कहते हैं।)

वॉकर पर तुम्हारा नाम क्या है ? (पोलिश भाषा में) Zo dje lat ?

भूत (वॉकर का हाथ और चेहरा छूते हुए) · हैन्स ? भाई . हैन्स की तरह . मैं आन्द्रे तुम हैन्स।

वॉकर मैं हैन्स हूँ ?

भूत हैन्स ..मेरा भाई वह मारा गया। मैं भी मारा गया ।

वॉकर कहाँ ? स्टोरी पॉइण्ट पर ?

भूत बडा मैदान। लडाई। शोर। बहुत शोर। बहुत बडा मैदान। लडाई। शोर। हैन्स बिल्कुल तुम्हारी तरह

वॉकर : यह लडाई कब हुई थी ?

भूत · लगता है, कल ही हुई थी कल ही हुई थी मैं रात-भर खुले

मैदान में पड़ा रहा ...खून बहता रहा हैन्स को बुलाया ...पोस्वरी ?

बॉकर क्या तुम वहीं मर थे ?

मूत वहाँ नहीं, वहाँ (सामने की ओर इशारा करते हुए) तो तुम मुझे बचाओगे न मेरे भाई ?...मेरे दोस्त (अपनी तरफ़ इशारा करते हुए) मैं मैं तुम... एगुइलास ! तुम हैन्स कैसे हो दोस्त ... भाई ...तुम एगुइलास ?

डॉ लियोनार्ड तुम्हें अपने मरने की तारीख़ मालूम है ?

मूत लगता है, जैसे मैं कल ही मरा था । चारों तरफ़ अँगरेज़ ही अँगरेज़ दिखाई पड़ते थे । नहीं ...बड़े खूँखार हैं वे लोग (अपने माथे पर ज़ोर से हाथ मारता है ।)

डॉ लियोनार्ड तुम अमेरिकनों के साथ थे ?

मूत नहीं नहीं ।

डॉ लियोनार्ड फिर किसके साथ थे ?

मूत वह वह... काफ़ी लम्बा नाम है रिपब्लिकन (बड़े कष्ट के साथ कराहता हुआ फ़र्श पर गिर जाता है ।)

डॉ लियोनार्ड तुम आराम कर सकते हो । तुम पूर्णतया सुरक्षित हो और अपने दोस्तों के बीच हो ।

मूत रक्षा....रक्षा ...झण्डे में तारों के निशान ...झण्डे में तारों के निशान.... रिपब्लिकन लोग....वे आ रहे हैं...

डॉ लियोनार्ड तुम इस घर में कब से छिपे हो ?

मूत मैं अब अपने भाई से फिर बातें करूँगा वह आदमी मुझसे जाने को कह रहा है वह खुद आना चाहता है....वह आयेगा .. बातें करेगा..

वह आदमी से मूत का मतलब उर्बान से था । उसका ज़िक्र करते ही मूत एकदम निश्चल हो गया । ऐसा लगा श्रीमती गैरेट निष्प्राण हो गयी हैं ।

कुछ देर बाद, उनकी आत्मा में श्रीमती गैरेट के शरीर में प्रवेश किया और वे बिना किसी सकपोक के उठकर कुरसी पर बैठ गयीं । अब सबको उर्बान का शान्त स्वर सुनाई देता है ।

उर्बान : (मुसकर, और सबको हाथ जोड़कर नमस्कार करने के बाद) : मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ । ऐसे वातावरण में आने का यह मेरा पहला अवसर है । आपने अभी-अभी एक ऐसे अभागे व्यक्ति से बात की, जिसे न दिनों की याद है, न सप्ताहों की न वर्षों की । उसकी बुद्धि के साथ-साथ उसकी याददाश्त भी ग़ायब हो गयी है । मैंने उसे आपके सामने इसलिए पेश किया था कि आप से बातें करके उसके डर, उसकी मुश्किलें कुछ कम हो जायें । अब जबकि इसके मन का भार कुछ हल्का हो गया है, वह आराम कर रहा है । और, अब मैं आपको बताता हूँ कि प्रेत-जगत् में पूछताछ करके मैंने इस अभागे आदमी के

वारे में क्या मालूम किया है ?

"यह आदमी किराये पर लडनेवाला एक सैनिक था। जव यहाँ गृह-युद्ध चल रहा था, तो यूरोप के कई देशो से भाडे पर लडनेवाले सिपाही अमेरिका वुलाये गये थे। इसने मुझे वताया है कि वह फ्रान्सीसी सेना के साथ अमेरिका के कई भागों में घूमा था, और अपने साथियों के साथ उसके सम्वन्ध वहुत अच्छे थे। एक जमाना ऐसा भी था, जव यह आदमी न केवल अमेरिकनों के साथ था, वल्कि विद्रोही सैनिकों के साथ लडा भी था। वह वाक़ई किराये पर लड़नेवाला सिपाही था।

"उसके एक गुण की तारीफ़ करनी पडेगी। वह जिस पक्ष के साथ भ लडता था, वडी वफ़ादारी से लडता था, और अपने अधिकारियों का सव हु सानने को तैयार रहता था। उसे ठीक याद नही है कि अपनी मृत्यु के समय किसका नौकर था। वह वार-वार किसी एण्ड्रे का नाम लेता है। लगता है, यह उसके साथ कुछ समय तक रहा था। पर, इस एण्ड्रे से उसे नफरत भी है, क्योंकि उसका नाम और उसकी शक्ल उसके अपने नाम एण्ड्रेस्की के नाम और शक्ल से वहुत मिलती है। शायद नामों और शक्लो की समानता के कारण इस वेचारे का उपयोग एण्ड्रे को वचाने के लिए किया जाता रहा होगा। उसके दिमाग़ में जो गडवडी है, वह इसी वजह से है।

"दो-तीन अवसरों पर अलग-अलग शत्रुओं ने उसे एण्ड्रे समझकर पकड़ लिया था। जव एण्ड्रे को मालूम हुआ कि उसके दुश्मन इस आदमी को एण्ड्रे समझकर पकड लेते हैं, तो वह भाग गया। वस, यही से इस आदमी के कष्टों की शुरुआत होती है। ब्रितानी सैनिक उसे एण्ड्रे समझकर पकड़ लेते हैं। पकड़े जाने से पूर्व, उसने कुछ पत्र और युद्ध की योजनाएँ छिपा दी थी। उसके कथन के अनुसार, उसने इन पत्रों और योजनाओं को किसी ऐसे स्थान पर छिपा दिया था, जो इस घर के निकट पूर्व दिशा में है। वहाँ उन दिनों कुछ कच्चे मकान थे। जव उसने पत्रों और योजनाओं के वारे में नही वताया, तो उसे वडी वेरहमी के साथ पीटा गया। उसकी हड्डी-पसली एक कर दी जाती है, उसके दाँत टूट जाते हैं, और वह वेहोश हो जाता है। जव वह होश में आता है, तो पाता है कि वेरहम मार की वजह से वह अधमरा हो गया है, और उसकी एक टाँग वेकार हो गयी है। उसे यह नहीं मालूम था कि उसका दिमाग़ भी वेकार हो गया है।

"तव से लेकर, प्राण निकलते तक वह एक विचित्र मन स्थिति में जिया। कभी जागता था, और कभी वेहोश हो जाता था। जव होश में आता था, तव उसे वीती वातों की कुछ याद नही रहती थी। अकसर जाग्रतावस्था में भी उ लगता था कि वह कोई डरावना सपना देख रहा है। तो, अपनी वर्तमान मन

मृतक

स्थिति के लिए वह खुद जिम्मेदार है। कुछ हद तक वह मार भी इस मनःस्थिति के लिए जिम्मेदार है, जो उस पर बड़ी बेरहमी से पड़ी थी।

'उसका भाई लम्बा-चौड़ा था, और उसकी आँखें नीली थीं। बॉकर भी लम्बे-चौड़े हैं, और उनकी आँखें भी नीली हैं। इसीलिए वह बॉकर को अपना भाई समझता है, और हमेशा उनके पास रहना चाहता है। मुझसे उसने कहा था कि मेरा एक भाई था जो लम्बा-चौड़ा था और जिसकी आँखें नीली थीं। वह भी मेरे साथ लड़ रहा था और शायद मेरे साथ ही लड़ाई में काम आया।

'यह सोचकर कि आपको मेरे सुझाव पर कोई आपत्ति नहीं होगी मैंने उसे सुझाव दिया कि आप लोग उसके दोस्त हैं, और हर संकट से उसकी रक्षा करेंगे। मैंने उससे कहा कि भविष्य में तुम्हें अपने इन दोस्तों को परेशान करने की जरूरत नहीं है, और तुम बेखटके बड़ी जल्दी के साथ इस घर में आ जा सकते हो। जैसा तुम्हारे दोस्त कहें, वैसा करो। और भगवान् से प्रार्थना करते रहो कि वह तुम्हें तुम्हारी वर्तमान परेशानियों से मुक्त करायें। यहाँ रहो तो अपने दोस्तों के वास्ते बनकर रहो उनके दुश्मन बनकर नहीं।

''उसने मुझसे पूछा कि ऐसी हालत में क्या मेरा भाई (तात्पर्य बॉकर से है) मुझे शरण देगा? मैंने कहा कि हाँ वे हमेशा तुम्हारा स्वागत करने को तैयार रहेंगे। मुझे लगता है कि अब यह अभागा भूत भविष्य में आपको अपनी छेड़खानियों से परेशान नहीं करेगा। लेकिन अगर यह कभी भूलकर आपको तंग करने के लिए आ जावे तो उस पर रहम करके उसके लिए खुदा से दुआ कीजिए, ताकि वह शान्ति से रह सके।

उर्वान के इन सान्त्वनापूर्ण शब्दों को सुनकर सबने आँखें बन्द करके और सिर झुकाकर अशान्त भूत की शान्ति के लिए ईश्वर से दुआएँ माँगीं।

श्रीमती गैरेट कुछ देर तक अचेत-सी रहीं। उनकी आत्मा उर्वान के शरीर से बाहर निकलकर अपने शरीर में प्रवेश कर रही थी। होश में आकर उन्होंने अपने चारों ओर देखा। जाहिर था कि अचेतावस्था में उनके मुँह से जो बातें निकली थीं और जो टेपरेकार्डर पर अंकित हो चुकी थीं उनकी कोई जानकारी या याद उन्हें नहीं थी।

भूत से साक्षात्कार का यह प्रयोग दुपहर को पौने तीन बजे शुरू हुआ था और चार बजे खत्म हुआ। कुछ देर तक इस मामले पर बातचीत करके न्यूयॉर्क से आया दल वापस न्यूयॉर्क लौट गया।

दिसम्बर १९५२ को बॉकर ने इस दल के सदस्यों को सूचित किया कि अब उसके घर का वातावरण पूरी तरह शान्त है। घर के भूत के उपद्रव अब बन्द हो गये थे।

बाद में इस दल के सदस्यों ने १७७९ की एन्टेनी प्वाइन्ट की लड़ाई के

कागज़ात का अध्ययन करके मालूम किया कि हैन्स नाम का एक पोलिश सैनिक दूसरी ट्रॉयन काउण्टी रेजीमेण्ट में था, और लडते-लडते काम आया था। उसके भाई का, जो वाद में वॉकर के घर में भूत वना, कागज़ात में कही ज़िक्र न था। असल में उससे नौकर का काम लिया जाता था, और नौकरो के नाम उन दिनों कागज़ो में दर्ज नही किये जाते थे।

भूत ने जिन पन्द्रह पत्थरो का ज़िक्र किया था, वे आज भी वॉकर के घर के पास स्थित एक कच्चे घर के आगे मौजूद हैं। उनके नीचे जो पत्र और योजनाएँ छिपी थी, उन्हें खोजने की कोशिश न वॉकर ने की, न फाउण्डेशन के मनोवैज्ञानिकों ने। उनका ध्येय घर के भूत की शिनाख्त कर उसे शान्त करना था, जो पूरा हो ही गया था।

भूत, जिसके कारण एक नाटक लोकप्रिय वना

यदि आप लन्दन के दो सौ साल पुराने ड्रुअरी लेन थियेटर के कर्मचारियो से वात करें, तो आपको पता चलेगा कि वहाँ अरसे से एक भूत रहता है। अनेक अवसरो पर यह भूत थियेटर की सफाईवाले लोगो, कलाकारो और दर्शको को दिखाई दिया है।

उस भूत की पोशाक अठारहवी सदी के किसी छैला की पोशाक मालूम होती है। कहा जाता है कि कोई नाटक देखते समय इस छैला की लडाई किसी से हो गयी थी। उस आदमी ने उस छैला की हत्या करके उसकी लाश थियेटर के एक छोटे कमरे की दीवाल में छिपा दी थी। कई साल वाद, जब मज़दूरों ने मरम्मत के लिए उस दीवाल को तोडा, तो उन्हें उसके अन्दर एक ककाल दिखाई पडा। इस ककाल के फैशनेवुल कपडे ज्यों के त्यो सुरक्षित थे और उसके माथे पर छुरे के प्रहार का निशान भी साफ नजर आता था। जव इस मामले की पूरी जांच की गयी तो पता चला कि इन छैला महाशय की आशनाई थियेटर की किसी अभिनेत्री से थी, और उस अभिनेत्री के असली प्रेमी ने उसे अपनी प्रेमिका से प्यार की वातें करते देखकर उसका काम तमाम कर डाला था।

ब्रिटेन के सग्रहालय में इस थियेटर के प्राचीन इतिहास की पाण्डुलिपि सुरक्षित है। इसमें इसके लेखक पोप ने लिखा है कि यद्यपि उसका भूतो में विश्वास नही है, फिर भी इस थियेटर पर छाये भूत के अस्तित्व से वह इनकार नही कर सकता। आगे उसने यह लिखा है कि इस भूत के आने को शुभ मानते हैं, क्योंकि जव कभी वह आता है, थियेटर [illegible] चलनेवाला नाटक [illegible] लोकप्रिय हो जाता है।

ड्रुअरी थियेटर के भूत से [illegible]

माना एक थियेटर के लिए शुभ सिद्ध होता है। इसीलिए इस नाटक में अरसे तक चलनेवाले नाटक 'द बैरेट्स ऑव विम्पोल स्ट्रीट' के निर्माता निर्देशक गुथरी मैक्लिंटिक उस भूत के सबसे दोस्त बन गये हैं।

आइए, इस नाटक और उसकी लोकप्रियता पर भूत के प्रभाव की कहानी स्वयं गुथरी मैक्लिंटिक के शब्दों में सुनिए

"मेरा यह नाटक एम्पायर थियेटर में एक वर्ष से अधिक समय तक चला था। इससे अधिक समय तक एक ही थियेटर में चलनेवाले नाटक इने-गिने ही हैं। एम्पायर थियेटर में उसके शानदार प्रदर्शन के बाद हम लोगों ने इसे अमेरिका के अन्य स्थानों पर दिखाने के लिए सत्रह हजार से अधिक मील की यात्रा की। ब्रॉडवे में किसी नाटक का अरसे तक चलना किसी भी अमेरिकी नाटक की सफलता का प्रमाण माना जाता है। हमारा नाटक ब्रॉडवे में दो बार लम्बे अरसे तक चला और उसने बीस लाख डॉलर (डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक) की आमदनी की। दूसरे महायुद्ध के दिनों में हमने इस नाटक का प्रदर्शन इटली, फ्रान्स और हालैण्ड में अमेरिकी सैनिकों के मनोरंजन के लिए किया था। सेना ने हमें सिर्फ दो महीने के लिए बुलाया था नाटक इतना अधिक पसन्द किया गया कि हमें वहाँ छह महीने से अधिक समय तक रुकना पड़ा।

'पर, इस नाटक के बारे में सबसे अजीब बात यह है कि एक समय थो ऐसा लगता था कि यह नाटक कभी प्रदर्शित होगा ही नहीं। इसके प्रदर्शन के पीछे एक अज्ञात महिला की भविष्यवाणी का हाथ है। चूँकि न उस महिला का पता चल पाया और न उस फ़ोन का जिसके द्वारा उसने भविष्यवाणी की थी इसलिए मैं तो यही मानता हूँ कि इसके पीछे किसी भूत का हाथ है।

"जब इस नाटक का लेखक यह नाटक लेकर मेरे पास आया तो मुझे यह मालूम नहीं था कि यह नाटक ब्रॉडवे के २८ निर्माताओं द्वारा अस्वीकृत किया जा चुका है। मेरी पत्नी कैथरीन उन दिनों निर्माता गिल्बर्ट मिलर के थियेटर में काम करती थी। मिलर को यह नाटक क़तई पसन्द नहीं था पर कैथरीन का विश्वास था कि अगर उसे अच्छे ढंग से निर्मित किया जाये तो यह अपार सफलता प्राप्त कर सकेगा। इसी बात को लेकर मिलर और कैथरीन में मतभेद हो गया और कैथरीन मिलर के थियेटर से अलग हो गयीं। इतना ही नहीं उसने अपने पैसों से इस नाटक को ख़रीद भी लिया।

"नाटक मुझे भी बेहद पसन्द आया था और मेरे ही आग्रह पर कैथरीन नाटक में एलिज़ाबेथ बैरेट का अभिनय करने को तैयार हुई। जब नाटक पहली बार प्रदर्शित हुआ तो उसके विज्ञापनों में कहा गया—'कैथरीन कॉरनेल प्रस्तुत करती हैं—कुमारी कॉरनल की द बैरेट्स ऑव विम्पोल स्ट्रीट। निर्देशक—गुथरी मैक्लिंटिक। अर्थात् नाटक की मुख्य अभिनेत्री और निर्मात्री कैथरीन कॉरनल

ही थी। हम सबने बडे उत्साह से नाटक के रिहर्सल शुरू किये।

"पर, ऐसा लगता था कि कैथरीन ने किसी अशुभ घडी में उस नाटक को खरीदा था। एक सप्ताह तक रिहर्सल करने के बाद, कैथरीन को लगने लगा कि नाटक की हीरोइन का रोल उसके लिए उपयुक्त नही है। मुझे यह बात बडी अजीब लग रही थी, कारण कैथरीन एक बार जब कोई निश्चय कर लेती, उससे नहीं डिगती थी।

"रिहर्सलो के दौरान, मुझे भी फ्लू हो गया, और मैं नौ दिनो तक रिहर्सलों से अलग रहा। इस दौरान भी, कैथरीन ने अपना विचार नही बदला। मुझे लगने लगा कि यदि कैथरीन ने इसमें हीरोइन का अभिनय नही किया, तो यह नाटक कभी प्रदर्शित नही हो सकेगा। इस नाटक की सफलता के बारे में खुद मेरा विश्वास भी डगमगाने लगा। एक शाम हम सब लोग बैठकर इस नाटक के बारे में ही बातें कर रहे थे कि फोन की घण्टी बजी। मेरे सेक्रेटरी स्टेनले ने फोन उठाया, और आकर कहा कि मेरा कोई मित्र मुझसे बात करना चाहता है। मैं उस वक्त काफ़ी नाराज़ और परेशान था। मैंने स्टेनले से कहा कि मुझे ऐसे 'मित्रों' से बातें करने का समय नही है, जो अपना नाम तक बताने का कष्ट नही करते। फिर न जाने मुझे क्या सूझा, मैंने अपना विचार बदल दिया, और फ़ोन के पास गया। जैसे ही मैंने चोगा उठाकर अपना नाम बताया, उधर से एक महिला की भर्रायी हुई सी आवाज़ सुनाई दी ' 'फ़िक्र मत करो। तुम्हें अप्रत्याशित सफलता मिलनेवाली है।' इतना कहकर उस महिला ने फ़ोन रख दिया। मैं इस फोन को मज़ाक समझकर काफी देर तक हँसता रहा। मैं इस फोन को नज़रअन्दाज़ करके अपने काम मे लगना चाहता था कि मुझे याद आया कि थियेटर में मुझे पहली सफलता एक अनजान आदमी के रहस्यपूर्ण सुझाव पर ही मिली थी। सच तो यह है कि यदि मैं उस सुझाव के अनुसार न चलता, तो थियेटर के क्षेत्र में कभी प्रवेश ही नही कर सकता था।

"इस नाटक के निर्माण की कहानी सुनने से पहले, आइए इस रहस्यपूर्ण सुझाव की कहानी भी सुन लीजिए, जिसका सम्बन्ध भी एक भूत से है। यह घटना १९०९ के आसपास की है। उन दिनो मैं अपने माता-पिता के साथ सिटेल नामक नगर में रहता था। उन दिनो मुझे थियेटर का बडा शौक था। पर, थियेट्रिकल कम्पनियाँ हमारे शहर में बहुत कम आती थी। जो आती भी थी, वे छोटी कम्पनियां होती थीं, जिनमें नये कलाकार काम करते थे। फिर भी, उनके नाटक देखकर मुझे बडी खुशी होती थी। बाद में मैं एक छोटी-सी थियेट्रिकल कम्पनी में बतौर एक्सट्रा भरती हो गया, और उस कम्पनी के साथ-साथ घूमने लगा। लेकिन, मेरे पिता एक दिन मुझे उस कम्पनी से घर ले आये। नाटकों में रुचि न मेरे पिता को थी, न माँ को।

'पर जब मेरे पिता ने देखा कि मेरा मन नाटकों के अलावा किसी और विषय में नहीं लगता है, तो उन्होंने मुझे न्यूयॉर्क की एकेडमी ऑव ड्रैमेटिक आर्ट में भरती करा दिया ताकि मुझे अभिनय की अच्छी शिक्षा मिल सके।

'मेरे पिता मुझे ज्यादा पैसा नहीं भेजते थे क्योंकि उन्हें डर था कि ज्यादा पैसा पाकर मैं बुरी संगत में पड़ जाऊँगा। इसलिए मैं एक सस्ते-से कमरे में रहता था। कमरे की मकान-मालकिन एक भली औरत थी, और अपने मकान के कमरे किराये पर देकर अपना पेट पालती थी।

'एकेडमी में अपना कोर्स पूरा करने के बाद मैं निर्माताओं के ऑफ़िसों के चक्कर काटने लगा। जहाँ जाता था वहाँ उत्तर मिलता था—कोई जगह खाली नहीं है। पिताजी के डर के मारे घर लौटने की हिम्मत भी नहीं होती थी। एक दिन मैं एक पार्क की बेंच पर बैठा अपने भविष्य के बारे में सोच रहा था कि एकेडमी में मेरे साथ पढ़ा एक लड़का मेरे पास आकर बैठ गया और बताने लगा कि विनथ्रोप एमिस नाम के एक निर्माता ने उसे 'पुनेला' नाम के नाटक में एक महत्त्वपूर्ण रोल दिया है। उसके जाने के बाद मैंने भी निश्चय किया कि एमिस से मिलना चाहिए शायद कोई रोल मुझे भी मिल जाये।

'एमिस तो मुझे नहीं मिले पर उनके डायरेक्टर जार्ज फ्लॉर से मेरी मुलाक़ात अवश्य हो गयी। फ्लॉर ने कुछ देर तक मुझसे बातें करने के बाद मुझे बताया कि उनके नाटक में मेरे लायक़ कोई रोल नहीं है। उनके मुँह से साफ़ 'ना' सुनकर भी मैं वहीं बैठा रहा। अन्त में फ्लॉर ने मुझसे जाने को साफ़-साफ़ कहा। मैं उनके मुँह से ना सुनकर इतना हताश और निराशान्ध हो गया था कि उठते समय मेरा हाथ उनकी मेज पर रखी स्याही की शीशी से टकरा गया, और सारी स्याही उनकी मेज पर गिर पड़ी। मैं उसे साफ़ करने के लिए आगे बढ़ा ही था कि उन्होंने डाँटकर मुझे अपने ऑफ़िस से निकाल दिया।

'उनके ऑफ़िस से बाहर आते समय मेरी मानसिक स्थिति ऐसी थी कि यदि एमिस मुझे उस समय दिखाई दे जाते तो मैं मार-मारकर उनका भुर्ता बना देता। पर अपने कमरे में आकर मेरे विचारों में एकाएक परिवर्तन आ गया। मैंने एमिस को एक लम्बा पत्र लिखा जिसमें मैंने अपने दिल के सब गुबार निकाल-कर रख दिये। एमिस ब्रिटेन से आये थे और आरम्भ में जब उन्होंने अमरिकी रंगमंच को एक नया रूप प्रदान किया तो उन्होंने अपने नाटकों में ज्यादातर ब्रितानी कलाकारों को ही लिया। जब नाटक-समीक्षक उनके इस पक्षपातपूर्ण रवैये की आलोचना करने लगे तो उन्होंने १९११ में सर्वश्रेष्ठ अमरिकी नाटक के लिए दस हजार डॉलर का इनाम देने की घोषणा की।

'मुझे ठीक याद नहीं कि मैंने अपने पत्र में क्या लिखा था पर इतना अवश्य लिखा था कि सर्वश्रेष्ठ अमेरिकी नाटक पर दस हजार डॉलर का इनाम देने की

बजाय उन्हे उन अमेरिकी कलाकारो को प्रोत्साहन देना चाहिए, जो आज काम के अभाव में बेकार घूम रहे हैं। फिर मैंने लिखा कि मैं एक प्रशिक्षित अभिनेता और निर्माता हूँ, और यदि मुझे उचित प्रोत्साहन दिया जाये, तो मैं सफल और लोकप्रिय नाटको का निर्माण करके दिखा सकता हूँ। अन्त में मैंने उन नाटक-निर्माताओ की खामियो पर भी रोशनी डाली, जो उन दिनो सक्रिय थे।

"पत्र पूरा करके मुझे लगा कि इस पत्र का एमिस पर अवश्य अनुकूल प्रभाव पडेगा। पर, न मालूम क्यों उस चिट्ठी को भेजने का साहस मुझे नही हुआ। और टिकट लगा वह लिफाफा मैंने अपने सन्दूक में रख दिया, और फिर निर्माताओं के ऑफिसो के चक्कर काटने के लिए निकल पडा।

"इस घटना के कुछ सप्ताह बाद, मैं थियेटर की दुनिया से पूरी तरह निराश होकर कही चपरासी या मामूली क्लर्क की नौकरी करने का विचार कर रहा था कि मेरी मकान-मालकिन ने सहसा आकर कहा, 'तुम्हारा फोन है।'

'मेरा फ़ोन ?' मैंने आश्चर्य से पूछा।

'हाँ, न मालूम कौन है। अपना नाम भी नही बताता।'

'मैंने जाकर फोन का चोगा हाथ में लेकर पूछा कि कौन है ? पर, उधर से किसी ने यह नहीं बताया कि कौन बोल रहा है। जो भी था, उसने सिर्फ़ इतना कहा कि जो ख़त तुमने लिखा है, उसे फौरन भेज दो। तुम्हारा भविष्य उस पर ही निर्भर करता है। आवाज़ एकदम अपरिचित थी। और सिर्फ इतना कहकर इस अपरिचित स्वरवाले व्यक्ति ने फ़ोन रख दिया।

मुझे यह जानने में देर न लगी कि फोन करनेवाले व्यक्ति का आशय उस पत्र से था, जो मैंने एमिस को लिखा था, पर उसे डाक में नही डाला था। पर, इस व्यक्ति को कैसे मालूम पडा कि मैंने वह पत्र लिखा है, और उसे डाक में नही डाला। यह बात दुनिया में मुझे छोडकर किसी और व्यक्ति को मालूम नही थी। विश्वास हो गया, जरूर फोन किसी इनसान ने नही, किसी भूत ने किया था।

"मैंने वह चिट्ठी फ़ौरन डाक में डाल दी। तीसरे दिन, मेरे पास उस पत्र का उत्तर आ गया। उत्तर स्वय एमिस ने दिया था। उन्होंने लिखा था कि मेरा पत्र पढकर उन्हें बडी खुशी हुई, और वे मुझसे मिलने के इच्छुक है।

"पर, जब मैं अगले दिन सुबह उनसे मिलने उनके ऑफिस में गया, तो मालूम हुआ कि वे अचानक बीमार पड गये हैं। उनकी सेक्रेटरी ने बताया कि यदि मैं दो-तीन दिन बाद आऊँ, तो सम्भवत. उनसे भेंट हो सकेगी।

"जब मैं तीसरे दिन फिर उनसे मिलने गया, तो उनकी सेक्रेटरी ने मुझसे कहा कि एमिस महोदय ने, बिना मुझसे भेंट किये, मुझे अपने यहाँ नौकर रखने का निश्चय किया है। मैं सहायक स्टेज मैनेजर के पद पर नियुक्त हुआ था, और मेरा वेतन था—पचास डॉलर प्रति सप्ताह। जिम डायरेक्टर के साथ मुझे काम

करता था व वही फ्लोट महोदय थे जिनकी मेज पर मैंने स्याही की शीशी उँडेली थी।

"अपनी नियुक्ति के बाद आठ महीनों तक मुझे एमिस के दर्शनों का सौभाग्य नहीं मिला। आठ महीने बाद उन्होंने मुझे बुलाकर 'द ट्रुथ' नामक नाटक का स्टेज-मैनेजर नियुक्त किया। मैंने पूरी लगन से इस नाटक को सफल और लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न किया और यह नाटक मेरी खुशकिस्मती से काफ़ी चला भी।

"इस नाटक की समाप्ति के बाद एमिस ने मुझे बुलाकर अपने सहायक के पद पर नियुक्त किया। अर्थात्, अब उनकी संस्था में उनके बाद मेरा ही नम्बर आता था। अब मैं उसी ऑफ़िस में बैठने लगा जहाँ पहले फ्लोट बैठता था और जहाँ से उसने मुझे निकाला था।

अब मुझे एमिस के साथ काम करते हुए दस साल बीत गये तो उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि वे अब मुझसे स्वतन्त्र रूप से एक नाटक का निर्माण कराना चाहते हैं। नाटक का चुनाव भी मुझे करना होगा। मैंने 'द ओवर रोड' नाम का नाटक चुना। एमिस ने इसके सफल निर्माण के लिए मुझे पर्याप्त राशि दे दी।

'आरम्भ में तो 'द ओवर रोड' को *अधिक सफलता नहीं मिली* पर कुछ ही हफ़्तों में यह अत्यन्त सफल और लोकप्रिय हो गया। एमिस को अपना पैसा ही वापस नहीं मिला उन्हें इस नाटक से काफ़ी लाभ भी हुआ। इस नाटक की सफलता के बाद मैंने कैथरीन से जो उस समय की कुशल और सुन्दरी अभिनेत्री थी विवाह किया और न्यूयॉर्क के एक आलीशान मुहल्ले में मकान खरीदकर ठाठ से रहने लगा।

"पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मेरी इस सारी सफलता का सारा श्रेय उस फ़ोन को है, जो जून १९११ में एक भूत ने मुझे किया था।

"मेरी मकान-मालकिन ने मुझे बताया था कि उनके मकान में एक भूत रहता है, पर वह बड़ा सभ्य और दयालु भूत है। इस भूत ने कई बार कई तरीक़ों से उनकी अप्रत्याशित सहायता की थी और वह उनके किरायेदारों की सहायता करने को भी तैयार रहता है।

"जब मैंने 'ए विल ऑव डायवोर्समेन्ट' नामक नाटक का निर्माण किया तो अपनी मकान-मालकिन को इस नाटक के टिकट भेजे। यह नाटक मेरे जीवन के अत्यन्त सफल नाटकों में से एक है और कैथरीन इसी नाटक में अभिनय करने के बाद चमकी थी।

"पर वे टिकट मेरे पास वापस आ गये। लिफ़ाफ़े पर डाकिये ने लिखा था— इस पते पर नहीं रहती। नये पते का पता नहीं। मकान-मालकिन से

भविष्य में मेरी मुलाकात नही हुई, पर उनके भूत से एक वार अवश्य हुई। और वह भी वडे अजीव ढग से। 'ए विल आँव डायवोर्समेण्ट' के वाद मैंने 'जेज़वल' नाम के नाटक के निर्माण का निश्चय किया था। सभी समाचार-पत्रो ने यह समाचार प्रकाशित करते हुए यह लिखा था कि मैंने तालुलाह वैंकहेड नामक प्रख्यात अभिनेत्री को इस नाटक की हीरोइन वनाने का फैसला किया है। पर, तभी, पहले की भाँति मुझे एक अजनवी का फोन मिला, जिसमें सिर्फ इतना कहा गया था कि मिस वैंकहेड इस नाटक में काम नही करेंगी। यह अजनवी, मुझे जानने में देर न लगी, अपना पुराना दोस्त भूत ही था।

"और सचमुच, अपने वायदे और अनुवन्ध के वावजूद, तालुलाह वैंकहेड, लम्वी वीमारी के कारण, मेरे इस नाटक में काम न कर पायी। "और, जहाँ तक कि 'द वैरेट्स आँव विम्पोल स्ट्रीट' का सवाल है, अपने दोस्त भूत की सलाह पर, मैंने सब वाधाओ के वावजूद, उसे निर्मित और प्रदर्शित किया। इसे जो अपार सफलता मिली, उसका उल्लेख मैं ऊपर कर ही चुका हूँ।"

भूत-कलाकार :
जिसकी वनायी विशाल कलाकृति आज भी मौजूद है!

१९५६ तक, जवतक न्यूयॉर्क की १०वीं स्ट्रीट में गगनचुम्वी इमारतों का निर्माण आरम्भ नही हुआ था, इस स्ट्रीट पर ५१, वेस्ट के पते पर एक स्टूडियो था, जो पुराने न्यूयॉर्क के दर्शनीय स्थलो में से एक था। यहाँ कभी रहते थे जॉन ला फार्ज नाम के कलाकार, जो अपनी धार्मिक कलाकृतियो के लिए सारे अमेरिका में विख्यात थे।

उनके स्टूडियो के पास 'चर्च ऑव द एसेनशियन' नाम का एक गिरजाघर है, जिसका यह नाम इसलिए पडा है कि उसकी पूजा की वेदी के पास 'आरोहण' (Ascension) नामक विशाल कलाकृति टँगी है। इस कलाकृति का निर्माण फार्ज ने ही किया था, आधा अपनी जीवितावस्था में और आधा अपनी मृत्यु के वाद, भूत वनकर।

इस कलाकृति के सृजन से पहले, फ़ार्ज ने भारत तथा अन्य पूर्वी देशों की यात्रा की थी। वहाँ उन्होंने चित्रो को रँगने की एक नयी विधि सीखी, जिसके अनुसार सतह पर रगो की कई तहें चढायी जाती हैं, और इस प्रकार चित्र अधिक भारी और अधिक गाढा लगने लगता है। फार्ज ने अपनी इस कलाकृति के निर्माण में इसी विधि का प्रयोग किया था।

गिरजाघर के पादरियों के अनुरोध पर, फार्ज ने 'आरोहण' का निर्माण १९०८ में शुरू किया। १९१० तक, जव यह कलाकृति तीन चौथाई पूरी हो गयी, तव उसे स्टूडियो से ले जाकर गिरजाघर की पूजा की वेदी के पास

प्रतिष्ठित किया गया, ताकि फ्रार्ज वहीं उसे पूरा कर सकें। इसका एक कारण यह था कि चित्र पहले ही काफ़ी भारी था और रंगों की परत चढ़ने से बाद और भी भारी हो गया था।

इस भारी चित्र को पूजा की वेदी के पास प्रतिष्ठित करने के लिए एक मज़बूत पीठिका का भी निर्माण किया गया। पर, जब १९१० में फ्रार्ज इस कलाकृति को पूरा करने में लगे थे, यह पीठिका अचानक नीचे गिर गयी। और उसी रात फ्रार्ज की मृत्यु हो गयी।

फ्रार्ज की मृत्यु के बाद, गिरजाघर के पादरियों के सामने यह समस्या आयी कि अधूरी कलाकृति को पूरा कैसे किया जाये? पीठिका की समस्या तो पहली पीठिका से ज़्यादा मज़बूत पीठिका का निर्माण करके पूरी हो गयी, पर अधूरी कलाकृति तो फ्रार्ज-जैसा उच्चकोटि का कोई ऐसा कलाकार ही पूरा कर सकता था जो फ्रार्ज-जैसी धार्मिक वृत्ति का होने के अलावा चित्रों को रँगने की नयी विधि में भी प्रवीण हो।

तभी, यह समस्या, अचानक, फ्रार्ज के भूत ने बड़ी आसानी से हल कर दी।

एक सुबह पादरियों ने पाया कि कलाकृति अपने आप पूरी हो गयी है। उस सर्वांग सुन्दर कलाकृति को देखकर सभी ने कहा कि फ्रार्ज के सिवाय कोई उसे पूरा नहीं कर सकता था। सम्पूर्ण कलाकृति एक ही कलाकार के हाथों का सृजन मालूम पड़ती थी।

पादरीगण चकित थे कि कलाकृति को पूरा आखिर किसने किया?

इस प्रश्न का उत्तर भी उन्हें शीघ्र ही मिल गया। एक रात एक पादरी ने सपने में फ्रार्ज को कहते सुना कि उसकी कलाकृति को जो भी क्षति पहुँचाने का प्रयास करेगा वह उससे बदला लेने में नहीं चूकेगा, क्योंकि वह हमेशा कलाकृतियों के पास ही मौजूद रहता है।

अब पादरियों को यह अनुमान लगाने में देर न लगी कि अधूरी कलाकृति को स्वयं फ्रार्ज ने ही मरने के बाद पूरा किया था, भूत बनकर।

कलाकार होने के अलावा फ्रार्ज एक उत्कृष्ट वास्तुशिल्पी भी थे। स्थानीय कई दर्शनीय इमारतों के नक्शे उन्होंने ही तैयार किये थे और ये इमारतें अस्सी साल बीत जाने के बाद भी अच्छी हालत में खड़ी हैं। पर, इन इमारतों में रहनेवाले अनेक व्यक्तियों को उनकी मृत्यु के बाद कई अवसरों पर फ्रार्ज के भूत की उपस्थिति का भान हुआ है।

ऐसी ही एक इमारत में रहनेवाले रिमर्नी नाम के कलाकार को १९४४ में एक विचित्र अनुभव हुआ। शाम को वे एक नाटक देखकर अपनी पत्नी के साथ घर लौटे। घर आकर उन्होंने देखा कि उनके स्टूडियो की खिड़की खुल रही है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वे जब गये थे तो खिड़की बन्द करके

गये थे। जब उन्होने स्टूडियो में प्रवेश किया, तो देखा कि पुराने जमाने का लबादा ओढे कोई आदमी उनकी अधूरी कलाकृति पर झुका हुआ है। जब उन्होंने उस आदमी से पूछा कि वह कौन है, तो वह आदमी उनकी आँखो के सामने ग़ायब हो गया। वे देखते रह गये।

अगले दिन रिमस्की ने इस विचित्र अनुभव की चर्चा अपने पडोसी से की, जो एक नामी इतिहास-लेखक है। पडोसी महोदय ने मुसकराकर उन्हे एक चित्र दिखाया, और पूछा, 'क्या आपने इसी आदमी को देखा था?' रिमस्की कुछ दिन पहले ही यूरोप से आये थे, और न उन्हें अपने पडोस के बारे में कुछ पता था, न फार्ज के बारे में। पर, उन्होने फार्ज के चित्र को देखते ही पहचान लिया कि यह चित्र उसी आदमी का है, जो कल उसे दिखाई दिया था।

कुछ समय बाद, रिमस्की ने अपने घर में अपने कुछ मित्रो को रात के खाने पर बुलाया। इन मित्रो में अमेरिका के प्रख्यात विज्ञापन-लेखक विलियम वेबर भी थे। जब ये सब लोग रिमस्की के स्टूडियो में बैठे गपशप कर रहे थे, तो वेबर ने सबका ध्यान लबादा ओढे एक मनुष्याकृति की ओर आकर्षित किया, जो एक कोने में रखी एक कलाकृति को बडे ध्यान से देख रहा था। जैसे ही सबने उस ओर देखा, वह मनुष्याकृति, जो फार्ज की आकृति से बहुत मिलती-जुलती थी, विलीन हो गयी। सब हैरत में रह गये। पर, रिमस्की ने बताया कि यह मनुष्याकृति वास्तव में फ़ार्ज नामक मृत कलाकार और वास्तुशिल्पी का भूत था, उस फार्ज का जिसे मरे पैंतीस से अधिक साल हो गये हैं।

रिमस्की के पडोस में मैक्सवैल नामक कलाकार का स्टूडियो भी था। इस स्टूडियो की कल्पना भी फार्ज ने ही की थी, जब उसने इस इमारत का नक्शा बनाया था। यह स्टूडियो वर्षों तक खाली रहा था, क्योकि लोगों का विश्वास था कि फार्ज का भूत इसी स्टूडियो मे रहता है, और उसे वहाँ किसी का आना पसन्द नही है।

मैक्सवैल ने यह जानते हुए भी कि यह स्टूडियो भूतशापित है, वहाँ काम करने का निश्चय किया था। उसका भूत-प्रेतो में विश्वास नही था।

फार्ज के भूत से मैक्सवैल का साक्षात्कार स्टूडियो किराये पर लेने के दो-तीन महीने बाद १९४८ की वसन्त ऋतु की एक रात को हुआ। उस रात को उसने देर तक स्टूडियो में काम किया था, और काम करने के बाद स्टूडियो में पडे सोफे पर ही सो गया था। सहसा, उसकी आँखें खुल गयी। उसने हाथ की घडी में देखा—रात के एक बजकर बीस मिनट हुए थे। उसे स्पष्ट अनुभूति हुई कि स्टूडियो में उसके अलावा कोई और भी है। कुछ क्षण बाद, उसने देखा कि कोई धीरे-धीरे उसकी वह आलमारी खोल रहा है, जिसमें उसकी कलाकृतियाँ रखी रहती थी। जो आदमी यह आलमारी खोल रहा था, वह पुराने ढग का एक लबादा ओढे हुए था।

भूत-प्रेतों में विश्वास न करनेवाले मैक्सवैल को लगा कि कोई चोर उसके स्टूडियो में घुसकर उसकी कलाकृतियों को चुरा रहा है। स्टूडियो का दरवाजा अन्दर से बन्द था इसलिए उसे आश्चर्य हो रहा था कि चोर आखिर स्टूडियो में घुसा तो कैसे घुसा ?

चोर को सबक सिखाने के उद्देश्य से वह सोफ़े से उठा, और धीरे-धीरे आलमारी की ओर बढ़ा। लबादा ओढ़े हुए चोर अभी भी आलमारी में रखी हुई कलाकृतियों को टटोलने में व्यस्त था। उसने चोर के पीछे पहुँचकर उसकी पीठ में एक जोरदार घूँसा जमाया।

पर, उसका यह घूँसा चोर को न लगकर सीधा आलमारी में जाकर पड़ा, और उसका हाथ जख्मी हो गया। उसका हाथ चोर के शरीर के आरपार निकल गया था।

और... तभी उसने देखा कि उसके सामने एक लबादा पहने खड़ा चोर न जाने कहाँ विलीन हो गया। उसने ग़ौर से देखा स्टूडियो का दरवाजा अभी तक अन्दर से बन्द था। अगर कोई आदमी वास्तव में स्टूडियो में होता तो वह अन्य किसी रास्ते से बाहर नहीं जा सकता था।

काफ़ी देर तक सोच-विचार के बाद ही मैक्सवैल की समझ में आया और उसे विश्वास हो सका कि स्टूडियो के अन्दर आनेवाला मनुष्य नहीं भूत था।

इसके बाद जब मैक्सवैल या उसके मेहमान स्टूडियो में आते, तो उन्हें अचानक ठण्ड महसूस होने लगती थी। मौसम बाहर चाहे कितना भी गरम क्यों न हो स्टूडियो में उनके अन्दर आते ही अचानक ठण्ड हो जाती थी।

एक दिन जब मैक्सवैल अपने कुछ मेहमानों के साथ स्टूडियो में बैठा था एक महिला ने सहमा चीखकर कहा 'देखो वह आलमारी के पास कौन है ?' जब बाक़ी सब मेहमानों ने उधर देखा तो उन्हें कोई दिखाई नहीं दिया। पर वह महिला अभी तक चिल्ला रही थी, 'कहाँ गया लबादा पहने हुए वह आदमी ? अभी तो यहाँ था। एकदम कहाँ गायब हो गया ?'

जब मैक्सवैल ने उसे तथा अन्य मेहमानों को फ़ार्म के भूत के बारे में बताया, तो कहीं जाकर सबको सन्तोष हुआ।

फ़ार्म के चीफ़ ओलिवर लॉ फ़ार्ज आधुनिक अमेरिका के एक सम्माननीय उपन्यासकार हैं। उनका कहना है कि उन्होंने कई बार अपने दादा के भूत के दर्शन किये हैं। एक शाम जब वे घर लौट रहे थे तो उन्हें बताया गया कि 'चर्च ऑफ द एसमशियम' की पूजा की वेदी पर लगी उनके दादा की 'आरोहण' नाम की कलाकृति अपनी पीठिका से अलग होकर नीचे गिर पड़ी है। घर लौटने पर उन्हें मालूम पड़ा कि जिस क्षण वह कलाकृति नीचे गिरी थी उसी क्षण उनके पिता की मृत्यु हुई थी।

गये थे। जब उन्होंने स्टूडियो में प्रवेश किया, तो देखा कि पुराने जमाने का लबादा ओढ़े कोई आदमी उनकी अधूरी कलाकृति पर झुका हुआ है। जब उन्होंने उस आदमी से पूछा कि वह कौन है, तो वह आदमी उनकी आँखों के सामने गायब हो गया। वे देखते रह गये।

अगले दिन रिमस्की ने इस विचित्र अनुभव की चर्चा अपने पड़ोसी से की, जो एक नामी इतिहास-लेखक हैं। पड़ोसी महोदय ने मुसकराकर उन्हें एक चित्र दिखाया, और पूछा, 'क्या आपने इसी आदमी को देखा था?' रिमस्की कुछ दिन पहले ही यूरोप से आये थे, और न उन्हें अपने पड़ोस के बारे में कुछ पता था, न फार्ज के बारे में। पर, उन्होंने फार्ज के चित्र को देखते ही पहचान लिया कि यह चित्र उसी आदमी का है, जो कल उसे दिखाई दिया था।

कुछ समय बाद, रिमस्की ने अपने घर में अपने कुछ मित्रों को रात के खाने पर बुलाया। इन मित्रों में अमेरिका के प्रख्यात विज्ञापन-लेखक विलियम वेबर भी थे। जब ये सब लोग रिमस्की के स्टूडियो में बैठे गपशप कर रहे थे, तो वेबर ने सबका ध्यान लबादा ओढ़े एक मनुष्याकृति की ओर आकर्षित किया, जो एक कोने में रखी एक कलाकृति को बड़े ध्यान से देख रहा था। जैसे ही सबने उस ओर देखा, वह मनुष्याकृति, जो फार्ज की आकृति से बहुत मिलती-जुलती थी, विलीन हो गयी। सब हैरत में रह गये। पर, रिमस्की ने बताया कि यह मनुष्याकृति वास्तव में फार्ज नामक मृत कलाकार और वास्तुशिल्पी का भूत था, उस फार्ज का जिसे मरे पैंतीस से अधिक साल हो गये हैं।

रिमस्की के पड़ोस में मैक्सवैल नामक कलाकार का स्टूडियो भी था। इस स्टूडियो की कल्पना भी फ्रार्ज ने ही की थी, जब उसने इस इमारत का नक्शा बनाया था। यह स्टूडियो वर्षों तक खाली रहा था, क्योंकि लोगों का विश्वास था कि फार्ज का भूत इसी स्टूडियो में रहता है, और उसे वहाँ किसी का आना पसन्द नहीं है।

मैक्सवैल ने यह जानते हुए भी कि यह स्टूडियो भूतशापित है, वहाँ काम करने का निश्चय किया था। उसका भूत-प्रेतों में विश्वास नहीं था।

फार्ज के भूत से मैक्सवैल का साक्षात्कार स्टूडियो किराये पर लेने के दो-तीन महीने बाद १९८८ की वसन्त ऋतु की एक रात को हुआ। उस रात को उसने देर तक स्टूडियो में काम किया था, और काम करने के बाद स्टूडियो में पड़े सोफे पर ही सो गया था। सहसा, उसकी आँखें खुल गयीं। उसने हाथ की घड़ी में देखा—रात के एक बजकर बीस मिनट हुए थे। उसे स्पष्ट अनुभूति हुई कि स्टूडियो में उसके अलावा कोई और भी है। कुछ क्षण बाद, उसने देखा कि कोई धीरे-धीरे उसकी वह आलमारी खोल रहा है, जिसमें उसकी कलाकृतियाँ रखी रहती थीं। जो आदमी यह आलमारी खोल रहा था, वह पुराने ढंग का एक लबादा ओढ़े हुए था।

भूत-प्रेतों में विश्वास न करनेवाले मैक्सवैल को लगा कि कोई चोर उसके स्टूडियो में घुसकर उसकी कलाकृतियों को चुरा रहा है। स्टूडियो का दरवाजा अन्दर से बन्द था इसलिए उसे आश्चर्य हो रहा था कि चोर आखिर स्टूडियो में घुसा तो कैसे घुसा ?

चोर को सबक सिखाने के उद्देश्य से वह सोफे से उठा और धीरे-धीरे आलमारी की ओर बढ़ा। लबादा ओढ़े हुए चोर अभी भी आलमारी में रखी हुई कलाकृतियों को टटोलने में व्यस्त था। उसने चोर के पीछे पहुँचकर उसकी पीठ में एक जोरदार घूँसा जमाया।

पर....उसका यह घूँसा चोर को न लगकर सीधा आलमारी में जाकर पड़ा और उसका हाथ जख्मी हो गया। उसका हाथ चोर के शरीर के आरपार निकल गया था।

और .. तभी उसने देखा कि उसके सामने एक क्षण पहले खड़ा चोर न जाने कहाँ विलीन हो गया। उसने गौर से देखा स्टूडियो का दरवाजा अभी तक अन्दर से बन्द था। अगर कोई आदमी वास्तव में स्टूडियो में होता तो वह अन्य किसी रास्ते से बाहर नहीं जा सकता था।

काफी देर तक सोच-विचार के बाद ही मैक्सवैल की समझ में आया और उसे विश्वास हो सका कि स्टूडियो के अन्दर आनेवाला मनुष्य नहीं भूत था।

इसके बाद जब मैक्सवैल या उसके मेहमान स्टूडियो में आते तो उन्हें अचानक ठण्ड महसूस होने लगती थी। मौसम बाहर चाहे कितना भी गरम क्यों न हो स्टूडियो में उसके अन्दर आते ही अचानक ठण्ड हो जाती थी।

एक दिन जब मैक्सवैल अपने कुछ मेहमानों के साथ स्टूडियो में बैठा था एक महिला ने सहसा चीखकर कहा 'देखो वह आलमारी के पास कौन है ?' जब बाकी सब मेहमानों ने उधर देखा तो उन्हें कोई दिखाई नहीं दिया। पर वह महिला अभी तक चिल्ला रही थी 'कहाँ गया लबादा पहने हुए वह आदमी ? अभी तो यहाँ था। एकदम कहाँ गायब हो गया ?

जब मैक्सवैल ने उसे तथा अन्य मेहमानों को फ्रार्म के भूत के बारे में बताया तो कहीं जाकर सबको सन्तोष हुआ।

फ्रार्म के पौत्र जोसिफर सॉ फ्रार्म आधुनिक अमेरिका के एक गण्यमान्य उपन्यासकार हैं। उनका कहना है कि उन्होंने कई बार अपने दादा के भूत के दर्शन किये हैं। एक शाम जब वे घर लौट रहे थे तो उन्हें बताया गया कि 'चर्च ऑव द एसेनशियन की पूजा की वेदी पर लगी उनके दादा की 'आरोहण' नाम की कलाकृति अपनी पीठिका से अलग होकर नीचे गिर पड़ी है। घर लौटने पर उन्हें मालूम पड़ा कि जिस क्षण वह कलाकृति नीचे गिरी थी, उसी क्षण उनके पिता की मृत्यु हुई थी।

अभिनेता नोएल कोवर्ड और उनका अपना भूत :

ब्रिटेन के विश्वविख्यात अभिनेता नोएल कोवर्ड से एक वार एक पत्रकार ने एक भेंट के दौरान पूछा था, "आप अपना सबसे सच्चा साथी किसे मानते हैं ?" (कोवर्ड का देहान्त अभी हाल में हुआ है।)

पत्रकार को आशा थी कि वे शायद किसी अभिनेता, अभिनेत्री, निर्देशक या निर्माता का नाम लेंगे, या हो सकता है कि अपने किसी कुत्ते का नाम लेंगे (नोएल कोवर्ड को कुत्तों का वहुत शौक था।) पर उनका उत्तर सुनकर उसे वडा आश्चर्य हुआ।

कोवर्ड ने सहज भाव से उत्तर दिया, "मेरा सवसे सच्चा साथी है, एक भूत, जिसे मैं अपना दोस्त मानता हूँ, क्योंकि वह छाया की भाँति मेरे साथ रहता है, और इस प्रकार सच्चे मित्र की भूमिका निवाहता है।"

उत्सुक पत्रकार ने पूछा, "अपने इस भूत के वारे में कुछ और वताने की कृपा करें। यह भी वतायें कि वह कहाँ रहता है, और आपको कव दिखाई देता है ?"

कोवर्ड ने कहा, "मैं लन्दन के 'ओल्ड चेल्सा' के एक फ्लैट में रहता था। वहाँ रहने के कुछ दिन वाद मुझे मालूम पडा कि जिस इमारत में वह फ्लैट था, वह एक भूतहा इमारत थी, और वह भूत इमारत में रहनेवाले वहुत से लोगों को दिखाई दिया था। चूँकि मैं भूतों में विश्वास नही करता था, इसलिए मुझे यह वात सुनकर कोई डर नही लगा, वस मजा-सा आकर रह गया।

"एक वार मेरे वटलर ने मुझे वताया कि उसने इस भूत को मेरे लिखने के कमरे की खिडकी से अन्दर आते देखा है, और यह भी कि उस दिन से यह भूत यहीं रहने लगा है, और उसका इमारत के दूसरे लोगो को दिखाई देना वन्द हो गया है।

"वटलर का खयाल था कि वह भूत मुझे वहुत चाहने लगा है, क्योंकि उसने उसे कई वार मेरे अध्ययन-कक्ष में मेरे पीछे खडे देखा है। कई वार, मैंने अस्त-व्यस्त रखी हुई अपनी पुस्तकों को करीने से रखे पाया, वह भी तव जव कि अध्ययन-कक्ष का ताला वाहर से वन्द था, और उसकी चावी मेरे पास थी।

"मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपनी आँखों से उस भूत को कभी नहीं देखा। पर मेरा वटलर शपथपूर्वक कहता है कि उसे वह कई वार दिखाई दिया है। मेरे पास आनेवाले अनेक मित्रों ने भी उसे कई वार मेरे अध्ययन-कक्ष में मँडराते हुए देखा है। वे उसे नोएल कोवर्ड का अपना भूत कहकर पुकारने लगे।

"धीरे-धीरे अपने इस भूत से मेरा लगाव भी वढ़ता गया। मेरी 'व्लिथ स्पिरिट' (Blithe spirit) कृति इस लगाव के फलस्वरूप ही लिखी गयी थी।

भूतकील

"मेरे प्रति इस भूत के प्रगाढ़ प्रेम का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब मैं अपना लन्दन का फ्लैट बेचकर बरमूडा आकर रहने लगा तो यह भूत भी मेरे साथ-साथ वहाँ गया। वहाँ भी वह मेरे अफसर और मित्रों को कई बार दिखाई दिया था।

'जब मैं न्यूयॉर्क आया तो मैंने एलक्जेण्डर वॉलकॉट की मृत्यु के बाद उसका ईस्ट ५२वीं स्ट्रीटवाला एपार्टमेण्ट खरीदा, और वहाँ रहने लगा। जब मैंने अपने बटलर से यह सुना कि भूत बरमूडा से न्यूयॉर्क भी आ गया है तो मुझे ज्यादा हैरत नहीं हुई क्योंकि न जाने मुझे क्यों यह विश्वास हो गया था कि इस भूत से आसानी से छुटकारा नहीं मिलेगा। पर वहाँ एक दिलचस्पी और हुई। इस भूत को एक साथी मिल गया—एलैग्जेण्डर वॉलकॉट का भूत। पर, मैं स्वीकार करता हूँ कि इन दोनों भूतों ने मुझे कभी किसी तरह से परेशान नहीं किया। जब मैं यह एपार्टमेण्ट निर्माता सेण्ट-सुबर को बेचकर दूसरे स्थान पर रहने लगा तो मेरा अपना भूत तो मेरे साथ नये स्थान पर आ गया, पर वॉलकॉट का भूत वहीं रह गया। बाद में, मुझे सेण्ट-सुबर से मालूम पड़ा कि इस भूत की आदतें वॉलकॉट की आदतों से बहुत मिलती थीं।

जब एक भूत ने एक महिला-कलाकार की जान बचायी

ब्यूला मुकेन नाम है अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एक महिला-कलाकार का। मुकेन की विशेषता यह है कि वे स्टेनलेस स्टील पर नक्काशी करके कलात्मक चित्र बना सकती हैं। उनके द्वारा निर्मित इस प्रकार की कलाकृतियाँ वाशिंगटन स्थित लायब्रेरी ऑव कांग्रेस के अलावा इन्ट्रिमोंट के जनरल मोटर्स के कार्यालय न्यू जर्सी स्थित इण्टरनेशनल टेलीफ़ोन ऐण्ड टेलीग्राफ़ बिल्डिंग तथा बाजील आदि देशों में भी देखी जा सकती हैं। जब अमेरिकी राष्ट्रपति आइजन हॉवर ने इतिहास-प्रसिद्ध सातवीं रेजीमेण्ट को उसकी १५०वीं सालगिरह पर एक अविस्मरणीय भेंट देने का निश्चय किया था तो उन्होंने मुकेन-निर्मित अपना एक चित्र, जो स्टेनलैस स्टील पर बना था रेजीमेण्ट को दिया था।

जब कोई श्रीमती मुकेन से उनके जीवन की सर्वाधिक अविस्मरणीय घटना सुनाने को कहता है तो वह एक भूत के बारे में बताती हैं, जो कई वर्ष पूर्व उनकी सखी के जीवन में आया था और जिसकी सामयिक 'चेतावनी' के कारण उनकी सखी की जान बची थी।

यह उन दिनों की बात है जिन दिनों वे छुट्टियों में उत्तरी मिशीगन गयी थीं। वहाँ लेक मिशीगन के पास उनकी एक सखी मेरियन एन हाल्मन रहती थीं। होल्मन जिस मकान में रहती थीं वह बहुत बड़ा था, और मुख्य मार्ग से काफी दूरी पर स्थित था। उसके आसपास कोई और घर नहीं था। इस बड़े

मकान में श्रीमती होल्डन अपनी चार महीने की लड़की और उसकी आया के साथ अकेली रहती थी। मकान में काम करनेवाले नौकर रोज सुबह आते थे, और रात में चले जाते थे। रात में वे वहाँ नही टिकते थे। इसका एक कारण यह था कि वे सब उस भूत से बहुत डरते थे, जिसे उन्होने कई बार मकान में घूमते देखा था।

श्रीमती होल्डन ने अपने पति से तलाक ले रखा था। तलाक लेते समय उनका अपने भूतपूर्व पति से काफ़ी लडाई-झगडा हुआ था। वह लड़की को अपने पास रखना चाहता था, पर श्रीमती होल्डन इसके लिए तैयार न थी। जिन दिनो, श्रीमती मुलेन उनसे मिलने गयी थी, उन दिनों उनकी लड़की अस्थायी तौर पर उनके पास रहती थी।

श्रीमती होल्डन श्रीमती मुलेन से मिलकर बहुत खुश हुई थी, और उन्होने श्रीमती मुलेन से अनुरोध किया कि वे अपने पति को भी कुछ दिनों के लिए यहाँ बुला लें। अपनी प्रिय सखी के अनुरोध पर, वे अपने पति को एक पत्र लिखने बैठी। जिस समय वे पत्र में श्रीमती होल्डन का पता लिख रही थी, उस समय उन्हें लगा कि किसी ने उनका हाथ रोक लिया है। उन्होने पीछे मुड़कर और अपने आसपास देखा पर वहाँ कोई न था।

तभी, एक और कमाल हुआ। जिस अदृश्य हाथ ने उनका हाथ रोका था, उसी ने उनके हाथ से उस पत्र पर 'सावधान. जैक सावधान ' भी लिखवा दिया। जैक उनकी सखी श्रीमती होल्डन के पति का नाम था।

श्रीमती मुलेन ने ध्यानपूर्वक देखा कि 'सावधान . जैक. सावधान' शब्दो का हस्तलेख उनके हस्तलेख से भिन्न था। उनका हाथ इतनी बुरी तरह ऐंठ गया था कि आगे उनसे कुछ नही लिखा गया। वे इस आश्चर्य को देखकर दंग और हैरान रह गयी थी। वे भागी-भागी श्रीमती होल्डन के पास गयी, और उन्हें सारी घटना सुनाकर पूछने लगी कि अब क्या करना चाहिए ?

श्रीमती होल्डन काफ़ी देर तक सोचती रही। फिर, उन्होने कहा, "भूतों से साक्षात्कार करने के लिए दैवी आदेश फलक का प्रयोग किया जाता है। यहाँ से कुछ दूरी पर एक 'मीडियम' रहता है, जिसके पास ऐसा फलक है। चलो, उसके पास चलकर मालूम करते हैं कि भूत का पूरा सन्देश क्या था ?"

दोनो उस पत्र को लेकर 'मीडियम' के घर पहुँची।

'मीडियम' ने अपने दैवी आदेश फलक से पूछा कि भूत क्या सन्देश देना चाहता था ?

उत्तर में फलक ने लिखना शुरू किया, " हत्या तुम्हारी और तुम्हारी बच्ची की सावधान रहो।"

श्रीमती होल्डन चीखने लगीं "ओह ! यह भतावनी तो मेरे लिए है। अब मैं क्या करूँ ? क्या पुलिस में रिपोर्ट करूँ ?"

फ्लक ने इस प्रश्न के उत्तर में लिखा, "नहीं ...कोई लाभ नहीं....गुड़ कुछ तैयारी करो ...।

श्रीमती मुलेन ने 'मीडियम' से पूछा, 'क्या मैं अपने पति को शिकागो में फ़ोन करूँ ?"

"नहीं... बहुत देर हो चुकी है,' और इतना लिखने के बाद उसने आगे कुछ नहीं लिखा। 'मीडियम' ने कहा कि फ्लक आगे लिखने से इनकार करता है।

श्रीमती होल्डन को मालूम था कि उनके शोफर के पास बन्दूक है। उन्होंने उसे फ़ोन करके पूछा कि क्या वह अपनी बन्दूक लेकर फ़ौरन उनके पास आ सकता है, कारण उन्हें सुरक्षा की फ़ौरन ज़रूरत है। शोफर को, जो पास के गाँव में रहता था अपनी मालकिन की यह अप्रत्याशित बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। पर, उसने उत्तर दिया कि वह अपनी बन्दूक लेकर फ़ौरन रवाना हो रहा है।

इसके बाद दोनों महिलाएँ वापस लौटीं। उन्होंने जल्दी-जल्दी खाना खाया और बच्ची और उसकी आया को लेकर मकान के एक कमरे में जाकर बैठ गयीं। यहाँ से वे आते-जाते लोगों को आसानी से देख सकती थीं। मकान के सब दरवाज़े और खिड़कियाँ उन्होंने बन्द कर लिये थे। अब उन्हें प्रतीक्षा थी, यह देखने की कि आगे क्या होता है ? वे दोनों काफ़ी डरी हुई थीं पर उन्हें आशा थी कि शोफर के आने पर वे अपने को काफ़ी सुरक्षित अनुभव करेंगी। कमरे की बत्ती को छोड़कर मकान की सब बत्तियाँ बुझा दी गयी थीं।

शोफर के आ जाने के बाद भी दोनों सारी रात नहीं सोयीं और ताश खेलकर बातों में सारी रात काटी। जब सारी रात बिना किसी दुर्घटना के बीत गयी तो सुबह दोनों अपनी मूर्खता पर अपने आप खूब हँसीं।

कुछ दिन बाद, श्रीमती होल्डन के भाई जॉन मैसॉफ ने जो कुछ मील की दूरी पर स्थित हारबर प्वॉइण्ट में रहता था अपनी बहन को फ़ोन करके पूछा, "तुम्हारे पति ने तुम्हें फ़ोन तो नहीं किया था ?

"नहीं तो। क्यों क्या हुआ ?'

"बताता हूँ। कुछ दिन पहले, हारबर प्वॉइण्ट में एक नृत्य-समारोह हुआ था। तभी जैक काफ़ी पिये हुआ था हाथ में बन्दूक लिये वहाँ आया। वह तुम्हें और तुम्हारी बच्ची को मारने की धमकी देने लगा। उसने यह भी कहा था कि वह यहाँ आने से पहले तुम्हारे घर गया था पर वहाँ उसे कोई नहीं मिला। शायद तुम सब लोग कोई फ़िल्म देखने गये थे ...'

"हाँ, मैं अपनी सखी श्रीमती मुलेन के साथ फ़िल्म देखने चली थी।"

"हम सबने जैक को एक कमरे में बन्द कर दिया, और सुबह को उसकी बन्दूक अपने क़ब्ज़े में करके, उसे छोड दिया ।

बाद मे जैक पागल हो गया, और उसने अपने जीवन के अन्तिम दस वर्ष पागलखाने में काटे ।

श्रीमती होल्डन अपने मकान में रहनेवाले उस भूत की बहुत कृतज्ञ हैं, जिसके कारण उनकी और उसकी बच्चो की जान बची ।

अपने को दोषी समझनेवाला भूत .

विश्वविख्यात कहानी-लेखक जैक लण्डन की एक कहानी है—'जैकेट' । यह आजन्म कारावास पानेवाले एक बन्दी की आश्चर्यजनक कहानी है । इस बन्दी को एक बहुत सँकरी जैकेट पहना दी जाती है, जिसकी वजह से वह आजादी से उठ-बैठ भी नही सकता, और बडे कष्ट से साँस लेता है । इस तकलीफ़ से छुटकारा पाने के लिए वह कल्पना का सहारा लेकर मानसिक रूप से भूतकाल में विचरण करता है, और अपने पूर्वजन्मो के सुखी क्षणो को फिर से जीता है । इस प्रकार, उसको वर्तमान जीवन के कष्टों की अनुभूति कम हो जाती है ।

करीब चालीस साल पहले लन्दन में एक ऐसी घटना घटी, जो इस कहानी की घटना के ठीक विपरीत थी । यह घटना पुराने किस्म की एक आरामदेह जैकेट से सम्बन्धित थी, जिसे पहनकर पहननेवाला अपनी गरदन के चारों ओर असह्य तनाव अनुभव करने लगता था, और उसे लगता था जैसे कोई उसका गला घोट रहा है । यह ढीली-ढाली जैकेट किसी व्यक्ति के शरीर पर आते ही बडी तग और दमघोंटू बन जाती थी ।

महारानी विक्टोरिया के जमाने में इटली के चाकू आदि पर सान करनेवाले मजदूर अपने साथ बन्दरों को लेकर घूमा करते थे । इन बन्दरों के लिए इटली के मजदूरो ने एक खास क़िस्म की जैकेट का निर्माण किया था, जो बडी ढीली-ढाली और आरामदेह होती थी । बाद में जैकेट की इस शैली को इग्लैण्ड के छैलाओं ने अपना लिया, और उसे 'मन्की जैकेट' कहकर पुकारने लगे । जिन दिनो महारानी विक्टोरिया के राज्यकाल की रजत-जयन्ती मनायी गयी, उन दिनो इस क़िस्म की जैकेट इग्लैण्ड के छैलाओ में बहुत प्रचलित थी ।

चालीस साल पहले, जब इग्लैण्ड की एक थियेट्रिकल कम्पनी ने महारानी विक्टोरिया के राज्यकाल की रजत-जयन्ती के समय का एक नाटक खेलने का विचार किया, तो उसके निर्देशक ने अपनी हीरोइन के लिए इसी जैकेट का चुनाव किया । यह हीरोइन थी—थोरा हर्ड, जो ब्राडवे और लन्दन की प्रख्यात तारिका जैनेट स्कॉट की माँ थी ।

जब थोरा हर्ड ने पहली बार इस जैकेट को पहना था, तब वह उन्हें बहुत

ढीली आती थी। पर, उसे आधा घण्टे तक पहनने के बाद उन्हें जैकेट बहुत तंग लगने लगी। पहले तो उन्होंने सोचा कि जैकेट वास्तव में तंग नहीं है, और उन्हें ऐसा सिर्फ लग ही रहा है, पर बाद में जब जैकेट ने उनकी गरदन को बुरी तरह दबोचना शुरू कर दिया तो उन्होंने उसे उतार फेंका, और मालूम किया कि उसे कहाँ से लाया गया था?

मालूम हुआ था कि कम्पनी के मैनेजर ने उस लन्दन के गुदड़ी-बाजार में खरीदा था।

जिस रात नाटक पहली बार खेला गया, उस रात थोरा हर्ड की तबीयत खराब होने की वजह से उनका स्थान एरिका फ्रोयस नाम की अभिनेत्री ने लिया। यह जैकेट पहनकर वह स्टेज पर गयी। स्टेज पर जाते समय यह जैकेट एरिका को बड़ी आरामदेह और ढीली ढाली लग रही थी पर करीब आधा घण्टे बाद, उसका दबाव उन्हें अपनी गरदन पर महसूस होने लगा। अन्त में, जब यह दबाव असह्य हो गया, तो एरिका को उसे उतारना पड़ा।

उतारने के बाद, एरिका को अपने सामने इसी जैकेट को पहने हुए एक तरुणी की छायाकृति स्पष्ट दिखाई दी। जैसा जैसे यह उस तरुणी का भूत है।

एरिका ने इस हैरतअंगेज घटना का जिक्र कम्पनी के अन्य सदस्यों से किया। और, जब थोरा हर्ड ने भी अपना अनुभव सुनाया तो सबको विश्वास हो गया कि हो न हो जैकेट के साथ किसी भूत का सम्बन्ध अवश्य है।

कम्पनी की मैनेजर मार्जोरी पेज ने स्वयं जैकेट को पहनकर देखा। आधा घण्टा बाद, उन्हें भी लगा जैसे कोई उनका गला घोंटने की कोशिश कर रहा है।

पेज के बाद, इस जैकेट को पहना नाटक के निर्देशक फ्रडरिक पिफर्ड की पत्नी ने। वह करीब एक घण्टे तक उस जैकेट को आराम से पहने रहीं। पर जब उसने, एक घण्टे के बाद, जैकेट को उतारकर मेज पर रखा तो सबने हैरानी से देखा कि उनकी गरदन पर नीले के निशान पड़ गये हैं, जैसे किसी ने हाथ से उनका गला दबाने की जोरदार कोशिश की हो।

पिफर्ड ने फ्रोन करके इस हैरतअंगेज घटना की सूचना फ्रक आर्चर नाम के अपने एक मित्र को दी जो भूत-प्रेतों के जानेमाने विशेषज्ञ हैं। आर्चर ने अनेक भूतों को खोज निकाला है।

आर्चर अपने साथ तीन मीडियमों को लेकर ड्यूक ऑव यार्क्स नामक स्थान में जहाँ नाटक का प्रदर्शन हो रहा था आये। जैकेट के भूत से 'साक्षात्कार' का समय नाटक के प्रदर्शन के बाद रखा गया। उस अवसर पर आर्चर और उनके तीन मीडियमों के अलावा नाटक के निर्माता निर्देशक और सब कलाकार भी मौजूद थे। मीडियमों को जैकेट और उससे सम्बन्धित घटनाओं के बारे में कुछ नहीं बताया गया था।

पहले मीडियम ने जैकेट को आधा घण्टे तक पहनने के वाद कहा कि उसे नही लगता कि इस जैकेट के साथ किसी भूत का कोई सम्बन्ध है।

दूसरे मीडियम ने भी जैकेट को करीव आधा घण्टे तक पहनने के वाद कहा कि जैकेट पहनने के वाद उसे एक तरुणी का सूक्ष्म शरीर दिखाई दिया था। इससे आगे वह कुछ नही वता पाया।

तीसरे मीडियम ने जैकेट को धारण करने के वाद ही कहना आरम्भ किया, "मुझे एक तरुणी का सूक्ष्म शरीर दिखाई दे रहा है। उसकी आयु अठारह-वीस साल की है। वह अपने को किसी अज्ञात कारणवश, दोषी अनुभव करती है। मुझे ऐसा लगता है कि उसने एक अच्छे भले आदमी को दीवानगी की हद तक नाराज कर दिया था। मुझे इस आदमी के जो अपने खुरदरे हाथो के कारण एक मजदूर लग रहा है, हाथ इस तरुणी के गले पर दिखाई पडते है। ये हाथ उसका गला दवोच रहे हैं। और अव मुझे दोनो आपस में लडते-झगडते दिखाई दे रहे है। और अव लीजिए उस आदमी ने इस तरुणी को पानी में धकेल दिया। छप्प की आवाज के साथ लडकी की लाश पानी में डूव गयी है "

इतना कहकर मीडियम चुप हो गया। वह वडा भयभीत दिखाई पड रहा था। उपस्थित लोग भी उसके हौलनाक वर्णन को सुनकर भय-स्तब्ध थे।

मीडियम ने कुछ देर वाद आगे कहना शुरू किया, "यह आदमी अव लडकी की लाश को पानी से वाहर निकालकर ऊपर खीचे ला रहा है। अव वह सीढियों के सहारे उसे एक कमरे में ला रहा है। कमरे में एक मेज और एक कुरसी के अलावा कोई और फ़र्नीचर नही है। आदमी ने लाश को एक कम्वल में लपेट लिया है, और उसे गोद में उठाकर नीचे ला रहा है। कम्वल से पानी वरावर चू रहा है। वस, इससे आगे मुझे कुछ दिखाई नही देता।"

तभी कम्पनी की मैनेजर मार्जोरी पेज ने उठकर कहा, "जव मैंने जैकेट को उतारा था, तो मुझे भी क्षण-भर के लिए यही दृश्य कि एक आदमी एक नीली लाश को कम्वल में लपेटे जीने से नीचे उतर रहा था, दिखाई दिया था। इसके तुरत वाद, मुझे लगा कि कोई मेरा गला घोटने की कोशिश कर रहा है। मैंने पहले इस विचित्र दृश्य के वारे में किसी को यह सोचकर नही वताया था कि कोई मेरी वात का विश्वास नहीं करेगा।"

मीडियम की वातें सुनकर सव इतने उत्तेजित हो गये थे कि किसी की समझ में नही आ रहा था कि आगे क्या किया जाये?

तभी श्रीमती पिफर्ड ने, जिन्हें पहली वार जैकेट को पहनकर कोई तकलीफ़ नही हुई थी, उस जैकेट को दुवारा पहना। इस वार जैकेट पहनते ही उनका दम घुटने लगा, और वह जोर-जोर से साँस लेने लगी। जव उनके पति ने जैकेट उनके शरीर से उतारी, तो वे अपने पति को पहचान भी न पायी। पर इस वार

उनकी गरदन पर पहले की भांति नील के निशान नहीं थे।

उपस्थित व्यक्तियों में अभिनेत्री हूड का एक मित्र भी था। उसने इस जैकेट को पहनने की पेशकश की। वह एक मोटा आदमी था इसलिए जैकेट शुरू से ही उसके गले में फँसी-फँसी आयी। पर उसे धारण करते ही वह एकदम बेहोश हो गया।

इसके बाद, इमन स्टॉफ नाम के कलाकार ने जैकेट को धारण किया। पर, उसे जैकेट को पहनने के बाद भी कोई कष्ट अनुभव नहीं हुआ।

फ्रेड आर्चर ने अब तय किया कि इस जैकेट को किसी अजनबी को पहनाकर देखा जाये कि उसे क्या महसूस होता है? वे इस जैकेट और एक पत्रकार को जिसे इस जैकेट के साथ घटी पिछली घटनाओं की कोई जानकारी नहीं थी अपने साथ लेकर बाहर आये।

बाहर उनकी भेंट एक तरुण और एक तरुणी से हुई। आर्चर ने उन्हें बताया कि वे एक प्रयोग में दोनों का सहयोग चाहते हैं। दोनों अपना सहयोग देने को आसानी से तैयार हो गये।

इन दोनों को थियेटर के ड्रेसिंग रूम में लाकर आर्चर ने तरुणी से जैकेट पहनने को कहा। लड़की को पहले तो इस मामूली से अनुरोध से आश्चर्य हुआ, पर बाद में उसे अपना वायदा याद आया और उसने आर्चर के हाथ से जैकेट लेकर पहनना शुरू किया।

जब उसे जैकेट पहने करीब दस मिनट हो गये तो आर्चर ने उससे पूछा 'आपको कोई तकलीफ तो महसूस नहीं हो रही?

तरुणी ने मुसकराकर कहा 'नहीं। क्यों?

"कोई बात नहीं। अच्छा अब यह जैकेट अपने साथी को पहनने को दे दीजिए।' आर्चर ने कहा। पर मन ही मन उन्हें लग रहा था कि उनका प्रयोग शायद असफल होनेवाला है।

जैसे ही तरुण ने तरुणी के हाथ से जैकेट ली वह एकदम दहल उठा। जब आर्चर ने उस उसके डर की वजह पूछी तो उसने कहा 'जैकेट हाथ में लेते ही, मुझे लगा कि कोई मेरा गला दबोच रहा है। क्या ऐसा इस जैकेट के कारण हुआ?

'क्या तुम इस अनुभव के बाद भी जैकेट को पहनना चाहते हो?'

तरुण कुछ सोचता रहा। फिर हिम्मत करके बोला 'हाँ।'

पर, जैकेट पहनते ही, वह चिल्ला उठा 'नहीं नहीं इस जैकेट को उतारो। मैं इसे नहीं पहनना चाहता। कोई मेरा गला घोंट रहा है। मैं....मैं मरना नहीं चाहता।

जैकेट जब उसके शरीर से अलग हो गयी तो आर्चर ने उससे पूछा 'क्या

तुम्हें ऐसा लगा कि कोई बेरहमी से तुम्हारा गला दबोच रहा है ?"

"बेहरमी से था या नही यह तो मैं नही कह सकता, पर उस वक्त मुझे इतना जरूर लगा था कि गला घोटनेवाला मेरा गला घोंटकर ठीक ही कर रहा है, और मुझे मेरे जुर्म की ठीक सजा दे रहा है।"

और आर्चर को याद आया, मीडियम का वह कथन जिसमें उसने कहा था कि लडकी अपने को दोषी अनुभव करती है। कितना साम्य था दोनो अनुभवो में।

आर्चर के अनुसार अपने को दोषी अनुभव करनेवाली उस लडकी का, जिसकी मृत्यु शायद इस जैकेट को पहने हुए हुई थी, भूत जबतक यह जैकेट मौजूद है, उसका पीछा नहीं छोडेगा, और हर उस व्यक्ति का गला घोटकर बदला लेने की कोशिश करेगा, जो जानबूझकर या अनजाने में, उस जैकेट को पहनेगा।

भूत, जिसने एक लेखिका को सही चेतावनी दी :

श्रीमती एला डोनाल्डसन एक लम्बे अरसे से न्यूयॉर्क के कुछ प्रमुख प्रकाशकों की सम्पादिका हैं। द्वितीय महायुद्ध में उन्होंने वाशिंगटन में सेना और नौ सेना के लिए अनेक तकनीकी पुस्तको का सम्पादन किया था। वे स्वय भी अच्छी लेखिका हैं, और अमेरिका के प्रकाशन-जगत् में उनका नाम काफ़ी आदर से लिया जाता है।

हाल ही में, एक पत्रिका में अपने जीवन के सर्वाधिक अविस्मरणीय अनुभव का उल्लेख करते हुए उन्होने लिखा था कि यद्यपि भूत-प्रेतो और प्रेत-विद्या (Psychomancy) में उनकी कोई आस्था नही है, फिर भी अपने जीवन की एक घटना को याद करके उनकी यह आस्था डगमगा उठती है।

सुनिए यह घटना, स्वय उन्ही के शब्दो में

"मुख्य घटना को सुनाने से पहले इस घटना से पहले घटनेवाली एक अन्य घटना का उल्लेख करना आवश्यक है। मेरी सहेली पैट्रिशिया ने मुझे लिखा कि वह अपनी एक सहेली के साथ कुछ दिन छुट्टियाँ मनाने जा रही है, और चाहती है कि मैं भी उसके साथ वहाँ चलूँ। उसकी सहेली हम दोनो के आने से बहुत प्रसन्न होगी।

मैं स्वय छुट्टियाँ मनाने के लिए कही जाने का विचार कर रही थी। इस निमन्त्रण को पाकर, मुझे बडी खुशी हुई, और दो-तीन दिन बाद मैं पैट्रिशिया द्वारा दिये गये पते पर पहुँच गयी। पैट्रिशिया की सहेली का बँगला था तो बडा खुशनुमा और आरामदेह, पर उसमें एक कमी थी। उसे रात मे गरम करने के लिए कोई व्यवस्था नही थी। सारे बँगले में सिर्फ एक गैस हीटर था। पैट्रिशिया, उसकी सहेली और मैं रात को एक ही कमरे मे सोते थे। सोने से पहले पैट्रिशिया अपनी आदत के मुताबिक गैस हीटर को चालू करके कमरे के सब दरवाज़े

और खिड़कियाँ बन्द कर देती थी। मैंने उसे कई बार समझाया कि ऐसा करना बहुत खतरनाक है। शुरू में पैट्रिशिया ने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, पर बाद में मेरे बहुत आग्रह करने पर, वह एक खिड़की खुली छोड़ने लगी।

''करीब एक हफ्ता उसके साथ बिताकर मैं वापस शिकागो आ गयी।

अब आती हूँ, मुख्य घटना पर। करीब छह महीने बाद पैट्रिशिया ने मुझे न्यूयॉर्क से लिखा कि उसकी सगाई हो गयी है, और वह विवाह करने के बाद, शीघ्र ही अमेरिका से बाहर जाकर रहने लगेगी। जाने से पहले वह चाहती है कि मुझसे आखिरी बार मिल ले। वह उस समय अपनी बहन के साथ ठहरी थी। उसने वहीं मुझे बुलाया था।

वहाँ जाने पर उसने मुझे बताया कि उसके पति का विदेश में एक अच्छी नौकरी मिल गयी है, और अब वह तीन-चार साल बाद ही वापस अमेरिका लौट सकेगी। इसीलिए, उसने मुझे मिलने के लिए बुलाया था। उसने अपने भावी पति हेनरी से भी मुझे मिलवाया।

जिस कमरे में मुझे ठहराया गया था, उसमें दो पलंग थे। एक पर पैट्रिशिया सोती थी, और दूसरे पर मैं। पहली रात अपने पलंग पर सोने के बाद जब मैं अगले दिन सुबह उठी तो मैंने आश्चर्य से देखा कि सामने के पलंग पर पैट्रिशिया के स्थान पर एक बूढ़ी औरत बैठी थी जिसकी शक्ल पैट्रिशिया से बहुत मिलती थी, जैसे वह उसकी माँ हो। उस औरत की आँखें बहुत उदास थीं और वह बहुत थकी हुई और दुखी लगती थी।

'मैं उसे घूर ही रही थी कि उसने बड़े उदास स्वर में पूछा 'जानती हो, पैट्रिशिया का क्या होनेवाला है? मैं बहुत दुखी हूँ।

'एक अज्ञात भय और आशंका की ठण्डी लहर मेरे सारे शरीर में दौड़ गयी। मैंने धीरे से पूछा 'क्या होनेवाला है पैट्रिशिया को?

वह शीघ्र ही जलसमाधि लेनेवाली है। उसकी कब्र समुद्र की लहरों के बीच बनेगी,' बूढ़ी औरत ने दुख से भरे स्वर में कहा।

'मैं उस औरत से पूछनेवाली ही थी कि उसे कैसे मालूम हुआ कि पैट्रिशिया शीघ्र ही जलसमाधि लेनेवाली है कि वह बूढ़ी औरत मेरी आँखों के सामने से ओझल हो गयी। अब मुझे उसी पलंग पर पैट्रिशिया सोयी हुई दिखाई दे रही थी।

''मेरी समझ में न आया कि मैं जाग रही थी या सपना देख रही थी?

'कुछ मिनट बाद पैट्रिशिया अँगड़ाई लेती हुई उठी। उठकर उसने पूछा 'मुझे तो अभी और नींद आ रही है। कहो तो मैं सो जाऊँ नहीं तो उठकर तुम्हारे लिए कॉफ़ी बना लाती हूँ।

मैंने उससे कहा 'तुम आराम करो। मैं उठ ही गयी हूँ। कॉफ़ी बनाकर

अभी तुम्हारे लिए लाती हूँ।'

"उठकर जब मैं रसोईघर मे गयी, तो देखा कि पैट्रिशिया की बहन तथा अन्य रिश्तेदार वहाँ पहले से ही मौजूद थे, और कॉफी पी रहे थे। इन लोगों को अपने डरावने सपने के बारे में बताये बिना, मैंने उनसे पूछा कि क्या पैट्रिशिया का विदेश जाना निश्चित है? उन लोगो ने कहा कि उनमे से कोई भी नहीं चाहता कि पैट्रिशिया इतनी कम आयु में अकेली विदेश जाये। उन्होंने उसे समझाने की काफी कोशिश की, पर वह बड़े जिद्दी स्वभाव की है, और उसने उनकी एक न मानी। अब उन्होने उसे उसके भाग्य पर छोड दिया था। इन लोगो की बात सुनकर मुझे लगा कि यदि मैं भी पैट्रिशिया से विदेश-यात्रा स्थगित करने को कहूँगी, तो वह मेरी बात भी नही मानेगी। फिर भी, मैंने सोचा, कोशिश करने में क्या हर्ज है?

"जब मैं कॉफी लेकर पैट्रिशिया के पास पहुँची, तो उसके साथ-साथ कॉफ़ी पीते हुए बोली, 'कल रात मैंने एक बडा ख़ौफ़नाक सपना देखा . .'

"पैट्रिशिया ने मुसकराकर कहा, 'वह तो तुम्हें देखकर ही मालूम पड रहा है। क्या इतना ज्यादा डरावना सपना था कि चेहरे पर अभी तक हवाइयाँ उड रही हैं? अच्छा, अब रात को जी भरकर सो लेना। अभी मेरे साथ बाज़ार चलो। मुझे बहुत-सी चीजें खरीदनी है।'

"मैंने अपने सपने का जिक्र, इसके बाद न पैट्रिशिया से किया, न उसके रिश्तेदारो से।

"अगले कुछ दिनो में पैट्रिशिया का विवाह हो गया। हम सबने उसे उसके पति को हवाई अड्डे पर विदा किया।

"अगले दिन, उनके परिवार के सदस्यो को उसका एक तार मिला, जिसमें लिखा था कि हम सकुशल पहुँच गये।

"इसके चार-पाँच दिन बाद, पैट्रिशिया ने एक हवाई पत्र द्वारा मुझे सूचना दी कि उसके पति ने एक अच्छा फ्लैट किराये पर ले लिया है, और वे दोनों मजे में हैं। मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई। इस बात की खुशी थी कि अपनी प्यारी सहेली के बारे में जो अप्रिय सपना मैंने देखा था, वह ग़लत निकला।

"पर, एक सप्ताह बाद, उसके परिवार के सदस्यो ने फ़ोन करके मुझे सूचना दी कि उन्हे पुलिस के अधिकारियो से एक तार मिला है कि पैट्रिशिया और उसका पति दोनो एक दुर्घटना में मारे गये है, और वे इस दुर्घटना का पूरा विवरण बाद में भेजेंगे।

"बाद में जो विवरण मिला, उससे पता चला कि पैट्रिशिया की मृत्यु ऑक्सीजन की कमी के कारण दम घुटने से हुई। अपनी आदत के मुताबिक वह सोने के कमरे में गैस हीटर जलाकर और कमरे के दरवाजे और खिड़कियाँ

बन्द करके सोयी थी। गैस हीटर खराब निकला। सारे कमरे में कार्बन आक्साइड फैल गयी, और वह और उसका पति सोते-सोते ही चल बसे।

'उसकी नौकरानी ने पुलिस को बताया कि एक दिन पहले तक हीटर अच्छी तरह काम कर रहा था, और उसमें कोई खराबी नहीं थी।

"कुछ दिन बाद सूचना मिली कि पैट्रिशिया और उसके पति के शव बन्द बैटिकों में पानी के जहाज द्वारा भेजे जा रहे हैं।

'पैट्रिशिया की माँ अपनी बेटी का अन्तिम संस्कार करने के इरादे से न्यूयॉर्क आयी और अपनी लड़की के पास ठहरी उसी एपार्टमेंट में जहाँ मैं पैट्रिशिया के साथ ठहरी थी। मैं भी अपनी सहेली के अन्तिम दर्शन करने उनके पास पहुँच गयी। मैं और पैट्रिशिया की माँ उसी कमरे में ठहरे जहाँ मैं पहले पैट्रिशिया के साथ ठहरी थी।

"न्यूयॉर्क आते ही मुझे सूचना मिली कि एक तूफान की वजह से वह जहाज जिस में पैट्रिशिया का शव आ रहा था, कुछ देर से अमेरिका पहुँचेगा।

"अगले दिन, जब मैं सुबह उठी, तो देखा पैट्रिशिया की बूढ़ी माँ सामने पलंग पर उसी तरह बैठी थीं जिस तरह मैंने कुछ दिन पहले सपने में उन्हें अपने सामने बैठा पाया था।

' मुझे जागता देखकर उन्होंने बड़े उदास स्वर में पूछा जानती हो पैट्रिशिया का क्या होनेवाला है? मैं बहुत दुखी हूँ।

'एक बार फिर एक अज्ञात भय और आशंका की ठण्डी लहर मेरे सारे शरीर में दौड़ गयी। मैंने फिर धीरे से पूछा 'क्या होनेवाला है पैट्रिशिया को ?

'वह शीघ्र ही जलसमाधि लेनेवाली है। उसकी कब्र समुद्र की लहरों के बीच बनेगी पैट्रिशिया की माँ ने दुख से भारी स्वर में कहा।

'सपना अब सच हो रहा था।

और अगले दिन वह पूरी तरह सच हो गया जब हमें सूचना मिली कि पैट्रिशिया के शव को लानेवाला जहाज समुद्र में डूब गया। पैट्रिशिया की कब्र सचमुच समुद्र की लहरों के बीच ही बनी।'

जब भूतों ने भविष्यवक्ता चुड़ियों का रूप धारण किया

रेमण्ड मैसी अमेरिकी टेलिविजन के जाने-माने कलाकार हैं। टेलिविजन की फ़िल्मों में वे अब्राहम लिंकन और 'डॉ किलडेयर' आदि के अभिनय के लिए विख्यात हैं।

यह घटना १९४० की है, जब मैसी नये-नये अभिनय-क्षेत्र में आये थे। उनका आधा समय बीतता था न्यूयॉर्क में जहाँ वे टेलिविजन के कार्यक्रमों में भाग लेते थे, और आधा बीतता था कैलिफ़ोर्निया में, जहाँ वे हॉलीवुड की फ़िल्मों में

अभिनय करते थे। वैसे, उनका ज़्यादा समय न्यूयॉर्क में ही गुज़रता था।

होटलों की ज़िन्दगी से तंग आकर मैसी और उसकी पत्नी डौरोथी ने न्यूयॉर्क में कोई घर लेकर वहाँ स्थायी रूप से रहने का निश्चय किया। उन दिनों घर आसानी से और सस्ते मिल जाते थे। मैसी-दम्पति को भी एक ऐसा ही घर मिल गया, जिसे उन्होंने खरीद लिया।

घर खरीदने के बाद, डौरोथी को लगा कि उसके सामनेवाला घर उसके घर से कही अच्छा है। जब उसने अपने पति से उस घर की क़ीमत मालूम करने को कहा, तो उसने साफ मना कर दिया। उसकी दलील थी कि वह घर उसे अच्छा नही लगता। जब डौरोथी ने उससे पूछा कि अच्छा न लगने का क्या कारण है, तो उसने कहा, "मैं पहले उसी घर को देखने गया था, पर न मालूम क्यो उसमें घुसते ही मुझे लगा कि मैं किसी कब्रिस्तान में आ गया हूँ। इतनी मनहूस जगह है वह।"

"मैं भी वहाँ एक बार गयी थी। मुझे तो वह मनहूस जगह नही लगी।" डौरोथी ने कहा, और फिर अपने काम में लग गयी। उसने तय किया कि भविष्य में वह उस घर का जिक्र अपने पति से नही करेगी, क्योंकि वह घर उसके पति को मनहूस लगता है। एक तरह से, उस घर को उसने अपने मन से निकाल ही दिया।

पर, कुछ दिन बाद, उस घर के बारे में, फिर उसे सोचने को मजबूर होना पडा।

एक शाम, वह अपने कुत्ते को लेकर पार्क से, जहाँ वह अपने कुत्ते को घुमाने ले गयी थी, वापस आ रही थी कि अपने घर के निकट, उसकी भेंट एक महिला से हो गयी। यह महिला भी अपने कुत्ते को घुमाने ले गयी थी, और अब वापस लौट रही थी।

रास्ते में दोनो महिलाएँ बातें करने लगी। बात कुत्तों से शुरू होकर घरों पर आ गयी। डौरोथी को मालूम पडा कि जिस महिला के साथ वह बात कर रही थी, वह उसके सामनेवाले घर में रहती है। उसने कहा, "मुझे आपका घर अपने घर से कही ज्यादा अच्छा लगता है। पर मेरे पति को, न मालूम क्यों, वह पसन्द नही है।"

"घर बेशक अच्छा है, पर . उसमें जो चुहियाँ रहती हैं, उनसे मैं बहुत परेशान हूँ। मैंने और मेरे पति ने उन्हें निकालने की बहुत कोशिश की, पर वे कमबख्त जाती ही नहीं। हमसे ज्यादा वे घर को अपना समझती है।"

कुछ दिन बाद, जब डौरोथी अपने घर की खिडकी के पास बैठी, बाहर सडक का दृश्य देख रही थी, उसे एक अजीब नजारा दिखाई दिया। उसने देखा कि सामनेवाले घर की सडक के किनारे की नाली से चुहियो का झुण्ड का झुण्ड

बाहर निकल रहा है। जब काफ़ी चुहियाँ नाली से बाहर आकर जमा हो गयीं तो उनमें से कुछ ने हिम्मत करके सड़क पार की, और डौरोथी के घर में घुस गयीं। बाकी चुहियाँ भी एक-एक करके उसके घर में प्रवेश करने लगीं।

डौरोथी और उसके पति ने अपने घर से इन चुहियों को निकालने के अनेक प्रयत्न किये, पर वे सब व्यर्थ सिद्ध हुए। वे न पिंजरे में आती थीं न बाहर की गोलियों से मरती थीं और न ही बिल्लियों के हाथ आती थीं।

तभी उसने समाचारपत्रों में पढ़ा कि उसके सामनेवाले घर की मालकिन ने आत्महत्या कर ली है।

घर की मालकिन की आत्महत्या के बाद, उस घर में रहनेवाले अन्य व्यक्ति भी वहाँ से चले गये और उसके बाहर 'बिक्री के लिए' का बोर्ड लगा दिया गया।

क़रीब एक महीने बाद इस घर को ख़रीदा एक करोड़पति व्यापारी ने— अपनी एक प्रेमिका के लिए, जो पहले नाटकों में नर्तकी थी। नयी मालकिन के आने के बाद घर फिर गुलज़ार हो गया और डौरोथी की खुशकिस्मती से चुहियाँ भी उसका घर छोड़कर सामनेवाले घर में जहाँ से वे आयी थीं चली गयीं।

नयी मालकिन अपने नये घर में एक महीने ही रही होगी कि उसके प्रेमी का देहान्त हो गया। उसकी सारी जायदाद उसकी पत्नी को मिली जिसने नर्तकी को उसके घर से निकाल बाहर किया।

जिस दिन नर्तकी को उस घर से निकाला गया उससे एक दिन पहले चुहियाँ फिर उस घर को छोड़कर डौरोथी के घर में आ गयी थीं। इस बार भी उन्हें निकालने की सारी कोशिशें बेकार गयीं और वे डौरोथी के घर में ही जमी रहीं।

वे तभी उस घर से गयीं जब डौरोथी के सामनेवाले घर में एक सफल व्यापारी आकर रहने लगा। जिस दिन वह व्यापारी अपने सामान के साथ उस घर में आया, उसी दिन सारी चुहियाँ अपने आप डौरोथी का घर छोड़कर अपने मूल स्थान पर चली गयीं।

अब डौरोथी को विश्वास हो गया कि ये चुहियाँ तभी उस घर को छोड़ती हैं जब उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि घर के स्वामी पर या तो कोई संकट आ चुका है, या आनेवाला है। उसे यह भी विश्वास हो गया कि इन चुहियों के रूप में कुछ भूत सक्रिय हैं। अब वह उनकी गतिविधियों पर पहले से अधिक व्यग्रता से ध्यान रखने लगी।

एक सुबह जब वह अपने घरेलू पौधों को पानी दे रही थी उसने देखा कि चुहियाँ अपना असली घर छोड़कर उसके घर की ओर ही आ रही हैं। एक अज्ञात आशंका से उसका मन काँप उठा। वह सोचने लगी अब कौन-सी दुर्घटना घटनेवाली है!

समसीका

और इस दुर्घटना का समाचार पाने के लिए उसे ज्यादा समय तक इन्तज़ार नही करना पडा।

अगले दिन, ब्रेकफ़ास्ट करते-करते मैंसी ने 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में समाचार पढा कि उनके घर के सामने रहनेवाला व्यापारी, जब अपने निजी हवाई जहाज़ में कनाडा से अमेरिका जा रहा था, तो उसका हवाई जहाज़ नीचे गिर पडा, और वह उस दुर्घटना में काम आया।

बाद में, काफ़ी पूछताछ करने पर मैंसी और डौरोथी को पता चला कि उनके सामनेवाले घर को एक मशहूर और अमीर वकील ने बनवाया था। पर, उसे वहाँ रहे हुए एक महीना भी न बीता था कि उसने किसी अज्ञात कारणवश आत्महत्या कर ली। तब से जो भी इस घर में रहा, वह किसी न किसी दुर्घटना में ग्रस्त हुआ। एक लम्बी सूची है, इस प्रकार दुर्घटनाग्रस्त होकर मरने या आत्महत्या करनेवालो की।

अकसर ऐसा समझा जाता है कि मरकर जब कोई आदमी भूत बनता है, तो उसकी आकृति आदमी जैसी ही रहती है। पर, यह सच्ची कहानी इस बात का प्रमाण है कि भूत आदमी के अलावा जानवर का रूप भी धारण कर सकता है। काश, उस घर में रहनेवाले चुहियो का संकेत समझ पाते . !

जब एक भूत ने एक लेखिका की सहायता की :

एन मास्टर्स लेखिका का असली नाम नही है। कुछ कारणो से हम उसका असली नाम नही बता सकते। पर, इतना जरूर बता सकते हैं कि उसकी जो कहानी यहाँ दी जा रही है, वह असली है, और वह पूरी तरह प्रामाणिक है।

कुमारी मास्टर्स १९४२ में शिकागो (अमेरिका) से प्रकाशित होनेवाले एक दैनिक में रिपोर्टर थी। चूँकि उसकी लेखन-शैली रोचक थी, और पत्र के सम्पादक ने देख लिया था कि उसमें सृजनशील लेखिका होने के सब गुण मौजूद हैं, इसलिए उसने कुमारी मास्टर्स से न्यूयॉर्क जाकर लिली डेल नाम की 'मीडियम' से मिलकर उसका पर्दाफ़ाश करनेवाली एक लेखमाला लिखने को कहा। लिली डेल का दावा था कि वह किसी भी प्रकार के भूत से साक्षात्कार करके उसके बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकती है।

कुमारी मास्टर्स इससे पहले अनेक ढोंगी और धूर्त लोगो की कलई खोल चुकी थी। वह अपने साथ एक फोटोग्राफ़र—एड मिले—को लेकर लिली डेल के ऑफ़िस में पहुँची।

लिली डेल ने उनका हार्दिक स्वागत किया, और दिखाया कि वह किस प्रकार मृत व्यक्तियो से सम्पर्क स्थापित करती है। उसके प्रयोगो को देखकर मास्टर्स को शुरु में ऐसा नही लगा कि वह कोई धोखेबाज़ महिला है। लेकिन,

वह इतनी आसानी से उसपर विश्वास करनेवाली नहीं थी। उसने लिज़ी से और प्रयोग करने को कहा।

लिज़ी ने उसके कहने पर जो प्रयोग किये, उनमें से कुछ कुमारी मास्टर्स को चौंकानेवाले लगे, कुछ प्रयोजनहीन लगे और कुछ पूर्णतया प्रामाणिक। पर, इन प्रयोगों के बाद भी उसने लिज़ी के बारे में कोई अन्तिम निर्णय नहीं लिया।

तभी एक लम्बी मोहनिद्रा से जागकर, लिज़ी डेन ने कुमारी मास्टर्स से कहा 'आओ अब अपनी आयु की एक लड़की के भूत से मिलो। पर यह लड़की रेड इण्डियन है। मिलना चाहोगी उससे? उसका नाम 'रेड रोज़' (लाल गुलाब) है।

कुमारी मास्टर्स को 'लाल गुलाब' से मिलने में कोई एतराज न था।

लिज़ी डेन फिर मोहनिद्रा में सोकर 'रेड रोज़' का आवाहन करने लगी। कुछ मिनट बाद मृत 'रेड रोज़' की आत्मा लिज़ी डेन के शरीर में प्रवेश करके अपनी कहानी सुनाने लगी। उसकी कहानी से जो उसने रेड इण्डियनों द्वारा बोली जानेवाली टूटी-फूटी अँगरेज़ी में सुनायी, मास्टर्स को पता चला कि जब वह सत्रह-अठारह साल की ही थी तब जंगल की आग में जल जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी थी। उस समय से उसकी अशान्त आत्मा स्थायी शान्ति की खोज में इधर-उधर घूमती रहती है। उसकी बातों से अधिक दिलचस्प लगी मास्टर्स को उसकी निर्मुक्त हँसी, जो दुनिया की पेचीदगियों और छलछन्द से बेख़बर एक नासमझ युवती की प्यारी हँसी थी।

कुमारी मास्टर्स को लिज़ी डेन के माध्यम से इस सूर्यमिज़ाज युवती से मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। भले ही वह लिज़ी डेन की कल्पना रही हो पर कितनी सुन्दर कल्पना थी।

मास्टर्स के सम्पादक ने उसकी लेखमाला का ख़ूब प्रचार किया था। अमेरिका में इतना अधिक प्रचार किसी और 'मीडियम' का नहीं हुआ था। अब लिज़ी डेन का भविष्य एक तरह से कुमारी मास्टर्स के हाथों में था। यदि वह अपने लेखों के ज़रिये यह सिद्ध कर देती है कि लिज़ी डेन एक धोखेबाज़ मीडियम है तो लाखों पाठक उसका विश्वास कर लेंगे, और कोई ग्राहक उसके पास फटकेगा भी नहीं। उसके विपरीत, यदि उसने अपनी लेखमाला के ज़रिये यह दिखा दिया कि वह एक सच्ची और प्रामाणिक 'मीडियम' है, तो वह रातारात सारे अमेरिका में लोकप्रिय हो जायगी।

एक दिन कुमारी मास्टर्स ने लिज़ी डेन से कहा कि वह उसके होटल के कमरे में आकर अपने प्रयोग दिखाये और प्रयोग के दौरान बीती बातों के बजाय जिनकी जाँच करना सदैव सम्भव नहीं होता वर्तमान की बातें बताये। लिज़ी इस बात पर राज़ी हो गयी।

ञान शुरू किय। मोह-निद्रा में सोने के वाद, सबसे पहले उसने 'रेड रोज़' से
पर्क स्थापित किया, और उससे कुमारी मास्टर्स के वर्तमान जीवन के वारे में
छ वताने को कहा।

'रेड रोज़' ने 'आते' ही सबसे पहले अपने आह्लादपूर्ण स्वर में कुमारी
स्टर्स को एक हलकी-सी डाँट पिलायी। उसने एक सहेली की तरह कुमारी
स्टर्स को चिढाते हुए कहा, "आजकल वडी सुस्त और लापरवाह हो गयी हो
। नही तो अपने कोट की उघडी हुई सीवन को छिपाने के लिए सेफ्टीपिन
इस्तेमाल न करती। भला, उसे सीने में कितनी देर लगती थी।" यह
हकर वह खिलखिलाकर हँसने लगी।

इसके वाद, उसने कुमारी मास्टर्स के वर्तमान जीवन के वारे में कुछ ऐसी
वातें वतायी, जिनका पता लिली डेल को कभी लग ही नही सकता था।

कुमारी मास्टर्स ने अपने पत्र के लिए लिली डेल के वारे में जो पहला लेख
खा, उसमें 'रेड रोज़' का जिक्र जानवूझकर नही किया, क्योंकि वह उसके
रे में अभी तक किसी अन्तिम निर्णय पर नही पहुँच पायी थी।

अपना पहला लेख पूरा करने के वाद, उसने अपने सम्पादक को फ़ोन किया
लेख तैयार है, और वह उसे लेने के लिए किसी छोकरे को भेज दें।

एक घण्टे के वाद, पत्र के कार्यालय से एक छोकरा आकर वह लेख ले गया।
स्टर्स ने उसे खास तौर पर कह दिया था कि वह लेख सम्पादक को ही दे,
सी और को नही। छोकरे ने उससे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा।

पर, अगले दिन सम्पादक ने मास्टर्स को फोन करके शिकायत की कि उसने
भी तक लेख क्यो नही भेजा, हालांकि उसे लेने के लिए एक छोकरा कल भेजा
गया था। चकित मास्टर्स ने सम्पादक को वताया कि छोकरा कल उसके
स आया था, और उसने उसे लेख देकर कहा था कि लेख सम्पादक के ही
थो में देना। उसने यह भी कहा कि वह स्वय कार्यालय में आ रही है, ताकि
करे से पूछ सके कि लेख का क्या हुआ ?

जव वह कार्यालय पहुँची, तो उसने देखा कि सम्पादक महोदय उस छोकरे
डाँट रहे हैं, और छोकरा वार-वार यही कह रहा है कि वह लेख कुमारी
स्टर्स के पास से लाया तो था, पर वाद में उसने उसे कहाँ रख दिया, यह उसे
द नही। वहुत याद करने पर भी उसे याद नही आ रहा था कि वह लेख
ने कहाँ रखा था ?

लाचार, सम्पादक महोदय ने कुमारी मास्टर्स को वह लेख दुवारा लिखने को
। पर मास्टर्स ने कहा कि उसे याद नही है कि उसने क्या लिखा है, और
नी जल्दी उससे दुवारा वह लेख नही लिखा जा सकेगा ? लेखमाला का काफी

इस प्रकार किया गया था और अब इतना समय भी नहीं था कि उस माला की तिथि को आगे खिसकाया जा सके।

तभी मास्टर्स को 'रेड रोज' की याद आयी। उसने सोचा शायद 'रेड रोज' की कुछ सहायता कर सके। यदि वह उसके छिपे हुए हैण्डबैग के बारे में बता सकती है तो उसके लिए उसके गायब हो गये लेख के बारे में जानना भी असम्भव न होगा। उसने मन ही मन 'रेड रोज' को याद किया और प्रार्थना की, "हे रेड रोज! इस संकट के समय मेरी मदद करो। मैं तुम्हारा यह अहसान कभी नहीं भूलूँगी।

इस प्रार्थना के बाद कुमारी मास्टर्स अपने को बहुत मूर्ख और दीवानी अनुभव कर रही थी क्योंकि ऐसी चीजों में उसका अधिक विश्वास न था।

पर, तभी अगले क्षण एक चमत्कार हुआ।

बिना यह सोचे कि वह क्या कर रही है, और किसकी प्रेरणा से ऐसा कर रही है कुमारी मास्टर्स सम्पादक के ऑफिस से बाहर निकली और बरामदे से होकर सम्पादकीय विभाग के एक कोने में रखे हुए टेलीप्रिंटर के पास पहुँची और उसके पास रखी एक मेज पर फैले हुए कागजों को उलटने-पलटने लगी। उन्हीं कागजों में उसे अपना लेख भी मिल गया।

अब कुमारी मास्टर्स का विश्वास 'रेड रोज' में और गहरा हो गया। 'रेड रोज' का मूल्य अब तक अवश्य था पर [illegible]। [illegible] कि आज अगर वह मदद न करती तो उसे और [illegible] परेशानी का सामना करना पड़ता।

बाद में जब कुमारी मास्टर्स किसी [illegible] को बताया कि हॉलीवुड की प्रख्यात अभिनेत्री [illegible] भूतों के प्रकोप से पीड़ित थी पर जब से [illegible] है, वह प्रकोप शान्त हो गया है।

"बिना मैं [illegible] से बातें किये मैं [illegible] सकती।" कुमारी मास्टर्स ने कहा।

"आप उनसे बातें करके देख सकती हैं। [illegible] में जरूर पधारिए। वहाँ हम कुछ [illegible] हैं।"

"मैं अवश्य आऊँगी क्योंकि मैं [illegible] से सम्पर्क करने का जो प्रयोग करते हैं, [illegible] मूँ?"

अगले दिन जब मास्टर्स [illegible] रेस के [illegible] के लिए वहाँ [illegible]

अभिनेता, वकील आदि मौजूद थे। इनमें से अधिकांश को मास्टर्स अच्छी तरह जानती थी।

अचेतावस्था मे आकर लिली डेल ऐसी आवाज़ करने लगी जैसे खाँसी से पीड़ित आदमी करता है। कुछ देर बाद, उसने उसी आवाज़ में कहा, "मास्टर्स, मुझे पहचाना नही, मैं तुम्हारा नाना हूँ। तुमने मुझे नही देखा, पर मेरा फोटो तो देखा होगा।"

मास्टर्स ने पहचाना, आवाज़ सचमुच उसके नाना की आवाज़ से मिलती थी। वही घरघराहटवाली आवाज़ जिसका ज़िक्र उसकी नानी किया करती थी। पर, उन्हें मरे तो पचास साल हो चुके थे, जब लिली डेल का जन्म भी नहीं हुआ था।

"क्या आप अभी तक भूत बने हुए है ?" मास्टर्स ने धीमे स्वर में पूछा।

"हाँ, पर मैं मज़े में हूँ।"

कुछ क्षण की चुप्पी के बाद, लिली डेल के मुँह से ऐसी आवाज़ निकलने लगी, जैसे कोई हवाई जहाज़ उड रहा हो। फिर उसने एक विचित्र स्वर में कहा, "समुद्रताल में गिरने का यह मेरा पहला और आखिरी अनुभव है।"

"क्या यह सन्देश भी मेरे लिए है ?" कुमारी मास्टर्स ने पूछा।

"हाँ।" मीडियम लिली डेल ने कहा।

"किसका सन्देश है ?"

"रेमण्ड क्लैपर का।"

रेमण्ड क्लैपर न्यूयॉर्क वर्ल्ड-टेलीग्राम के युद्ध-सवाददाता थे, और कुछ दिन पहले एक वायुयान-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गयी थी। जिस वायुयान से वे यात्रा कर रहे थे, वह दक्षिणी प्रशान्त महासागर के एक समुद्रताल में जा गिरा था। पर कुमारी मास्टर्स रेमण्ड क्लैपर को सिर्फ नाम से जानती थी। न वह कभी उससे मिली थी, और न क्लैपर ने ही कभी मास्टर्स से बात की थी।

जब यह बात मास्टर्स ने प्रयोग के बाद, लिली डेल को बतायी, तो उसने कहा, "आपने पिछले दो-तीन दिनो में शायद उसका ध्यान किया होगा।"

"ध्यान ? मुझे क्लैपर का ध्यान करने की क्या ज़रूरत है ? मेरा उससे कभी कोई सम्बन्ध नही रहा।"

"याद कीजिए। बिना ध्यान किये, वह आपको याद नही करेगा।"

उस समय तो नही, पर होटल से अपने घर आते हुए, मास्टर्स को याद आया कि कल ही जब वह ऑफिस से घर आ रही थी, तो रास्ते में रेमण्ड क्लैपर का पुराना घर देखकर क्षण-भर के लिए उसे याद किया था।

तब—लिली डेल ने सच ही कहा था।

एक विश्वविख्यात लेखक और भूत

स्टुअर्ट क्लोएट हैं तो अमेरिका के रहनेवाले, पर काफ़ी समय तक दक्षिण अफ्रीका में रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका के बारे में लिखी गयी अनक पुस्तकें जिनमें 'द अफ्रीकन वायट' सर्वाधिक विख्यात है—विश्व-विख्यात हो चुकी है। 'टमिंग ह्वीस्स' नामक उनका उपन्यास भी अपने काल में काफ़ी लोकप्रिय हुआ था।

जिन दिनों वे अमेरिका में रहते थे उन दिनों उन्हें भूतों-सम्बन्धी एक अनुभव हुआ था। इस अविस्मरणीय अनुभव का वर्णन उन्होंने अपनी एक रचना में अत्यन्त रोचक शैली में किया है। प्रस्तुत विवरण उसी वर्णन पर आधारित है।

क्लोएट के मित्र हैं स्ट्रथर्स बर्ट, जिनका व्योमिंग में बहुत बड़ा पशुपालन केन्द्र है। उसने क्लोएट और उनकी पत्नी टिमी को कुछ दिन इस केन्द्र में अपने साथ बिताने के लिए आमन्त्रित किया था। एक शाम वे दोनों अपने मित्र तथा उसकी पत्नी के साथ पिकनिक के लिए केन्द्र के निकट स्थित एक सुहावने स्थान में गये थे। उनके साथ बर्ट के चार परिचित भी थे।

उस स्थान पर, जो एक प्रपात के निकट स्थित था पहुँचने के लिए उन्हें एक सँकरे और टेढ़े-मेढ़े रास्ते से गुजरना पड़ा था। उस स्थान पर पहुँचकर उन्होंने आग जलायी और खाना गर्म करके खाने लगे। जब रात हो गयी तो घटाटोप अँधेरा छा गया, और इस अँधेरे में सिर्फ़ वह आग ही जलती हुई दिखाई दे रही थी, जो उन्होंने कुछ समय पहले जलायी थी।

कुछ देर बाद उन सबको किसी घोड़े की चौकड़ी भरने की आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा कोई घोड़ा सामने के सँकरे और टेढ़े-मेढ़े रास्ते से सरपट भागा चला आ रहा है। क्रमश: घोड़े के भागने की आवाज़ तेज़ हो गयी, और ऐसा लगा कि कुछ सेकण्ड बाद ही वह घोड़ा उनके पास आ जायेगा।

और, अगले क्षण क्लोएट और उनकी पत्नी ने जल्दी से अपना सिर नीचा करके अपने शरीर को तिरछा कर लिया, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि घोड़ा दौड़ता-दौड़ता ठीक उनके पास ही आ पहुँचा है। उनके पास बैठे दो व्यक्तियों ने भी ऐसा ही किया।

दल के चार सदस्यों को घोड़े के सरपट भागने की आवाज़ साफ़-साफ़ सुनाई दे रही थी पर शेष चार को यह आवाज़ बिलकुल सुनाई नहीं दी।

क़रीब एक मिनट बाद यह आवाज़ सुनाई देनी बन्द हो गयी, और लगा घोड़ा दौड़ते-दौड़ते विपरीत दिशा में चला गया है। दल के चारों सदस्य, जिन्हें यह आवाज़ सुनाई दी थी इस अप्रत्याशित घटना के कारण काफ़ी चकित और भयस्तब्ध थे।

...ले कई दिनों तक यह घटना क्लोएट-दम्पति और वर्ट-दम्पति के बीच
...ा विषय बनी रही। वर्ट ने क्लोएट को बताया, "जिस जगह हम
...क मनाने गये थे, वहाँ कई वर्ष पूर्व, एक आदमी की हत्या की गयी थी।
... का खयाल है कि उस स्थान के निकट स्थित प्रपात के नीचे सोने की खान
... उसके सोने के लिए कुछ आदमी यहाँ आये थे। शायद उन्हें कुछ सोना
...ा भी था। झगडा शायद सोने के बटवारे को लेकर ही हुआ था। आज भी
...ाँ लकडी का बना एक केबिन मौजूद है, जिसपर गोलियो के निशान नजर
...ते हैं। जिस भुतहा घोडे की आवाज़ हमें सुनाई दी थी, वह या तो हत्यारे
...ा घोडा था, या उस आदमी का, जो सोने को लेकर भागा था।"

क्लोएट ने कहा, "मैं जिस बात से चकित हूँ, वह यह है कि हमें न घोडा दिखाई दिया, न घुडसवार, पर घोडे के भागने की आवाज़ इतनी साफ-साफ सुनाई दी कि वास्तव में लगा कि कोई घुडसवार सचमुच अपने घोडे पर सवार सरपट भागा चला जा रहा है। जब हमें ऐसा लगा कि घोडा हमारे बिलकुल पास आ गया है, तब मैंने पास की ज़मीन को कांपते और थरथराते देखा था। मैं सचमुच डर गया था, जैसे सचमुच कोई घोडा मेरे सिर पर चढा चला आ रहा हो।"

क्लोएट की पत्नी टिनी ने कहा, "भूत-प्रेतों की घटनाएँ अफ्रीका में तो होती हैं, और हमें उनका अनुभव भी है। पर, लगता है कि भूत अमेरिका में भी हैं।"

"मेरा खयाल है कि जहाँ आदमी हैं, वहाँ भूत भी हैं, क्योंकि आदमी ही मरकर भूत बनता है," स्ट्रथर्स वर्ट ने हँसते हुए कहा। "खैर, आप अफ्रीका के अपने अनुभव सुनाइए। आज की शाम भूतों की कहानियाँ ही हो जायें।"

"आपको सारी कहानियाँ पढनी हों, तो मेरी पुस्तक 'द नॉयलोन सफारी' पढिए, जिसमें मैंने अफ्रीका की अनेक विलक्षण और भयावह घटनाओं का ज़िक्र किया है। एक बार मैंने वहाँ के एक पेड का फोटो लेने की कोशिश की थी, पर फिल्म डेव्हलेप करने पर पता चला कि उस पेड का फोटो फिल्म पर नही आया। मुझे इससे ज्यादा ताज्जुब नही हुआ, क्योंकि मुझे पहले ही बता दिया गया था कि इस पेड पर रहनेवाले भूत कभी उसका फोटो नही लेने देंगे। और, सचमुच ऐसा ही हुआ। मैंने दुबारा फोटो लेने की कोशिश की, पर फिल्म के अच्छा होने के बावजूद, फोटो फिर भी नही आया। फिल्म एकदम साफ थी।" टिनी ने कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है?" आश्चर्य से श्रीमती वर्ट ने पूछा।

"मालूम नही। पर, इससे भी ज्यादा कमाल तो तब हुआ, जब मैंने उस झोपडे का फोटो लेने की कोशिश की, जिसमें किंवदन्ती के अनुसार अफ्रीकी लोगो के भूत-प्रेतो के देवता जू-जू की एक मूर्ति प्रतिष्ठित थी। इस बार न केवल

भूतलीला

उस फ़ोटो की फ़िल्म ही साफ़ रही, बल्कि उसके दुष्प्रभाव से फ़िल्म के अन्य फ़ोटो भी बेकार हो गये।

"वहाँ हम जबतक रहे, कोई न कोई कमाल होता ही रहता था," क्लीएग ने कहा। "एक बार हमने केपटाउन से क़रीब सौ मील की दूरी पर स्थित स्ट्राँम्सबूक में अपने रहने के लिए एक छोटा-सा मकान खरीदा। यह मकान चारों ओर पर्वतों से घिरी एक घाटी में स्थित था। घाटी में बड़े-बड़े और काफ़ी पुराने पेड़ थे। इन पेड़ों की विशेषता यह थी कि वे एकदम सीधे बढ़ते थे। इसलिए उनका प्रयोग फ़र्नीचर बनाने के लिए किया जाता है। पर, हमारे बाग़ में कोई बड़ा और पुराना पेड़ नहीं था। जो भी पेड़ थे छोटे-छोटे थे।

"लेकिन, एक दिन जब मैं अपनी पत्नी के साथ बाग़ में बाग़बानी कर रहा था तब मैंने बाग़ के एक अँधेरे कोने में जहाँ मैं पहले कभी नहीं गया था एक बहुत बड़ा पेड़ अपनी आँखों के सामने देखा। हम दोनों को आश्चर्य हो रहा था कि इतना बड़ा पेड़ जो हमारे ही बाग़ में था हमें पहले क्यों नहीं दिखाई दिया? उस दिन, हम दोनों इसी पेड़ के बारे में बातें करते रहे। टिनी ने कहा कि वह पुराने मकान-मालिक से इस बड़े पेड़ के बारे में पूछेगी।

"पर, अगले दिन, जब हम दोनों फिर उस पेड़ को देखने गये तो यह देखकर हमारी आँखें फटी की फटी रह गयीं कि वह पेड़ वहाँ नहीं था। बाद में हमें पूछने पर पता चला कि उस क़िस्म का बड़ा और पुराना पेड़ कभी भी हमारे बाग़ में नहीं था।

"तो क्या यह दृष्टिभ्रम था? हो सकता है। पर, सवाल यह है कि यह दृष्टिभ्रम मुझे और मेरी पत्नी को एक साथ क्यों हुआ? जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि वह पेड़ वहाँ मौजूद था। मैंने उसे देखा ही नहीं था, उसे छुआ भी था। उसकी पीली छाल का खुरदरा स्पर्श आज भी मुझे नहीं भूलता। यदि उस पेड़ को देखने को मैं दृष्टिभ्रम मान लूँ, तो फिर मैं भी शायद जीवित नहीं हूँ। मेरा जीवित होना भी एक भ्रम है।

इसके बाद, टिनी ने अपना एक और अलौकिक अनुभव सुनाया

"उन दिनों मेरी आयु छह वर्ष थी, और मैं अपने दादा-दादी के साथ मेन्सिल-वानिया में रहती थी। एक दिन मेरी दादी मुझे साथ लेकर अपनी एक पुरानी सहेली के घर गयी। दुपहर के खाने के बाद मुझे एक कमरे में सुला दिया गया। कमरे में परदे डाल दिये गये और मुझे अकेला छोड़ दिया गया।

"कुछ समय बाद जब मेरी आँखें खुलीं तो मैंने देखा कि कमरे में लगे एक दर्पण में कोई धुँधली-सी छाया दिखाई दे रही थी। मैं बड़ी दिलचस्पी से उस दर्पण को देखने लगी। क्रमशः दर्पण की छाया स्पष्ट होने लगी और मैंने देखा कि दर्पण में एक स्त्री और एक पुरुष चलते-फिरते दिखाई दे रहे हैं। फिर, मैंने

अगले कई दिनों तक यह घटना क्लोएट-दम्पति और बर्ट-दम्पति के बीच चर्चा का विषय वनी रही। वर्ट ने क्लोएट को वताया, "जिस जगह हम पिकनिक मनाने गये थे, वहाँ कई वर्ष पूर्व, एक आदमी की हत्या की गयी थी। लोगो का खयाल है कि उस स्थान के निकट स्थित प्रपात के नीचे सोने की खान है। उसके सोने के लिए कुछ आदमी यहाँ आये थे। शायद उन्हें कुछ सोना मिला भी था। झगडा शायद सोने के वटवारे को लेकर ही हुआ था। आज भी वहाँ लकडी का वना एक केविन मौजूद है, जिसपर गोलियो के निशान नजर आते हैं। जिस भुतहा घोडे की आवाज़ हमें सुनाई दी थी, वह या तो हत्यारे का घोडा था, या उस आदमी का, जो सोने को लेकर भागा था।"

क्लोएट ने कहा, "मैं जिस वात से चकित हूँ, वह यह है कि हमें न घोडा दिखाई दिया, न घुडसवार, पर घोडे के भागने की आवाज़ इतनी साफ़-साफ़ सुनाई दी कि वास्तव में लगा कि कोई घुडसवार सचमुच अपने घोडे पर सवार सरपट भागा चला जा रहा है। जव हमें ऐसा लगा कि घोडा हमारे बिलकुल पास आ गया है, तव मैंने पास की ज़मीन को कांपते और थरथराते देखा था। मैं सचमुच डर गया था, जैसे सचमुच कोई घोडा मेरे सिर पर चढा चला आ रहा हो।"

क्लोएट की पत्नी टिनी ने कहा, "भूत-प्रेतों की घटनाएँ अफ़्रीका में तो होती हैं, और हमें उनका अनुभव भी है। पर, लगता है कि भूत अमेरिका में भी हैं।"

"मेरा खयाल है कि जहाँ आदमी हैं, वहाँ भूत भी हैं, क्योकि आदमी ही मरकर भूत वनता है," स्ट्रथर्स वर्ट ने हँसते हुए कहा। "खैर, आप अफ्रीका के अपने अनुभव सुनाइए। आज की शाम भूतो की कहानियाँ ही हो जायें।"

"आपको सारी कहानियाँ पढनी हो, तो मेरी पुस्तक 'द नॉयलोन सफ़ारी' पढिए, जिसमें मैंने अफ्रीका की अनेक विलक्षण और भयावह घटनाओं का ज़िक्र किया है। एक वार मैंने वहाँ के एक पेड का फोटो लेने की कोशिश की थी, पर फ़िल्म डेव्हलैप करने पर पता चला कि उस पेड का फोटो फिल्म पर नही आया। मुझे इससे ज्यादा ताज्जुव नहीं हुआ, क्योकि मुझे पहले ही वता दिया गया था कि इस पेड पर रहनेवाले भूत कभी उसका फोटो नहीं लेने देंगे। और, सचमुच ऐसा ही हुआ। मैंने दुवारा फोटो लेने की कोशिश की, पर फिल्म के अच्छा होने के वावजूद, फोटो फिर भी नहीं आया। फिल्म एकदम साफ थी।" टिनी ने कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है?" आश्चर्य से श्रीमती वर्ट ने पूछा।

"मालूम नही। पर, इससे भी ज्यादा कमाल तो तव हुआ, जव मैंने उस झोपडे का फ़ोटो लेने की कोशिश की, जिसमें किंवदन्ती के अनुसार अफ़्रीकी लोगों के भूत-प्रेतों के देवता जू-जू की एक मूर्ति प्रतिष्ठित थी। इस वार न केवल

उस फ़ोटो की फ़िल्म ही साफ़ रही, बल्कि उसके दुष्प्रभाव से फ़िल्म के अन्य फ़ोटो भी बेकार हो गये।

''वहाँ हम जबतक रहे, कोई न कोई कमाल होता ही रहता था,' क्लोएट ने कहा। 'एक बार हमने कैपटाउन से करीब सौ मील की दूरी पर स्थित स्ट्रैंमसलूफ़ में अपने रहने के लिए एक छोटा-सा मकान खरीदा। यह मकान चारों ओर पर्वतों से घिरी एक घाटी में स्थित था। घाटी में बड़े-बड़े और काफ़ी पुराने पेड़ थे। इन पेड़ों की विशेषता यह थी कि वे एकदम सीधे बढ़ते थे। इसलिए उनका प्रयोग फ़र्नीचर बनाने के लिए किया जाता है। पर, हमारे बाग़ में कोई बड़ा और पुराना पेड़ नहीं था। जो भी पेड़ थे, छोटे-छोटे थे।

''लेकिन, एक दिन जब मैं अपनी पत्नी के साथ बाग़ में बाग़बानी कर रहा था तब मैंने बाग़ के एक अँधेरे कोने में, जहाँ मैं पहले कभी नहीं गया था एक बहुत बड़ा पेड़ अपनी आँखों के सामने देखा। हम दोनों को आश्चर्य हो रहा था कि इतना बड़ा पेड़ जो हमारे ही बाग़ में था हमें पहले क्यों नहीं दिखाई दिया? उस दिन, हम दोनों इसी पेड़ के बारे में बातें करते रहे। टिमी ने कहा कि वह पुराने मकान-मालिक से इस बड़े पेड़ के बारे में पूछेगी।

''पर, अगले दिन जब हम दोनों फिर उस पेड़ को देखने गये तो यह देखकर हमारी आँखें फटी की फटी रह गयीं कि वह पेड़ वहाँ नहीं था। बाद में हमें पूछने पर पता चला कि उस क़िस्म का बड़ा और पुराना पेड़ कभी भी हमारे बाग़ में नहीं था।

'तो क्या यह दृष्टिभ्रम था? हो सकता है। पर, सवाल यह है कि यह दृष्टिभ्रम मुझे और मेरी पत्नी को एक साथ क्यों हुआ? जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि वह पेड़ वहाँ मौजूद था। मैंने उसे देखा ही नहीं था, उसे छूआ भी था। उसकी मोटी छाल का खुरदरा स्पर्श आज भी मुझे नहीं भूलता। यदि उस पेड़ को देखने को मैं दृष्टिभ्रम मान लूँ, तो फिर मैं भी शायद जीवित नहीं हूँ। मेरा जीवित होना भी एक भ्रम है।

इसके बाद टिमी ने अपना एक और अलौकिक अनुभव सुनाया

''उन दिनों मेरी आयु छह वर्ष की, और मैं अपने दादा-दादी के साथ पेन्सिलवानिया में रहती थी। एक दिन मेरी दादी मुझे साथ लेकर अपनी एक पुरानी सहेली के घर गयी। दुपहर के खाने के बाद मुझे एक कमरे में सुला दिया गया। कमरे में परदे डाल दिये गये और मुझे अकेला छोड़ दिया गया।

''कुछ समय बाद जब मेरी आँखें खुलीं तो मैंने देखा कि कमरे में लगे एक दर्पण में कोई धुँधली-सी छाया दिखाई दे रही थी। मैं बड़ी दिलचस्पी से उस दर्पण को देखने लगी। क्रमशः दर्पण की छाया स्पष्ट होने लगी, और मैंने देखा कि दर्पण में एक स्त्री और एक पुरुष चलते-फिरते दिखाई दे रहे हैं। फिर

देखा, दोनो आपस में लडने-झगडने लगे हैं। जब मैंने देखा कि वे एक दूसरे को पीट रहे हैं, तो मैं एकदम चिल्ला पडी। आखिर, बच्ची ही तो थी। मेरी चीख-चिल्लाहट को सुनकर मेरी दादी दौडी हुई कमरे में आयी।

"दादी के कमरे में आते ही परछाँई धीरे-धीरे विलीन होने लगी, और एकाध मिनट बाद, दर्पण फिर पहले-जैसा साफ़ और छायारहित हो गया। जब मैंने दर्पण की परछाँई की कहानी अपनी दादी और उनकी सहेली को सुनायी, तो उन्होंने उसे हँसकर टाल दिया। पर, मैंने तय कर लिया था कि मैं बडी होकर इस घर के दर्पण के रहस्य को अवश्य उद्‌घाटित करूँगी।

"बडी होकर, मैंने जो पूछताछ की, उससे मालूम हुआ कि वह दर्पण पहले आयरलैण्ड के एक घर में था, जहाँ एक हत्या हुई थी। एक पति ने अपनी पत्नी का गला घोटकर उसकी हत्या कर दी थी। उस दर्पण ने इस भयानक दृश्य को 'देखा' था।

"इस अनुभव के बाद, मुझे दर्पणो से इतना डर लगने लगा था कि मैं दर्पण-वाले कमरे में सो भी नही पाती थी। आज भी दर्पणो से मुझे बहुत डर लगता है। खास तौर पर, आधे-अँधेरे कमरे में लगे दर्पण की ओर तो मैं देख भी नही पाती।"

विश्वविख्यात रूसी नर्तक निजिन्सकी और उनका भूत :

यह सच्ची कहानी है विख्यात रूसी नर्तक वास्लोव निजिन्सकी और उनकी पत्नी रोमोला निजिन्सकी की, जो काफ़ी दिनों तक भारत में रही थी, और हठयोग की दीक्षा लेकर वापस लौटी थी। निजिन्सकी की भी योग और प्रेतात्म-वाद में गहरी रुचि थी।

वास्लोव निजिन्सकी प्रथम विश्वयुद्ध में लडे थे। युद्ध में खूनखराबा देखकर उनकी रुचि अध्यात्म और प्रेतात्मवाद में जाग्रत् हुई थी। बाद में, शायद अध्यात्म में अत्यधिक रुचि दिखाने के कारण, वे अर्द्ध-विक्षिप्त-से हो गये थे। अगले ३२ वर्षों तक उनकी यही अवस्था रही।

इस अवधि में उनकी पत्नी रोमोला ने उनकी बहुत सेवा की। वास्लोव निजिन्सकी को इलाज के सिलसिले में अस्पताल में रहना पडता था, और इतने वर्षों तक इलाज कराते-कराते वे काफी दुर्बल हो गये थे। उन्हें रोज अजीब-अजीब सपने आते थे, जिन्हें वे अपनी डायरी में लिखते रहते थे।

जब १९५० में डॉक्टरो ने वास्लोव को पूर्णतया स्वस्थ घोषित कर दिया, तब रोमोला उन्हें लन्दन ले गयी। लन्दन आकर वे दोनो होटल वैलबेक में ठहरे। पर, लन्दन आते ही वास्लोव की हालत फिर खराब हो गयी। उन्हें एक टेलिविजन कार्यक्रम में भाग लेना था, पर सहसा बीमार हो जाने के कारण वे ऐसा न कर

सके। पहले डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें फ्लू है, और वे शीघ्र ही चंगे हो जायेंगे। पर, उनकी हालत दिनोंदिन खराब होती चली गयी और उन्हें इलाज के लिए लन्दन क्लिनिक में भरती किया गया। वहाँ डॉक्टरों ने कहा कि उनके गुर्दे बुरी तरह खराब हो गये हैं। अस्पताल में उनके साथ उनकी पत्नी रोमोला के अलावा उनका पुत्र-सम वास्टर भी था।

कुछ दिन बाद वास्लोव की हालत इतनी ज्यादा खराब हो गयी कि वे ज्यादा-तर अचेत ही रहते थे। डॉक्टरों को ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे अब शायद जीवित नहीं बचेंगे। बेचारी रोमोला भी चिन्तित रहने लगी।

लेकिन एक सप्ताह तक अचेत रहने के बाद, वास्लोव निजिन्सकी अचानक होश में आ गये। एक सुबह, जब रोमोला उनके पलंग के पास आयी तो उसने देखा कि वे मुसकराते हुए उसका अभिवादन कर रहे हैं। तभी, सूरज की कुछ किरणें परदों को चीरती हुई उनके चेहरे पर पड़ीं और वे कमरे के दरवाजे की ओर देखते हुए चिल्लाये, "मामसा!

और, अगले क्षण उनकी मृत्यु हो गयी।

रूसी भाषा में 'मामसा' माँ को कहते हैं। निजिन्सकी की माँ को मरे हुए कई साल हो गये थे। रोमोला की समझ में न आया कि मरते समय उसके पति ने अपनी माँ को क्यों याद किया था?

निजिन्सकी की मृत्यु के दो दिन बाद एक बड़ी अजीब घटना घटी। होटल की एक नौकरानी ने आकर रोमोला से कहा, 'अगर आप बुरा न मानें, तो एक बात कहूँ।

'कहो।

'पहले आप वायदा कीजिए कि यह बात आप होटल के मनेजर से नहीं कहेंगी। कारण उन्हें यह बात मालूम पड़ गयी तो मेरी नौकरी चली जायेगी।"

"अच्छा वायदा करती हूँ,' रोमोला ने कुछ सोचकर कहा।

आपके पति आपसे बातें करना चाहते हैं।

"मेरे पति? पर, वे तो मर चुके हैं। क्या तुम्हें यह बात मालूम नहीं?"

'मैं जानती हूँ। असल में उनका भूत आपसे बातें करना चाहता है।

'उनका भूत? तुम्हें कैसे मालूम कि वह उनका भूत है, और वह मुझसे बातें करना चाहता है!'

"टनब्रिज वेल्स मुहल्ले में एक 'मीडियम' है। आपके पति ने उसके माध्यम से आपसे बातें करने की इच्छा व्यक्त की है।

रोमोला ने स्वयं उससे मीडियम से सम्पर्क स्थापित कर उसे चेतावनी दी यदि इसमें कोई चाल है, तो वह उसका पर्दाफाश करने में पीछे न रहेगी और सब समाचारपत्रों को उसकी धोखाधड़ी के बारे में पता चल जायेगा।

मीडियम ने कहा, "अगर आपको ऐसा लगे कि मैं आपको धोखा देने की कोशिश कर रही हूँ, तो आप जो मन में आये, वह करने के लिए आजाद होगी।"

रोमोला जब मीडियम के पास गयी, तो उनके साथ उनकी एक स्विस सहेली ग्रेटल भी थी। इस स्विस महिला के बारे में मीडियम को कुछ पता न था।

मीडियम ने अचेत होकर कहना आरम्भ किया, "रोमोला, मुझे खुशी है कि तुम अपने साथ अपनी सहेली ग्रेटल को भी लायी हो। कैसी हो, ग्रेटल?" मीडियम की आवाज़ इस वक्त निजिन्सकी की आवाज़ से काफी मिल रही थी।

इसके बाद, मीडियम ने निजिन्सकी के शब्दो में रोमोला के जीवन की कुछ ऐसी बातों का ज़िक्र किया, जिन्हें रोमोला और निजिन्सकी के अलावा और कोई नही जानता था। अब रोमोला को विश्वास हो गया कि मीडियम सचमुच निजिन्सकी के भूत के सम्पर्क में है। फिर भी, पूरी तरह विश्वस्त होने के लिए उसने मीडियम से एक ऐसा सवाल पूछा, जिसका सही उत्तर मिलने पर उसे सौ फ़ीसदी विश्वास हो जायेगा कि मीडियम के माध्यम से उसके पति ही उससे बातें कर रहे हैं। उसने पूछा, "जिस दिन आपकी मृत्यु हुई थी, उस दिन मेरे आपके पास आने से पहले क्या-कुछ हुआ था?"

मीडियम ने कहा, "मेरा पुरुष-नर्स वाल्टर मेरी शेव करने के लिए आया था। उस दिन, उसने पानी में थोडा-सा यू-डी-कोलोन भी मिला दिया था, जिसकी वजह से मेरे गालो मे जलन होने लगी। मैंने ज़ोर से सिर हिलाया था जिससे वाल्टर को बडी हैरानी हुई थी।"

(जब होटल में आकर रोमोला ने वाल्टर से पूछा कि वह निजिन्सकी की मृत्यु के दिन, उसके आने के पहले, क्या कर रहा था, तो उसने भी शेववाली घटना सुनायी।)

इस घटना के बाद, कुछ घटनाएँ और घटी, जिनसे रोमोला का यह विश्वास और भी दृढ हो गया कि उसके पति का भूत सदा उससे सम्पर्क स्थापित करने का इच्छुक रहता है।

निजिन्सकी की अन्त्येष्टि-क्रिया लन्दन में कराने के बाद, रोमोला अमेरिका में आकर रहने लगी। उन दिनो उसके मृत पति की बहन ब्रोनिसलावा भी अमेरिका में रहती थी। पर, अगले कुछ वर्षों तक उन दोनो की भेंट नही हुई।

निजिन्सकी ने अपने चरमोत्कर्ष-काल में अपने नृत्य-प्रदर्शन से फ्रान्स की जनता को सबसे अधिक मुग्ध किया था। इसलिए फ्रान्स के नृत्यप्रेमियो की बडी इच्छा थी कि उनका शव पेरिस में ही गाडा जाये। निजिन्सकी के पुराने साथी सर्ज लिफ़र भी इसके लिए प्रयत्नशील थे। फ्रान्स की सरकार ने भी रोमोला से

उसकी अनुमति से इंग्लैण्ड की भूमि में दबे हुए निजिन्स्की के शव को खोदकर बाहर निकाला गया, और पेरिस के एक कब्रिस्तान में गाड़ने के लिए फ्रान्स भेजा गया।

निजिन्स्की की दूसरी अन्त्येष्टि-क्रिया जून १९५३ में पेरिस में सम्पन्न हुई। रोमोला, कुछ कारणों से उसमें भाग नहीं ले सकी। निजिन्स्की की बहन भी उन दिनों अपने पति के साथ विश्व-भ्रमण पर थी और इस कारण उसे भी इस अन्त्येष्टि-क्रिया के बारे में सूचित नहीं किया जा सका।

पर, जब पेरिस में यह अन्त्येष्टि-क्रिया सम्पन्न हो रही थी तब निजिन्स्की की बहन अपने पति के साथ अमेरिका वापस लौटते हुए पेरिस पहुँची। जिस समय पेरिस के सबसे बड़े कब्रिस्तान में यह अन्त्येष्टि-संस्कार हो रहा था निजिन्स्की की बहन अपने पति के साथ घूमती-घूमती उधर आयी, और लोगों से पूछने लगी 'क्या हो रहा है? यह धूमधाम कैसी है?

एक आदमी ने कहा, आपको मालूम नहीं? फ्रांस की सरकार की ओर से विश्वविख्यात नर्तक वास्लोव निजिन्स्की का अन्त्येष्टि-संस्कार हो रहा है। इस संस्कार के समय फ्रांसीसी सरकार के उच्चाधिकारियों के अलावा विश्व के अनेक विख्यात नर्तक, विश्व के महानतम नर्तक के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित थे।

रोमोला का विश्वास है कि अपनी बहन और बहनोई को अपनी दूसरी अन्त्येष्टि-संस्कार के समय उपस्थित रहने की प्रेरणा उसके पति की प्रेतात्मा ने ही प्रदान की थी।

अपने पति के भूत से रोमोला का सम्पर्क तीसरी बार, संयोग से सैन फ्रांसिस्को में हुआ। वह किसी काम से सैन फ्रांसिस्को गयी हुई थी। वहाँ उसने समाचारपत्रों में पढ़ा कि सुविख्यात मीडियम फ्लोरेन्स बेकर एक सार्वजनिक सभा में दर्शकों के उन प्रश्नों के उत्तर देंगी जो उनके मृत सम्बन्धियों से सम्बन्धित होंगे। उत्सुकतावश रोमोला भी उस सभा में पहुँच गयीं। वे जब पहुँचीं तब सभा आरम्भ हो चुकी थी और बेकर प्रश्नकर्ताओं के प्रश्नों के उत्तर दे रही थी।

प्रश्नकर्ताओं के प्रश्न बेकर की मेज पर रखी एक बास्केट में रखे थे और बेकर उसमें से एक-एक प्रश्न उठाकर उनके उत्तर दे रही थीं। पूछने पर रोमोला को मालूम पड़ा कि बेकर बास्केट में रखे प्रश्नों के उत्तर देंगी अन्य प्रश्नों के नहीं। और, जितने प्रश्नों के उत्तर उन्हें देने हैं वे सब उनके पास आ चुके हैं। रोमोला, यह सोचकर, सभा से बाहर जाने लगी कि ऐसी हालत में जब वह बेकर से कोई प्रश्न नहीं पूछ सकती सभा में बैठने से कोई लाभ नहीं होगा।

पर जैसे ही वह सभा से बाहर जाने लगीं बेकर ने जिसकी आँखों पर पट्टी बँधी थी ऊँची आवाज में कहा 'रोमोला बैठ जाओ! वास्लोव तुमसे बात

करना चाहते हैं।" रोमोला बैठ गयी। वाद में वेकर ने उन्हें वताया कि वास्लोव अपनी पुत्री कायरा की शिक्षा के वारे में उनसे वार्तें करना चाहते हैं।

नवम्वर, १९६४ के अन्तिम सप्ताह में, रोमोला की भेंट इग्लैण्ड के प्रसिद्ध मीडियम टॉम कॉरवेट से हुई। टॉम कॉरवेट उस समय तक वी वी सी के टेलिविज़न पर इग्लैण्ड के भूतों से साक्षात्कार करके सारे इग्लैण्ड में प्रसिद्ध हो चुके थे।

रोमोला जव कॉरवेट से पहली वार मिलीं, तव इन्होंने कॉरवेट को अपने वारे में नही वताया था। पर, कॉरवेट ने उसे देखते ही कहा, "आप शीघ्र ही एक चलचित्र का निर्माण करेंगी। आपका यह चलचित्र आपके पति के वारे में होगा। मैं आपके पति के भूत से मिल चुका हूँ, और उससे ही मुझे मालूम हुआ था कि वे एक विश्वविख्यात नर्तक थे। और, मैं आपको यह भी वता सकता हूँ कि आप शीघ्र ही रूस भी जायेंगी।"

जिस समय रोमोला कॉरवेट से मिली थीं, उस समय उनकी यही योजनाएँ और आशाएँ थी। उन्हें यह भी विश्वास है कि उनके पति के भूत ने कॉरवेट से भेंट की थी।

अपने एक लेख में रोमोला निजिन्सकी ने भूतो और मीडियमो के साथ अपने कुछ और अनुभवो का वर्णन किया है।

१९३० में इग्लैण्ड की प्रख्यात मीडियम श्रीमती आइलीन गैरेट अमेरिका पधारी थीं। उन्होने लेक्सिनाटन एविन्यू में एक सार्वजनिक सभा की थी, जिसमें रोमोला अपनी एक सहेली के साथ गयीं। कुछ देर वाद, जव श्रीमती गैरेट का ध्यान रोमोला की ओर आकर्षित हुआ, तो उसने कहा, "आप एक विख्यात पति की पत्नी है, और शीघ्र ही एक लोकप्रिय पुस्तक लिखेंगी।" इसके वाद उन्होंने एक विशेष वनदेवी (रोम की एक देहाती देवी, जिसके सीगें और पूँछ होती है) के फोटोग्राफ का जिक्र किया। निजिन्सकी ने 'वनदेवी की एक शाम' नाम के एक नृत्यप्रधान नाटक में इस वनदेवी का अभिनय किया था।

आगे चलकर, रोमोला ने 'निजिन्सकी' नाम की एक पुस्तक लिखी, जो अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुई। इस पुस्तक में इस वनदेवी का चित्र भी है।

१९३४ में रोमोला को एक और विचित्र अनुभव हुआ। आस्ट्रिया का विख्यात 'मीडियम' नीडर लन्दन की सोसायटी फ़ॉर साइकीकिल रिसर्च द्वारा परीक्षणो के लिए लन्दन आनेवाला था। सोसायटी ने रोमोला से प्रार्थना की कि जवतक वह लन्दन में रहे, वे उसे अपने पास ठहरायें।

एक दिन, रोमोला नीडर के साथ एक व्रितानी 'मीडियम' श्रीमती हैस्टर डाउडन के घर गयी। नीडर के आग्रह पर उन्होंने नीडर का असली नाम डाउडन को नही वताया। पर, डाउडन ने नीडर से, जिसे उन्होंने न पहले कभी देखा था,

और न कभी उनके बारे में पढ़ा-सुना था, कहा, मैं जानती हूँ आप महल में कौन है ? और, कुछ भूत आपसे सम्पर्क स्थापित करना चाह रहे हैं। उनसे बातें करके मालूम कीजिए कि वे क्या चाहते हैं।

मीडर ने जब मूर्छावस्था में इन भूतों से सम्पर्क स्थापित किया तो उसे इन भूतों से मालूम पड़ा कि कुछ घण्टे पहले, वियेना में क्रान्ति हो गयी है। इस क्रान्ति के दौरान आस्ट्रिया के चान्सलर डॉल्फस की मृत्यु हो जायेगी और आपका भाई घायल होगा।

उस समय मीडर ने भूतों की बात पर विश्वास नहीं किया कारण उस समय वियेना में जनक्रान्ति होने की कोई सम्भावना नहीं थी। पर, अगले दिन उन्हें सूचना मिली कि वियेना में जनक्रान्ति हो गयी है, और उसमें चान्सलर डॉल्फस की मृत्यु हो गयी है, और उनके भाई घायल हुए हैं।

अभिनेता पीटर सेलर्स और उनके प्रिय मित्र का भूत

पीटर सैलर्स, जिनकी गणना आज विश्व के अग्रणी अभिनेताओं में होती है उन लोगों में नहीं है, जो भूत-प्रेतों में विश्वास करें। पर, जब उनके घनिष्ठ मित्र लॉरी स्टीवेन्स की मृत्यु हुई तो उन्हें अपने विचारों में परिवर्तन करने को मजबूर होना पड़ा।

सैलर्स स्टीवेन्स को बहुत चाहते थे इसलिए उन्हें उसकी असामयिक मृत्यु से बड़ा सदमा पहुँचा था। उन्हें दुखी देखकर, उनके एक अन्य मित्र ने सलाह दी कि वे जाकर प्रख्यात मीडियम एस्टैल राबर्ट्स से मिलें, जो लॉरी स्टीवेन्स के भूत से साक्षात्कार करके उसके बारे में बता सकेगी। भूत-प्रेतों में अपने अविश्वास के बावजूद, सैलर्स ने इस महिला से मिलने का निश्चय किया। हो सकता है, एस्टैल के माध्यम से लॉरी के प्रेत से उनकी भेंट हो ही जाये।

जब वे एस्टैल से मिलने गये, तब उनकी पहली पत्नी उनके साथ थी। एस्टैल ने उन दोनों को बैठने को कहा, और कमरे में 'उपस्थित' किसी अदृश्य व्यक्ति से बातें करने लगीं। उन्होंने इस अदृश्य व्यक्ति से कहा 'हाँ मैंने उसे चाय पिलायी थी।' और फिर कुछ देर बाद उस अदृश्य व्यक्ति की बात सुनने का अभिनय करके कहा "हाँ मैं उनसे यह बात कह दूँगी।'

सैलर्स और उनकी पत्नी को एस्टैल से यह पूछने का साहस नहीं हुआ कि वह किससे बातें कर रही थी। एस्टैल करीब पन्द्रह मिनट तक अपने अदृश्य मित्र से बातें करती रहीं। जब वे सैलर्स की ओर मुखातिब हुईं, तो उन्होंने कहा 'आपके पर्स में आपके चाचा का फोटो है। वे इस समय यहाँ मौजूद हैं, और आपको याद करते हैं।

चकित सैलर्स ने अपना पर्स खोलकर देखा। उसमें सचमुच उनके परिवार

का एक पुराना चित्र था, जिसमें उनके मृत चाचा एल्फी भी मौजूद थे। एस्टैल, जिन्होंने कभी एल्फी को नही देखा था, चित्र देखते ही एल्फी को पहचान लिया।

सैलर्स और उनकी पत्नी दोनो को लगा, जैसे ठण्डी हवा के झोंके ने उनका स्पर्श किया है।

इसके बाद, एस्टैल ने कहा, "आप अपने मित्र लॉरी स्टीवेन्स के बारे में पूछने आये हैं। ठीक है न।" सैलर्स ने स्वीकार किया कि यह बात सही है।

"लॉरी भी यहाँ मौजूद है। मेरा मतलब है कि उसका भूत अपने सूक्ष्म शरीर के साथ यहाँ मौजूद है। पर, उसे अभी यहाँ के 'वातावरण के अनुकूल' होने में कुछ समय लगेगा। पर, इस बीच उसने मुझे आपसे 'फ्रैंड' शब्द कहने को कहा है।

लॉरी स्टीवेन्स प्यार से सैलर्स को 'फ्रैंड' कहता था। पर, यह बात एक अपरिचित महिला को कैसे मालूम हुई?

"लॉरी ने कहा है कि वह कुछ समय बाद आपसे बात करेगा। पर, वह आपको यह सूचना देना चाहता है कि वह अपने नये परिवेश में मज़े में है।"

"धन्यवाद," कहकर सैलर्स जाने लगे। तभी एस्टैल ने उन्हें ठहरने का इशारा करके कहा, "प्रेत-जगत् में आपका एक शुभेच्छु और भी है।"

"कौन?" सैलर्स ने उत्सुकता से पूछा।

"डैन लेनो। क्या आप उसे जानते थे?"

डैन लेनो एक हास्याभिनेता था, और सैलर्स बचपन से उसके प्रशंसक थे। प्रसिद्धि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने डैन लेनो की कई बार सहायता की थी।

इस अनुभव के बाद, प्रेतात्मवाद में सैलर्स की आस्था और गहरी हो गयी, और उन्होंने एक बार मॉरिस वुडरफ़ नामक प्रख्यात मीडियम से भी मुलाक़ात की थी। वुडरफ ने सैलर्स को बताया कि 'बी ई' प्रथमाक्षरोंवाली कोई लड़की शीघ्र ही उनके जीवन में आनेवाली है। एक महीने बाद, उनकी भेंट स्वीडन की ब्रिट इकलैण्ड से हुई, और वह उनकी दूसरी पत्नी बनी।

जब एक भूत ने अभिनेत्री किम नोवाक के साथ नृत्य किया:

'द एमॉरस एडवचर्स ऑफ़ मॉल फ़्लैन्डर्स' चित्र की शूटिंग इंग्लैण्ड में हो रहा था। ब्रिटेन के एक स्टूडियो में कुछ दिनों तक शूटिंग करने के बाद, चित्र के निर्माता ने केन्टरबरी में स्थित एक पुराने किले—चिल्हॉम किले—में और उसके आसपास शूटिंग करने का निश्चय किया, क्योंकि फिल्म में इस तरह के किले के कई दृश्य थे।

फ़िल्म कम्पनी के कर्मचारी भी शूटिंग के दौरान, इसी क़िले में ठहरे थे। किले का सबसे अच्छा कमरा, जो क़िले के बीचोबीच था, फिल्म की हीरोइन किम नोवाक को दिया गया था। यह कमरा किले के शेष कमरों से बड़ा और

आरामदेह था। उसमें बिजली भी थी, और नल भी।

चिर्ड्होंग क़िला इंग्लैंड के प्राचीनतम क़िलों में से एक है। इसका निर्माण १२वीं सदी में हुआ था। क़रीब तीन सौ साल पहले उसमें कुछ कमरे और आँगन और जोड़े गये थे। जब फ़िल्म कम्पनियों ने शूटिंग के लिए इसका उपयोग करना आरम्भ किया तब क़िले के प्रबन्धक ने उसमें बिजली और नल भी लगवा दिये।

जिस रात को यह घटना हुई उस रात किम नोवाक ने जल्दी रात का खाना खाया और फिर अगले दिन के पार्ट की लाइनें याद करने लगीं। जब लाइनें अच्छी तरह याद हो गयीं तो उन्होंने मनोरंजन के लिए टेलिविज़न खोल दिया। टेलिविज़न पर उस समय नृत्य का कार्यक्रम आ रहा था। नृत्यों की शौक़ीन किम अकेली ही नृत्य-संगीत की धुन पर नाचने लगी।

कुछ मिनटों तक नाचने के बाद किम को लगा कि वह अकेली नहीं है, और कोई उसके साथ नाच रहा है और किसी की सशक्त बाँहों ने उन्हें घेर रखा है। पर उन्हें मालूम था कि उन्हें अपना पार्टनर दिखाई नहीं दे रहा। पर अपने पार्टनर का स्पर्श उन्हें स्पष्ट अनुभव हो रहा था।

तभी टेलिविज़न से आते हुए संगीत का 'टैम्पो' कुछ कम हो गया। लेकिन किम के अदृश्य पार्टनर को इसका पता न चला और वह पहले की तरह ज़ोर ज़ोर से नृत्य करता रहा। किम ने अपने को अपने अदृश्य पार्टनर की बाँहों से छुड़ाने की बहुत कोशिश की, पर नाकामयाब रहीं। वह, उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उसे ज़ोर-ज़ोर से नचाता रहा।

अचानक किम को ज़ोर से धक्का लगा, और वह एक झटके के साथ दीवार पर जाकर टकरायी। इस ज़ोरदार आघात के फलस्वरूप उसका सिर चकराकर रह गया। उसके अदृश्य पार्टनर ने उसे अपने से अलग कर ज़ोर से धक्का दे दिया था।

किम ने टेलिविज़न बन्द कर दिया। वह सोच रही थीं कि मदद के लिए किसी को बुलायें या नहीं? कौन उसकी इस बात पर विश्वास करेगा कि वह एक अदृश्य पार्टनर के साथ नृत्य कर रही थी जो उसे धक्का देकर चला गया? उसने तय किया कि वह किसी को नहीं बुलायेगी और देखेगी कि आगे क्या होता है? हालाँकि उसका अदृश्य पार्टनर काफ़ी मज़बूत था लेकिन उसके साथ नाचते समय उसे ज़रा भी डर नहीं लगा था।

जितने दिन किम उस क़िले में रहीं उसे अपने अदृश्य पार्टनर रूपी भूत की उपस्थिति का अहसास होता रहा। जब किम कमरे की बत्तियाँ जलातीं वह आकर उन्हें बुझा देता। वह मेज़ पर कोई चीज़ रखती तो वह उन्हें हटा देता या वह उन्हें हटाती तो वह उन्हें मेज़ पर रख देता। किम के कपड़ों के साथ छेड़खानियाँ करते रहना तो उसकी आदत में शुमार हो गया था। एक ...

उसने किम की कमर में इतने जोर की चिउँटी काटी कि किम तिलमिलाक रह गयी। किम का चुम्बन तो उस भूत ने कई बार लिया होगा।

जब किले में फ़िल्म की शूटिंग समाप्त हो गयी, और यूनिट लौटक अमेरिका वापस आ गयी, तो किम ने क़िले में घटी घटनाओं का जिक्र अप सह-अभिनेता रिचर्ड जॉन्सन से, जो आगे चलकर उसके पति बने, किया। जॉन्स से उसकी खूब पटती थी, और उसके अलावा किसी और से इस घटना व ज़िक्र करने का साहस उसमें न था।

सारी घटना सुनकर जॉन्सन ने हँसकर कहा, "तुम किसी मामूली आदम नहीं, बल्कि एक बड़े और नामी आदमी के भूत के साथ नाची थी।"

"अच्छा! कौन था वह बड़ा और नामी आदमी!"

"यह आदमी था, इतिहास-प्रसिद्ध इंग्लैण्ड का बादशाह जॉन, जिसने स १२१५ में अपने देश को महाधिकारपत्र (Magna Chatra) प्रदान किय था। ११ अक्तूबर, १२१६ को जब वह अपने सारे खजाने के साथ भाग रह था, तो चिल्हॉम क़िले में आकर रुका था। यहाँ रुककर उसने इंग्लैण्ड को दुबार पाने की कोशिश की थी। पर, अगले दिन, जब उसने उत्तरी सागर की ए खाडी पर स्थित वाश स्थान को पार करने की कोशिश की, इस कोशिश मे वह पानी में डूबकर मर गया। कुछ लोगो का कहना है कि वह पानी में डूबकर नही मरा था, बल्कि उसकी मृत्यु एक सप्ताह तक ज्वर से पीडित होने के कारण हुई थी।

"लोगो का विश्वास है कि मरने के बाद वह भूत बनकर इस क़िले में रहने लगा, और तब से वही रहता चला आ रहा है। जब हम लोग क़िले में शूटिंग करने पहुँचे थे, तो वहाँ रहनेवाले लोगों ने जॉन के भूत की कहानी हमें सुनायी थी। पर, हम लोगो ने यह कहानी तुम्हें नही सुनायी थी, क्योंकि एक तो हमारा भूत-प्रेतो में कोई विश्वास नहीं है, और दूसरे हम तुम्हें परेशान करना नही चाहते थे।"

किम नोवाक ने हँसकर कहा, "मुझे खुशी है कि मेरे जीवन में आनेवाला पहला भूत इंग्लैण्ड के बादशाह का भूत था।"

जब पति का भूत अभिनेत्री जॉन को दिखाई दिया

न्यूयॉर्क की १९५६ की जुलाई की वह शाम अस्वाभाविक रूप से अत्यधिक गर्म थी। अभिनेत्री जॉन ब्लॉन्डेल वेस्टपोर्ट से अपने एक अनुबन्ध के सिलसिले में न्यूयॉर्क आयी थी। उसका काम तो खत्म हो गया था, पर अब गरमी की वजह से वह इतना थक गयी थी कि उसका मन हवाई अड्डे पर जाकर वेस्टपोर्ट जाने का हवाई जहाज पकड़ने का नही हो रहा था। उसने वह रात किसी होटल में

बिताने का निश्चय किया।

जिस समय वह फ़ोन करके होटल में रात के लिए कमरा रिज़र्व कर रही थी, उसकी न्यूयॉर्क की एक सहेली ने जो उससे मिलने आयी थी उससे कहा "जॉन, होटल में कमरा रिज़र्व कराने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं एक घण्टे में एक सप्ताह के लिए न्यूयॉर्क से बाहर जा रही हूँ और तुम मेरे एपार्टमेण्ट में ठहर सकती हो।

"लेकिन ...

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। यह रही एपार्टमेण्ट की चाबी। फ़्रिज पूरा भरा रखा है, तुम्हें खाने की भी कोई तकलीफ़ नहीं होगी।

जॉन ने अपनी सहेली के एपार्टमेण्ट में जाकर पाया कि वह होटल के कमरे से अधिक आरामदेह था। खाना खाकर उसे नींद आने लगी। पर, सोने से पहले उसे याद आया कि उसके घरवाले शायद उसके बारे में भी चिन्तित होंगे। उसने एपार्टमेण्ट के मैनेजर को फ़ोन करके कहा 'मुझे ज़ोर से नींद आ रही है। मुझे तभी जगाया जाये जब मेरे परिवार का कोई सदस्य मुझे फ़ोन करे। वैसे उसकी ज़्यादा सम्भावना नहीं है।

इसके बाद उसने सोने की कोशिश की पर गरमी के कारण (एपार्टमेण्ट में एयरकण्डीशनर नहीं था) उसे जल्दी नींद नहीं आयी।

रात में क़रीब दो बजे अचानक उसकी आँखें खुल गयीं। और, आँखें खुलते ही उसने अपने सामने अपने पहले पति जार्ज बार्नेस को खड़े पाया। वह भयस्तब्ध हो गयी।

उसने देखा जार्ज बार्नेस उससे कुछ कहने का प्रयत्न कर रहा है पर उसके मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकल रही है। हालाँकि कमरे में अँधेरा था पर जार्ज बार्नेस के शरीर के चारों ओर एक अलौकिक आभा थी और उस आभा के कारण ही बार्नेस जॉन को दिखाई दे रहा था। ऐसी अलौकिक आभा जॉन ने पहले कभी अपने पति के या किसी भी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर नहीं देखी थी।

जॉन ने उठकर बत्ती जलायी पर इस बीच वह बार्नेस को बराबर देखती रही। पर, जैसे ही बत्ती जली जार्ज बार्नेस के शरीर के चारों ओर छायी अलौकिक आभा लुप्त होने लगी और क्रमश: उस आभा के साथ जार्ज बार्नेस भी लुप्त हो गया।

जॉन चिल्लायी 'जॉर्ज जॉर्ज! पर जार्ज बार्नेस उसे फिर दिखाई नहीं दिया और वह उसी अप्रत्याशित ढंग से ग़ायब हो गया जिस अप्रत्याशित ढंग से प्रकट हुआ था।

उस रात इस घटना के बाद जॉन के लिए सोना असम्भव हो गया। वह अपने पलंग पर बैठी इस असाधारण घटना के बारे में सोचती-सोचती, सुबह होने

की प्रतीक्षा करने लगी।

सुबह होते ही वह उठी। और तभी फोन की घण्टी बजी। उसकी बहन फ्लोरी कैलिफोर्निया से उसे फोन कर रही थी। "बडी मुश्किल से तुम्हारा पता लगा पायी हूँ। तुम्हारे पास इस समय कोई है क्या ?"

"कोई नही है। क्या बात है ?"

"एक बुरी खबर है। कल रात दो बजे तुम्हारे पहले पति जार्ज बार्नेस की मृत्यु हो गयी।"

अभिनेत्री मिज़ी गेनर के घर मे रहनेवाली भूतनी :

हॉलीवुड के सब अग्रणी कलाकार वहाँ के बेवरली हिल्स इलाके में रहते हैं। और यहीं रहती हैं हॉलीवुड की प्रख्यात अभिनेत्री मिज़ी गेनर अपने पति जैक बीन के साथ। इन दोनो के साथ उनके शानदार घर में रहती है एक भूतनी, जो मिज़ी गेनर के घर की एक सदस्य बन चुकी है। इस भूतनी का नाम है— 'श्रीमती वॉकर'। यह नाम मिज़ी का ही रखा हुआ है।

यह नाम गलत नही है, कारण श्रीमती वॉकर पहले इसी घर में रहती थी, और इसी घर में उसकी मृत्यु हुई थी।

मिज़ी और उसके पति ने श्रीमती वॉकर को न जीवितावस्था में देखा था, न मरने के बाद। पर दोनो को अच्छी तरह मालूम है कि वह उनके घर में रहती है। अपनी मौजूदगी का अहसास उसने दोनो को कई बार कराया है। घर के नौकरो को भी। एक नौकर तो इस भूतनी के कारण नौकरी छोडकर ही चला गया था। वह उससे काफी डर गया था।

पर मिज़ी-दम्पति श्रीमती वॉकर से भयभीत नही हैं। इतना ही नही, वर्षों तक उसके साथ रहते-रहते उन्हें श्रीमती वॉकर की पसन्दगियो और नापसन्दगियो के बारे में भी पता चल गया है। उन्हें यह भी मालूम हो गया है कि झाड-फानूसो के मामले में वह अपनी पसन्द या नापसन्द ज़ाहिर करने में कभी देर नही करती। जो झाड-फ़ानूस श्रीमती वॉकर को पसन्द आ जाता है, वह हमेशा साफ-सुथरा मिलता है, भले ही घर के नौकर उसे साफ़ करें या न करें। उसकी सफाई की जिम्मेदारी वह खुद ले लेती है। जो झाड-फानूस उसे नापसन्द होता है, वह कुछ दिन बाद टूटा पडा मिलता है।

घर के नौकरो ने रात में श्रीमती वॉकर को अपनी पसन्द के झाड-फ़ानूसों को साफ़ करते 'सुना' है, झाड-फानूस से आती हुई टन-टन आवाज़ के कारण।

पर, अभिनेत्री मिज़ी गेनर के जीवन में शैतान भूत भी आ चुके हैं।

एक बार वह अपने पति के साथ यूरोप की यात्रा कर रही थी। वेनिस में राजकुमार पाब्लो आम्ते ने उन्हे वेनिस की एक नहर के किनारे स्थित अपने

बंगल में आमन्त्रित किया। जब वे शामों शाम को राजकुमार के साथ बातचीत कर रहे थे तो राजकुमार ने मेहमानों के मनोरंजन के लिए एक फ्रिनफ्रम का रिकार्ड रिकार्ड-प्लेयर पर चढ़ा दिया। इस रिकार्ड के बजते ही, लगा कोई जोर जोर से जंजीरों का खनखना रहा है।

राजकुमार ने कहा शायद उसे रिकार्ड पसन्द नहीं है।

"किसका जिक्र कर रहे हैं आप? मिशी ने पूछा।

राजकुमार ने कोई उत्तर नहीं दिया, और दीवार पर टँगे एक बुककेस के पास गये। एक बटन दबाते ही बुककेस खुल गया। अब जंजीरों की खनखनाहट की आवाज पहले से भी ज्यादा तेज सुनाई देने लगी।

"जिसका जिक्र कर रहा था वह यहीं बैठा है।' राजकुमार ने कहा।

"क्या यह कोई भूत है? मिशी ने कमजोर स्वर में पूछा।

"हाँ' राजकुमार ने कहा।

राजकुमार ने बताया कि इस भूत के कारण ही उनकी माँ ने उसके साथ रहना बन्द कर दिया था। वे स्वयं इस भूत के डर से तकिये के नीचे पिस्तौल रखकर सोते हैं, हालाँकि उन्हें बताया गया है कि भूत का सामना पिस्तौल से नहीं किया जा सकता।

रात को मिशी और उसके पति को नींद नहीं आ पायी। सारी रात उनके कमरे में खड़खड़ और जंजीरों की खनखनाहट की आवाज होती रही। खिड़कियाँ बन्द होने पर भी परदे तेजी से हिलते रहे। रोशनियाँ जलती-बुझती रहीं।

दोनों सुबह ही बंगले को छोड़कर चले गये।

एक अभिनेता, एक भूत

टैकी साधारण अभिनेता तो बहुत अच्छे हैं पर आदमी जरा भुलक्कड़ हैं। इतने भुलक्कड़ कि एक बार रात को कार द्वारा न्यूयार्क से पार्क सिटी जा रहे थे तो कार के अचानक रुक जाने पर उन्होंने पाया कि उधर कार में पेट्रोल नहीं है, और इधर उनकी जेब में एक पैसा भी नहीं है। अब करें तो क्या करें?

दिन होता तो कुछ किया जा सकता था। पर इस वक्त तो रात के तीन बजे थे।

उन्होंने कार को धकेलकर सड़क के किनारे खड़ा किया और पैदल चल पड़े यह देखने के लिए कि कोई मदद मिल सकती है या नहीं? कुछ दूर चलकर उन्हें एक छोटी-सी दुकान दिखाई पड़ी। उसके मालिक ने बताया कि एक पेट्रोल-स्टेशन कुछ दूर आगे स्थित है।

वे फिर पैदल आगे बढ़े। सड़क सुनसान और अँधेरी थी। सहसा वे कोई आवाज सुनकर चौंक पड़े। मुड़कर देखा तो उनके सामने काले रंग की एक

कैडिलेक कार खडी है, जो न जाने कब और कहाँ से प्रकट हो गया
समें वैठा एक आदमी जनानी-सी आवाज में वडी नम्रता के साथ उससे
हा था, "आपको लिफ्ट चाहिए ?"
सावालास ने देखा, उस आदमी ने सफेद कपडे पहन रखे थे। पर, उसका
ा उन्हें साफ नही दिखाई दे रहा था। वे 'शुक्रिया' कहकर उसकी गाडी में
गये। न उन्होंने उस आदमी से कहा कि उन्हें कहाँ जाना है, न उस आदमी
पूछा कि उन्हें कहाँ जाना है। फिर भी, उसने कार लाकर पेट्रोल-स्टेशन के
ामने खडी कर दी, और जव सावालास कार में से उतर रहे थे, तो उन्हें एक
डॉलर देते हुए कहा, "उसे रख लीजिए, उधार के रूप में।"

सावालास को उस समय यह सोचने का मौका न मिला कि उस आदमी को यह कैसे मालूम पडा कि उन्हें पेट्रोल-स्टेशन जाना है, और उनके पास रकम के नाम पर कुछ भी नही है। यह खयाल तो उन्हें वहुत बाद में आया। उस समय तो उन्होंने उस आदमी को धन्यवाद देते हुए उसे अपना नाम और पता भी नोट करा दिया, और एक कागज पर उसका नाम और पता नोट करके अपनी जेव में रख लिया, ताकि वह उस पते पर उसकी राशि लौटा सके। वह आदमी अपना नाम और पता देकर वही खडा रहा।

जव सावालास ने एक डॉलर देकर पेट्रोल का टिन खरीद लिया, तो उस आदमी ने फिर नम्रतापूर्वक कहा, "आइए, मैं आपको आपकी कार तक छोड दूँ।"

सावालास फिर उसकी गाडी में वैठ गये। क़रीव एक मिनट तक खामोशी से कार चलाने के वाद, उस आदमी ने धीरे से कहा, "मैं हैरी एगानिस को जानता हूँ।" सावालास को लगा, वह उससे नही अपने से वात कर रहा है। फिर भी, उसने पूछा, "हैरी एगानिस कौन है ?"

"वह वोस्टन के रेड सॉक्स वेसवॉल दल का एक खिलाडी है।"

जव सावालास अपनी कार में पेट्रोल भरने लगे, तो वह आदमी अपनी कार में वैठा उन्हें ऐसा करते देखता रहा। जव कार पेट्रोल ढल जाने के वाद भी न चली, तो उस आदमी ने हलका-सा धक्का देकर उस कार को चलाने में म की, और इसके वाद अपनी कैडिलेक में वैठकर चला गया। जाते समय, कोई और वात नहीं की।

अगले दिन, सावालास ने समाचारपत्रों में पढा कि वोस्टन के रेड वेसवॉल दल के एक खिलाडी हैरी एगानिस की मृत्यु हो गयी है। मृत्यु सवा तीन वजे के क़रीव उसी समय हुई थी, जिस समय सावालास कैडिलॉक में वैठे अजनवी से हुई थी। सावालास को उस अजनवी गयी। वह सोचने लगा, आखिर वह आदमी कौन था, और जानता था ? और, उसने ठीक उसी मौके पर एगानिस का जिक्र क्यों

जब एगामिस की मृत्यु हुई थी ?

फिर उन्हें याद आया कि उस अजनबी का नाम और पता उनके पास है। उन्होंने वह पता जेब से निकाला, और उस पते का फ़ोन नम्बर ढूंढकर उस नम्बर पर फ़ोन किया।

फ़ोन उठाया एक आदमी ने। पर, उस आदमी की आवाज़ उस अजनबी की आवाज़ से बहुत भिन्न थी। उसने पूछा "आप किससे बात करना चाहते हैं ?"

'बिल से।' सालासास ने कहा। पते पर उस आदमी का नाम बिल लिखा हुआ था।

"बिल ?" एक क्षण चुप रहने के बाद उस आदमी ने कहा "एक मिनट ठहरिए।"

कुछ सेकण्ड बाद सालासास को एक महिला का स्वर सुनाई दिया। वह सालासास से पूछ रही थी, 'आप कौन हैं ?'

सालासास ने उसे कल रात की घटना विस्तार से सुनायी और कहा, "मैं उनसे बात करना चाहता था और... ...'

"आप कल रात बिल से मिले थे ?" महिला ने आश्चर्य से पूछा और फिर रोने लगी। जब उसका रोना बन्द हुआ तो उसने कहा "पर यह कैसे हो सकता है ? मेरे पति बिल को मरे तो तीन साल हो चुके हैं। फिर उसने क्रुद्ध स्वर में कहा 'यह कैसा मज़ाक कर रहे हैं आप हम लोगों के साथ ?

सालासास ने कहा कि उसका मज़ाक करने का कोई इरादा नहीं है, उसने तो सिर्फ़ उस आश्चर्यजनक घटना का उल्लेख किया है, जो उनके साथ घटी थी।

बाद में बिल की विधवा पत्नी ने न्यूयॉर्क आकर सालासास से भेंट की। उसने बताया कि जिस कैडिलॉक में बैठकर उनके पति के भूत ने उससे मुलाक़ात की थी, वह उसके पति की ही थी। उसका हस्तलेख उसके द्वारा लिखे गये पते के हस्तलेख से भी मिलता था। अब उसे कोई सन्देह न रहा कि उस रात उसके पति के भूत ने ही सालासास से भेंट की थी, और चूँकि वह भूत था इसलिए उसे मालूम था कि जिस क्षण वह सालासास से बात कर रहा है, उस क्षण बेसबॉल के खिलाड़ी हैरी एगामिस की भी मृत्यु हो चुकी है।

अभिनेत्री गार्लेण्ड का एक विचित्र अनुभव

शूटिंग के दौरान अभिनेत्री बेवरली गार्लेण्ड को सूचना मिली कि उनके पिता का एक कार-दुर्घटना में देहान्त हो गया है। वे फ़ौरन शूटिंग रोककर अपने पति के साथ कैलिफ़ोर्निया स्थित अपने माता-पिता के घर पहुँचीं, जो एक निर्जन स्थान पर थी। आसपास रेगिस्तान होने के कारण वहाँ कोई हरियाली नहीं होती, सिर्फ़ कैक्टस उगते हैं। फूल तो देखने को भी नहीं मिलते

पर, जैसे ही गार्लेण्ड ने अपने पिता के शव को देखा, उन्हें उनके शव से फूलो की तेज महक आती महसूस हुई। यह भी महसूस हुआ कि उसके मृत पिता का चेहरा मुसकरा रहा है।

जब उन्होने इसकी चर्चा अपने पति से की, तो उन्होने कहा, "मुझे तो न कोई सुगन्ध अनुभव हो रही है, और न ऐसा लग रहा है कि तुम्हारे मृत पिता का चेहरा मुसकरा रहा है। तुम भावविह्वल हो, शायद इसलिए ऐसा लग रहा है।"

पर गार्लेण्ड जितनी देर अपने पिता के शव के पास बैठी रहीं, फूलो की-सी मीठी सुगन्ध उनके नथुनो में प्रवेश करती रही। और, उन्हें यह भी लगा कि मरने के बाद भी उनके पिता मुसकराकर उनसे कह रहे हैं, "मेरी बेटी, चिन्ता न करना। मैं अब दूसरी दुनिया में हूँ, पर मजे में हूँ।"

इतना ही नही, उन्हें यह भी लगा कि उनके पिता प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर रहे हैं, और मधुर डाँट के साथ उससे कह रहे हैं, "तू नाहक़ अपना काम छोडकर आयी। मैं आनन्द से हूँ। और, तेरे से दूर रहकर भी तेरी देख-भाल करता रहूँगा।"

गार्लेण्ड ने बाद में एक पत्रकार को बताया, "यह अनुभूति इतनी तीव्र और खरी थी कि मैं उसे खामखयाली कहकर नही टाल सकती। जीवन में इतनी तीव्र और खरी अनुभूति मुझे पहले कभी नही हुई थी।"

गेटे और उनके मित्र का जिन्दा भूत :

विश्व-प्रसिद्ध लेखक गेटे एक शाम अपने एक मित्र के साथ घूमने जा रहे थे कि उन्होने अपने साथ एक अदृश्य पुरुष को भी चलते 'देखा'। यह पुरुष उन्हें न दिखाई देकर भी 'दिखाई' दे रहा था। पर, उनके मित्र को यह अदृश्य पुरुष बिलकुल 'दिखाई' नही दे रहा था।

इस अदृश्य पुरुष को 'पहचानने' के बाद, गेटे ने अपने मित्र से कहा, "देखो, हमारे साथ मेरा घनिष्ठ मित्र फ्रेड्रिक भी चल रहा है। पर, इसे तो इस समय फ्रेंकफर्ट में होना चाहिए था। और देखो, फ्रेड्रिक की पोशाक देखकर ऐसा लगता है, जैसे यह सीधा बिस्तर से उठकर यहाँ आ गया है। भला ड्रेसिंग गाउन और स्लीपर पहनकर कोई शाम को घूमने निकलता है?"

गेटे के मित्र को गेटे की बात सुनकर बडा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे फ्रेड्रिक के सूक्ष्म शरीर के दर्शन बिलकुल नही हो रहे थे।

घर लौटने पर, जब गेटे ने अपने मित्र फ्रेड्रिक को अपने घर में ड्रेसिंग गाउन और स्लीपर पहने पाया, तो वे दंग रह गये। रास्ते में उसके भूत को देखकर उन्हे लगा था कि शायद फ्रेड्रिक की मृत्यु हो गयी है। उन्होने फ्रेड्रिक से पूछा,

"अरे, तुम ? तुम्हें तो फ्रैंकफर्ट में होना चाहिए था !"

फ्रेड्रिक ने कहा, "मेरा फ्रैंकफर्ट जाना मुल्तवी हो गया था और मुझे अचानक यहाँ आना पड़ा। रास्ते में वर्षा के कारण मेरे कपड़े भींग गए थे इसलिए मैं ड्रेसिंग गाउन और स्लीपर पहनकर आरामकुरसी पर आराम करने लगा। तभी मेरी आँख लग गयी, और मैंने सपने में देखा तुम अपने एक मित्र के साथ टहलने आ रहे हो और मुझे ड्रेसिंग गाउन पहने अपने सामने खड़े देखकर आश्चर्य कर रहे हो।"

एक भूत को पसटकर जवाब देनेवाली अभिनेत्री

अपने उत्कृष्ट चरित्र-अभिनय के लिए प्रसिद्ध अमेरिकी अभिनेत्री हरिस एड्रामस सम्भवतः विश्व की एकमात्र महिला है जिसने एक भूत को पसटकर जवाब दिया था और उससे बात भी की थी।

पूरी तन्मयता और पूरे उल्लास के साथ जीवन जीनेवाली इस तरुण अभिनेत्री के जीवन में मरणोत्तर जीवन के बारे में विचार करने के लिए कोई समय नहीं है।

द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। १७ जुलाई को—हरिस को यह याद नहीं कि वह किस वर्ष की १७ जुलाई थी—रात को जब वह सोने के लिए पलंग पर गयी तो उसकी नजर सामने मेज पर पड़े समाचारपत्र के इस शीर्षक पर पड़ी "बम-वर्षा से लन्दन ध्वस्त। पर, इस शीर्षक का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि वह अमेरिका में थी लन्दन में नहीं। हाँ उसका एक प्रेमी अवश्य अमेरिकी सेना में था पर जहाँ तक उसे मालूम था वह उस समय शायद अफ्रीका में था लन्दन में नहीं। वह, आराम से सो गयी।

सहसा रात में उसे किसी पुरुष की आवाज सुनाई दी। वह उससे कह रहा था—"उठो।

हरिस उठकर पलंग पर बैठ गयी। उसने फिर सुना, आवाज कह रही थी—'डरो मत।"

हरिस के डरने का कोई सवाल ही न था। आवाज ने उसके प्रेमी का नाम लेकर कहा 'मैं ...हूँ तुम्हारा प्रेमी।"

'अच्छा। कैसे हो ?

मैं अब जिन्दा नहीं हूँ। मेहरबानी करके बत्ती जला दो और डरो मत।

हरिस ने बत्ती जला दी। पर, रोशनी हो जाने पर भी वह अपने प्रेमी के भूत को नहीं देख पा रही थी। बस उसकी आवाज सुनाई दी 'मैं अब जिन्दा नहीं हूँ। पर, घबराओ मत। मैं बड़े मजे में हूँ। जहाँ मैं हूँ, वहाँ काफी काम है।

मस्ती-भरे जीवन की अभ्यस्त, हरिस ने उत्तर दिया "देखो मेरे भूतपूर्व

प्रेमी ! अगर तुम मरकर भी मजे में हो, तो यह बडी अच्छी बात है। पर, अब मैं तुम्हें लेकर अपना वक्त बरबाद नही कर सकती'। मैं मरने के बाद क्या होता है, इस बारे में कुछ सोचना नही चाहती।"

— और, वह बत्ती बुझाकर सो गयी। अपने प्रेमी का भूत उसे फिर दिखाई नही दिया।

कुछ दिन बाद, उसे एक तार द्वारा सूचना मिली कि १७ जुलाई को उसका प्रेमी लडाई में काम आया।

जब इरिस कॉलेज में पढती थी, तब वह एक बार अपनी सहेलियो के साथ एक युवा-शिविर में गयी थी। वहाँ 'स्टार' नाम की एक घोडी उसे इतनी पसन्द आयी कि उसने उसे खरीद लिया, और रोज उसपर घुडसवारी करने लगी। 'स्टार' तेज तो थी ही, चचल भी थी। उसपर घुडसवारी करने में इरिस को बडा मजा आता था।

एक रात, उसने सपना देखा कि उसकी प्रिय घोडी चाँदनी रात में अकेली सरपट दौडी चली जा रही है। दौडते-दौडते, जब वह एक यूकलिप्टस पेड के नीचे आयी, तो उसकी टक्कर एक टीले से हो गयी, और वह नीचे गिर पडी, और शीघ्र ही उसने अपना दम तोड दिया।

अगले दिन, सुबह, इस सपने का जिक्र उसने अपनी सहेलियों से किया। जब वह यह सपना सुना रही थी, तभी शिविर के प्रबन्धक ने वहाँ आकर इरिस से कहा, "एक बुरी खबर है, इरिस ! कल रात तुम्हारी घोडी 'स्टार' चल बसी।"

"ओह ! तो मेरा सपना सच निकला।"

"कल रात न जाने कैसे वह अस्तबल से छूटकर बाहर आ गयी, और चांदनी रात में दौडने लगी। हमने उसे शिविर से छह-सात मील दूर एक यूकलिप्टस पेड के नीचे मरा पाया। शायद दौडते-दौडते वह पेड के पास स्थित एक टीले से टकरा गयी थी।"

भुतहा मकान मे रहनेवाली गायिका

यह सच्ची कहानी उन दिनो की है, जिन दिनों आज की प्रख्यात गायिका जेन मॉरगन छोटी लडकी थी। उसके बडे भाई ने केनबकपोर्ट नामक स्थान में एक थियेटर शुरू किया था। जब यह थियेटर चल निकला, तो उसने वहाँ अपने तथा थियेटर के कर्मचारियों के रहने के लिए एक बडा मकान, जो ढाई सौ साल पुराना था, खरीदा।

मकान खरीदने से पहले ही उसे मालूम पड गया था कि उसमें भूत रहते है। कहा जाता था कि अठारहवी सदी में एक सैनिक ने इस मकान में एक सुन्दर युवती की हत्या की थी, और बाद में आत्महत्या कर ली थी। दोनो के भूत तब

से इस मकान में रहते चले आ रहे थे।

मकान में आते ही जेन तथा उसके परिवार के सदस्यों को इन दोनों भूतों की छेड़खानियों का पता चल गया। वे कभी चिल्लाते कभी हँसते, कभी किसी कमी दरवाजे खोलते और कभी बन्द करते। रात में उनके उपद्रव ज्यादा बढ़ जाते थे।

जेन उस समय ग्यारह वर्ष की थी। एक दिन, जब वह मकान में अकेली थी, तो उसे लगा कोई चोर मकान में घुसकर लूटपाट करने की कोशिश कर रहा है। जैसे ही, उसने बाहर आकर चोर को देखने की कोशिश की वैसे ही सामने के कमरे से १८वीं सदी की खाकी की लम्बी स्कर्ट पहने एक बेदर्दी का सूक्ष्म शरीर बाहर निकला। उसके बाहर आते ही, सारा शोरगुल अपने आप बन्द हो गया। यह पहला मौका था जब उसने अपने मकान में रहनेवाली भूतनी को देखा था हालाँकि उसकी माँ इस भूतनी के अलावा भूत को, जो कभी सैनिक था देख चुकी थी। उसकी माँ ने दोनों के नाम भी रख दिये थे। सैनिक-यूनीफ़ार्म पहने भूत को वे 'नैड' कहती थीं, और भूतनी को 'मैगी'। उसकी माँ के अलावा उसके भाई के थियेटर के अनेक कर्मचारियों ने भी दोनों को देखा था, और उनके बारे में सबके वर्णन एक जैसे थे।

एक बार जेन की दूर की एक रिश्तेदार उसकी माँ से मिलने आयी। उस महिला को लोग भूतों से सम्पर्क करनेवाले 'मीडियम' के रूप में भी जानते थे। उसने आते ही कहा "इस मकान में दो नहीं अनेक भूत हैं। मैंने बहुत से पुराने घर देखे हैं, पर इतने सारे भूत किसी पुराने घर में नहीं देखे।"

एक अन्य अवसर पर थियेटर के कर्मचारियों ने निश्चय किया कि वे सब मिलकर मकान में रहनेवाले भूतों को 'पकड़' कर उन्हें घर से बाहर निकलने को मजबूर कर देंगे। पर कई दिन की लगातार कोशिशों के बाद वे सिर्फ़ मैगी को 'पकड़ने' में सफल हो सके। मैगी से जब उन्होंने मकान छोड़ने को कहा तो उसने जवाब दिया कि वह मकान नहीं छोड़ेगी क्योंकि वह जेन के भाई से प्रेम करने लगी है।

बाद में भूतों को गिरफ़्तार करने के उद्देश्य से थियेटर के कर्मचारियों ने मकान के सारे कमरे और कोठरियाँ एक साथ बन्द कर दिये। पर, इस चक्कर में एक कर्मचारी खुद उस कोठरी में बन्द हो गया जहाँ भूत ज्यादातर रहते थे। जब शेष कमरों और कोठरियों को खोला गया, तो कर्मचारियों को रोजाना इस्तेमाल में आनेवाली बहुत-सी चीजें जैसे साबुन टूथपेस्ट टूथब्रुश वगैरह गायब मिलें।

जब जेन को गायिका के रूप में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति मिल गयी तो उसने एक अलग मकान लेकर रहना शुरू कर दिया। उसका भाई भी

भूतलोक

दिन की छेडखानियों से तंग आकर अलग रहने लगा। जेन की माँ की मृत्यु भी हो गयी थी। आज वह मकान खाली पडा है, और उसमें भूत आराम से रहते हैं।

भूत, जो अपने सफल पुत्र का पथ-निर्देशक है :

अमेरिकी टेलीविज़न के सुप्रसिद्ध अभिनेता डिक कॉलमैन के नाटकीय जीवन की कल्पना सम्भवत अच्छे से अच्छा कहानी-लेखक भी नही कर सकता था।

उसके पिता अरबपति थे। एक जमाना था, जब वे न्यूयॉर्क के सैवॉय-प्लाजा होटल, मियामी के एक बडे होटल के अलावा न्यू हैम्पशॉयर में स्थित डिक्सविले नॉच नामक पूरे नगर के भी मालिक थे। बाद में उन्होंने एक बडी ग़लती की। अपनी सारी पूँजी उन्होंने हवाना (क्यूबा) के कुछ होटलो में लगा दी। पर, जब क्यूबा पर कैस्ट्रो का अधिकार हुआ, तो उसने बिना कोई मुआवजा दिये उनके सब होटल अपने कब्ज़े में कर लिये। जो आदमी कल तक अरबपति था, वह रातोरात निर्धन, कंगाल हो गया।

इस आघात को न सह सकने के कारण कॉलमैन के पिता चल बसे। जब उनकी मृत्यु हुई तब उनपर काफ़ी क़र्ज़ था।

कोई और बेटा होता, तो गरीबी और कर्ज़े के सागर में अपनी जीवन-नैया को डुबा जानेवाले पिता का कभी नाम भी न लेता, पर कॉलमैन ने अपने पिता के शव को प्रणाम कर शपथ खायी कि वे उनके सब कर्ज़ों को चुकायेंगे, और उनके आशीर्वाद से एक नये जीवन की शुरुआत करेंगे।

जिस क्षण उसने यह निश्चय किया, उस क्षण उसे लगा कि उसके पिता का सूक्ष्म शरीर उसके पास खडा उसे आशीर्वाद दे रहा है, और सिर पर हाथ फेर रहा है।

कॉलमैन ने अभिनेता के रूप में टेलीविज़न के कार्यक्रमो में भाग लेना आरम्भ किया, और आज वह अमेरिकी टेलीविज़न के गण्यमान्य अभिनेताओ में से एक है। जो भी भविष्यवक्ता उसे मिलता है, यही कहता है, "तुम्हारी सफलता सुनिश्चित है, कारण कोई अदृश्य शक्ति तुम्हारा पथ-निर्देशन कर रही है।"

कॉलमैन जानता है कि यह अदृश्य शक्ति उसके पिता का भूत ही है।

भूत, जो अपने अभिनेता-मित्र की पार्टी मे उपस्थित था :

चैड एवरैट की गिनती अमेरिकी सिने-जगत् के होनहार अभिनेताओ में होती है। एक बार एक टेलीविज़न-कार्यक्रम में उन्होंने अपने जीवन का एक अनोखा सस्मरण सुनाया था, जो उनके एक प्रिय मित्र के भूत से सम्बन्धित था।

'जॉनी टाइगर' नामक चलचित्र की शूटिंग के दौरान एवरैट की मुलाकात

एलोइस पेज नाम की एक विलक्षण महिला से हुई थी। पेज ने एवरैट के भावी जीवन के बारे में अनेक भविष्यवाणियाँ की थीं जो आगे चलकर सच्ची निकलीं। तब से एवरैट एलाइस पेज के भक्त बन गये थे, और अपने जीवन की हर समस्या का निदान पाने के लिए उनके पास आते थे।

एवरैट का एक प्यारा दोस्त था—टॉम सिम्सन। वह भी फिल्मों में काम करता था और एक होनहार अभिनेता था। जब टॉम एक कार-दुर्घटना में अचानक चल बसा तो एवरैट को बड़ा मानसिक आघात लगा। वह सब काम छोड़कर हमेशा उसकी याद में डूबा रहने लगा। टॉम उसका अभिन्न मित्र था, और उसके बिना उसे अपना जीवन अधूरा और व्यर्थ लगता था।

जब पेज को एवरैट की मनःस्थिति का पता चला, तो उसने एवरैट को सलाह दी 'जब तक तुम टॉम के बारे में सोचना बन्द नहीं करोगे उसका सूक्ष्म शरीर तुम्हारी स्मृति में क़ैद रहेगा। उसके भूत को निर्द्वन्द्व जीवन बिताने देने के लिए यह आवश्यक है कि तुम उसके बारे में सोचना बन्द कर दो। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो यह न तुम्हारे हित में होगा न टॉम के भूत के हित में।'

टॉम को भुला सकना एवरैट के लिए बड़ा कठिन था पर पेज की सलाह मानकर उसने टॉम के बारे में सोचना बिलकुल बन्द कर दिया।

एक दिन एवरैट ने अपने तीन मित्रों को रात के खाने पर बुलाया। इनमें से दो मित्र उसी की भाँति अभिनेता थे और टॉम के मित्र रह चुके थे। तीसरा मित्र एक व्यापारी था, और उसने टॉम को कभी नहीं देखा था। वह टॉम के बारे में कुछ जानता भी नहीं था। अभिनेता-मित्र थे—जॉर्ज बेनेडिक्ट और प्रेम मॉरिस।

खाना खाने के बाद चारों आपस में बातचीत करने लगे। बातचीत के दौरान एवरैट ने गौर किया कि पाँचवीं कुरसी पर एक धुँधली आकृति बैठी है। अपने मित्रों से बातें करता-करता, वह उस धुँधली आकृति को बराबर देखता रहा। उसने इस आकृति के बारे में अपने मित्रों से कुछ नहीं कहा। धीरे-धीरे आकृति का धुँधलापन ग़ायब होने लगा, और उसने स्पष्ट देखा कि पाँचवीं कुरसी पर उसका मृत मित्र टॉम सिम्सन बैठा है। वह क़रीब दस मिनट तक वहाँ बैठा रहा और फिर अचानक अन्तर्धान हो गया। एवरैट ने तब भी उसके बारे में अपने मित्रों से कुछ नहीं कहा। पर, प्रेम मॉरिस ने कहा 'पाँचवीं कुरसी पर अभी कोई था। था न?

जार्ज बैनेडिक्ट ने कहा मैंने भी उसे देखा था। पर अब वह कहाँ गया?'

प्रेम मॉरिस ने कहा वह टॉम सिम्सन-जैसा लगता था।

जार्ज बेनेडिक्ट ने कहा हाँ ठीक है। वह टॉम ही था। पर....।

एवरैट ने कहा 'वह टॉम सिम्सन ही था या टॉम सिम्सन का भूत? मैंने उसे साफ़-साफ़ देखा पर इस डर से कुछ नहीं कहा कि आप लोगों को यक़ीन

[illegible] में [illegible] की आँखें [illegible] पर [illegible]

[illegible] मित्र ने कहा, [illegible] थी, पर बाद में [illegible] हो गयी थी।

[illegible] पहले उस को [illegible]

[illegible] के व्यंग्यचित्र बनानेवाला कलाकार :

[illegible] के व्यंग्यचित्र बनानेवाला कलाकार है। वे कैसे व्यक्तियों के [illegible] ने फ्रैंक लोइड एक अनूठे कलाकार हैं। उनके [illegible] करने का [illegible] के व्यंग्यचित्र बनाते हैं। [illegible] है। वे [illegible] के व्यंग्यचित्र [illegible] [illegible] और [illegible] से [illegible] करने को [illegible] [illegible] को मिलने या अपने [illegible] करते समय [illegible] [illegible] पर बातें कर लेते हैं। यदि [illegible] पर बातें करते [illegible] कोई [illegible] [illegible] ने उन्हें ऐसा लगा कि उस व्यक्ति से [illegible] पर [illegible] और उस व्यक्ति ने नहीं [illegible] तो वे स्पष्ट [illegible] देते हैं और [illegible] के व्यंग्यचित्र [illegible] व उस व्यक्ति को, तो वे [illegible] करते हैं वे अपने [illegible] नहीं हो पाता, [illegible] [illegible] वो व्यक्ति उन्हें [illegible] करते हैं। जबतक व्यंग्यचित्र पूरा नहीं हो जाता के बाद, वे [illegible] को ही [illegible] करते हैं। [illegible] व्यंग्यचित्र पूरा होने [illegible] [illegible] कोई फ़ोटो नहीं देखते। पर, व्यंग्यचित्र पूरा होने [illegible] देखा जाये। [illegible] फ़ोटो से उसका मिलान करके देखा जाये [illegible] करते हैं कि मृत व्यक्ति के फ़ोटो से [illegible] चित्र बनाने के लिए लोइड से [illegible]

एक बार एक [illegible] ने अपने मृत पति का चित्र बनाया, [illegible] पति के एक [illegible] [illegible] किया। फ्रैंक लोइड ने जो व्यंग्यचित्र बनाया, और [illegible] बिल्कुल [illegible] [illegible] स्वाभाविक [illegible] से [illegible] था, और [illegible] व्यक्ति [illegible] [illegible] पति के साथ [illegible] पति के [illegible] [illegible] कहा कि उसके पति के [illegible] [illegible] को देखकर बहुत नाराज हुई। उसने कहा कि [illegible] [illegible] फ्रैंक लोइड ने [illegible] किया है। [illegible] बराबर था। [illegible] फ्रैंक लोइड ने [illegible] से देखा, [illegible] में [illegible] उसने अपने पति के [illegible] उसके पति का [illegible] से [illegible] नहीं था। उसने अपने पति के [illegible] के [illegible] अपने मृत पति का कोई चित्र नहीं था। उसके पति के एक [illegible] [illegible] फ़ोटो [illegible] तो पाया कि [illegible] बिल्कुल [illegible] नहीं। [illegible] स्वाभाविक [illegible] से [illegible] था, और एक बिल्कुल [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] लोइड [illegible]

[illegible] को [illegible] स्वीकार नहीं [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] उनकी विकृतियों को नहीं [illegible] [illegible] व्यक्तियों के व्यंग्यचित्र बनाते समय उनकी विकृतियों को [illegible] जाता है। एक [illegible] [illegible] [illegible] और एकांगी हो [illegible] व्यंग्यचित्र बनाया। [illegible] [illegible] एक [illegible] युवक का [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] एक [illegible] [illegible] किया। युवक को [illegible] [illegible] होने के [illegible] अपने [illegible] [illegible] किया, पर उसके [illegible] एक [illegible] को [illegible] कि उसके [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible]

[illegible]

लोगों में यह विचार वस्तुतः मौजूद था।

कुमारी कॉलिन्स के पिता की मृत्यु हो चुकी थी और वह अपने मृत पिता का व्यक्तिचित्र फ्रैंक लीह से बनवाना चाहती थी क्योंकि उसके पास अपने पिता का कोई चित्र नहीं था। उसने अपने एक परिचित को इस बात के लिए राजी किया कि वह उसकी ओर से लीह से यह व्यक्तिचित्र बनाने का अनुरोध करें।

जब इस महाशय ने लीह से फ़ोन पर यह प्रार्थना की तो लीह ने अपनी ध्यानदृष्टि से कुमारी कॉलिन्स के पिता के भूत को 'देखा'। उन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति का व्यक्तिचित्र बनवाने की प्रार्थना उनसे की जा रही है उसकी आयु मृत्यु के समय ८४ वर्ष थी और उसके शरीर का आधा भाग पक्षाघात से पीड़ित था। और वह टाई के स्थान पर सफ़ेद रंग के स्कार्फ़ का प्रयोग करता था।

कुमारी कॉलिन्स ने अपने परिचित से कहा कि उसके पिता के बारे में दिये गये ये तथ्य एकदम सही हैं। जब तक लीह द्वारा निर्मित उसके पिता का व्यक्तिचित्र उसके पास आया तब तक उसे एक फ़ोटोग्राफ़र से अपने पिता के अन्तिम दिनों के कुछ फ़ोटो भी प्राप्त हो चुके थे। अद्‌भुत साम्य था उस व्यक्तिचित्र और छायाचित्रों में।

जब जर्मन समाचार पत्र Das Neue Blatt के विज्ञान-सम्पादक स्टीफ़ेन स्कॉल्स इंग्लैण्ड आये तो उन्होंने अपने मृत बाबा का जिन्हें उन्होंने आठ वर्ष की आयु के बाद नहीं देखा था व्यक्तिचित्र बनाने का अनुरोध किया। लीह ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर अपनी ध्यानदृष्टि के बल पर उनके मृत बाबा से सम्पर्क किया और दो-तीन दिन के अन्दर उनका व्यक्तिचित्र बनाकर स्कॉल्स को दे दिया।

चित्र को देखकर स्कॉल्स ने कहा 'बाक़ी सब कुछ तो ठीक है, पर मूँछें कुछ अलग दिखाई देती हैं।

लीह ने जवाब में सिर्फ़ कन्धे उचका दिये कुछ कहा नहीं।

स्कॉल्स ने अपनी माँ को तार भेजकर अपने बाबा के सब उपलब्ध चित्र अपनी हवाई डाक से भेजने को कहा। जब वे चित्र आये तो उन्होंने देखा कि जो व्यक्तिचित्र लीह ने बनाया था वह स्कॉल्स के बाबा की मृत्यु से पहले के छायाचित्र से मिलता था। उस समय तक उनकी मूँछें रखने की शैली काफ़ी बदल चुकी थी। स्कॉल्स को उनकी मूँछ रखने की वही शैली याद थी जो उन्होंने आठ वर्ष की आयु में देखी थी।

ब्रिटेन की एक महिला ने तीन विवाह किये थे। उसके पास अपने तीनों मृत पतियों के कोई चित्र नहीं थे। उसने लीह से तीनों के व्यक्तिचित्र बनाने को कहा। जब तीनों व्यक्तिचित्र बनकर आये तो वह महिला यह देखकर दंग रह गयी कि तीनों व्यक्तिचित्र उसके तीनों पतियों के अधमुखचित्रों की हूबहू

"अब हालत सुधरती जा रही है। लगता है, कुछ दिनों में ठीक हो जाऊँगा"। वे पहले की अपेक्षा अधिक स्वस्थ और प्रसन्न भी दिखाई दे रहे थे।

पर, केन कहता है, डिक उस समय जीवित नही थे।

तो, अवश्य उसने उस समय डिक को नही, उसके भूत को देखा था।

हास्याभिनेता और उन्हे सान्त्वना देनेवाला भूत :

अमेरिकी हास्याभिनेता लॉरी स्टॉर्क का भूतों से परिचय बहुत पुराना है। किसी भूत को देखने का मौका उसे तब मिला था, जब उसकी अवस्था सिर्फ आठ-नौ वर्ष की थी।

उन दिनो, वह माता-पिता से भी अधिक अपने दादा को चाहता था। उसके दादा भी उसे बहुत चाहते थे। यहूदी होने के कारण, वह अपने दादा को 'ज़ायदे' कहा करता था। क्योंकि उसके दादा का आग्रह था कि वह अपनी पैतृक भाषा—इड्डिश भाषा—में ही बोला करे।

जब वह नौ वर्ष का था, तब उसके दादा की मृत्यु हो गयी। लॉरी को बहुत दु ख हुआ, क्योंकि उसे सबसे ज्यादा चाहनेवाला आदमी अब नही रह था। उसे हमेशा अपने दादा की ही याद आती रहती थी।

दादा की मृत्यु के क़रीब एक महीने बाद, लारी ने एक शाम अपने कमरे में अपने दादा को 'खडे' पाया। वह खुशी से चिल्लाता हुआ, उनकी ओर भागा दादा ने उसकी ओर स्नेहपूर्ण नेत्रो से देखा, और फिर धीरे-धीरे कमरे से बाहर चले गये। वह 'ज़ायदे', 'ज़ायदे' चिल्लाता रह गया।

"आज तीस साल बीत जाने पर भी मुझे साफ-साफ़ याद है कि मैंने अपने दादा को अपने कमरे में अपने सामने देखा था। उस समय मुझे यह बतानेवाला कोई न था कि मैंने अपने दादा को नही, दादा के भूत को देखा था। १९६९ में जब मेरी आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी, मुझे अपने दादा के भूत के दर्शन फिर हुए थे। और, इस बार उनका स्नेहार्द्र चेहरा जैसे मुझे सान्त्वना देता प्रतीत हुआ। गर्दिश के उन दिनो में जितनी सान्त्वना मुझे उन्हें देखकर मिली, आज तक किसी जीवित व्यक्ति को देखकर नही मिली है।"

कैलीफोर्निया का भूत लन्दन मे :

१९५७ की बात है। अमेरिका के सुप्रसिद्ध अभिनेता जैफ़ हण्टर अपनी एक फ़िल्म की शूटिंग के सिलसिले मे अपनी पत्नी 'डस्टी' के साथ लन्दन आये हुए थे। जब हण्टर शूटिंग के लिए चले जाते थे, तब 'डस्टी' लन्दन की सैर करने निकल जाया करती थी। उसकी रुचि लन्दन के असाधारण स्थानों को देखने में थी। सैर करते समय, वह ऐसे असाधारण स्थानो की खोज में रहती थी।

एक बार ऐसी खोज करते-करते वह बलग्रेव स्क्वायर के एक पुराने मकान के सामने पहुँच गयी। मकान के बाहर जो बोर्ड लगा था, उससे मालूम होता था कि वहाँ पारलौकिक विषयों पर शोध करनेवाली किसी संस्था का कार्यालय था। उसी शाम उस संस्था की साप्ताहिक सार्वजनिक सभा होनेवाली थी।

शाम को जब जैक शूटिंग से लौटे तो 'डस्टी' ने उनसे इस सभा में चलने का आग्रह किया। थके होने के बावजूद जैक ने वहाँ जाना स्वीकार कर लिया।

शाम कुहासा भरी हुई और सर्द थी। हल्की बूँदाबाँदी हो रही थी। टैक्सी में सवार होते हुए जैक ने हँसकर कहा, 'यह वक्त भूतों के निकलने के लिए सही वक्त है।'

मकान के जिस कमरे में सभा होनेवाली थी, वहाँ करीब पचास कुरसियाँ पड़ी थीं। खिड़कियों पर मोटे-मोटे परदे पड़े थे। कमरे की सब वस्तुएँ धुँधली सी दिखाई दे रही थीं। सभा में उपस्थित व्यक्तियों में नब्बे प्रतिशत महिलाएँ थीं।

आठ बजे के करीब ऐमके पोस्टन नामक दुबले-पतले और लम्बे नाखूनोंवाले एक आदमी ने आकर अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। उसने कहा कि वह अब उपस्थित श्रोताओं से कुछ प्रश्न पूछेगा। उसके प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'ना' में ही दिये जायें।

बीस मिनट तक कई महिलाओं से अनेक प्रश्न पूछने के बाद अर्धमूर्च्छित पोस्टन ने हण्टर की ओर इशारा करके कहा, 'प्रेत-जगत् का कोई निवासी आपसे सम्पर्क करने का इच्छुक है।'

हण्टर की भूत-प्रेतों में न आस्था थी न रुचि। वे इस सभा में अपनी पत्नी के आग्रह पर आये थे। उन्होंने पोस्टन की बात का कोई जवाब नहीं दिया।

पोस्टन ने फिर कहा, 'मैं इस समय जिस भूत के सम्पर्क में हूँ, वह यह चाहता है कि आप उसकी माँ से कहें कि उन्होंने उसे बचाने का हर सम्भव प्रयत्न किया था और वह मजे में है, और आगे चलकर जो कुछ होगा, अच्छा ही होगा।'

हण्टर को फिर चुप देखकर पोस्टन ने पूछा, 'यह बात आपकी समझ में आयी?'

'नहीं,' हण्टर ने पोस्टन के 'हाँ' या 'ना' वाले निर्देश को याद करके कहा।

पोस्टन ने आगे कहा, 'मैं जिस भूत के सम्पर्क में हूँ, वह जीवितावस्था में आपका परिचित था, और आप उसे 'पार्नी की जान' कहा करते थे। कुछ याद आया?'

'नहीं,' हण्टर ने उत्तर दिया। उन्हें वास्तव में कुछ याद नहीं आ रहा था।

'मुझे दो शब्द 'सैम्मी' और 'इटली' दिखाई दे रहे हैं। दो घड़ियाँ भी दिखाई दे रही हैं। और दो प्रथमाक्षर 'B' और 'R' भी। कुछ याद आया?

हण्टर को लगा जैसे उन्होने बिजली का तार छू लिया हो। बोले, "हाँ, मैं इस आदमी को जानता हूँ। आप रॉल्फ़ वेस्ट की बात कर रहे हैं।"

पोल्टन ने अवतक जो कुछ कहा था, वह सब रॉल्फ वेस्ट के बारे में सच निकलता था, सिवाय इस बात के कि वह अपनी माँ को कोई सन्देश पहुँचाने का इच्छुक था। जहाँ तक उन्हे याद था, सिर्फ एक बार उसकी माँ से मिले थे।

बीमे का एजेण्ट रॉल्फ वेस्ट वास्तव में 'पार्टी की जान' के नाम से मशहूर था। इटली में उसने नैन्सी नाम की लडकी से रोमान्स किया था। उसके पास दो घडियाँ थी, जो वह बारी-बारी से पहना करता था।

पोल्टन ने आगे कहा, "यह भूत चाहता है कि आप उसका सन्देश उसकी माँ को अवश्य दें। यह भी कहें कि उन्हें चिन्ता करने की कोई जरूरत नही है। और यह भी कि जो कुछ हुआ उसके लिए वह उसकी माँ को जिम्मेदार नही मानता। क्या आप ऐमा करने का वचन देते हैं ?"

हण्डर ने वचन दे दिया, पर, उनकी समझ में नही आ रहा था कि इस सन्देश का उसकी माँ के लिए क्या महत्त्व हो सकता है ?

इस सन्देश का महत्त्व बाद में उन्हें मालूम पडा।

युवावस्था में ही रॉल्फ वेस्ट की मृत्यु एक कार-दुर्घटना में हो गयी थी। एक रात उसने एक विशाल नृत्य-समारोह में भाग लिया था। सुबह वह अपनी प्रेमिका के साथ अपने घर रवाना हुआ। प्रेमिका को उसके घर छोडकर, जब वह अपने घर की ओर जा रहा था, तो कोई ट्रक-ड्रायवर उसकी कार को ध्वस्त करके भाग गया। कुछ देर बाद, लोगो ने उसे ध्वस्त कार में से बाहर निकाला। उसकी साँस उस समय भी चल रही थी। किसी ने उसकी डायरी से उसका पता मालूम करके उसकी माँ को फोन किया। उसकी माँ ने एक डॉक्टर को फ़ौरन आने को कहा, पर पता गलत सुनने के कारण वह करीब एक घण्टा बाद दुर्घटना-स्थल पर पहुँचा। वेस्ट का अपना डॉक्टर उस समय अपने घर पर मौजूद नहीं था। उसकी माँ ने एक एम्बूलेन्स के लिए भी फोन किया, पर वह भी देर से पहुँची। अन्त में जब उसे अस्पताल पहुँचाया गया, तो कुछ कारणो से, जिसका पता हण्टर को नही लग पाया, अस्पतालवालो ने उसे भरती करने से इनकार कर दिया। जब तक उसे दूसरे अस्पताल में पहुँचाया गया, उसकी मृत्यु हो चुकी थी।

पोल्टन के माध्यम से रॉल्फ वेस्ट अपनी माँ को यही बताना चाह रहा था कि उसकी मौत के लिए वह क़तई जिम्मेदार नही हैं।

सभा से लौटने के बाद, हण्टर और 'डस्टी' ने इस बारे में काफी विचार-विमर्श किया कि रॉल्फ़ का सन्देश उसकी माँ तक पहुँचाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। अमेरिका लौटने में अभी कई सप्ताह शेष थे। फोन पर यह

बात बतायी जाये तो सम्भव है, बेस्ट की माँ को इस बात पर विश्वास न आये कि लन्दन में प्रेतवादियों की एक सभा में बेस्ट के भूत ने एक 'मीडियम' से सम्पर्क स्थापित करके उसके माध्यम से अपने एक मित्र को यह विचित्र सन्देश दिया है कि वह उसकी माँ से कहे कि बेस्ट अपनी मृत्यु के लिए अपनी माँ को जिम्मेदार नहीं समझता।

काफी सोच-विचार के बाद उन्होंने बेस्ट के एक घनिष्ठ मित्र को फ़ोन करके यह अजीब कहानी सुनायी और प्रार्थना की कि वह बेस्ट की माँ से मिलकर उसे बेस्ट का सन्देश दे दे। मित्र ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह ऐसा अवश्य कर देगा।

अमेरिका पहुँचने पर, हण्टर और 'डस्टी' बेस्ट के माता-पिता से मिलने गये। चारों काफी देर तक बेस्ट की याद करके रोते-सुबकते रहे।

बाद में हण्टर और 'डस्टी' को एक अजीब बात मालूम पड़ी।

जिस समय पाल्टन लन्दन में हण्टर से बेस्ट का सन्देश उसकी माँ को देने के लिए कह रहा था ठीक उसी समय बेस्ट की माँ एक गिरजाघर में भगवान् से प्रार्थना कर रही थी कि वह और बेस्ट उसे क्षमा कर दें क्योंकि वह समय पर चिकित्सा का लाभ पहुँचाकर, उसका प्राण बचाने में असमर्थ रही थी। कैलिफ़ोर्निया और लन्दन के बीच समय का जो अन्तर है उसके आधार पर बेस्ट के पिता ने यह बात मालूम की थी। उन्होंने यह भी बताया कि बेस्ट का सन्देश पाकर उसकी माँ के मन से वह अपराध भावना दूर हो गयी है, जिसने बेस्ट की मौत के बाद से उसके मन में घर कर लिया था।

फ़ोन, जो एक मृत लड़की ने किया

अमेरिका की सुविख्यात अभिनेत्री कैरोलिन जोन्स के जीवन में यह हैरत अंगेज़ घटना तब घटी जब उसकी आयु कुल दस वर्ष थी।

उसके पड़ोस में उसकी एक सहेली रहती थी—पैनी स्मिथ। दोनों में इतना मेल था कि या तो जोन्स अपना सारा दिन पैनी के घर गुज़ारती थी या पैनी जोन्स के घर।

एक दिन जब स्कूल से लौटते समय पैनी स्मिथ का एक कार-दुर्घटना में प्राणान्त हो गया तो दोनों परिवारों के सदस्यों ने एक-सा शोक मनाया। जोन्स उस दिन खूब रोयी।

जिस दिन पैनी को मरे ठीक एक साल हुआ उस दिन जोन्स के परिवार के लोग पैनी के परिवार को सान्त्वना प्रदान करने के लिए गये। जब दोनों परिवारों के सदस्य बैठक में बैठे थे तो फ़ोन की घण्टी बजी। फ़ोन पैनी की माँ ने उठाया पर फ़ोन पर आ रही आवाज़ सुनकर उनका चेहरा फक पड़ गया

ाँपने लगे । उन्होने कैरोलिन से कहा, "देखना तो बेटी, कौन है ? मैं ठीक
। नही पायी ।"

दस साल की कैरोलिन ने फ़ोन उठाया, और 'हलो' कहा । उसे आपरेटर
आवाज़ सुनाई पडी, "मिस पैनी स्मिथ अपने परिवार के किसी सदस्य से
। करना चाहती है ।"

कैरोलिन ने यह बात बैठक में बैठे लोगों के आगे दुहराकर पूछा, "कौन बात
रना चाहेगा ?" सबके चेहरे सफेद पड गये ।

कैरोलिन की दादी ने उठकर कहा, "क्या बकवास कर रही है, कैरोलिन ?
ला, फोन मुझे ला । देखूँ, कौन है ?" पर, फ़ोन पर आ रही आवाज़ को सुनकर
उन्होंने फ़ोन नीचे रख दिया, और आहिस्ता से कहा, "कैरोलिन ने सच ही
कहा था ।"

अब पैनी स्मिथ के पिता उठे, और ऑपरेटर की बात सुनकर बोले, "हाँ,
मैं पैनी स्मिथ का पिता बोल रहा हूँ । आप कनेक्शन जोडिए ।"

जैसे ही ऑपरेटर ने कनेक्शन जोडा, उधर से पैनी स्मिथ की आवाज़ सुनाई
पडी, "हलो, डैडी ! कैसे हैं आप ?"

पैनी स्मिथ के पिता के हाथ से फोन गिर पडा । वे स्वयं भी मूर्च्छित होकर
फर्श पर गिर पडे । उनकी यह हालत देखकर सब उनकी ओर दौडे । घर के
नौकर को डॉक्टर को बुलाने के लिए दौडाया गया ।

होश में आने पर पैनी स्मिथ के पिता ने बताया कि फोन पर उन्हें पैनी
स्मिथ की ही आवाज़ सुनाई पडी थी । पैनी स्मिथ ने ही उनसे कहा था, "हलो,
डैडी । कैसे हैं आप ?" इस बारे में उनके मन में कोई सन्देह नहीं है । "भला
अपनी प्यारी बेटी की आवाज़ को मैं कैसे भूल सकता हूँ ? और जब उसने आगे
कहा कि डैडी, मैं घर आना चाहती हूँ, पर आ नहीं सकती, तो फ़ोन मेरे हाथ
से छूट गया, और आगे क्या हुआ, यह मुझे नही मालूम ।"

यह बात सुनकर सब स्तब्ध रह गये ।

बाद में पैनी स्मिथ की माँ ने टेलीफोन कम्पनी से पूछा कि उस दिन उनके
ऑपरेटर ने पैनी स्मिथ की जो 'कॉल' उनके घर दी थी, वह कहाँ से और किसने
की थी ? टेलीफ़ोन कम्पनी ने अच्छी तरह जाँच और खोजबीन करने के बाद
उन्हें सूचित किया कि उस दिन उनकी कम्पनी के किसी ऑपरेटर ने उनके घर
फोन नही किया था ।

अब सवाल यह था कि मृत पैनी स्मिथ ने कहाँ से वह फ़ोन किया था, जिसे
उसके घर में चार व्यक्तियोंने साफ-साफ सुना ।

भूत, जो इंग्लैण्ड की सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेत्री के पीछे पड़ा

अगर आज इंग्लैण्ड के फ़िल्म-प्रेमियों से पूछा जाये कि वह अपने देश की किस अभिनेत्री के अभिनय को सबसे ज़्यादा पसन्द करते हैं तो अधिकांश फ़िल्म-प्रेमी सुसान हैम्पशायर का ही नाम लेंगे, ऐसी आशा है। उसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि वह निजी जीवन में भी उतनी ही भावुक है जितनी परदे पर दिखाई देती है और इंग्लैण्ड की अन्य अभिनेत्रियों की तुलना में सबसे अधिक सुन्दर तो वह है ही।

यही कारण है कि फ़िल्म के अधिकांश दर्शक उसके दीवाने हैं और उसका हर चित्र बड़े चाव से देखते हैं। और जब ये लोग उसे निजी जीवन में देखते हैं, तो उसे घेर लेते हैं और उसका घर या स्टूडियो जाना मुश्किल कर देते हैं।

अपने दीवाने प्रशंसकों की भीड़ से बचने के लिए सुसान ने स्टूडियो के निकट ही एक मकान खरीदा ताकि उसे इस भीड़ का अधिक सामना न करना पड़े। पर मकान खरीदते समय उसे यह मालूम नहीं था कि उस पर एक दुष्ट भूत का अधिकार है। यह बात तो उसे तब मालूम पड़ी जब मकान खरीदने के अगले दिन ही उस दुष्ट भूत ने उसे डराना शुरू कर दिया।

वह स्टूडियो से आकर खाना खाने के बाद सोने के कमरे में जाने के लिए गयी ही थी कि उसे लगा कि इस कमरे में उसके अलावा कोई और भी मौजूद है। पर, वह डरी नहीं हालांकि उस समय वह घर में बिलकुल अकेली थी। स्टूडियो उसके घर के ठीक सामने था। उसने सोचा कोई आया तो उसकी चीख-चिल्लाहट सुनकर स्टूडियो से कोई न कोई पहुँच जायेगा।

रात के क़रीब बारह बजे वह चौंककर जाग गयी। उसने देखा उसकी छाती पर एक मोटी-सी किताब रखी है, और कोई डरावनी आवाज़ में उससे कह रहा है, "पहले इस किताब को पूरा पढ़ो फिर सोने की कोशिश करो। और फिर एक डरावनी हँसी।

सुनकर जैसे ही उसने किताब को हाथ लगाया उसे बिजली-जैसा झटका लगा।

उसने उठकर फ़ोन करना चाहा पर फ़ोन एकदम बन्द था। मेज़ पर रखा पर्स उठाना चाहा ताकि उसमें से पैसे निकालकर, टैक्सी लेकर अपनी माँ के पास चली जाये पर पर्स ग़ायब था। और कमाल यह कि कमरा चारों ओर से बन्द था। कोई चोर खिड़की से कमरे के अन्दर प्रवेश करके उसका पर्स नहीं चुरा सकता था।

वह आहिस्ता-आहिस्ता क़दम रखकर घर के बाहर आयी और स्टूडियो की

तरफ देखने लगी। स्टूडियो वन्द था, और उसका चपरासी जा चुका था। कोई टैक्सी भी सडक पर दिखाई नही दे रही थी।

करीव पन्द्रह मिनट तक इन्तजार करने के वाद, उसे एक खाली टैक्सी आती दिखाई दी। उसने टैक्सी रोककर, टैक्सी-ड्राइवर से अपनी माँ के घर चलने को कहा।

जैसे ही, टैक्सी रवाना हुई, कमरे के अन्दर सुनाई देनेवाली डरावनी हँसी की आवाज उसे फिर सुनाई दी। एक खौफनाक अट्टहास, जैसे कोई अपने विरोधी को परास्त कर, विजय की हँसी हँस रहा हो।

सुसान फिर कभी उस घर में नही गयी। उसने स्टूडियो के पास एक और मकान खरीदा और अपनी माँ के साथ उसमें रहने लगी। वाद में उसे मालूम पडा कि उसके पहले मकान में रहनेवाला एक दुष्ट भूत उससे पहले घर में स्थायी रूप से रहने की कोशिश करनेवाले छह व्यक्तियो को इसी तरह डराकर भगा चुका था।

एक गायिका : तीन भूत

यह कहानी उन दिनों की है, जिन दिनो आज की सुप्रसिद्ध अमेरिकी गायिका ऑड्री मीडोज़ एक अज्ञात गायिका थी, और एक कमरे में अपनी सहेली मेरी के साथ रहती थी। कमरा अच्छी वस्ती में नही था, पर साफ-सुथरा और हवादार था। यो भी दोनों लडकियाँ वहाँ सिर्फ सोने के लिए ही आती थीं। उनका सारा दिन थियेटरों का चक्कर लगाने में गुज़रता था।

एक रात, जव वे दोनों उस कमरे में सोने के लिए आयी, तव गरमी की वजह से उन्होने कमरे की एकमात्र खिडकी को खोल दिया, ताकि सारी रात हवा आती रहे। पर, जव वे सुवह उठी, तो उन्होंने पाया कि खिडकी अन्दर से वन्द है। दोनो लडकियो ने एक दूसरे को देखा। दोनो में से किसी ने भी रात में उठकर खिडकी को वन्द नही किया था, और दरवाज़ा अन्दर से वन्द होने के कारण किसी के वाहर से आने की सम्भावना भी नही थी। फिर, सवाल यह था कि खिडकी अन्दर से किसने वन्द की? खिडकी के अपने आप वन्द होने की भी कोई सम्भावना नही थी, क्योंकि उसकी सटकनियाँ वन्द कर दी गयी थी।

जव लगातार कई रातों तक यही तमाशा होता रहा, तो ऑड्री ने मेरी से कहा, "मुझे लगता है, मकान-मालकिन किसी तरीके से इस खिडकी को रात में वन्द कर देती है।" पर, जव मेरी ने मकान-मालकिन से इस वारे में पूछा, तो उसने कहा कि वह ऐसा नही करती। और, करना चाहे, तो भी नही कर सकती, क्योंकि दरवाज़ा अन्दर से वन्द रहता है।

अगले दिन, जव दोनो सुवह उठी, तो उन्होंने मेज़ पर दो पुस्तकें रखी

बेरी। पुस्तकें थीं— हकलबरी फिन और 'ब्लैक ब्यूटी'। दोनों पुस्तकें बच्चों के पाठ्यक्रम में थीं।

अब मॉड़ी को यकीन हो गया कि कमरे में रात को किसी लड़के का भूत आता है, और खिड़कियों को बन्द करने का काम वही करता है। मेरी का भी यही विश्वास था।

उन्होंने पड़ोसियों से पूछताछ की तो मालूम पड़ा कि मकान-मालकिन श्रीमती मार्टन का बारह साल का लड़का इसी कमरे में मरा था। मृत्यु के समय वह स्कूल में पढ़ता था। यह भी मालूम पड़ा कि उसे खिड़की बन्द करके सोने की आदत थी।

एक रविवार को मॉड़ी और मेरी ने श्रीमती मार्टन को चाय के लिए अपने कमरे में बुलाया। इधर-उधर की बात-चीत करने के बाद मॉड़ी ने जिसका बचपन से भूत-प्रेतों में विश्वास था श्रीमती मार्टन से पूछा एक व्यक्तिगत प्रश्न पूछने के लिए क्षमा कीजिए श्रीमती मार्टन ! पर क्या आप यह बताने की कृपा करेंगी कि क्या आपके लड़के की मृत्यु इसी कमरे में हुई थी ? और यह भी कि क्या उसे पढ़ने का बहुत शौक था ?

श्रीमती मार्टन यह प्रश्न सुनकर विचलित हो गयी। उन्होंने कुछ देर तक मॉड़ी को एकटक देखने के बाद पूछा इन सवालों का मकसद क्या है ?

''हमारा मन्शा आपको डराने या आपकी भावनाओं से खेलने का नहीं है। पर, हम आपको यह बताना चाहती हैं कि आपके लड़के का भूत रोज इस कमरे में आता है।'

'मैं इस बात पर यकीन नहीं कर सकती।

'देखिए, मैं फिर कहती हूँ कि मेरा इरादा आपकी भावनाओं से खेलने या आप से कोई शिकायत करने का नहीं है। और, हम इस कारण इस कमरे को छोड़ने का इरादा भी नहीं कर रही हैं। हमने तो जो महसूस किया आपको बता दिया।

एक लम्बी साँस लेकर, श्रीमती मार्टन ने धीरे-धीरे कहना शुरू किया यह सच है कि मेरे बेटे की मृत्यु इसी कमरे में हुई थी। पर उस बात को तो कई साल हो गये।'

'हमें आप के साथ हार्दिक सहानुभूति है।'

''वह बड़ा तेज और जहीन लड़का था और उसे पढ़ने का बड़ा शौक था श्रीमती मार्टन ने पुरानी यादों में खोते हुए कहा, ''अगर वह जिन्दा रहता तो काफी पढ़ता-लिखता।

अवश्य ! अच्छा क्या आपको याद है 'ब्लैक ब्यूटी' नाम की पुस्तक उसकी प्रिय पुस्तक थी ?

"हाँ। पर आप दोनों को यह बात कैसे मालूम हुई ?"

"हमें यह किताब एक दिन मेज़ पर रखी दिखाई दी थी। उसके साथ 'हकलबरी फिन' पुस्तक भी रखी थी।"

"हाँ, उसे 'हकलबरी फिन' भी अच्छी लगती थी। अकसर मुझसे उसका ज़िक्र किया करता था। क्या यह किताब भी 'ब्लैक ब्यूटी' के साथ मेज़ पर रखी थी ?"

"हाँ। और, हमारा खयाल है कि रात को कमरे की खिडकी भी उसका भूत ही खोलता है। कोई जीवित व्यक्ति ऐसा कर ही नहीं सकता।"

"उसे रात को खिडकी बन्द करके पढने की आदत थी।" कहकर श्रीमती नॉर्टन रोने लगी। "असल में उसकी मृत्यु इस खिडकी के खुले रहने के कारण ही हुई थी। एक रात यह खिडकी न जाने कैसे खुली रह गयी। रात को तेज़ वर्षा के साथ ओले भी पडे, पर मेरे लडके को इसका पता न चला। वह सोता ही रहा। सुबह को, जब वह उठा तो उसे तेज़ बुखार था। शाम तक वह चल बसा।"

जब तक ऑड्री और मेरी उस कमरे में रही, उन्हें श्रीमती नॉर्टन के लडके के भोले-भाले भूत की उपस्थिति की अनुभूति बराबर होती रही। दोनो किताबें उन्हें रोज़ मेज़ पर खुली दिखाई पडती थीं, और खिडकी भी हमेशा बन्द मिलती थी।

इस घटना के बाद भी ऑड्री के जीवन में भूत कई बार आये।

द्वितीय महायुद्ध के दौरान, अमेरिका की अनेक अभिनेत्रियो और गायिकाओ के साथ, ऑड्री भी सैनिको के मनोरजन के लिए लडाई के मोर्चों पर जाती थी। एक बार जब वह फ़िलिपाइन्स के मोर्चे पर गयी हुई थी, तब मलेरिया से पीडित होकर कई दिन तक अपने तम्बू में पडी रही। एक सप्ताह के अन्दर उसका वज़न ११६ पौण्ड से घटकर ९० पौण्ड रह गया। ऐसी कमज़ोरी की हालत में उसे न मोर्चे पर भेजा जा सकता था, न अमेरिका वापस रवाना किया जा सकता था।

एक रात जब ऑड्री अपने तम्बू में मसहरी-लगे पलग पर सो रही थी, तो उसकी आँख किसी आवाज से खुल गयी। उसने देखा कि उसके चारो ओर अनेक काग़ज़ उड रहे हैं। तम्बू में न हवा थी, न कोई कागज, इसलिए उसे आश्चर्य हुआ कि एक साथ इतने काग़ज़ कैसे और कहाँ से आ गये ? वह हैरत से इन काग़ज़ों को उडते देखती रही।

कुछ देर बाद एक काग़ज़ आकर उसके मुँह पर गिरा। उसने पढा, कागज़ पर सिर्फ एक लाइन लिखी थी "कल मत जाना।"

जैसे ही उसने इस लाइन को पढकर पलंग के नीचे रखा, वह काग़ज़ तथा

अन्य कागज अपने आप, न जाने कहाँ गायब हो गये। तम्बू में फिर शान्ति छा गयी।

ग्लॉड़ी का पूरा विश्वास था कि वह जागी हुई है, और कोई सपना नहीं देख रही है। उसे यह भी विश्वास था कि किसी शुभेच्छु और कृपालु भूत ने उस पर रहम खाकर उसे एक सामयिक चेतावनी दी है, जिसका पालन उसे अवश्य करना चाहिए। उसने तय किया कि यदि कल उसके जाने की बात उठी तो वह साफ़ मना कर देगी।

यह निश्चय करके वह आराम से सो गयी।

अगले दिन सुबह एक सेनाधिकारी ने आकर उससे कहा कि सेना का एक हवाई जहाज दुपहर को अमरिका के लिए रवाना हो रहा है और उसमें उसके लिए भी एक सीट सुरक्षित रखी गयी है। वह जाने के लिए तुरन्त तैयार हो जाये।

ग्लॉड़ी ने कहा 'कल रात से मेरी तबियत अचानक खराब हो गयी है। मुझे खेद है कि मैं आज जाने में असमर्थ हूँ।

सेनाधिकारी कन्धे उचकाकर चला गया।

ग्लॉड़ी के तम्बू के पास एक तरुण सेनाधिकारी का तम्बू था। यह सेनाधिकारी भी ग्लॉड़ी की भाँति मलेरिया से पीड़ित था। अन्य सेनाधिकारियों ने विश्राम और चिकित्सा के लिए उसे भी कुछ दिनों के लिए अमेरिका भेजने का निश्चय किया था। उसकी सीट भी दुपहर में रवाना होनेवाले हवाई जहाज में सुरक्षित रखी गयी थी।

लेकिन ग्लॉड़ी के सुझाव पर उसने भी दुपहर के हवाई जहाज से जाने से इन्कार कर दिया और बहाना करके अपने तम्बू में ही लेटा रहा।

शाम को खबर मिली कि उस वायुयान का कहीं पता नहीं है, और वह न जाने कहाँ गायब हो गया है। उस वायुयान का कभी पता नहीं चला।

महायुद्ध समाप्त होने के कुछ वर्ष बाद ग्लॉड़ी ने एक हवाई जहाज कम्पनी के के अन्य अधिकारी बॉब से विवाह कर लिया। विवाह के एक महीने बाद बॉब को सूचना मिली कि उसके चाचा जो एक अवकाश प्राप्त नौसेनाधिकारी थे सख्त बीमार हैं। बॉब ने ग्लॉड़ी के साथ उन्हें देखने के लिए जाने का निश्चय किया।

जिस सुबह वे दोनों जानेवाले थे उससे पहली रात को सोते-सोते अचानक ग्लॉड़ी की आँखें खुल गयीं। उसने देखा कि सारे कमरे में कुहरा-सा छाया है। वह बराबर इस कुहरे को देखती रही। कुछ मिनट बाद कुहरे के अन्दर से एक मानवाकृति साकार हुई जो उसकी ओर नहीं देख रही थी। वह भूत-जैसी आकृति बराबर कमरे की एक दीवार की ओर देखे जा रही थी।

आँड्री को लगा कि वह सपना देख रही है। उसने आँखें बन्द करके मन ही मन प्रार्थना की कि यह छायापुरुष उसकी आँखों के आगे से टल जाये। पर, उसकी प्रार्थना असफल रही। वह छायापुरुष वहीं अटल खड़ा रहा। अब आँड्री ने उसे ध्यान से देखा। उस छायापुरुष ने नौसेना की यूनीफ़ॉर्म धारण कर रखी थी, और चुपचाप खड़ा दीवार की ओर देखे जा रहा था।

आँड्री अब डर गयी। उसने पास सोये अपने पति को जगाकर उसे भी छाया-पुरुष का दर्शन कराने का निश्चय किया, पर तभी उस छायापुरुष ने मुँह पर हाथ रखकर आँड्री से कहा, "नहीं, बॉब को बेकार परेशान मत करो।"

आँड्री को लगा कि बॉब के चाचा की मृत्यु हो चुकी है, और उसके सामने खड़ा छायापुरुष वास्तव में उनका भूत ही है। उसने इस अशुभ विचार को अपने मन से निकालने की बहुत कोशिश की, पर वह जैसे उसके मन में कुण्डली मारकर बैठ गया था।

तभी उसने देखा कि वह छायापुरुष कोहरे में विलीन हो रहा है। उसके विलीन होते ही वह कोहरा भी धीरे-धीरे छँट गया।

उस रात आँड्री को नींद नहीं आयी। सुबह होते ही उसने सोचा कि बॉब को रात की घटना के बारे में बता दे, पर उसे छायापुरुष की बात याद आ गयी, "नहीं, बॉब को बेकार परेशान मत करो।" वह चुप रही।

सुबह, जब बॉब जाने की तैयारी कर रहा था, उसे तार मिला कि पिछली रात को उसके चाचा की मृत्यु हो गयी।

जब एक भूत ने अपना वायदा पूरा किया

कार्ल शैल ने अभिनय में ख्याति अमेरिका में पायी, पर वे मूलतः आस्ट्रिया के निवासी हैं। वहीं उनका जन्म हुआ था। पर, जब हिटलर ने आस्ट्रिया पर अधिकार किया, तो उनके पिता हरमैन फ़र्डिनेण्ड शैल, जो एक विख्यात नाटककार थे, कार्ल शैल तथा अपने दूसरे पुत्र मैक्सीमिलियन और पुत्री मारिया के साथ ज्यूरिख (स्विटज़रलैण्ड) में आकर रहने लगे। वहीं उनकी पत्नी ने इसी नाम की दूसरी पुत्री को जन्म दिया, जो आगे चलकर एक विख्यात अभिनेत्री बनी। उनकी पत्नी का नाम मार्गरेथ शैल था।

शैल-परिवार के ज्यूरिख में आकर रहने के बाद हरमैन की सौतेली माँ भी परिवार के साथ आकर रहने लगी। उनका स्वभाव कुछ गम्भीर था, इसलिए वे परिवार के किसी भी सदस्य से ज्यादा बात नहीं करती थी।

परिवार के पड़ोसी तन्त्र-मन्त्र और भूत-प्रेतों में बहुत विश्वास करते थे, और अक्सर तन्त्र क्रिया और भूतों के करिश्मों के बारे में बात किया करते थे। उनके चले जाने के बाद, शैल-परिवार के सदस्य उनकी खूब हँसी उड़ाया करते थे,

कारण ऐसी बातों में परिवार के किसी भी सदस्य की आस्था नहीं थी, और वह उस दुर्बल मतवादों का मजाक उड़ाया करते थे।

एक दिन जब खाना खाते समय परिवार के लोग मरणोत्तर जीवन के बारे में बातें करने में व्यस्त थे हर्मन की सौतेली माँ ने कहा : परिवार में सबसे पहले मेरी ही मृत्यु होगी। मैं वायदा करती हूँ कि मरने के बाद मैं आप लोगों से सम्पर्क करने का प्रयत्न करूँगी। यदि मैं आपसे सम्पर्क करने में असमर्थ रही तो यह अन्तिम रूप से सिद्ध हो जायेगा कि मरने के बाद जीवन की कल्पना सिर्फ कल्पना ही है।

हर्मन ने कहा : हाँ यह बात ठीक है। पर, आप यह क्यों मानती हैं कि आप ही सबसे पहले मरेंगी। शर्त यह होनी चाहिए कि हममें से जो भी पहले मरेगा वह दूसरों से सम्पर्क करने का प्रयत्न करेगा। सब ने उस वक्त तो हँसी-खेल में इस शर्त को मान लिया पर बाद में भूल गये।

कुछ वर्ष बाद हर्मन की सौतेली माँ की मृत्यु हो गयी। यद्यपि परिवार के सदस्य उन्हें अधिक नहीं चाहते थे फिर भी उनकी मृत्यु से सबको दुख हुआ और सब काफ़ी दिनों तक उन्हें याद करते रहे। फिर, अपने-अपने काम में लग कर उन्हें भूल गये।

एक रात जब हर्मन अपने लेखन-कार्य में व्यस्त थे टेलीफ़ोन की घण्टी बजी। उन्होंने टेलीफ़ोन उठाया और पूछा : कौन है?

"हर्मन हर्मन! मुझे पहचाना नहीं?"

फ़ोन पर अपनी मृत सौतेली माँ की आवाज़, जो काफ़ी दूर से आती हुई मालूम हो रही थी सुनकर हर्मन दंग रह गये। भयस्तब्धता के कारण उनके मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकली। जब उनका भय और आश्चर्य कुछ कम हुआ, तो उन्होंने कहा "हलो हलो!"

पर उस समय तक लाइन कट चुकी थी।

मैं घोर यथार्थवादी हूँ इस रहस्यपूर्ण और आश्चर्यजनक घटना के बारे में हर्मन ने लिखा 'और चमत्कार उत्पन्न करने के लिए रहस्यपूर्ण और अलौकिक घटनाओं की कल्पना करने की मेरी आदत नहीं है। और कोई मुझे आसानी से मूर्ख भी नहीं बना सकता। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि उस रात मैंने अपनी मृत सौतेली माँ की ही आवाज़ सुनी थी। इस बारे में मेरे मन में कोई भ्रम नहीं है- मेरी सौतेली माँ ने, मज़ाक-मज़ाक में जो वायदा किया था उसके भूत ने उसे सचमुच पूरा कर दिखाया।

टेलीविज़न अभिनत्री और उसके शुभेच्छु भूत

सफलता के लिए कृतज्ञ है—अपनी एक धर्ममाता का, जिनका नाम उसने कभी किसी को नहीं बताया। पर, उसका कहना है कि जीवन के हर महत्त्वपूर्ण मोड़ पर उसे अपनी धर्ममाता से मार्ग-निर्देशन प्राप्त हुआ है, और इसी मार्ग-निर्देशन के बल पर उसने सब बाधाओं और कठिनाइयों को पारकर, सफलता प्राप्त की है। वह किसी भी जीवित व्यक्ति के प्रति इतनी कृतज्ञ नहीं है, जितनी अपनी धर्ममाता के प्रति। अपनी धर्ममाता के बारे में वह सिर्फ इतना ही बताती है कि उनका जन्म भी उसके समान कनाडा में ही हुआ था।

"मैं वर्ष में सिर्फ़ दो बार उनकी याद करती हूँ—बड़े दिनपर, और अपने जन्मदिन पर। वे भी इन्हीं दो दिनों में मेरी याद करती हैं।" गिसेल मैकेन्ज़ी ने एक अवसर पर उनकी याद करते हुए कहा था।

एक दिन, जब गिसेल दर्पण में अपना मुँह देख रही थी, तो उसे अपने चेहरे के स्थान पर अपनी धर्ममाता का स्थिर चेहरा दिखाई दिया, जो क्रमशः धूमिल होता चला गया। अन्त में, वह एकदम लुप्त हो गया, और गिसेल को उनके स्थान पर अपना चेहरा दिखाई देने लगा।

तभी दरवाज़े की घण्टी बजी। गिसेल के पति दरवाज़ा खोलने को उठे, तो गिसेल ने कहा, "मैं जानती हूँ, यह कौन है। तार लानेवाला हरकारा है, जो यह तार लाया है कि मेरी धर्ममाता की मृत्यु हो गयी है।"

"तुम्हें कैसे मालूम?" उसके पति ने पूछा।

गिसेल ने कोई उत्तर नहीं दिया।

पर, जब उसके पति ने दरवाज़ा खोला तो सचमुच सामने तार के हरकारे को खड़ा पाया। और तार में, वाकई गिसेल की धर्ममाता के निधन की सूचना थी।

जब गिसेल के बेटे की आयु तीन वर्ष थी, तब वह भयंकर रूप से बीमार पड़ा। उसने अच्छे से अच्छे डॉक्टरों के इलाज कराये, पर कोई लाभ नहीं हुआ। गिसेल अपने प्यारे बेटे की बीमारी से बड़ी चिन्तित रहती थी।

और एक दिन उसकी हालत और ज्यादा खराब हो गयी। डॉक्टर पूरा जोर लगा रहे थे, पर उन्हें लड़के के बचने की कोई आशा नहीं दिखाई दे रही थी। गिसेल पहले से ज्यादा उदास और चिन्तित रहने लगी। उधर लड़के की हालत तेज़ी से खराब होती चली जा रही थी।

एक सुबह गिसेल ने अपने बेटे के चेहरे पर मुसकराहट देखी। उसकी हालत भी सुधरी लगती थी। गिसेल उसके माथे पर हाथ रखकर उसे प्यार करने लगी। तभी लड़के ने कहा, "माँ, कल रात एक बूढ़ा आदमी मेरे पास आया था। उसने मुझे एक दवा दी थी।"

गिसेल को यह बात सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, शायद उसका

बैठा रात में देखा हुआ कोई सपना सुना रहा है। उसने कहा "यह तो बड़ी अच्छी बात है। अब तुम्हारी तबियत कैसी है ?'

'अब मैं अच्छा हूँ माँ। बूढ़े बाबा ने जाते हुए कहा था कि मैं रोज आकर तुम्हें यह दवा दूँगा और उसे पीकर तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे ?'

अच्छा !" अब मिसेस का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। उसने पूछा 'तुम्हें याद है ये बूढ़े बाबा कहाँ से आये थे ?

"हाँ, मुझे याद है। वे परदा हटाकर इस खिड़की से बाहर से आये थे, और फिर परदा हटाकर इसी खिड़की से बाहर चले गये।

मिसेस ने लड़के के पास सोनेवाली नर्स से इस बारे के बारे में पूछा। उसने जवाब दिया कि वह रातभर सोती रही थी। उसने न कुछ देखा, न कुछ सुना।

लड़के की बात कहाँ तक सच है इसका फ़ैसला खुद करने के लिए, मिसेस ने उस रात खुद नर्स के स्थान पर कमरे में सोने का फ़ैसला किया।

वह क़रीब एक बजे तक जागती रही फिर उसे नींद आ गयी।

कुछ देर बाद कमरे में हल्का-सा शोर सुनकर उसकी आँखें खुलीं तो उसने अपने सामने सफ़ेद कपड़े पहने एक बूढ़े आदमी को अपने लड़के की दवा की शीशियों पर झुका पाया। उस आदमी की कमर उसकी ओर थी, इसलिए वह उसका चेहरा नहीं देख पायी। वह काफ़ी देर तक शीशियों को उलटता-पलटता रहा। कुछ शीशियाँ उसने अपने सफ़ेद लबादे की जेब में भी रखीं। फिर वह लड़के की ओर बढ़ा।

शुरू में मिसेस को लगा था कि यह आदमी कोई चोर है, जो लड़के की क़ीमती दवाओं को चुराने आया है। पर बाद में उसके सफ़ेद लबादे और सफ़ेद पैंट को देखकर उसे लगा कि शायद यह कोई भूत है, किसी ऐसे आदमी का भूत जो पहले इस कमरे में रहता था। लेकिन फिर उसे ख़याल आया कि भूतों के कपड़े ऐसे नहीं होते।

तो फिर यह आदमी कौन है ? यह जानने के लिए वह उसके पास पहुँचने के लिए आगे बढ़ी। उधर उस आदमी ने लड़के के पास जाकर हल्के से उसे उठाते हुए कहा "उठो बेटे, दवा पी लो।

मिसेस को आदमी का स्वर कुछ पहचाना-सा लगा। अब उसने उस आदमी को सामने से देखा और देखते ही बेहोश हो गयी। उसके सामने खड़े थे उसके पिता जिनकी मृत्यु पन्द्रह साल पहले हो चुकी थी। वे डॉक्टर थे और इस समय अपनी डॉक्टरी यूनीफ़ार्म में ही थे। वे अपने ज़माने के जाने-माने डॉक्टरों में से थे, और अब प्रेतलोक से अपनी लड़की के बेटे की जान बचाने के लिए आये थे।

गिसेल का लडका एक सप्ताह के अन्दर अच्छा होकर खेलने लगा ।

अभिनेत्री का गाढालिंगन एक भूत द्वारा :

निर्माता रॉस हण्टर की 'द पैड' फिल्म में शोहरत हासिल करने से पहले अभिनेत्री जूली सोमार्स अपनी एक सहेली के साथ लॉस एंजेल्स के एक पुराने मकान में रहा करती थी ।

स्पेनी शैली में बने इस मकान की दीवारें काफी मोटी थी, और इस कारण उसमें से धूप के कम होते ही एक सडी हुई गन्ध आने लगती थी । जिस कमरे में सोमार्स सोया करती थी, उसमें सिर्फ एक खिडकी थी । उस खिडकी पर हमेशा मोटा और काला परदा पडा रहता था । यह कमरा मकान के ऐसे हिस्से में था, जहाँ वाहर से भी प्रकाश के आने की कोई सम्भावना नही थी । इस कारण रात को कमरे में घटाटोप अँधेरा छाया रहता था ।

एक रात अपनी सहेली के लॉस एजेल्स से वाहर चले जाने के कारण सोमार्स को इस अँधेरे और वदवूदार कमरे में अकेले सोना पडा । सोते-सोते उसे ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसे अपनी वाँहों में दवोच लिया है, और उसकी छाती पर अपना दवाव डालता जा रहा है । उसने कोशिश करके इस दवाव को कम करना चाहा, पर नाकामयाव रही ।

पहले तो उसे लगा कि शायद उसे दिल का दौरा पडा है, पर यह खयाल ग़लत निकला, क्योकि उसकी साँस वदस्तूर स्वाभाविक गति से चल रही थी । फिर, उसे लगा कि शायद वह कोई दु स्वप्न देख रही है । यह ख़याल भी सही है या नही, इस वात की जांच करने के लिए उसने अपना तकिया उठाकर फर्श पर फेंक दिया । अगर यह तकिया उसे अगले दिन भी फर्श पर पडा मिला, तो वह समझ लेगी कि उसने दु स्वप्न नही देखा था ।

पलग पर लेटी-लेटी सोमार्स इस निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश कर रही थी कि वह सोयी है, या जागी है कि अचानक उसे लगा कि कमरे में व्याप्त वासी गन्ध दूर हो गयी है, और हवा अव ताज़ी और सुगन्धित है । कई मिनट तक हवा ताज़ी और सुगन्धित ही रही, और फिर सहसा पहले की तरह वासी और वदवूदार हो गयी ।

सहसा उसका ध्यान दीवार पर लटके दर्पण की ओर आकर्षित हुआ, जिसके वीचोवीच स्थित एक प्रकाश-विन्दु उसे वडा अजीव लगा, कारण उसने इसे पहले कभी नही देखा था । यह देखने के लिए कि इस प्रकाश-विन्दु की छाया का मूल स्रोत क्या है, उसने कमरे में चारों ओर देखा । पर, शेष कमरा निपट काला और अन्धकारमय था । फिर उसके देखते-देखते यह प्रकाश-विन्दु सारे दर्पण का चक्कर लगाने लगा । कभी ऊपर जाता, कभी नीचे । कभी वायी

ओर आता, कभी दायीं ओर। कभी घूमने लगता कभी स्थिर हो जाता।

फिर वह गायब हो गया बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से।

सोमार्स को याद आया कुछ दिन पहले उसने पुराने मकानों और किलों में रहनेवाले भूतों के बारे में एक किताब पढ़ी थी। उस किताब में कहा गया था कि भूत हमेशा ही अपने सूक्ष्म शरीर का पार्थिव शरीर में बदलकर प्रकट नहीं होते, कभी-कभी वे अपनी उपस्थिति का भान जीवित व्यक्तियों को छूकर या उनका गाढ़ालिंगन करके, या किसी दर्पण में प्रकाश-बिन्दु स्थापित करके या हवा को सुगन्धित या बदबूदार बनाकर करते हैं। तो क्या अभी-अभी उसके साथ कमरे में कोई भूत था? यह विचार मन में आते ही वह चिल्ला पड़ी और बेहोश हो गयी।

जब उसे होश आया, तो उसने देखा कि उसकी सहेली जो इस समय तक वापस आ गयी थी, उसका सिर अपनी गोदी में लिये बैठी है, और कह रही है क्या कमरे के अदृश्य भूत के करिश्मे देखकर इतना डर गयी? मैंने तो कई बार उसके करिश्मे देखे, पर एक बार भी नहीं डरी।

जब एक शिक्षक ने भूत के रूप में चेतावनी दी

पैंतालीस-वर्षीय अमेरिकी कलाकार रिचर्ड स्लैटरी आज भले ही कारों में घूमते हों, पर जितना मजा उन्हें बचपन में ट्राम की सवारी में आता था उतना कार की सवारी में नहीं आता। ट्राम, जिसे अमेरिका में ट्रॉली-कार कहते हैं, की सवारी का मजा कुछ और ही था।

एक पुलिस-सिपाही के पुत्र रिचर्ड स्लैटरी को अपने स्कूल तक पहुँचने, और वहाँ से आने के लिए ट्रॉली-कार का प्रयोग करना पड़ता था। उसके सहपाठी भी ट्रॉली-कार का ही इस्तेमाल करते थे। यात्रा के साधन के अलावा ट्रॉली कारें स्लैटरी और उसके सहपाठियों के लिए खेल और मुफ्त में शहर की सैर का साधन भी बन गयी थीं क्योंकि उन दिनों ट्रॉली-कारों का इस्तेमाल करनेवाले विद्यार्थियों से किराया वसूल करने में ज्यादा सख्ती नहीं बरतते थे और जरूरत पड़ने पर उन्हें मुफ्त भी सैर करने देते थे।

एक दिन जब विद्यार्थी स्लैटरी रोज की तरह स्कूल से ट्रॉली-कार द्वारा अपने घर के लिए रवाना हुआ, तो उसने सुना, कोई उससे कह रहा था "हलो स्लैटरी!'

स्लैटरी ने मुड़कर देखा तो पाया कि उसके स्कूल के अध्यापक और स्काउट-मास्टर फ्रादर बरनार्ड उसके पीछे खड़े थे। स्कूल के अन्य छात्रों की तरह स्लैटरी भी फ़ादर बरनार्ड का आदर करता था। उसने अपना हैट उतार कर आदरपूर्वक कहा "हलो, फ़ादर।

गिसेल का लड़का एक सप्ताह के अन्दर अच्छा होकर खेलने लगा।

अभिनेत्री का गाढालिंगन एक भूत द्वारा :

निर्माता रॉस हण्टर की 'द मैड' फिल्म में शोहरत हासिल करने से पहले अभिनेत्री जूली सोमार्स अपनी एक सहेली के साथ लॉस एंजेल्स के एक पुराने मकान में रहा करती थी।

स्पेनी शैली में बने इस मकान की दीवारें काफी मोटी थी, और इस कारण उसमें से धूप के कम होते ही एक सडी हुई गन्ध आने लगती थी। जिस कमरे में सोमार्स सोया करती थी, उसमें सिर्फ एक खिडकी थी। उस खिडकी पर हमेशा मोटा और काला परदा पडा रहता था। यह कमरा मकान के ऐसे हिस्से में था, जहाँ बाहर से भी प्रकाश के आने की कोई सम्भावना नही थी। इस कारण रात को कमरे में घटाटोप अँधेरा छाया रहता था।

एक रात अपनी सहेली के लॉस एजेल्स से बाहर चले जाने के कारण सोमार्स को इस अँधेरे और बदबूदार कमरे में अकेले सोना पडा। सोते-सोते उसे ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसे अपनी बाँहों में दबोच लिया है, और उसकी छाती पर अपना दबाव डालता जा रहा है। उसने कोशिश करके इस दबाव को कम करना चाहा, पर नाकामयाब रही।

पहले तो उसे लगा कि शायद उसे दिल का दौरा पडा है, पर यह खयाल गलत निकला, क्योंकि उसकी साँस बदस्तूर स्वाभाविक गति से चल रही थी। फिर, उसे लगा कि शायद वह कोई दु:स्वप्न देख रही है। यह खयाल भी सही है या नही, इस बात की जाँच करने के लिए उसने अपना तकिया उठाकर फर्श पर फेंक दिया। अगर यह तकिया उसे अगले दिन भी फ़र्श पर पडा मिला, तो वह समझ लेगी कि उसने दु:स्वप्न नही देखा था।

पलग पर लेटी-लेटी सोमार्स इस निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश कर रही थी कि वह सोयी है, या जागी है कि अचानक उसे लगा कि कमरे में व्याप्त बासी गन्ध दूर हो गयी है, और हवा अब ताजी और सुगन्धित है। कई मिनट तक हवा ताजी और सुगन्धित ही रही, और फिर सहसा पहले की तरह बासी और बदबूदार हो गयी।

सहसा उसका ध्यान दीवार पर लटके दर्पण की ओर आकर्षित हुआ, जिसके बीचोबीच स्थित एक प्रकाश-बिन्दु उसे बडा अजीब लगा, कारण उसने इसे पहले कभी नही देखा था। यह देखने के लिए कि इस प्रकाश-बिन्दु की छाया का मूल स्रोत क्या है, उसने कमरे में चारो ओर देखा। पर, शेष कमरा निपट काला और अन्धकारमय था। फिर उसके देखते-देखते यह प्रकाश-बिन्दु सारे दर्पण का चक्कर लगाने लगा। कभी ऊपर जाता, कभी नीचे। कभी बायी

ओर जाता, कभी बायीं ओर। कभी घूमने लगता कभी स्थिर हो जाता।

फिर वह गायब हो गया बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से।

सोमाई को याद आया कुछ दिन पहले उसने पुराने मकानों और किलों में रहनेवाले भूतों के बारे में एक किताब पढ़ी थी। उस किताब में कहा गया था कि भूत हमेशा ही अपने सूक्ष्म शरीर को पार्थिव शरीर में बदलकर प्रकट नहीं होते कभी-कभी वे अपनी उपस्थिति का भान जीवित व्यक्तियों को छूकर या उनका गाढ़ालिंगन करके या किसी दर्पण में प्रकाश-बिन्दु स्थापित करके या हवा को सुगन्धित या बदबूदार बनाकर करते हैं। तो क्या अभी-अभी उसके साथ कमरे में कोई भूत था? यह विचार मन में आते ही वह चिल्ला पड़ी, और बेहोश हो गयी।

जब उसे होश आया तो उसने देखा कि उसकी सहेली जो इस समय तक वापस आ गयी थी उसका सिर अपनी गोदी में लिये बैठी है, और कह रही है, क्या कमरे के अदृश्य भूत के करिश्मे देखकर इतना डर गयी? मैंने तो कई बार उसके करिश्मे देखे, पर एक बार भी नहीं डरी।

जब एक शिक्षक ने भूत के रूप में चेतावनी दी

पैंतालीस-वर्षीय अमेरिकी कलाकार रिचर्ड स्लैटरी आज भले ही कारों में घूमते हों, पर जितना मजा उन्हें बचपन में ट्राम की सवारी में आता था उतना कार की सवारी में नहीं आता। ट्राम जिसे अमरिका में ट्रॉली-कार कहते हैं की सवारी का मजा कुछ और ही था।

एक पुलिस-सिपाही के पुत्र रिचर्ड स्लैटरी को अपने स्कूल तक पहुँचने और वहाँ से आने के लिए ट्रॉली-कार का प्रयोग करना पड़ता था। उसके सहपाठी भी ट्रॉली-कार का ही इस्तेमाल करते थे। यात्रा के साधन के अलावा ट्रॉली कारें स्लैटरी और उसके सहपाठियों के लिए खेल और मुफ्त में शहर की सैर का साधन भी बन गयी थीं क्योंकि उन दिनों ट्रॉली-कारों का इस्तेमाल करनेवाले विद्यार्थियों से किराया वसूल करने में ज्यादा सख्ती नहीं बरतते थे और अक्सर पकड़े पर उन्हें मुफ्त भी सैर करने देते थे।

एक दिन जब विद्यार्थी स्लैटरी रोज की तरह स्कूल से ट्रॉली-कार द्वारा अपने घर के लिए रवाना हुआ तो उसने सुना, कोई उससे कह रहा था "हलो स्लैटरी!

स्लैटरी ने मुड़कर देखा तो पाया कि उसके स्कूल के अध्यापक और स्काउट-मास्टर फ्रादर बरनार्ड उसके पीछे खड़े थे। स्कूल के अन्य छात्रों/कि-तरह स्लैटरी भी फ्रादर बरनार्ड का आदर करता था। उसने अपना हैट कर आदरपूर्वक कहा, "हलो, फ्रादर।"

फ़ादर ने उससे पूछा, उसकी पढाई कैसी चल रही है, गरमियो की छुट्टियो में उसका क्या करने का इरादा है, और उसके माता-पिता कैसे हैं ? स्लैटरी ने फ़ादर के सब प्रश्नो के उत्तर देने के बाद उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। फ़ादर ने कहा, उनका स्वास्थ्य ठीक है, और वे सानन्द हैं। यह बातचीत चार-पाँच मिनट तक चलती रही।

स्लैटरी को अगले स्टॉप पर उतरना था। जब वह नीचे उतरने के लिए रास्ता बनाने लगा, तो फादर ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "उतरते समय जल्दी मत किया करो। जानते तो होगे ही कि स्कूल का एक लडका चलती ट्रॉली-कार से उतरते समय उसके नीचे आकर मर गया था। जल्दी करने से कोई फायदा नहीं होता।"

स्लैटरी ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनकी सलाह हमेशा याद रखेगा, और ट्रॉली-कार से उतरते समय सावधान रहेगा।

ट्रॉली-कार से उतरकर घर आते समय स्लैटरी को फादर के शब्द याद आते रहे। पर सहसा वह चलते-चलते रुक गया, और स्तब्ध-सा खडा होकर याद करने लगा कि फ़ादर बरनार्ड की मृत्यु हुए तो छह महीने बीत चुके थे। उनसे बातें करते समय उसका ध्यान इस बात की ओर क्यो नही गया ? तो क्या उसने फ़ादर बरनार्ड के भूत से बातें की थी ? पर, जिस फादर बरनार्ड से उसने अभी-अभी बातें की थी, वह उनका भूत तो नही लगता था। वह तो उसके सुपरिचित फादर बरनार्ड ही थे। लेकिन . .

उसका सिर चक्कर खाने लगा।

वह सोचने लगा कि फादर बरनार्ड उसे ट्रॉली-कार में ही क्यो दिखाई दिये थे, और उन्होने उसे ट्रॉली-कार से सावधानी से उतरने के बारे में क्यो सावधान किया था।

उसे याद आया कि स्कूल के जिस लडके के ट्रॉली-कार-दुर्घटना में मरने का जिक्र फ़ादर बरनार्ड ने किया था, वह फादर बरनार्ड का सबसे प्रिय शिष्य था, और उन्हीकी भाँति फादर बनने का इच्छुक था। उसे याद आया कि कई बार फ़ादर बरनार्ड ने उसे भी अपना प्रिय शिष्य मानकर उसे पढाई और खेलो में आगे बढने के लिए प्रोत्साहित किया था। शायद, मरने के बाद भी वे नही चाहते थे कि उसका भी वैसा ही दुखद अन्त हो, जैसा उनके प्रिय शिष्य का हुआ था।

शायद !



साधारण जन श्रौर भूत

□

लिंकन का भूत अमेरिका के राष्ट्रपति भवन पर आज भी मँडराता रहता है

भूत-प्रेतों, भविष्यवाणियों, प्रेतात्माओं आदि में यूं तो अमेरिका के अनेक राष्ट्रपतियों—जैसे वुड्रो विल्सन, रूजवेल्ट, आइसनहॉवर आदि—का विश्वास रहा है, पर उनमें सबसे ऊँचा स्थान अब्राहम लिंकन का है जिन्हें अपनी हत्या का पूर्वाभास एक सपने द्वारा हो गया था। अतीन्द्रिय विषयों में उनका विश्वास इस सपने के बाद और दृढ़ हो गया था।

लिंकन के राष्ट्रपति बनने के बाद 'क्लीवलैंड प्लेन डीलर' नामक एक समाचार-पत्र ने इस आशय का एक लेख प्रकाशित किया था कि लिंकन प्रेतात्मवादी हैं। जब लिंकन का ध्यान इस लेख की ओर आकृष्ट किया गया, तो उन्होंने कहा था "मैं प्रेतात्मवादी तो हूँ ही, उससे ज्यादा भी कुछ हूँ। इस क्षेत्र में मैंने जो कुछ देखा-अनुभव किया है, वह बहुत कम लोगों ने किया होगा।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि लिंकन राष्ट्रपति भवन (व्हाइट हाउस) में
१ प्रेतात्मवादियों को बुलाकर उनके माध्यम से मृत व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया करते थे। जब उन्होंने दासप्रथा के उन्मूलन का निश्चय किया था, तब उनपर काफी जोर डाला गया था कि वे इस निश्चय को बदल दें, क्योंकि यह उनके हित में न होगा। जब वे किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में थे, तब नैटी कॉल्बर्न नामक माध्यम के जरिये प्रेतात्माओं से उन्हें यह सन्देश प्राप्त हुआ था कि वे इस निश्चय को कदापि न बदलें। इतना ही नहीं, इस सन्देश में यह भी कहा गया था कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपने इस निश्चय की घोषणा कर दें। बाद में इस माध्यम ने यह रहस्योद्घाटन किया कि जिन प्रेतात्माओं ने उन्हें सन्देश भेजे थे, उनमें से एक प्रेतात्मा डेनियल वेबस्टर की थी, जिनका एक चित्र हमेशा लिंकन के ऑफिस में टंगा रहता था। वेबस्टर को लिंकन अपना परम मित्र और शुभचिन्तक मानते थे।

वेबस्टर की प्रेतात्मा ने ही लिंकन को सूचना दी थी कि उनके काल में *अमेरिका में चल रहा गृह-युद्ध जल्द समाप्त होगा और उसमें किसकी विजय* होगी। इसी प्रेतात्मा से लिंकन को अपने दुबारा राष्ट्रपति चुने जाने का पूर्वाभास मिला था।

यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि लिंकन को एक सपने द्वारा, जो सम्भवतः वेबस्टर की प्रेतात्मा द्वारा ही नियोजित था, अपनी हत्या का पूर्वाभास है

आ था।

अपनी हत्या से कुछ दिन पहले उन्होंने अपने मित्रों को बताया था कि एक रात जब वे देर तक जागकर काम कर रहे थे, उन्हें एक अजीब सपना दिखाई दिया। इस सपने में उन्हें राष्ट्रपति-भवन के सूने कमरों में घूमते-घूमते किसी की सुबकियाँ सुनाई दीं। जब वे उस कमरे में पहुँचे, जहाँ से सुबकियाँ आ रही थीं, तो देखा कि कुछ लोग सैनिकों द्वारा सुरक्षित और शाही वस्त्रों से ढके एक शव के सामने बैठे सुबकियाँ ले रहे हैं। लिंकन ने पूछा, "यह शव किसका है?"

उत्तर मिला, "राष्ट्रपति लिंकन का।"

इसके कुछ दिन बाद फ़ोर्ड्‌स थियेटर में जॉन विल्क्स बूथ ने लिंकन की हत्या की। लिंकन का शव उसी कमरे में लाकर रखा गया, जो उन्हें सपने में दिखाई दिया था। सैनिकों द्वारा सुरक्षित और शाही वस्त्रों से ढके शव के सामने बैठे कुछ लोग उसी तरह सुबकियाँ ले रहे थे, जिस प्रकार उन्हें सपने में दिखाई दिया था।

ऐसा विश्वास है कि लिंकन का भूत आज भी अमेरिका के राष्ट्रपति-भवन के इर्द-गिर्द और अन्दर मँडराता रहता है। यह विश्वास अनेक प्रामाणिक घटनाओं के कारण हुआ है। श्रीमती रूज़वेल्ट ने अपने संस्मरणों में लिंकन के भूत के राष्ट्रपति-भवन में स्थायी रूप से रहने के बारे में लिखा है: एक दिन मैं अपने अध्ययन-कक्ष में बैठी कुछ लिख रही थी कि मेरी नौकरानी भागी-भाग मेरे पास आयी, और कहने लगी, "वे अपने पलंग पर बैठे अपने जूते उत रहे हैं।"

"कौन? किसका ज़िक्र कर रही हो?"

"मिस्टर लिंकन का। मैंने अभी-अभी उन्हें उनके कमरे 'ब्लू रूम' में देखा था।"

उन्होंने अपने संस्मरण में एक स्थान पर यह भी लिखा है कि रात को देर तक काम करते हुए अकसर उन्हें लगा है कि लिंकन का सूक्ष्म शरीर उनके पीछे खड़ा है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, हॉलैण्ड की रानी विल्हेल्मिना राष्ट्रपति-भवन ठहरी थीं। एक रात सोने से पूर्व उन्हें लगा कि कोई उनके कमरे का दरवा खटखटा रहा है। उन्होंने उठकर दरवाज़ा खोला ..पर, दरवाज़े पर खड़े 'व्यि को देखकर बेहोश हो गयीं। जब अगले दिन राष्ट्रपति रूज़वेल्ट को इस घ के बारे में पता चला, तो उन्होंने स्वयं रानी के पास आकर उनका कुशल जानना चाहा। रानी ने उन्हें बताया कि दरवाज़ा खोलते ही मुझे अपने स भूतपूर्व राष्ट्रपति लिंकन का भूत दिखाई दिया। इसके बाद मेरी आँखों के अँधेरा छा गया और मैं बेहोश होकर गिर पड़ी।

भू

उनके स्टॉफ की एक सदस्या मेरी इवान्स एक शाम को उस कमरे में गयी जहाँ लिंकन का शव रखा गया था और तेजी से वापस आ गयी। उसे उस कमरे में लिंकन का भूत दिखाई दिया था।

जब आइजनहावर अमेरिका के राष्ट्रपति थे, तब कुछ कलाकारों ने उनके मनोरंजनार्थ 'कौंच आँन द राइल' नामक नाटक का प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के बाद आइजनहावर ने सब कलाकारों को रात के भोजन पर बुलाया और सब कलाकारों से अलग-अलग बात की। बाद में फ्रैंक सिम्सन नामक एक कलाकार ने सिमोनाइड लायन्स नामक एक पत्रकार को बताया कि राष्ट्रपति ने उससे कहा था कि लिंकन का भूत जब-तब उन्हें तथा राष्ट्रपति-भवन में रहनेवाले लोगों को दिखाई दे जाता है। जब लिंकन की जीवनी लिखनेवाले कार्ल सैन्डबर्ग ने राष्ट्रपति आइजनहावर से पूछा कि क्या उन्हें राष्ट्रपति भवन में कभी लिंकन का भूत दिखाई दिया था, तो उन्होंने कहा था, "दिखाई तो कभी नहीं दिया, पर उसकी अनुभूति मुझे कई बार हुई है।" फिर उन्होंने सैन्डबर्ग को सुझाव दिया कि वह राष्ट्रपति-भवन का चक्कर लगाकर, स्वयं इस बात का पता लगा लें।

सैन्डबर्ग स्वयं लिंकन के प्रिय कमरे 'रेड रूम' में कुछ समय के लिए ठहरे रहे। बाद में उन्होंने लिखा, "मुझे कुछ दिखाई तो नहीं दिया, पर यह स्पष्ट अनुभूति हुई कि लिंकन मेरे पास ही खड़े हैं।"

'न्यूयॉर्क टाइम्स' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार राष्ट्रपति ट्रूमैन ने एक टेलीविजन भेंट में कहा था कि "उन्हें और उनकी पुत्री मार्गरेट को कई बार रात में ऐसा अनुभव हुआ कि किसी ने दरवाजा खटखटाया है। जब दरवाजा खोला जाता, तो एक क्षण के लिए लिंकन का सूक्ष्म शरीर दिखाई देता और धीरे-धीरे विलीन हो जाता।

एक क्रांतिक भूत

"कृपया मेरी सहायता कीजिए," वह भयभीत फोन पर कह रहा था, "एक भूत मुझपर आक्रमण कर रहा है। कृपया जल्दी आइए।"

पुलिस जब उसके घर पर पहुँची, तो मालूम हुआ कि सहायता की याचना करनेवाला था पेरिस का एक तरुण जौहरी गस्टाव करालामिया, जो पिछले कुछ वर्षों से न्यूयॉर्क के एक पुराने मकान में अपनी बूढ़ी माँ के साथ रह रहा था। उसने पुलिस को बताया कि उस रात में अक्सर किसी के चलने की आवाज सुनाई देती है। पाँच-छह बार ऐसा भी हुआ है कि रात में उसकी आँख खुल गयी है, और उसने अपने मकान के कमरे में पाँच-छह आदमियों को आपस में बातें करते पाया है। उसे देखते ही वे न मालूम कहाँ और कैसे गायब हो जाते हैं।

पुलिस को दिये गये अपने बयान में उसने यह भी कहा कि एक बार उसने

इनमें से एक आदमी के ऊपर तकिया भी फेंका था। वह तकिया उस भूत के आरपार नहीं गया, वल्कि उससे लगकर फ़र्श पर गिर गया। जव उसने दुवारा उस भूत को देखा, तो वह ग़ायव हो चुका था और तकिया फ़र्श पर वहीं पड़ा था, जहाँ उससे लगकर फ़र्श पर गिरा था।

"तुमने उसपर तकिया क्यों फेंका था?"—पुलिस-अधिकारी ने पूछा।

"इसलिए कि वह मेरा क़त्ल करने के लिए आगे वढ रहा था।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह तुम्हारा क़त्ल करना चाहता था?"

"उसकी हिंसक आँखों को देखकर। उन्हें देखकर ही उसके क़ातिलाना इरादे के वारे में पता चल जाता था।"

"उस आदमी—मेरा मतलव है, उस भूत—का हुलिया कैसा था?"

"उसने वावर्ची की पोशाक पहन रखी थी, और उसका चेहरा वडा खूँखार था।"

पुलिस-अधिकारी इस मामले की जाँच करने का आश्वासन देकर चला गया।

पर, जव क़ातिलाना इरादेवाले भूत के 'हमले' कम न हुए, और पुलिस उन्हें रोकने की दिशा में कुछ न कर पायी, तो करालानियन ने एक 'मीडियम' की सेवाएँ प्राप्त करने का निश्चय किया। जो 'मीडियम' इस काम के लिए चुनी गयी, उसका नाम था श्रीमती एथेल मेयर्स। उन्हें इस मामले के वारे में कोई जानकारी नहीं दी गयी थी।

श्रीमती मेयर्स जव समाधिस्थ हो गयीं, तो उन्होंने कहना शुरू किया, "कोई आदमी किसी लडकी का गला घोंट रहा है १९१० की वात है. आदमी अव जा रहा है लडकी मकान से नीचे गिर जाती है, और उसका सिर कुचल जाता है। दोनो जिस परिवार के साथ रहते हैं, उससे कुछ छिपाने की कोशिश कर रहे हैं. "

वाद में जव श्रीमती मेयर्स के सव वयानों को एक साथ जोडा गया, तो यह घटना उभरकर आयी. १९१० में इस मकान में हेनरी नामक एक व्यक्ति अपनी पत्नी ऐने के साथ रहता था। हेनरी के घर की नौकरानी लिज़ी से अनैतिक सम्वन्ध थे। ऐने ने एक क़साईखाने में काम करनेवाले आदमी मेंगियो को कुछ रक़म देकर लिज़ी की हत्या करने के लिए राज़ी कर लिया। मेंगियो ने गला घोंटकर लिज़ी की हत्या की।

वाद में शहर के पुराने रेकॅर्ड देखने पर पता चला कि १९१० में उस इलाक़े में ए मेंगियो नाम का एक आदमी वाक़ई एक कसाईखाने में काम करता था। रेकॅर्ड में हेनरी और ऐने का जिक्र भी था। पुलिस के कागज़ात देखने पर यह भी पता चला कि हेनरी के घर में काम करनेवाली एक नौकरानी पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया गया था, और उस इल्ज़ाम से दुखी होकर उसने मकान से

कूदकर आत्महत्या कर ली थी। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मिस्री का गला घोंटने के बाद मेसिमा ने उसे मकान से धक्का दे दिया होगा, ताकि उसकी और ऐसे की पूर्व-निश्चित साजिश के अनुसार पुलिस को यह बताया जा सके कि उसने चोरी की सजा पाने के डर से आत्महत्या कर ली।

पथराव—भूतों द्वारा

यह सत्यकथा जिसमें एक उत्कृष्ट काल्पनिक भूत कथा की सभी विशेषताएँ मौजूद हैं ब्राजील के प्रमुख दैनिक पत्र 'ओ क्रूज़ेरो' में १९५९ में प्रकाशित हुई थी। इस पत्र के सम्पादक एक विवेकी विद्वान् हैं, और उन्होंने इस घटना की *यौक्तिक और बुद्धिसंगत जाँच करके ही उसे प्रकाशित करने का निश्चय किया* था।

यह घटना घटी थी ब्राजील के साओ पाओलो राज्य के इटापिरा नगर के एक पुराने मकान में जिसके स्वामी थे—सिड कास्ट्रो।

१२ अप्रैल १९५९ को सिड कास्ट्रो अपने रसोईघर में बैठे अखबार पढ़ रहे थे। उनकी पत्नी सुबह का खाना बना रही थी। तभी, कास्ट्रो ने देखा कि दो बड़े पत्थर रसोईघर के सामने के रास्ते पर आकर गिरे। कास्ट्रो फ़ौरन बाहर आये यह देखने के लिए कि पत्थर किस दिशा से आ रहे हैं। पर जैसे ही वे बाहर आये, उन्हें मकान के अन्दर से किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। वे फ़ौरन भागकर अन्दर पहुँचे।

अन्दर आकर उन्होंने देखा कि घर के सब हिस्सों—रसोईघर, खाने के कमरे, बैठक आदि में भी पत्थर गिर रहे हैं, और मकान के अन्दर मौजूद लोग उनसे घायल होकर चिल्ला रहे हैं। सिर्फ़ उस कमरे में जहाँ कास्ट्रो के तीन बच्चे सो रहे थे पत्थर नहीं गिर रहे थे। मकान के नौकरों का ख़याल था कि पत्थर मकान की छत के कमज़ोर हो जाने की वजह से उसमें से गिर रहे हैं। कुछ मिनट बाद पथराव अपने आप बन्द हो गया।

कास्ट्रो ने अपना होशोहवास नहीं खोया और बड़े गौर से सारे घर का, और ख़ास तौर पर उसकी छत का मुआयना किया। पर उन्हें कोई ऐसा स्थान दिखाई न दिया जहाँ से कोई इतना भारी पथराव करने की स्थिति में होता। वे चकित थे कि यह पथराव कौन क्यों और कहाँ से कर रहा है? ऐसी आश्चर्यजनक घटना उनके जीवन में पहली बार घटी थी।

वे इस हैरतअंगेज़ घटना के बारे में विचार कर ही रहे थे कि पथराव फिर शुरू हो गया। पर इस बार पत्थर ऊपर से गिरकर फ़र्श पर नहीं गिर रहे थे बल्कि दीवारों पर तिरछे आकर लग रहे थे। पत्थर छूने पर काफ़ी गरम लगते थे।

पत्थरों की वर्षा कुछ मिनट वाद फिर अचानक बन्द हो गयी। काण्टो के समझ में नही आ रहा था कि यह क्या तमाशा हो रहा है ?

क़रीव आधा घण्टा वाद काण्टो ने देखा कि पथराव फिर आरम्भ हो गय है। पर, इस वार पत्थरों के साथ-साथ ईंटों और टाइलों के टुकड़े भी मकान पं गिर रहे थे। जव यह पथराव लगातार दो घण्टे तक होता रहा, तो काण्टो ने अपने पड़ोसियों को बुलाया। सवसे पहले आये—एल्फ़्रेडो पियरोसी। उनर आते ही पथराव और तेज़ हो गया। जैसे-जैसे, अन्य पड़ोसी आते गये, पथरा और तेज़ होता चला गया और शाम के साढे चार वजे तक चलता रहा। तवतक पत्थरों, ईंटो, और टाइलों के सैंकडो टुकडे काण्टो के मकान में जमा हो चुके थे शुक्र यही था कि इस पथराव की वजह से घर का कोई आदमी घायल नही हुअ था, और न उसकी खिडकियो के काँच वगैरह ही टूटे थे।

काण्टो अपने क्षेत्र के जाने-माने ज़मीदार थे। उन्हें डर हुआ कि यदि इस पथराव का समाचार शहर में फैल गया, तो उसे देखने के लिए काफ़ी भीड जम हो जायेगी। इसलिए उन्होंने अपने पडोसियो से प्रार्थना की कि वे इस पथरा की चर्चा किसी से न करें। उन्हें यह भी आशा थी कि यह अलौकिक घटन फिर नहीं घटेगी।

लेकिन, अगले दिन ठीक उसी समय, जव पथराव आरम्भ हुआ था, फिर मकान पर पत्थर वरसने शुरू हो गये। इस वार पत्थरो के साथ-साथ रसोईघर के वरतनों की वर्षा भी हो रही थी। कुछ देर वाद आलू, शलगम, प्याज़ आदि की वर्षा भी होने लगी।

रसोईघर की एक आलमारी में सुवह वाज़ार से लायी गयी भाजियाँ रखी थी। काण्टो तथा उसकी पत्नी ने आश्चर्य से देखा कि आलमारी में रखी हुई भाजियाँ उसमें से वाहर निकल रही हैं। उन्होंने इन भाजियों को 'पकडकर' फिर आलमारी में रखने की कोशिश की, पर कुछ मिनट वाद वे फिर वाहर आने लगी। आलमारी में रखे हुए फल, चाकू, चम्मच, फ़ॉर्क आदि भी वाहर आकर हवा में उडने और फिर वडे ज़ोर के साथ नीचे गिरने लगे।

काण्टो धार्मिक वृत्ति के आदमी थे। इस अजीवोग़रीव घटना की पुलिस में रिपोर्ट करने के स्थान पर उन्होंने इस वारे में अपने गिरजाघर के पादरी से राय लेना ज्यादा ठीक समझा। पादरी—फ़ादर मातोस ने कहा कि मकान पर शैतान का कुप्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि वे शाम को वहाँ आकर 'घर' को आशीर्वाद देंगे, ताकि वह शैतान की काली छाया से मुक्त हो सके।

जैसे ही फ़ादर मातोस ने शाम के समय घर में प्रवेश किया, पथराव, जो सुवह से रुका हुआ था, वाक़ायदा शुरू हो गया। जैसे ही वे अपनी कुरसी से उठकर भूत-शापित घर को आशीर्वाद देने लगे, एक वड़ी लाल मिर्च आकर

उनके सिर पर लगी। आशीर्वाद देने के बाद उन्होंने काम्पो से कहा, लगता है शैतान-भूत आसानी से नहीं मानता। यदि यह उपद्रव कल तक भी शान्त नहीं हुआ तो मैं भूतदूर-निराकरण (Exorcism) की क्रिया करूँगा। (झाड़-फूँक करने की इस विधि का प्रयोग पादरी लोग तभी करते हैं, जब शैतान या भूत साधारण प्रार्थना से नहीं मानता।)

पर अगले दिन झाड़-फूँक करने से पहले फ़ादर मातोस ने एक और प्रयोग करने का निश्चय किया। पिछले दिन पत्थरों के साथ रसोई की काफ़ी चीज़ें भी गिरी थीं। उन्होंने इन चीज़ों का अध्ययन आरम्भ किया। फिर, उन्होंने रेफ्रीजरेटर में बांधकर रखा। वहाँ अन्य खाद्य-पदार्थों के साथ एक अण्डा भी रखा था। जब फ़ादर मातोस बाहर अपने स्थान पर बैठे, तो पाँचेक मिनट के बाद उन्होंने उसी अण्डे को ऊपर से फ़र्श पर गिरते देखा।

झाड़-फूँक के बाद पथराव तथा अन्य वस्तुओं का गिरना बन्द हो गया। काम्पो ने फ़ादर मातोस को धन्यवाद दिया और राहत की साँस ली।

लेकिन ग्यारह दिन के बाद पथराव फिर शुरू हो गया। इस बार पत्थर तथा अन्य वस्तुएँ पहले से भी ज़्यादा ज़ोर के साथ गिर रही थीं। काम्पो फिर फ़ादर मातोस के पास गये। फ़ादर मातोस ने फिर झाड़-फूँक की और पथराव फिर रुक गया। एक हफ़्ते बाद जब शायद झाड़-फूँक का असर समाप्त हो गया था पथराव फिर शुरू हुआ। फ़ादर मातोस ने फिर भूत-प्रेतों की तीसरी बार झाड़-फूँक की, और तीसरी बार यह पथराव फिर रुक गया। अब देखना यह था कि इस झाड़-फूँक का असर कब तक रहता है?

इस बीच काम्पो इस मामले की निजी जाँच कर रहे थे। इस जाँच के दौरान उन्होंने एक बात पर ख़ास तौर पर ध्यान दिया। वह यह कि पथराव उनके घर की नौकरानी फ़ेसिस्का के आसपास ही होता था। यदि वह रसोईघर में होती थी तो पत्थर या अन्य वस्तुएँ उसके पास ही गिरती थीं और यदि वह नहाने में होती थी तो पथराव वहीं होने लगता था।

काम्पो के एक प्रेतात्मवादी मित्र का कहना था कि जो भूत यह पथराव कर रहा है वह फ़ेसिस्का को माध्यम बनाकर यह पथराव कर रहा है। जब फ़ेसिस्का को इस बात का पता चला तो उसने इसका ज़ोरदार प्रतिवाद किया और कहा कि वह धार्मिक सिद्धान्तोंवाली महिला है, माध्यम नहीं और जो ऐसा कहता है वह उसके साथ घोर अन्याय करता है। उसने काम्पो के प्रेतात्मवादी मित्र को काफ़ी खरी-खोटी सुनायी।

इस समय तक सारे ब्राज़िल का ध्यान हैरतअंगेज़ घटना के बारे में पता चल गया था। नगर में रहनेवाले ग्यारह हज़ार निवासियों में से छोटे बच्चों को छोड़कर सभी इस हैरतअंगेज़ घटना को जान चुके थे। आ पुर्जीरा समाचारपत्र के

संवाददाता ने अनेक इटापिरा-वासियो का इस घटना का आँखो देखा वर्णन प्रकाशित करके उसकी जानकारी सारे ब्राज़ील को दे दी ।

अभी तक पुलिस को अधिकृत रूप से इस मामले की जानकारी नहीं थी। पर, जब काण्टो के एक पडोसी रिवेरियो ने एक दिन पुलिस को फोन किया कि काण्टो के घर पर हो रही पत्थरवर्षा के दौरान कुछ पत्थर उसके घर पर भी गिरे हैं, तो पुलिस-इन्सपेक्टर एरोल्डो कोस्टा को जाँच के लिए घटनास्थल पर आना पडा। जब उसने काण्टो से इस शिकायत की चर्चा की, तो काण्टो ने उसे पिछले कुछ दिनों की पथरावों की कहानी सुनायी। उसे सुनकर एरोल्डो कोस्टा ने पुलिस-अधिकारी की हैसियत से इस मामले की जाँच शुरू की। उसने बारीकी से घर के हर भाग की खोज की, और घर में रहनेवाले सब लोगों से पूछताछ करके जानने की कोशिश की कि वे इस मामले के बारे में क्या सोचते हैं ?

जब वह पूछताछ कर रहा था, तो ऊपर से आकर एक चाकू रसोईघर में गिरा। उस वक़्त ब्राज़ील के एटॉर्नी-जनरल डॉ. जोस कार्लोस फ़ेराज भी वहीं मौजूद थे। उन्होंने खुद अपनी आँखो से चाकू को रसोईघर में गिरते देखा। उन्होंने उस चाकू को उठाकर एक आलमारी में रख दिया, और आलमारी का ताला भी बन्द कर दिया। कुछ सेकण्ड बाद वही चाकू ऊपर से फ़र्श पर गिरता दिखाई दिया। डॉ फेराज ने फिर उसे उठाकर आलमारी में रखा, पर कुछ सेकण्ड बाद वह उन्हें फिर फ़र्श पर गिरता दिखाई दिया। इधर, रसोईघर में यह तमाशा चल रहा था, उधर घर के अन्य भागो में पत्थर, फल और रसोई के बरतन गिर रहे थे। पुलिस-इन्सपेक्टर ने, जो यह सारा तमाशा अपनी आँखो से देख रहा था, मज़ाक़ में कहा कि वह तबतक इस असाधारण घटना पर विश्वास नही करेगा, जबतक कोई नीबू उसके सिर पर आकर न गिर जाये।

तभी उसने सुना, उसके सामने रखे रेफ्रीजरेटर में से कोई चीज़ नीचे गिरी। और, अगले क्षण रेफ्रीजरेटर में रखा नीबू तडाक से उसके सिर पर आकर गिरा। उसके पास खडे एक वकील ने यह देखकर गम्भीर शब्दों में कहा, "इस भूत को फ़ौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिए। यह पुलिस-इन्सपेक्टरों की भी कोई इज्ज़त नहीं करता।"

इस वकील और एटॉर्नी-जनरल ने बाद में 'ओ क्रूज़ेरो' और पुलिस को जो बयान दिये, उनमें इस घटना का विशेष रूप से उल्लेख किया गया था।

एटॉर्नी-जनरल ने अपने बयान में कहा, "जो कुछ मैंने अपनी आँखो से देखा, और जो कुछ विश्वसनीय गवाहो के मुँह से सुना, उसके आधार पर मैं यह विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि काण्टो के घर में घटनेवाली घटनाओं के पीछे कोई शरारती व्यक्ति नही है, और न ही उनकी कोई तर्कसंगत दलील पेश की जा सकती है। सब गवाह यह मानकर आये थे कि इन घटनाओं के पीछे कोई

जाता है। पर काफ़ी कोशिश करने पर न उन्हें कोई चाल दिखाई पड़ी, न मुझे। इन घटनाओं को दैवी चमत्कार कहकर ही समझाया जा सकता है। और, कोई कारण उनके पक्ष में पेश नहीं किया जा सकता।'

जिन गवाहों का ज़िक्र गटीमी-अगरल ने अपने बयान में किया उनमें एक म्यूनिसिपल कमिश्नर और एक वरिष्ठ अध्यापक भी शामिल थे। अध्यापक महोदय ने अपनी गवाही में कहा 'जब मैं घटनास्थल पर आया था तब मुझे पूरी आशा थी कि यहाँ इन घटनाओं के पीछे छिपी चाल का पता लगाकर हँसते-हँसते मेरा बुरा हाल हो जायेगा। पर, जैसे ही मैं यहाँ आया एक पत्थर मेरे सिर को छूता हुआ गिरा। रसोईघर में मैंने एक पत्थर को फ़र्श से छत की ओर तीर की तेज़ी से जाते देखा।

पाउलो एलिमदा सरा नामक वकील भी एक गवाह थे। उन्होंने टाइल के एक टुकड़े को जो बिना किसी सहारे के धीरे-धीरे दीवार पर ऊपर चढ़ रहा था, देखा। बाद में वह वहाँ से हटकर सीधा छत की ओर चला गया।

एक अन्य गवाह ब्राज़ील के प्रख्यात डॉ. एण्टोनियो एल्मिडा ने कहा कि उन्होंने बहुत-सी 'असाधारण बातें' देखीं पर वे उन्हें 'अलौकिक' मानने को तैयार नहीं। एक पत्रकार मार्टिन्स ने एक मस्तर को दीवार पर ज़ोर से टकराकर जाकर फिर भी सीधा खड़े देखा।

प्रफ़ेसर मातोस का कहना था कि 'मैं यह मानने से इनकार करता हूँ कि भगवान् ऐसी बातों के पीछे है। यह काम शैतान या उसके किसी प्रतिनिधि भूत का ही हो सकता है।"

'ओ क्रूज़ेरो' के दो प्रतिनिधि भी इस घटना की जाँच करने आये थे। उनके साथ गास्टी नाम के मनोवैज्ञानिक भी थे। उन्होंने भी अपनी आँखों के सामने एक रसोई का सामान और पत्थर नीचे गिरते देखे। काफ़ी कोशिश करने पर भी उन्हें यह नहीं मालूम पड़ा कि ये चीज़ें कहाँ से गिर रही हैं, और उन्हें कौन गिरा रहा है? उन्होंने इस बात पर भी ग़ौर किया कि चीज़ें वहीं गिरती हैं, जहाँ पर की नौकरानी खड़ी रहती है।

मनोवैज्ञानिक डॉ. गास्टी भी नौकरानी की गतिविधियों पर ध्यान रख रहे थे। जब वह नौकरानी डॉ. गास्टी को कॉफ़ी दे रही थी तब उन्होंने स्टोव से एक मीटर की ऊँचाई पर दीवार से चिपकी हुई एक काली वस्तु देखी जो दीवार पर नीचे-नीचे खिसक रही थी। जब उन्होंने उसे पकड़कर अपने हाथ में लिया तो नौकरानी ने उन्हें बताया कि वह उसका प्लास्टिक पर्स था जो कुछ देर पहले उसने बीस मीटर दूर एक कमरे में रखा था।

जब अगले दिन वे लौट जाने लगे तो उन्होंने बरामदे में शोर की आवाज़ सुनी। ऊपर से मिठाइयाँ उनके पाँवों में गिरने लगीं। डॉ. गास्टी फ़ौरन वापस

र में गये, जहाँ उन्होने नौकरानी को रसोईघर के बीचोबीच खड़ा पाया। मिठाइयों के दो टुकडे नौकरानी के पाँवो पर भी आकर गिरे। डॉ गाल्डी ने कहा, "अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है।"

दो दिन बाद 'ओ क्रूजेरो' के दो प्रतिनिधि फिर पथराव की घटनाओं की, जो अभी तक चल रही थीं, जाँच करने आये। उनके घर में प्रवेश करते ही पत्थर, फल, बरतन और खिलौने ऊपर से फर्श-पर गिरने लगे। इन पत्र-प्रतिनिधियों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि "इस सारी गड़बड़ी के बीच फ्रंसिस्का नौकरानी पूरी तरह शान्त और अविचलित थी। बाईस साल की 'यह सीधी-सादी लड़की इन घटनाओं को खुशी-खुशी ऐसे देख रही थी, मानो वे स्वाभाविक घटनाएँ हैं। रसोईघर में उसके आसपास पत्थर गिर रहे थे, पर वह एकदम शान्त थी, जैसे वह रोजमर्रा की घटना हो।"

अपनी रिपोर्ट के अन्त में 'ओ क्रूजेरो' ने कहा—"जिन लोगों ने इन अलौकिक घटनाओं को देखा है, वे सभी समझदार और दुनियादार आदमी हैं। पर, वे भी नही समझ पाये हैं कि इन घटनाओं की वजह क्या हो सकती है? हम भी नही समझ सकते।"

'न्यूयॉर्क टाइम्स' मे चर्चित एक 'स्नेही भूत'

२६ जून, १९५७ के 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में—जिसे बहुमत से विश्व का सर्वाधिक प्रतिष्ठित और विश्वसनीय दैनिक माना जाता है,—'न्यूयॉर्क के बारे में' नामक स्तम्भ में एक 'स्नेही भूत' का समाचार प्रकाशित हुआ था। इस समाचार के अनुसार यह 'स्नेही भूत' ग्रीनविच गाँव के ११, बैंक स्ट्रीटवाले पते के घर में रहता था। इस घर के स्वामी थे डॉ हार्वे स्लाटिन, जो एक इंजीनियर थे। उनके साथ रहती थी उनकी पत्नी येफ किमबॉल, जो एक कलाकार भी थीं।

जिस घर में ये दोनों रहते थे, वह १२५ साल पुराना था, और लाल ईंटों का बना था। जब उन दोनो को अपने साथ घर में रहनेवाले 'स्नेही भूत' का पता चला, तो उन्होंने घर के इतिहास को जानने की कोशिश की।

पूछताछ करने पर उन्हें मालूम पडा कि उनसे पहले उन्नीस कमरेवाले इस घर में श्रीमती मकारियो नाम की एक महिला बोर्डिंग-हाउस चलाती थी। पर, श्रीमती मकारियो को यह मालूम नही था कि उससे पहले उस घर में कौन रहता था?

घर को खरीदने के बाद डॉ स्लाटिन ने घर की मरम्मत कराके उसे नये ढग से सजाया। नयी-नयी कलाकृतियाँ दीवार पर लगवायी, और नये क़िस्म का फर्नीचर भी घर के हर कमरे में रखवाया। घर के बाहर के बाग़ को भी नया रूप दिया। उन्हें यह घर पसन्द था, क्योंकि उसके आसपास का वातावरण काफी

भूतलीला

शान्त था। घर में भी सर्वत्र शान्ति छायी रहती थी।

एक दिन मेंढ़ किमबॉल ने अपने पति को बताया कि दुपहर में, जब वह घर में अकेली होती है, उसे सीढ़ियों पर किसी महिला की हल्की पदचाप सुनाई देती है। उसके चलने की आवाज कभी-कभी इतनी तेज हो जाती है कि लगता है, कई आदमी एक साथ कदम मिलाकर चल रहे हैं। एक अजीब बात यह थी कि ये आवाजें रात के बदले दिन में सुनाई देती थीं। पुराने मुतहावरों में ऐसी आवाजें अक्सर रात में सुनाई देती हैं।

इन आवाजों से न किमबॉल को डर लगता था और न उसके पति को। जब-जब उन्हें ऐसी आवाज सुनाई देती वे उत्सुकतावश यह देखने के लिए जाते कि ये आवाजें कहाँ से आ रही हैं, और किसके द्वारा पैदा हो रही हैं, पर जब उन्हें कोई दिखाई नहीं देता था तो वे वापस चले आते थे। हाँ यह जरूर था कि वे इन आवाजों का कोई तर्कसंगत कारण पेश नहीं कर सकते थे।

जनवरी, १९५७ में एक रविवार को जब पति और पत्नी दोनों घर में मौजूद थे, उन्होंने यह तय किया कि इन भुतहा आवाजों का रेकॉर्ड रखा जाये। जैसे ही उन्हें किसी की पदचाप सुनाई देती दोनों यह जानने की कोशिश करते कि आवाज किधर से आयी और कितने बजे आयी? पर शाम को उन्हें मालूम पड़ा कि आवाजें शाम सारे दिन लगातार आती रहीं और जहाँ से आती मालूम होती थीं वे सब कमरे एकदम खाली और सूने थे। जब-जब उन्होंने इन आवाज करनेवालों को बुलाने की कोशिश की उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला।

उस दिन उनके घर में काम करने के लिए आये हुए बढ़ई आर्थर डॉसी को भी पदचाप तो सुनाई दी पर यह नहीं मालूम पड़ सका कि ये पदचाप किसकी है, और घर के किस भाग से आ रही है? यही हाल दिन में काम करने के लिए आनेवाली नौकरानी डैसी का था जो इन पदचापों को सुनने की अभ्यस्त हो गयी थी।

एक महीने बाद जब बढ़ई आर्थर डॉसी एक सीढ़ी पर चढ़कर सबसे ऊँची मंजिल के एक कमरे की छत में कुछ ठोक रहा था तब उसके सिर पर छत का काफी प्लास्टर आ गिरा और साथ ही नीचे की मंजिल में बैठी श्रीमती स्काटिन को किसी के धम्म से नीचे गिरने की आवाज सुनाई पड़ी। वे भागी-भागी ऊपर गयीं। पर, रास्ते में ही उन्हें बढ़ई मिल गया। उन्हें देखते ही बढ़ई ने कहा "श्रीमती जी! मैं अब आपका काम नहीं कर सकूँगा। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"क्यों? श्रीमती स्काटिन ने आश्चर्य से पूछा।

ऊपर आइए! आपको पता चल जायेगा।

जब श्रीमती स्काटिन ऊपर गयीं तो उन्होंने देखा फर्श

पड़ा है। इस डिब्बे पर लिखा है, 'मृत एलिजाबेथ बुलक के अवशेष। उनका अन्तिम सस्कार २१ जनवरी, १९३१ को किया गया।' डिब्बे पर अमेरिकी सरकार के एक विभाग का नाम भी लिखा था। (यह डिब्बा आज तक स्लाटिन-दम्पति के घर में मौजूद है।)

जब स्लाटिन ऑफिस से घर आये, तो उन्होंने इस घटना को सुनकर छत में छेद करके उसके आसपास की जगह को अच्छी तरह देखा-भाला। पर, वहाँ कुछ और न मिला।

यद्यपि एलिजाबेथ बुलक के अवशेष छत में १९३१ में रखे गये थे, तथापि उस छत का निर्माण १८८० में हुआ था। खोज करने पर स्लाटिन को इस तथ्य के अलावा श्रीमती बुलक की मृत्यु की सही जानकारी भी मिली। एक दिन दुबली-पतली श्रीमती बुलक सड़क पार करते समय एक कार-दुर्घटना के कारण सड़क पर ही मर गयीं। एक आश्चर्यजनक बात स्लाटिन को यह भी मालूम पड़ी कि श्रीमती बुलक कभी उस घर में नही रही, जिसमें उनके अवशेष मिले थे, और जिसमें वे अब रह रहे थे। नगरपालिका के रेकॉर्ड के अनुसार उनका पता था : ११३, पैरो स्ट्रीट।

इस रहस्य को सुलझाने के उद्देश्य से उस आदमी—चार्ल्स डोमिनिक—के पास गये, जिसने नगरपालिका के रेकॉर्ड के अनुसार श्रीमती बुलक को दफ़नाया था। पर, चार्ल्स डोमिनिक कई साल पहले मर चुका था।

अब स्लाटिन ने श्रीमती बुलक के रिश्तेदारों को खोजने की कोशिश की। पर, यह कोशिश भी नाकामयाब रही। ऐसा लगता था, मानो श्रीमती बुलक का भूत अपने रहस्य की रक्षा के लिए पूरी तरह से प्रयत्नशील था। अन्त में सब ओर से निराश होकर स्लाटिन ने अवशेष के डिब्बे को अपने कमरे में रखे पियानो के ऊपर रख दिया। ऐसा करते समय उन्हें लगा कि श्रीमती बुलक के भूत को छत के स्थान पर यह स्थान अधिक गरिमायुक्त लगेगा। धीरे-धीरे उससे मिलने के लिए आनेवाले लोग उस डिब्बे को वहाँ देखने के अभ्यस्त हो गये, और उन्होंने स्लाटिन-दम्पति से उसके बारे में पूछना बन्द कर दिया।

स्लाटिन-दम्पति द्वारा उस डिब्बे को खुलेआम रखने का एक उद्देश्य यह भी था कि उन्हें यह आशा बनी हुई थी कि कोई न कोई आकर श्रीमती बुलक के अवशेष की उनसे अवश्य माँग करेगा। उन्हें यह देखकर हर्ष भी था, और सन्तोष भी कि जब से उन्होंने डिब्बे को पियानो पर प्रतिष्ठित किया था, मकान में सुनाई देनेवाली आवाजें अपने आप बन्द हो गयी थीं।

तभी एक विचित्र घटना और घटी। अच्छे कपड़े पहने और विनम्र स्वभाव-वाले एक युवक ने एक दिन आकर श्रीमती स्लाटिन से पूछा, "क्या आपके मकान में कोई कमरा खाली है?"

श्रीमती स्लाटिन ने कहा, 'अभी तक तो कोई कमरा खाली नहीं है, क्योंकि हम अतिरिक्त कमरों की मरम्मत और सफ़ाई करवा रहे हैं। इस काम में कुछ महीने तो लग ही जायेंगे। यदि आप अपना पता छोड़ जायें, तो हम बाद में आपको सूचित कर देंगे।"

युवक अपना कार्ड श्रीमती स्लाटिन के पास छोड़कर चला गया। शाम को जब उन्होंने यह कार्ड अपने पति को दिखाया तो दोनों यह देखकर चकित रह गये कि कार्ड पर युवक का नाम लिखा था—'ई. सी. बुलक।'

शायद यह युवक श्रीमती बुलक का कोई रिश्तेदार है?' स्लाटिन ने कहा 'यह दुबारा आये तो इससे श्रीमती बुलक के बारे में पूछना।

पर वह युवक दुबारा नहीं आया।

ग्रीनविच गाँव में सौ साल से पुराने इतने ज़्यादा भुतहा घर हैं कि वहाँ के लोगों ने स्लाटिन के घर में मिलनेवाले श्रीमती बुलक के अवशेषों के बारे में अधिक ध्यान नहीं दिया। और स्लाटिन-दम्पति भी धीरे-धीरे श्रीमती बुलक के बारे में भूलने लगे थे कारण अब उन्हें पहले की तरह रहस्यमयी आवाजें सुनाई नहीं देती थीं।

पर, जब 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में इस घर और इस घर में रहनेवाले स्नेही भूत के बारे में समाचार छपा तो भूतों में रुचि रखनेवाले अनेक लोगों का ध्यान इस घर की ओर आकर्षित हुआ। उनमें से एक अपनी मीडियम श्रीमती मेयर्स के साथ *स्लाटिन-दम्पति के पास गये, उनके घर में रहनेवाले 'स्नेही भूत'* का पता लगाने के लिए।

अचेतावस्था में आकर श्रीमती मेयर्स ने श्रीमती बुलक की वाणी में कहना शुरू किया 'वह—मेरा भाई... नहीं चाहता था कि घर की जायदाद में मुझे भी कोई हक मिले...उसका कहना था कि क़ानूनन मेरी शादी नहीं हुई है...पर, भगवान् साक्षी है कि मेरा विवाह एडवर्ड बुलक से हो चुका है....मैं चाहती हूँ कि मुझे ईसाईधर्म की विधियों के साथ 'क्रॉस' की छाया में दफ़नाया जाये। पर मैं नहीं चाहती कि मेरी क़ब्र उन लोगों की क़ब्रों के पास हो।

इतनी नफ़रत भरी आवाज थी श्रीमती बुलक की कि उनसे पूछा गया कि आखिर उन्हें अपने परिवार के सदस्यों—और खास तौर पर अपने भाई—से इतनी नफ़रत क्यों है?

श्रीमती बुलक ने उत्तर दिया "मेरे भाई का नाम एडी है। हम लोग न्यूयॉर्क में प्लेसेण्टविले इलाक़े में रहते थे। मेरी माँ का पैतृक नाम एलिज़ाबेथ मैककसर था। यह सच है कि मेरा विवाह उनकी इच्छा से नहीं हुआ पर वह वैधानिक विवाह था। मैं अब पूरी तरह सुखी हूँ। मुझे कोई कष्ट या चिन्ता नहीं है।'

उनसे पूछा गया कि उनके अवशेष ऐसे घर में क्यों पाये गये, जिसमें वे कभी नहीं रही थीं ? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा, "मैं एडी के साथ गयी थी. काफ़ी झगडा हुआ . मेरे पति भी एडी के साथ गये थे. अवशेष चुराये गये. मेरे पति ने ये अवशेष एडी से लेकर छिपाये थे : चार्ल्स (मेरे पति) को सब पता था . . उसने ही घर के ऊपर छत बनवायी और उसमें अवशेष को छिपाया. ताकि एडी को उसका पता न लग सके . . ।"

"क्या आप के बच्चे भी थे ?"-उनसे पूछा गया ।

"हाँ, एडी और ग्रेसी । ग्रेसी बचपन में ही मर गयी थी, और एडी आजकल कैलिफ़ोर्निया में रहती है । चार्ल्स (मेरा पति) मेरी रक्षा करता है ।" अब

"आपकी आत्मा आजकल भी इस घर में भटकती-मँडराती रहती है । आपको यहाँ रहने से क्या फ़ायदा मिलता है ? आप कहीं और क्यों नहीं चली जातीं ?"

"अब मेरी दो जिन्दगियाँ हैं. .. मैं क्रॉस की छाया चाहती हूँ ...और मु आपका साथ पसन्द है," श्रीमती मेयर्स (अचेतावस्था में श्रीमती वुलक) श्रीमती स्लाटिन के सामने झुककर कहा । श्रीमती स्लाटिन यह सुन मुसकरायीं । उन्हें श्रीमती वुलक-जैसे स्नेही भूत को अपने घर में रखने में आपत्ति न थी ।

"अगर आपको अभी भी आपके परिवार के सदस्यो के साथ दफ़ना दिय जाये, तो आपको कोई आपत्ति तो न होगी ?" श्रीमती वुलक से पूछा गया ।

'स्नेही भूत' ने तड़पकर जवाब दिया · "माँ ने मुझे कभी क्षमा नही कि था । मैं कभी उनके साथ विश्राम नहीं करना चाहूँगी । मुझे उनकी कोई परव भी नही है । चूँकि मैंने उनकी मरज़ी के खिलाफ़ प्रेम-विवाह किया, इसी उन्होंने मेरे मरने के बाद भी मुझे शान्ति से नहीं बैठने दिया । मेरी हड्डियों लेकर भी लडते रहे ।"

"क्या आपके अवशेष आपके पति ने अकेले छिपाये थे ?"

"नही, उनके साथ एक और आदमी भी था ।"

"आपका अन्तिम संस्कार किसने किया था ?"

"सारा झगडा अन्तिम सस्कार की विधि को लेकर ही तो हुआ था ।

"मरने से पहले आप कहाँ रहती थीं ?"

"इस घर के पास ही । वुलक-परिवार का नाम इस इलाक़े के सब जानते हैं ।"

श्रीमती वुलक का परिवार आयरलैण्ड से अमेरिका आया था, इसलिए आचरण विशुद्ध आयरिश था । उल्लेखनीय है कि श्रीमती मेयर्स, जो मीडियम थी, अपने जीवन में आयरिश उच्चारण के साथ नहीं बोल पातीं ।

श्रीमती बुसक के भूत बनकर स्काटिन के घर में घूमने के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया था। वे जो कुछ कह रही थीं, श्रीमती बुसक के भूत के सम्पर्क में आकर ही कह रही थीं।

श्रीमती बुसक के अवशेष आज भी स्काटिन-परिवार के घर में मौजूद हैं। श्रीमती स्काटिन से कई बार यह कहा गया कि वे इस अवशेष को अपने बाग के किसी पेड़ के नीचे ओस की छाया में दफ़ना दें। पर वे इसके लिए तैयार नहीं होतीं। उनका कहना है कि श्रीमती बुसक के 'स्नेही भूत' से उनकी अच्छी दोस्ती हो गयी है और वे अब उससे अलग रहना नहीं चाहतीं। चूँकि 'स्नेही भूत' ने अपनी छेड़खानियाँ बन्द कर दी हैं, इसलिए लगता है कि उसे भी श्रीमती स्काटिन का साथ पसन्द है।

एक भीतिजनक भूत-कथा

प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में ब्रिटेन का विलफ़र्ड नाम का एक सार्जेण्ट संयोग से प्रियर्स नाम के एक उच्च-अधिकारी का दोस्त बन गया। दोनों के पदों में काफ़ी अन्तर था पर प्रियर्स उन सेनाधिकारियों में नहीं था जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से दूर रहना पसन्द करते हैं। दोनों की मित्रता का एक कारण यह भी था कि दोनों ही तान्त्रिक विषयों में दिलचस्पी रखते थे। प्रियर्स इस मामले में विलफ़र्ड से काफ़ी आगे था। उसने वर्षों तक साधारण ज्ञान की तान्त्रिक परिधि से परे गोपनीय विषयों का गहन अध्ययन किया था और इस अध्ययन के फलस्वरूप गोपनीय बातों को अनुभव करने की उसकी बोधक्षमता काफ़ी बढ़ गयी थी। उसके अनेक पूर्वबोध आश्चर्यजनक रूप से सच्चे निकले थे। अपने अन्त के बारे में भी उसका अवबोध चामत्कारिक रूप से सच्चा निकला था। इसलिए विलफ़र्ड उसका बहुत आदर करता था और उसकी भविष्यवाणियों को अत्यन्त विश्वसनीय मानता था।

एक रात जब दुश्मन की बमबारी बन्द थी चाँदनी खिली हुई थी और जंगल में मंगल का नजारा था विलफ़र्ड और प्रियर्स घूमने के लिए बाहर निकले।

बातचीत लड़ाई को लेकर शुरू हुई। विलफ़र्ड ने कहा कि लड़ाई के जल्दी ख़त्म होने के आसार दिखाई नहीं देते और ऐसा लगता है कि लड़ाई कुछ वर्षों तक और चलेगी। उसका यह कथन पिछले दिनों की राजनैतिक घटनाओं के विकास-क्रम पर आधारित था। प्रियर्स ने जवाब में कुछ नहीं कहा वह चुपचाप सिर झुकाये चलता रहा। वह काफ़ी ग़मगीन था।

कुछ देर तक चलने के बाद वे घने जंगल में पहुँच गये। वहाँ उन्हें बुलबुलों तथा अन्य पक्षियों के गान की आवाज़ सुनाई दी। प्रियर्स ने कहा 'आज मन इतना उदास है कि बुलबुल के गाने की प्यारी आवाज़ सुनकर भी सुख नहीं

हो पाता।"

क्लिफ़र्ड ने उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा, "खुश होना तो दूर रहा, इन कमबख्त बुलबुलो का गाना सुनकर पुरानी मीठी यादें ताज़ा होने लगी हैं। उदासी और बढ रही है।"

ग्रियर्स जोर से हँसा और कहने लगा, "मैं सोचता था, तुम कोई ऐसी बात कहोगे, जिससे मेरी उदासी दूर हो, और मन खिल उठे। पर, तुम भी भावुक बन गये। इससे तो अच्छा होता, हम लोग अपनी खाइयो में ही पडे रहते। वहाँ तुम्हें मीठी यादें तो न सताती।"

क्लिफ़र्ड को ग्रियर्स की हँसी बडी कडवी और अप्रिय लग रही थी। उसे लगा, भावुकतापूर्ण बातें करने से ग्रियर्स को और कष्ट होगा। वह चुपचाप चलता रहा।

कुछ मिनट बाद उन्हें एक बाडा दिखाई दिया। उसे पार कर वे जगल के उस हिस्से में आये, जो और भी ज्यादा घना था, और जहाँ पूर्ण निस्तब्धता थी। यहाँ आकर ग्रियर्स ने अपनी बेसुरी और मामूली से ज्यादा ऊँची आवाज़ में गाना शुरू कर दिया। भोंडी आवाज़ में गाये गये इस गाने को सुनकर क्लिफ़र्ड ने कहा, "इससे अच्छा तो बुलबुल का ही गाना था।"

ग्रियर्स ने गाना बन्द कर दिया, और चुपचाप चलता रहा। अब वे जगल के जिस बीहड भाग में थे, वहाँ प्रगाढ शान्ति व्याप्त थी प्रगाढ और रहस्यमय। पर, आसपास छायी इस शान्ति के बावजूद दोनो के मन काफी अशान्त थे।

सहसा दोनो को चाँदनी में जगमगाता वनमार्ग दिखाई दिया। इस बीहड जगल में वृक्षों के बीच के इस खुशनुमा वनपथ को देखकर उन्हें बडा आश्चर्य हुआ। पर, इससे भी बडा आश्चर्य तब हुआ, जब उन्होंने इस रास्ते पर एक आकर्षक युवती को खडे देखा। उन दोनो को अपने सामने देखकर वह युवती बढकर उनके पास आने लगी।

जैसे यह युवती आगे बढी, दोनो ने ध्यान से देखा कि युवती का शरीर कमर तक ही था। पहली दृष्टि में उन्होंने इस अचरजभरी बात पर गौर नही किया।

इस अर्ध-युवती को देखकर ग्रियर्स स्तब्ध खडा रह गया। क्लिफर्ड ने उसका हाथ पकडा, तो पाया कि उसका सारा शरीर काँप रहा था। वह एकटक उस युवती को देखे जा रहा था।

अर्ध-युवती जब दोनो के बहुत पास आ गयी, तो क्लिफर्ड ने देखा कि उसका शरीर दूध की तरह सफेद स्वच्छ और निर्मल था। अपने जीवन में क्लिफ़र्ड ने ऐसा अजूबा नही देखा था। वह मुग्ध होकर उसे देख रहा था।

"यह मोहिनी युवती कोई डाकिनी मालूम होती है," उसने आहिस्ता से

प्रियर्स से कहा।

प्रियर्स ने सिर हिलाकर उसका अनुमोदन किया। वह अभी तक एकटक उस युवती को देख रहा था, पर अब उसका शरीर कांप नहीं रहा था।

अब तक अर्ध-युवती आकर उन दोनों के ठीक सामने खड़ी हो गयी थी। दोनों को उसके काले लम्बे बाल आकर्षक चेहरा और पुष्ट वक्ष साफ़-साफ़ दिखाई दे रहे थे। पर, कमर को देखकर ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसे बड़ी सफ़ाई से तराश कर उसके शरीर का नीचा भाग अलग कर दिया हो। पर उसके शरीर का ऊपरी भाग एक आदर्श रूपसी का शरीर था।

प्रियर्स ने अपना दायाँ हाथ आगे बढ़ाकर उससे हाथ मिलाकर उसका स्वागत करने की कोशिश की। पर उसके मुँह से कोई शब्द नहीं निकल रहा था। क्लिफ़र्ड ने उससे कहा 'इससे बात करने की कोशिश कीजिए।

पर जैसे ही प्रियर्स के मुँह से पहला शब्द निकला वह अर्ध-युवती गायब हो गयी। प्रियर्स और क्लिफ़र्ड दोनों देखते रह गये।

अगले क्षण प्रियर्स भाग कर एक झाड़ी के पास पहुँचे। इन दोनों के पास आने से पहले वह अर्ध-युवती इस झाड़ी के पास ही खड़ी हुई थी। जैसे ही वह झाड़ी के पास आये, उनके मुँह से एक डरावनी चीख निकली जिसकी गूँज क्लिफ़र्ड को और ज्यादा डरावनी लगी। क्लिफ़र्ड दौड़कर प्रियर्स के पास गए।

प्रियर्स का मुँह पीला पड़ा हुआ था और वह बुरी तरह कांप रहा था। क्लिफ़र्ड ने उससे पूछा 'क्या बात है? इतना डरने की क्या बात है?

प्रियर्स ने हाथ के इशारे से झाड़ी के पीछे पड़ी एक वस्तु की ओर इशारा किया। यह वस्तु थी—उस युवती का कमर के नीचेवाला भाग। यह भाग बड़ा अनाकर्षक और डरावना लग रहा था। प्रियर्स ने क्लिफ़र्ड से कहा मैंने एक क्षण के लिए इस भाग को छुआ था। और छूते ही मुझे बड़ी दहशत महसूस हुई। अभी तक मेरा मन दहशत की वजह से कांप रहा है। मैं जिन्दगी में कभी इतना भयभीत नहीं हुआ था।

दोनों ने उस भाग का बारीकी से मुआयना किया। उस भाग के अंग सड़ने लगे थे और उनमें से दुर्गन्ध आनी शुरू हो गयी थी। खाल खुरदरी हो गयी थी, और गलने लगी थी। उस भाग को देखकर ही उबकाई आने लगती थी और घृणा होती थी।

दोनों ने उस स्थान से वापस अपनी खाइयों में आने के लिए तेजी से चलना शुरू किया। सारे रास्ते दोनों में से कोई भी कुछ नहीं बोला।

अपने कैम्प में पहुँचकर प्रियर्स ने क्लिफ़र्ड को बताया कि कुछ दिन पहले जर्मनों ने उस क्षेत्र की महिलाओं के साथ बहुत अत्याचार किया था और उनमें से कई के शरीर काट डाले थे। झाड़ी में उन दोनों को ऐसी ही एक महिला के

कटे हुए शरीर का आधा भाग दिखाई दिया था। पर, उनके सामने जो अर्ध-शरीर अवतरित हुआ था, वह तो उस महिला का भूत ही था।

आइसलैण्ड का वह विलक्षण भूत :

आइसलैण्ड के उत्तर में साउरार नाम का एक छोटा-सा फ़ार्म है, जहाँ ७२ साल का किसान गुदमुन्दूर इनारसन अपनी बीवी मारग्रेट वेनिडिक्टस डोतिर, अपने पुत्र वेनेडिक्ट और अपनी पुत्री सिगरवोर्ग के साथ रहता था।

१८ मार्च, १९६४ को सुबह के क़रीब पौने दो बजे पति-पत्नी को जोर की एक आवाज़ सुनाई पडी, और वे जाग गये। दोनों की खाटों के बीच करीब एक गज लम्बी और करीब ४५ पौण्ड भारी एक मेज़ रखी थी। जागकर उन्होंने देखा कि वह मेज वहाँ नहीं है। उन्होंने कमरे में मेज़ को खोजा, पर वह कम में न थी, और कमरे के बाहर रखी थी। पहले उन्हें लगा कि शायद रात भूचाल आया था, और उस कारण मेज कमरे से बाहर चली गयी। पर कम की अन्य वस्तुएँ यथास्थान रखी थी। उनकी समझ में न आया कि इतनी भार और लम्बी मेज अपने आप कैसे कमरे से बाहर चली गयी? ऐसा चमत्का उनके घर में पहले कभी नही हुआ था।

अगले दिन शाम को जब मारग्रेट अपनी लडकी के साथ फ़ार्म में काम क रही थी, तो दोनों को घर के अन्दर से क़िसी भारी चीज के गिरने की आवाज सुनाई दी। उस समय घर में कोई नहीं था। जब दोनों अन्दर गये, तो उन्हों देखा वह लम्बी और भारी मेज़ फर्श पर उलटी गिरी पडी है, और उसप रखी क्रॉकरी के टुकडे-टुकडे हो गये हैं। उस दिन दोनों को घर की बहुत-स भारी चीज़ें अपने आप अपने स्थान से हटती दिखाई देती रही।

अगले दिन रात को मारग्रेट और उसके पति ने जोर की एक आवाज़ से जागकर देखा कि वह लम्बी और भारी मेज फिर अपनी जगह से हटकर पहले की तरह कमरे से बाहर आ गयी है। उस समय घडी में चार बजकर बीस मिनट हुए थे।

अगले दिन आइसलैण्ड के दैनिक पत्र 'मोरगन ब्लाओइडो' का एक प्रतिनिधि थार्डर जॉनसन अपने शोफ़र के साथ इनारसन के घर इस मामले की जाँच करने आया। जब वह लाउज में इनारसन से कुछ देर तक बातें कर चुका, तो मारग्रेट ने दोनों को अन्दर आकर कॉफ़ी पीने के लिए आमन्त्रित किया। दोनों के अन्दर जाने के बाद जॉनसन का शोफ़र भी इनारसन के कहने पर अन्दर गया, और अब लाउंज में कोई नही रह गया।

जब सब लोग रसोईघर में कॉफी पी रहे थे, तो उन्हें लाउज से किसी चीज़ के जोर से गिरने की आवाज़ सुनाई दी। शोफर भागा-भागा बाहर आया। लाउंज

में आकर उसने देखा कि वही भारी और लम्बी मेज़ फ़र्श पर उलटी पड़ी है। कार्टेज में तथा फ़ार्म में उस वक़्त कोई नहीं था। ज़ोरदार आवाज़ से लगता था कि किसी ने ज़ोर से उसे पटका है।

जॉनसन ने अपने पत्र में इस आँखों देखी घटना के साथ अन्य घटनाओं का वर्णन करते हुए अपना मत व्यक्त किया कि उनके पीछे अवश्य किसी भूत का हाथ है, और उस भूत को फ़ार्म से भगाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

अगले दिन मारग्रेट का दूसरा लड़का जोर्गविन जो आइसलैण्ड की राजधानी में काम करता था अपने परिवार के साथ कुछ सप्ताह के लिए रहने के लिए आया।

उस दिन दुपहर के ढाई बजे, जब सिगरवोर्ग रसोईघर में थी उसकी माँ कार्टेज में किसी से फ़ोन पर बात कर रही थी और इनारसन अपने दोनों बेटों के साथ फ़ार्म में काम कर रहा था सिगरवोर्ग ने रसोईघर की दीवार के सहारे खड़े एक बड़े कपबोर्ड को अपने आप सरकते हुए देखा। वह फुर्ती से कपबोर्ड के ऊपर रखे रेडियो को उठाने के लिए आगे बढ़ी पर जैसे ही उसने रेडियो को हाथ लगाया वैसे ही कपबोर्ड धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा।

अगले दिन सुबह साढ़े नौ बजे के समय रसोईघर में रखा वह कपबोर्ड फिर अपने आप थोड़ा सरककर फ़र्श पर आ गिरा। उस समय रसोईघर में कोई नहीं था। सिगरवोर्ग आये दिन की इन विकराल घटनाओं से परेशान होकर रेक्जाविक में रहनेवाली अपनी बहन के साथ रहने के लिए चली गयी थी। पास के कमरे में अपने बेटे जोर्गविन के साथ बातें कर रही मारग्रेट इस आवाज़ को सुनकर रसोईघर में आयी, और कपबोर्ड को फिर ज़मीन पर पड़ा देखकर अवाक् रह गयी।

इस समय तक इनारसन के फ़ार्म में हो रही अजीबोग़रीब घटनाओं का पता आइसलैण्ड की राजधानी रेक्जाविक के समाचारपत्रों को भी लग गया था और उनके प्रतिनिधियों का एक-एक करके फ़ार्म पर आना शुरू हो गया था। एक प्रतिनिधि अपने साथ आइसलैण्ड के नामी मीडियम होफ्स्टीन जॉनसन को भी लेकर आया था। इनारसन ने दोनों को अबतक की घटनाओं के बारे में बताकर क्रॉकरी के टूटे टुकड़ों को दिखाया।

दुपहर को जब इनारसन के घर के लोग इन दोनों के साथ रसोईघर में खाना खा रहे थे, तो खाने की मेज़ अपने आप सरकने लगी। इनारसन ने फ़ौरन मेज़ पर रखी क्रॉकरी पर हाथ रखकर उसे नीचे गिरने से रोका।

मीडियम जॉनसन ने अपनी विशेष विधि द्वारा फ़ार्म के भूत से जो यह सारी छेड़खानियाँ कर रहा था साक्षात्कार करने का प्रयत्न किया पर असफल रहे। उनका कहना था कि यह भूत बड़ा धूर्त है और आसानी से पकड़ में

आयेगा ।

कुछ पत्र-प्रतिनिधियो को शक था कि पडोस के लोग साजिश करके ये ...नियाँ करवा रहे हैं, पर पडोसियों से बातें करने पर उसका यह शक ...ा। घर में कोई नौकर था ही नहीं, जिसपर शक किया जा सके।

एक समाचार-पत्र के प्रतिनिधि का खयाल था कि इन घटनाओं के पीछे हलके भूचालों का हाथ है। इस बात की जाँच करने के लिए आइसलैण्ड के एक नामी भूगर्भशास्त्री को घटनास्थल पर बुलाया गया। उन्होंने भूकम्प-यन्त्र की सहायता से प्रयोग करके निर्णय दिया कि उस क्षेत्र में भूचाल के कोई आसार दिखाई नही देते।

ये विचित्र और विलक्षण घटनाएँ ३ अप्रैल तक, बिला नागा, रोज़ किसी किसी रूप में घटती रहीं। १ अप्रैल से लेकर ३ अप्रैल तक तो इन घटनाओं का ताँता और भी बढ गया। लाउंज में रखी रहनेवाली लम्बी और भारी मेज, जो सबसे पहले सोने के कमरे से बाहर आयी थी, रखे-रखे गिर जाती थी, और अपने आप आगे-पीछे होने लगती थी। अन्त में, उसे स्थिर रखने के लिए उसे एक मोटे रस्से से बाँधकर दीवाल से कसकर बाँध दिया गया। इसपर भी उसका ऊपरी सिरा अपने आप अलग होकर नाचने लगा।

लाउंज की दीवारों पर लगी तसवीरें अपने चौखटों से अलग होकर नीचे गिरने लगीं। जो भी छोटी-मोटी चीज़ लाउंज में रखी जाती, या किसी तरह आ जाती, वह जल्दी ही टूट-फूटकर नष्ट हो जाती थी।

लाउंज और रसोईघर के बीच एक छोटा कमरा है, जहाँ रेकजाविक ज... से पहले सिगरबोर्ग सोया करती थी। वहाँ भी इन तीन दिनों में हर चीज को बार-बार अपने स्थान से हिलते और गिरते देखा गया। दीवार पर लटकी हुई धातु की एक तश्तरी कई बार दीवार से अपने आप गिरकर नीचे रखे दीवान पर पडी दिखाई पडी।

यही हाल रसोईघर की एक खास दीवार पर लटकी हुई चीजों और बरतनों का था। एक खास शेल्फ़ के प्लेट, कप, चम्मच, और चीनी के बरतन अपने आप फ़र्श पर गिर जाते थे। बाकी शेल्फ़ों पर रखी चीजें अपने स्थान पर सुरक्षित रहती थी।

३ अप्रैल को गृहस्वामिनी मारग्रेट को फ़ार्म से १० मील दूर स्थित एक अस्पताल में किसी बीमारी की वजह से ले जाया गया। वह आठ दिन तक अस्पताल में रही। इन आठ दिनों में उसके फ़ार्म में कोई विलक्षण घटना नहीं घटी। पर, उसके अस्पताल से आने के दो दिन बाद इन घटनाओं का क्र... फिर आरम्भ हो गया। पर, इस बार चीजें ज्यादा जोर से नहीं गिरती थी, ... पहले के समान अधिक हिलती भी नही थी। कुछ दिन बाद उनका क्रम एक...

भूत...

बन्द हो गया और इसके बाद उस फ़ार्म पर वे घटनाएँ फिर कभी नहीं घटीं।

मई के अन्त में अमरिकी परामनोविज्ञान संस्था के निदेशक फ़ाम की घ भाओं की जाँच करने के लिए मास्सफ़ील्ड आये। उन्होंने इन घटनाओं की पू जाँच की। अन्त में वे जिन निष्कर्षों पर पहुँचे वे इस प्रकार थे

(१) अधिकांश वस्तुएँ पश्चिम से पूर्व की ओर गिरती थीं। रसोईघर सिर्फ़ एक शेल्फ़ की ही वस्तुएँ नीचे गिरती थीं और अन्य शेल्फ़ों की वी यथास्थान रहती थीं।

(२) इन घटनाओं के पीछे जो भी भूत जिम्मेदार था, वह जीवितावस्था बुद्धिमान् नहीं रहा होगा कारण उसका उद्देश्य फ़ार्म के किसी भी व्यक्ति चिढ़ाना या तंग करना नहीं था। सब घटनाएँ बिना किसी उद्देश्य और इरादे घटती प्रतीत होती थीं।

(३) घर के सभी सदस्यों का वस्तुओं का हानि पहुँची थी। कुछ साधार वस्तुएँ बड़ी निर्दयतापूर्वक नष्ट की गयी थीं और कुछ क़ीमती वस्तुओं सामान्य हानि ही पहुँची थी।

निदेशक महाशय न यह बात भी नोट की कि सारी घटनाओं का सम्बन्ध गृहस्वामिनी मारग्रेट से था। जिस समय कोई वस्तु खिसकती या नष्ट होती थी उस समय वह घर में अवश्य उपस्थित रहती थी। उसके अस्पताल जाने प कोई घटना नहीं घटी। उसके घर आते ही उनका क्रम फिर आरम्भ हो गया था इससे वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इन घटनाओं के लिए जिम्मेदार भूत मारग्रे को परेशान करना चाहता था।

एक भूत की वापसी

वाशिंगटन के समुद्रतट पर पैंतीस मील की परिधि पर फैले मालद्वीप में एक छोटा-सा गाँव है इल्वाको। इस गाँव में ज़्यादातर मछेरे लोग रहते हैं, और गाँ में रहनेवाले जो लोग मछेरे नहीं भी हैं, उन्हें भी मछलियाँ पकड़ने का शौक़ है। ऐसे लोगों में गाँव के मेयर थे वाल्टर सीबोर्ग भी थे, जो अपनी माँ के साथ रहते थे। उन्होंने विवाह नहीं किया था।

सीबोर्ग को इल्वाको के समुद्रतट के निकट स्थित ऊँची चट्टानों पर बैठकर मछलियाँ पकड़ने में बड़ा आनन्द आता था। कोई और आदमी वहाँ बैठकर मछलियाँ पकड़ने का ख़तरा नहीं उठा सकता था। पर, सीबोर्ग को सागर की ब्द और चट्टानों से टकराकर लौटी हुई लहरों के बीच में से मछलियाँ खींचने में बड़ा मज़ा आता था। वे अपना एक ख़ास भूरे रंग का कोट पहनकर मछलियाँ

पकडने का अपना शौक पूरा करने जा रहे हैं।

इस तन्द्रालु गाँव में उस दिन बडी हलचल दिखाई दी, जिस दिन गाँववालो को यह मालूम पडा कि उनके गाँव के मेयर ग़ायब हो गये हैं।

उनकी माँ से पूछने पर गाँववालों को पता चला कि रोजाना की तरह उस दिन भी वे जलपान करके मछलियाँ पकडने गये थे। उसे उनके ग़ायब होने का पता तब चला जब वे रात को घर नही आये।

मेयर के गायब होने की खबर आग की तरह गाँव और उसके आसपास के कस्बो में फैल गयी। गाँव के मार्शल की अध्यक्षता में गाँव के कुछ युवक ढलवाँ चट्टान के पास उनकी खोज करने के लिए निकले। इन लोगो ने चट्टानो का चप्पा-चप्पा खोज मारा, पर मेयर या उनके शव का कहीं पता नही चला। गाँव के अन्य स्थानो में भी उनकी खोज की कोशिशें बेकार गयी।

जब दो सप्ताह की लगातार खोज के बाद भी मेयर का पता न चला, तो गाँव के लोग, धीरे-धीरे उन्हें भूलने लगे। पर, मेयर की माँ द्वारा घोषित एक हज़ार डॉलर का इनाम जीतने के लिए एक-दो उत्साही युवक फिर भी खोज में लगे रहे।

एक रात जब गाँव के कुछ युवक गाँव के एकमात्र थियेटर से नाटक का आखिरी शो देखकर घर लौट रहे थे, तो उन्होने एक अँधेरी गली में मेयर को अपनी मछलियाँ पकडने की यूनीफ़ॉर्म में अपनी ओर आते देखा। एक युवक उनकी धुँधली आकृति देखकर चिल्लाया, "अरे, यह तो मेयर का भूत है!" उसकी चिल्लाहट सुनकर अन्य युवक भाग निकले।

पर, कुछ दूर तक भागने के बाद उनमें से दो युवको ने रुककर निश्चय किया कि लौटकर मेयर के भूत से बात की जाये। आखिर, वह उन्हें काट तो नही खायेगा। लेकिन जब वे लौटकर उस स्थान पर आये तो उन्हें वहाँ कोई दिखाई नही दिया।

घर लौटने के बाद ये दोनो युवक, जो भाई-भाई थे, मेयर के भूत के बारे में ही बातें करते रहे। उन्होने निश्चय किया कि अगली रात को वे फिर उस स्थान पर जायेंगे, जहाँ उन्होंने मेयर के भूत को देखा था। उन्होने सुन रखा था कि भूत अकसर एक ही स्थान पर मँडराया करते हैं।

जब रात के दस बजे के क़रीब वे उस स्थान पर पहुँचे, तो वहाँ हमेशा की तरह अँधेरा छाया था। सामने खडे आदमी को देखना भी मुश्किल था।

कुछ देर वहाँ खडे रहने के बाद उन दोनो को फिर एक धुँधली आकृति दिखाई दी। उन्होने पास आकर देखा, यह धुँधली आकृति मेयर सीबोर्ग के भूत की थी। यह आकृति अपना हाथ हिलाकर सामने दिखाई देनेवाली ढलवाँ चट्टानो के एक कोने की ओर इशारा करके अन्तर्धान हो गयी। उस कोने को गाँव में

'बीयड् स होलो' कहा जाता था।

दोनों युवक फ़ौरन मेयर के घर पहुँचे। दरवाज़ा खोला मेयर के एक भाई ने, जो न्यूयॉर्क से यहाँ आया हुआ था। उन दोनों ने मेयर के भाई को बताया कि मेयर के भूत द्वारा दिये गये इशारे के अनुसार उनका शव 'बीयड् स होलो' में होना चाहिए।

मेयर के भाई ने कहा आपके सहयोग के लिए धन्यवाद। पर, बीयड् स होलो में मेरे भाई के शव का मिलना नामुमकिन है। क्योंकि यदि वह चट्टानों से उस कोने में गिरे होते तो उनका शव पानी के बहाव से उत्तरी दिशा में चला जाता। वहाँ पानी का बहाव बहुत तेज है और कोई शव वहाँ स्थिर नहीं रह सकता।

'पर, हमने मेयर के भूत को उसी ओर इशारा करते देखा था। इसका अर्थ हमने यही समझा कि वे हमें यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि उनका शव वहीं मिलेगा।

'जैसा कि मैंने अभी बताया वहाँ शव का मिलना असम्भव है। फिर भी आज बाहर से आये हुए कुछ लोग सारे समुद्रतट की खोज कर रहे हैं। लाश यदि समुद्रतट पर होगी तो आज अवश्य मिल जायेगी कारण ये लोग अपने काम में बहुत होशियार हैं।

अगले दिन दोनों युवकों ने देखा कुछ लोग हाथ में लम्बे-लम्बे फावड़े लिये समुद्रतट की ओर से आ रहे हैं। उन्होंने दोनों से पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

हम लोग मेयर की लाश को निकालने जा रहे हैं?'

''क्या उनकी लाश का पता लग गया?

'हाँ लग गया। हमारे कुत्ते ने सूँघकर उसका पता लगाया था। कल हमने उसे मेयर के कुछ कपड़े सुँघाये थे। समुद्रतट पर आकर, वह 'बीयड् स होलो' के पास ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। हम लोगों ने छोटे फावड़े से बालू में खुदाई की तो हमें एक टाँग ऊपर उठी दिखाई पड़ी। मेयर के आदमियों ने उसे देखकर कहा कि यह लाश मेयर की ही

करने जा रहे हैं। लाश बालू में

बाद में उन युवकों को प

नीचे गिरे थे उस रात ज्वार

प्रबल ज्वार के कारण मेयर क

म जाकर रेत में धँस गया।

जब मेयर के भूत को प

कठिनाई हो रही है तो उसने

इशारे से बताया कि जिस स्थान

सकता है।

मेयर के भूत की वापसी और उसके अपने लाश के स्थान की ओर इशारा करने की यह सत्य कथा सबसे पहले अमेरिका के 'ऑरगोनियन' नामक पत्र के २० जुलाई, १९१९ के अक में प्रकाशित हुई थी। इस सत्य कथा के साथ मेयर की माँ, उनके भाई और इन दो युवको के शपथ पर दिये गये वक्तव्य भी प्रकाशित हुए थे कि सत्य कथा के सभी तथ्य सच्चे और प्रामाणिक हैं।

इन दोनो युवको के अलावा जिन अन्य युवको ने पहली बार मेयर महोदय के भूत को देखा था, उनके शपथ पर दिये गये वक्तव्य भी इस सत्य कथा के साथ प्रकाशित हुए। बाद में इस सत्य कथा को 'ऑरगोनियन' से उद्धृत कर अमेरिका के सभी तत्कालीन समाचारपत्रो ने प्रकाशित किया। इस सत्य कथा को अमेरिका की प्रामाणिक भूतकथाओ में से एक माना जाता है।

वह कौन थी ?

अमेरिका के मिसौरी राज्य की कार्टर काउण्टी के डॉक्टर एस जे चेनोवेथ को पारलौकिक विषयों पर बात करनेवालो से बहुत घृणा थी। वे उन्हें सिरफिरा मानते थे, और उनसे बातें करना भी पसन्द नही करते थे। लेकिन, १९२३ की एक सर्द और भयानक रात को उनके साथ जो कुछ घटा, उसके बाद उन्हें अपने विचारो में परिवर्तन करने को बाध्य होना पडा।

सर्दी की उस ठिठुरती और भयानक रात को, जब तीर-सी बेध देनेवाली कटखनी हवा सॉय-सॉय चल रही थी, और सडकें खाली पडी थी, न्यूमोनिया से पीडित उनके एक रोगी ने फोन पर उनसे फौरन आने की प्रार्थना की। रोगी उनका परिचित था, और उसकी हालत सचमुच चिन्ताजनक चल रही थी। इसलिए अपने घरवालो की न जाने की सलाह को अमान्य करके वह कार निकाल-कर रोगी के घर रवाना हो गये। कार उनका ड्राइवर जैक बनयार्ड चला रहा था।

रोगी का घर उनके घर से दस मील की दूरी पर था, और रास्ते में इतना घना जगल पडता था कि सूरज की किरणें वहाँ कभी जमीन पर नही पड पाती थीं। काउण्टी के लोगो का विश्वास था कि उस जगल में भूतो का बसेरा है। पर, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, डॉक्टर चेनोवेथ किसी भूत-वूत में विश्वास नहीं करते थे।

जब डॉक्टर की कार जगल के पास पहुँची, तो अँधेरा इतना घटाटोप हो गया कि ड्राइवर को कार चलाने में बडी मुश्किल होने लगी। पर, वह रात में कई बार कार द्वारा यह रास्ता पार कर चुका था, इसलिए वह इस रास्ते से अच्छी तरह परिचित था। लेकिन, उस रात उसे भी डर लग रहा था। उसे काउण्टी के लोगो का यह कथन याद आने लगा कि इस जगल में भूत बसते हैं।

वह एकबारगी काँप उठा।

जब कार की बत्तियों के प्रकाश में भी रास्ता दिखाई देना बन्द हो गया तो उसने डरते-डरते डॉक्टर से पूछा, क्या आप अपने साथ लालटेन लाये हैं, डॉक्टर साहब ?

'हाँ। वह औजारों के बक्से में रखी है।

ड्राइवर कार को रोककर नीचे आ गया और डॉक्टर से बोला मैं लालटेन जलाकर उसे आगे लेकर चलता हूँ। आप उसकी रोशनी में कार को धीरे-धीरे ड्राइव करिए। अगर गलत रास्ते पर चले गये तो सारी रात यहीं बितानी पड़ेगी।

ड्राइवर हाथ में लालटेन लेकर आगे चलने लगा और उसकी झिलमिल रोशनी में डॉक्टर कार चलाने लगे। लालटेन कभी अँधेरे में खो जाती और फिर अपने आप प्रकट हो जाती। कार रेंगती हुई आगे बढ़ रही थी। कुछ देर बाद डॉक्टर को लगने लगा जैसे वे चिरकाल से कार ड्राइव करते चले आ रहे हैं, और उनका सफ़र कभी ख़त्म नहीं होगा। भविष्य और भूतकाल की सारी अनुभूति समाप्त हो गयी और उन्हें लग रहा था जैसे वे अन्तहीन वर्तमान में ही जी रहे हैं।

इतने में वर्षा होने लगी और अब ड्राइवर का भी कार के अन्दर आने को मजबूर होना पड़ा। पर, इस समय तक ख़तरनाक और धोखेबाज़ रास्ता तीन-चौथाई पार हो चुका था, और कुहरा भी छँटने लगा था। पर, वर्षा लगातार हो रही थी।

सहसा डॉक्टर ने जो अभी तक कार चला रहे थे देखा कि कोई औरत अकेली सड़क पर चली आ रही है, उसी दिशा में जिसमें वे जा रहे थे। उन्होंने ड्राइवर से पूछा 'यह कौन है ?

ड्राइवर ने कहा, "शायद अपनी कॉटेज की ही कोई लड़की है, जो उधर ही जा रही है जिधर हम जा रहे हैं।

"तो फिर इसे कार में बैठा लेना चाहिए।

औरत का क़द नाटा था और उसने सिर पर गहरे काले रंग का शॉल ओढ़ रखा था। उसके कपड़े पुराने और गन्दे मालूम हो रहे थे। कार को देखते ही उसने अपनी रफ़्तार बढ़ा दी। कार जितना उसके निकट आती, उतना ही वह और तेज़ चलने लगती थी। कार के और उसके बीच का फ़ासला एक-सा ही बना रहता था।

ड्राइवर ने काँपते हुए स्वर में कहा, 'अजीब बात है। हम इस औरत को पकड़ नहीं पा रहे हैं। बारिश में बेचारी भीग रही होगी।

"कोशिश करता हूँ' कहकर डॉक्टर ने कार की रफ़्तार दुगुनी कर दी,

और हॉर्न बजाकर महिला को जैसे सूचित किया कि वह रुक जाये। पर, औ
बिना पीछे मुड़े, या दायें-बायें देखे, बराबर आगे बढ़ती रही। डॉक्टर ने
जोर से आवाज दी, "रुक जाओ। अगर तुम लिफ्ट चाहती हो, तो हम लि
देने को तैयार हैं। बारिश में बेकार मत भीगो।"

पर, महिला ने जैसे यह आवाज भी नहीं सुनी। वह बिना पीछे देखे, आ
ही बढ़ती रही। अब डॉक्टर ने कार की रफ्तार बीस से तीस, तीस से चाली
और चालीस से बढ़ाकर पचास मील फ़ी घण्टा कर दी। लेकिन, वह फिर
उस औरत को पकड़ नहीं पाये। वह अभी तक कार से उतनी ही दूर थी, जित
पहले थी, और कुहरे और अँधेरे को चीरती हुई बढ़ती चली जा रही थी। व
भाग नहीं रही थी, चल रही थी। पर, उसके पाँव जमीन पर पड़ते नहीं दिख
दे रहे थे।

"बस, मैं कार को इससे ज्यादा तेज नहीं चला सकता," डॉक्टर ने थ
और निराश स्वर में अपने ड्राइवर से कहा। और यह कहते-कहते उन्हें आश्च
हो रहा था कि कहीं उनकी आँखें उन्हें धोखा तो नहीं दे रही? क्या वह सचमु
अपने सामने किसी महिला को नहीं, उसके भूत को देख रहे हैं? क्या भूत-प्रे
में उनका अविश्वास भंग होनेवाला है?

जब उन्होंने अपने रोगी के घर के सामने कार खड़ी की, तब भी वह महि
उनकी कार से उतनी ही आगे थी, जितनी पहले थी। अन्त में, वह कोहरे
विलीन हो गयी। सारे सफर में उसने एक बार भी पीछे मुड़कर डॉक्टर
नहीं देखा था।

रोगी के घर के अन्दर जाकर डॉक्टर को मालूम पड़ा कि रोगी की हाल
तो सुधर गयी है, पर कल रात उसकी पत्नी की अचानक मृत्यु हो गयी थ
और अब उसके घर के लोग उसके अन्तिम संस्कार की तैयारियों में लगे थे।

डॉक्टर रोगी और उसके परिवार के सदस्यों के साथ हमदर्दी दिखाने लगे
पर, मन ही मन उन्हें एक बात पर आश्चर्य हो रहा था। रोगी की पत्नी
मृत्यु उसी समय हुई थी, जिस समय उन्हें रास्ते में महिला दिखाई दी थी।

तो क्या ? पर, वे तो भूत-प्रेत में क़तई विश्वास नहीं करते। उ
मन का डर और खामखयाली मानते हैं।

लेकिन, उस महिला को तो खुद उन्होंने अपनी आँखों से देखा था। औ
यह भी देखा था कि कार को ज्यादा से ज्यादा तेज चलाने पर भी वह महि
के पास पहुँचने में नाकामयाब रहे थे।

तब से, वह इस सच्ची कहानी को अपने परिचितों को कई बार सुना चु
हैं। और कहानी सुनाने के बाद अन्त में कह देते हैं : "देखिए, मैं भूत-प्रेतों
क़तई यक़ीन नहीं करता।"

लेकिन साथ ही आँखों देखे और भोगे हुए इस यथार्थ की कोई तर्कसंगत व्याख्या भी वह पेश नहीं कर पाते।

कहानी एक विचित्र भुतहा घर की

अमेरिका की सिस्मिस की माँ को जब रिक्थसाम मिला था तब उसकी आयु केवल छह वर्ष थी। चूँकि सिस्मिस का मामा उस समय अल्पवयस्क था, इसलिए जायदाद का सारा प्रबन्ध एक सरकारी प्रबन्धक को सौंप दिया गया। लॉग आयलैण्ड स्थित एक घर में जो जायदाद में शामिल था किरायेदार रहते थे, पर वे यह कहकर घर छोड़कर चले गये थे कि वे भुतहा घर में नहीं रहना चाहते। और, भूत भी कैसे, जो हमेशा छेड़खानियाँ करते रहते हैं।

सिस्मिस की माँ मेरी यह बात सुनकर हँस दी थी। पर सिस्मिस के मामा केनेथ रीड ने कहा, 'इसमें हँसने की कोई बात नहीं है। किरायेदार ठीक ही कहते थे। मैंने खुद भूतों को अपने ऊपर तकिया फेंककर हँसते देखा था।

मेरी ने कहा 'मेरी दादी ने सोलह हजार डॉलर देकर उस मकान को खरीदा था। अब उसकी क़ीमत दुगुनी होगी। उसके पास से रेल लाइन निकलने के बाद उसकी क़ीमत और बढ़ जायेगी। तुम उसे सिर्फ़ आठ हजार डॉलर में क्वीन्सलैण्ड को बेचना चाहते हो। मेरे ख़याल से अभी कुछ दिन और रुकना ठीक रहेगा।'

पर केनेथ रीड ने जिसकी अल्पवयस्कता समाप्त होने में कुछ महीने ही शेष थे, चिल्लाकर कहा, 'मैं उस घर को अभी—इसी वक़्त—बेचना चाहता हूँ। बाद में कोई मुझे एक लाख भी दे तो भी मैं नहीं लूँगा। तुम अभी जाकर उसे बेच डालो।

मेरी ने चिढ़कर कहा 'मैं क्यों जाऊँ? तुम अब बड़े हो गये हो। तुम खुद ही जाकर बेच डालो न।"

'मैं उस घर के बारे में कुछ भी कहने-करने को तैयार नहीं हूँ।

मेरी की आर्थिक स्थिति उन दिनों अच्छी नहीं थी। उसके पति हमेशा अपने प्रयोगों में लगे रहते थे और उनकी सारी कमाई इन प्रयोगों में ही खर्च हो जाती थी। लिहाजा मेरी ने सिस्मिस को साथ लेकर खुद न्यूयॉर्क जाकर उस घर को बेचने का निश्चय किया।

बस का सफ़र इन दोनों के लिए ज्यादा आरामदेह रहता। पर, उसका किराया रेल के किराये से कहीं ज्यादा था। इसलिए माँ-बेटी रेल से ही रवाना हुईं।

रेल में मेरी ने एक मिनट के लिए भी आराम नहीं किया और न जाने क्या सोचती रही। न्यूयॉर्क से बस द्वारा लॉग आयलैण्ड जाते समय भी वे चुपचाप

कुछ सोचती रही। लाँग आयलैण्ड गाँव जब आया, तब वह इतनी थक चुकी थीं कि उनसे चला भी नहीं जा रहा था। उन्होंने लिलियेस से कहा, "चलो, किसी रेस्तराँ में कुछ खा लें। मुझे बड़ी भूख लगी है।"

भूख लिलियेन को भी लगी थी। दोनों ने रेस्तराँ में जी भरकर खाना खाया।

खाना खाने के बाद माँ-बेटी ने अपने कपड़ों के थैले हाथ में लिये, और अपने भुतहा घर की ओर चल पड़ी। लम्बे-चौड़े बरामदे से घिरे, बड़े घर को देखकर लिलियेस बहुत प्रभावित हुई। घर का विशाल हॉल बड़ा भव्य था, और उसकी चौड़ी और शानदार सीढ़ियाँ, जो ऊपर के कमरों तक जाती थी, बिलकुल वैसी थी, जैसी लिलियेस ने फ़िल्मों में देखी थी।

लिलियेस पहली बार इस घर में आयी थी। उसका मन था कि वह उसे अच्छी तरह देखे। पर, उसकी माँ बहुत थक चुकी थीं। उसने कहा, "मैं आराम करना चाहती हूँ। चलो, ऊपर चलें। घर बाद में देखना।"

जब माँ-बेटी ऊपर सोने के कमरे में पहुँची, तो लिलियेस को यह देखकर बड़ी हैरत हुई कि इस कमरे में धूल और गर्द का नामोनिशाँ तक न था, जब कि नीचे के हिस्से में हर चीज़ पर धूल की तहें जमी हुई थी। सारा कमरा एकदम साफ़-सुथरा था।

कमरे के एक कोने में हरे रंग का एक मखमली सोफा पड़ा था। उसपर लेटकर मेरी ने लिलियेस से कहा, "मेरा स्कॉर्फ़ ला।"

लिलियेस इस स्कॉर्फ से बहुत डरती थी। शाम को सोते वक़्त उसकी माँ इस स्कॉर्फ का एक सिरा अपनी कलाई में, और दूसरा सिरा उसकी कलाई में बाँध देती थी, ताकि उनके सोते समय लिलियेन कहीं भाग न जाये।

लिलियेस ने कहा, "मुझे बाँधो मत। मैं भागूँगी नहीं।"

पर, मेरी ने उससे फिर स्कॉर्फ़ लाने को कहा। स्कॉर्फ़ का एक सिरा लिलियेस की कलाई में, और एक सिरा अपनी कलाई में बाँधकर वह सो गयी। लिलियेन मनाने लगी कि उसकी माँ की नींद लम्बी न हो। वह घर देखने के लिए उतावली हो रही थी।

लेकिन, शायद थकान की वजह से लिलियेस को भी नींद आ गयी। जब वह जागी, तो उसने देखा कि शाम बीत चुकी है, और सारे कमरे में अँधेरा छाया है। दिन में खिड़कियों से दिखाई देनेवाला नीला सागर अब दिखाई नहीं दे रहा था। पर, इस घटाटोप अँधेरे के बावजूद वह कोना, जिसमें सोफ़ा रखा था, काफ़ी जगमग था। कमरे में कोई रोशनी नहीं थी, फिर भी न मालूम क्यों यह कोना इतना अधिक जगमग था कि उसकी चकाचौंध से बचने के लिए लिलियेन को अपनी आँखों पर हाथ रखने को मजबूर होना पड़ा।

पर आँखों पर हाथ रखने से पूर्व उसने कोने में एक छोटे-से आदमी को खड़े देखा। उसने उस आदमी से पूछा 'आप कौन हैं ?

उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया और मुसकराते नेत्रों से उसे देखता हुआ चुपचाप खड़ा रहा। फिर उसने अपनी लम्बी मोटी और सुनहरी पलकों-वाले नेत्रों से सोफ़े पर सोयी मेरी को देखा और उधर से आँखें फेरकर अपना दायाँ हाथ आगे किया। अब इस हाथ पर लिलियेस को एक सुन्दर बिल्ली बैठी दिखाई दे रही थी।

लिलियेस को बिल्लियों का बहुत शौक़ था। लेकिन उसने आज तक जो बिल्लियाँ पाली थीं वे सब मामूली बिल्लियाँ थीं। यह बिल्ली उन बिल्लियों से भिन्न थी और बड़ी सुन्दर और मनमोहिनी थी। उसका मन हुआ कि आगे बढ़कर उसे गोद में ले ले।

हल्के भूरे रंग का सूट और उसी रंग का चौड़ा हैट पहने उस आदमी ने बिल्ली के कान में कुछ कहा और वह बिल्ली उस आदमी का गाल चूमने लगी। वह आदमी हँसकर बिल्ली को थपथपाने लगा और उसके साथ खेलने लगा। लिलियेस मन्त्रमुग्ध-सी उस आदमी और उसकी बिल्ली को देख रही थी, जो बीच में, खेल-खेल में उसे काट लेती थी। आदमी उसके काटने पर हँस देता था। वह उसे लिटिल डॉल बेबी कहकर पुकार रहा था।

धीरे-धीरे आदमी के चारों ओर छायी रोशनी की चकाचौंध इतनी ज़्यादा हो गयी कि लिलियेस ने फिर अपनी आँखें बन्द कर लीं। इसके बाद फिर उसकी आँखें लग गयीं और वह फिर सो गयी। कल रात उसे रेल में ज़्यादा नींद नहीं आयी थी।

कुछ देर बाद जब उसकी आँखें खुलीं तो उसने देखा कि सुबह हो गयी है और खिड़कियों से लहराता हुआ नीला सागर दिखाई दे रहा है, और सूरज की किरणें कमरे में फैली हुई हैं। तभी नीचे के दरवाज़े पर किसी की दस्तक सुनकर उसने अपनी माँ को जगाया।

मेरी ने उठकर स्कॉर्फ़ खोल दिया, और लिलियेस से कहा 'देख दरवाज़े पर कौन है ?'

दरवाज़े के बाहर सफ़ेद बालोंवाले एक वृद्ध सज्जन खड़े थे। उनके पीछे हाथ में एक बड़ी तश्तरी लिये एक नौकरानी खड़ी थी।

वृद्ध सज्जन ने पूछा "तुम शायद मेरी की लड़की हो।

"जी हाँ मेरा नाम लिलियेस है। आइए, अन्दर तशरीफ़ लाइए। माँ ऊपर हैं।

मेरी इन वृद्ध सज्जन को देखकर बड़ी खुश हुई। उन्होंने सोफ़े से उठकर अभिवादन करते हुए कहा, 'आइए, अंकल ऐके ! बड़ी खुशी हुई आपके दर्शन

करके।"

"मुझे भी तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हो रही है।" जज ऐले ने कहा। फिर उन्होंने नौकरानी से कहा, "यह खाना यहाँ रखकर तुम जा सकती हो।" फिर, मेरी की ओर मुखातिब होकर बोले, "कल मैंने तुम्हें आते देखा था। उस वक्त तुम बहुत थकी हुई दिखाई पड रही थी, इसलिए मैं कल रात नही आया। लो, खाना खाओ, तुम्हें भूख लगी होगी। सुना है, क्लीवलैण्ड इस घर को खरीदने की फ़िराक में है।"

"हाँ," मेरी ने कहा, "उसका पत्र आया था कि वह आठ हज़ार डॉलर नकद देकर यह घर खरीदने को तैयार है।"

"सिर्फ आठ हज़ार! बेटी, तुम्हारी माँ ने सोलह हज़ार डॉलर देकर इसे मुझसे खरीदा था। मैंने इतनी कम कीमत सिर्फ इसलिए स्वीकार कर ली थी, क्योंकि मुझे उस वक़्त पैसों की सख्त ज़रूरत थी। आज इनकी कीमत पचीस हज़ार डॉलर से कम नही है।"

"क्लीवलैण्ड का कहना है कि यह घर भुतहा घर है, और इसलिए वह इससे ज़्यादा कीमत नही दे सकता। वैसे, मैं भूतो में विश्वास नहीं करती। पर, मेरे भाई केनेथ रीड, जिसका इस घर पर आधा अधिकार है, का भी यही खयाल है कि इस घर में भूत बसते हैं। वह इसे बेचने पर तुला हुआ है, और मेरे सामने अब घर को किसी भी कीमत पर बेचने के अलावा कोई और चारा नही है।"

"केनेथ को क्या मालूम कि यह घर भुतहा घर है?" जज ऐले ने पूछा।

"वह यहाँ श्रीमती ग्रीन के साथ आया था। श्रीमती ग्रीन और उसके परिवार के सदस्यो को होटल में जगह नही मिली थी। उन्होंने केनेथ से अनुरोध किया कि वह उन्हें एक सप्ताह के लिए इस घर में रहने दें। एक सप्ताह बाद होटल में चले जायेंगे। पर, ये लोग अगले दिन ही घर छोडकर चले गये। ,थ का कहना है कि सारी रात उन सबको साँकलो के बजने की ज़ोरदार आवाज़ें सुनाई पड़ती रही। वह इतना डर गया है कि किसी भी कीमत पर इस घर से छुटकारा पा लेना चाहता है।"

बीच में लिलियेस ने कहा, "क्या भुतहा घर इतने खराब होते हैं? मुझे कल रात इस कमरे में एक आदमी दिखाई दिया था। अगर वही भूत था तो .।"

"क्या बकवास कर रही है लिली?" मेरी ने कहा।

"सच कह रही हूँ, माँ! वह आदमी इस कोने में खडा था, और उसके हाथ में एक बड़ी सुन्दर बिल्ली थी। और उसके चारो ओर रोशनी छायी थी।"

"तूने कोई सपना देखा होगा। कोई आदमी होता, तो मुझे भी दिखाई देता।"

'पर आप उस वक्त सो रही थीं। मुझे उसकी बिल्ली बार-बार याद आती है। कितनी सुन्दर बिल्ली थी! काश मेरे पास भी ऐसी सुन्दर बिल्ली होती!

इससे पहले कि मेरी फिर अपनी बेटी को डाँटे, जज एल ने सिसिमेस से पूछा 'क्या तुमने उस आदमी के हाथ में वाकई बिल्ली देखी थी? उसके बारे में कुछ और बता सकती हो? क्या तुम्हें उस बिल्ली का नाम मालूम है?'

हाँ वह उसे 'सिल्कि डॉल बेबी' कहकर पुकार रहा था। उस आदमी की पलकें सुनहरी थीं। उसने हल्के भूरे रंग का सूट और हैट पहन रखा था।

जज ऐले सिसिमेस की बात सुनकर उदास हो गये। कुछ क्षण चुप रहकर उन्होंने कहा 'जिस बात को मैंने इतने समय तक छिपाने की कोशिश की थी, वह आखिर इस बच्ची पर जाहिर हो ही गयी। खैर, अब मैं सब बातें सच-सच बता ही देता हूँ। असल में यह बात मुझे तुम्हारी माँ को ही बता देनी चाहिए थी। यह घर पहले पोंसनहासन-परिवार के पास था और मैंने उनसे इसे खरीदा था।

पर आपने तो माँ से कहा था कि आपने ही इस घर को बनवाया था।

'वह मैंने झूठ कहा था। पोंसनहासन-परिवार पहले स्याम में रहता था। पर, जब उनके बेटे को दमा हो गया, तो डॉक्टरों ने उन्हें स्याम छोड़कर अमरिका के किसी समुद्रतट के पास जाकर रहने की सलाह दी। किसी ने उन्हें यह घर बताया और उन्होंने इसे देखते ही खरीद लिया। वे लोग स्याम से काफी पैसा लेकर आये थे। उस वक्त यह घर अधूरा था। उन लोगों ने इसे पूरा कराया। जब तक घर पूरा हुआ, पोंसनहासन-परिवार के लोग इसी कमरे में सोते और उठते बैठते थे, जिसमें इस वक्त हम बैठे हैं। पर, घर के पूरा होने से पहले ही उनके बेटे की मृत्यु हो गयी—इसी कमरे में। इस दुर्घटना के बाद पोंसनहासन के लोगों को इस घर से घृणा हो गयी और उन्होंने इसे मुझे बेच दिया। मैंने इसे सिर्फ इसलिए खरीदा था कि यह मुझे सस्ता मिल गया था। यहाँ रहने का मेरा कोई इरादा नहीं था, क्योंकि इसमें एक युवक की मृत्यु हो चुकी थी। गाँववालों को उसकी मृत्यु का पता नहीं चला, क्योंकि वे लोग गाँववालों से ज्यादा मिलते जुलते नहीं थे और उन्होंने मृत युवक को दूसरे राज्य—फिलाडेलफिया में दफनाया था। सिसि को जो आदमी दिखाई दिया था, वह यह मृत युवक ही था। उसकी पलकें सुनहरी थीं और उसके पास स्याम की कई सुन्दर बिल्लियाँ थीं। अपनी सबसे प्यारी बिल्ली को वह 'सिल्कि डॉल बेबी' कहकर पुकारा करता था।

"पर वे मौसकें?' मेरी ने पूछा।

"हाँ, वे मौसकें... उनके बारे में भी बताता हूँ," जज महोदय ने उदास स्वर में कहा। पर, इसी वक्त मेरी को सोफे पर एक रेंगता हुआ साया दिखाई पड़ा।

उसे उठाकर मेरी के हाथ में देते हुए जज महोदय ने कहा, "इसे सँभालकर रख लो, मेरी! यह एक 'जिन्दा भूत' की यादगार है। उसकी कोई और यादग— तुम्हें शायद नही मिल सकेगी।"

"आप सॉकलो के बारे में कुछ बताने जा रहे थे," मेरी ने उन्हें याद दिलाया।

"हाँ, अब सॉकलो के बारे में बताता हूँ। पहले इस क्षेत्र की सारी जमी मेरी थी। ५२ एकड के क़रीब थी सारी जमीन। जहाँ हम इस वक़्त बैठे हैं, व पहले एक छोटी-सी कोठरी थी, जिसमे कोई खिडकी नही थी। कोठरी के दरवा से एक रपटीली पगडण्डी समुद्रतट तक जाती थी। उसका अन्त होता था, ए गुफा में, जो ज्वार के समय बिलकुल छिप जाती थी। गाँव के बच्चे आपस बात किया करते थे कि वह गुफा समुद्री लुटेरों ने अपने छिपने के लिए बना थी। वे लुटेरे अकसर सॉकलो का प्रयोग करते थे, और ऐसा कहा जाता है कि कुछ लुटेरो की मृत्यु इस घर में हुई थी। यही है, इन सॉकलो के बज का राज। केनेथ रीड से पहले मैंने भी इन सॉकलो के बजने की आवा सुनी थी।"

मेरी ने कहा, "अगर लिलियेस को कल रात वह आदमी और बिल्ली दिखाई देती, तो मैं कभी विश्वास न करती कि इस घर में भूतो का बसे है। पर, अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है अब आपको मेरी एक मदद कर पडेगी, जज महोदय!"

"कैसी मदद, बेटी?" जज ऐले ने पूछा।

"मैं इस शर्त पर यह घर क्लीवलैण्ड को बेचने को तैयार हूँ कि अगर उ आगे चलकर घर में भूत दिखाई दिये, या सुनाई दिये, तो ये मुझे हमारा घ वापस कर देंगे।"

"इस शर्त का उल्लेख मैं बिक्री के कागजो में करा दूँगा।" जज ऐले आश्वासन दिया।

अगले दिन मेरी जज महोदय के साथ क्लीवलैण्ड से मिलने स्थानीय बै में गयीं, जहाँ घर की बिक्री की सब विधियाँ पूरी होनेवाली थी। मेरी ने ज महोदय और बैंक के मैनेजर से स्पष्ट कहा कि वह आठ हजार डॉलर पर घ बेचने के लिए सिर्फ इसलिए तैयार हुई है क्योंकि वह भूतोवाली शर्त बिक्री के काग़ज़ो में रखवाना चाहती है। अगर यह शर्त आपको मजूर हो, तो नक़द पै देकर घर लीजिए, नही तो क्षमा कीजिए।

क्लीवलैण्ड ने आरम्भ में इस शर्त को लेकर काफ़ी बहस की, पर मेरी क ज़िद देखकर वह अन्त में इस शर्त को मानने को तैयार हो गये। पर कागज पर दस्तखत करते वक्त उन्होने इतना अवश्य कहा, "भूत-प्रेत सब बकवास है।"

मेरी ने यह सुनकर कहा, "मैं सुना है कि मेरी माँ मेरी तरह भूत-प्रेतों की बातों का बकवास मानते हैं। देखिए मैं यह दावा नहीं कर रहा हूँ कि इस घर में भूत हैं ही। और यह भी नहीं कह रही हूँ कि भूत नहीं हैं। जो शर्त मैंने रखी है, वह एकदम साफ़ है। अब चूँकि आप इस शर्त को मानने पर तैयार हो गये हैं इसलिए मैं बैंक के अध्यक्ष और खजांची से प्रार्थना करूँगी कि वह बिक्री के कागज़ात पर, जिनमें यह शर्त उल्लिखित है अपने हस्ताक्षर कर दें। इसके बाद मैं क्लीवलैण्ड महोदय से प्रार्थना करूँगी कि वे मुझे सारी रक़म नक़द दे दें।

एक महीने बाद मेरी को क्लीवलैण्ड का एक पत्र मिला जिसमें कहा गया था— 'कृपा करके हमारे आठ हज़ार डॉलर वापस करके अपना घर वापस ले लीजिए। जब आपने यह घर हमें बेचा था तब आपको अच्छी तरह मालूम था कि यह एक भुतहा घर है। आपने भुतहा घर जान-बूझकर हमारे साथ धोखा किया है। यदि हमें फ़ौरन हमारी रक़म मिल जायेगी तो हम आपके ऊपर मुक़दमा नहीं चलायेंगे।

रक़म लौटाने का तो कोई सवाल था ही नहीं क्योंकि केनेथ रीड ने अपने हिस्से की रक़म कहीं और लगा दी थी और मेरी को मिली रक़म उसके पति के प्रयोगों में ख़त्म हो चुकी थी।

मेरी सोच ही रही थी कि क्लीवलैण्ड के पत्र का क्या जवाब दिया जाये कि उन्हें अगले दिन जज ऐंले ने पत्र द्वारा सूचित किया कि पिछली रात को क्लीवलैण्ड को उनके अपने घर की सीढ़ियों के नीचे मृत पाया गया। उनकी गरदन पर मार के निशान थे। ऐसा लगता था किसी ने उन्हें मुक्कों से मारा है।

इसके बाद क्लीवलैण्ड-परिवार के किसी सदस्य ने मेरी को घर के बारे में कोई पत्र नहीं लिखा।

कुछ वर्षों बाद जब मिसिमेस बड़ी हुई, तो वह इस घर को देखने गयी। पर, वह घर उसे नहीं मिला। पूछने पर मालूम हुआ कि क्लीवलैण्ड की मृत्यु के बाद उसे क्लीवलैण्ड-परिवारवालों ने ढहा दिया था। जिस जगह वह मकान खड़ा था वहाँ से अब एक सड़क गयी है, जिसे वैजवाटर रोड कहा जाता है।

मकान के ढहने के कुछ दिन बाद केनेथ रीड की भी मृत्यु हो गयी। उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार इस मकान की ज़मीन में ही दफ़नाया गया। इसके तुरन्त बाद मिसिमेस की माँ मेरी और मिसिमेस के पिता की भी मृत्यु हो गयी। उन्हें भी उनकी इच्छा के अनुसार इसी मकान में दफ़नाया गया।

भुतहा होने पर भी क्या आकर्षण था उस घर में कि उसके परिवार के सभी सदस्यों ने वहीं दफ़नाये जाने की इच्छा व्यक्त की यह मिसिमेस को कभी नहीं मालूम हो पाया।

भूत, जिसे अपनी चार उँगलियो की तलाश थी

फ़िलिपाइन्स द्वीपसमूह मे दूसरा सबसे बड़ा शहर सेबू नगर है। अप्रैल, १९४५ तक यह नगर जापान के अधिकार में था। अप्रैल के अन्त में, अमेरिकी सैनिको ने इसपर आक्रमण कर वहाँ से जापानियो को भगाने का जोरदार प्रयत्न किया। जून के मध्य तक, जापानी सैनिक इस नगर को छोड़कर भाग गये थे। अमेरिकियो ने उसपर अधिकार करके, उसे नये सिरे से बसाने की तैयारियाँ शुरू की। जिन अमेरिकी सैनिकों ने आक्रमण में भाग लिया था, उन्हे एक महीने की छुट्टी दी गयी, ताकि वह यह समय आराम से बिताकर अपने को भावी आक्रमण के लिए तैयार कर सकें। जापान पर आक्रमण करने के लिए अमेरिका ने सेबू नगर को एक अड्डा बनाया था।

एक महीने की छुट्टी पाकर गोर्डन कॉलियर नाम के अमेरिकी सैनिक ने अपने दायें कान का इलाज कराने का निश्चय किया। उसे इस कान से कम सुनाई देने लगा था, और सेना के डॉक्टर उसका इलाज करने में असमर्थ रहे थे।

भागते-भागते जापानियों ने सेबू पर भारी बमबारी की थी, और नगर के अनेक प्रतिष्ठान और दुकानें इस बमबारी में ध्वस्त हो गये थे। फिर भी नगर के प्रमुख कान-विशेषज्ञ डॉ मैक्स वॉरोमियो का चिकित्सालय बमबारी से अप्रभावित रहा था। गोर्डन कॉलियर इलाज के लिए इस चिकित्सालय में पहुँचा। एक सप्ताह तक दवा और इंजेक्शन देकर डॉ मैक्स वॉरोमियो ने कॉलियर का कान अच्छा कर दिया, और उसे ठीक सुनाई देने लगा।

इलाज के बाद डॉ मैक्स और उनकी, आकर्षक जर्मन पत्नी ने कॉलियर को अपने घर रात के खाने पर बुलाया। खाने के दौरान, डॉ मैक्स और उनकी पत्नी बराबर एक दूसरे की ओर देख रहे थे, और कभी स्नेहाभिभूत हो जाते थे, और कभी एकबारगी भय-स्तब्ध हो जाते थे।

खाने के बाद तीनो ड्राइंगरूम में बैठकर बातें करने लगे। पता नही, कब और कैसे बातो का विषय अलौकिक अनुभव और अतीन्द्रिय बोध हो गया। कॉलियर ने मैक्स-दम्पति को बताया कि वह अनेक भविष्यवक्ताओ और मीडियमो को जानता है। उसने बताया कि फ्लोरिडा में एक बार उसने एक मीडियम के अँधेरे कमरे में अनेक भूतो को साकार होते देखा था। एक भूत तो सौ साल पहले की फौजी वर्दी पहने, और हाथ में तलवार लिये प्रकट हुआ था।

कॉलियर की इस बात का डॉ मैक्स की पत्नी पर विचित्र प्रभाव हुआ। वह बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चली गयी। कॉलियर और डॉ मैक्स चुपचाप सिगार पीते रहे। कॉलियर को लगा, डॉ. मैक्स ऊपर से शान्त दिखाई देते हुए भी अन्दर मे काफी अशान्त थे। उसे यह भी लगा कि वह उससे कुछ कहना चाह

रहे हैं, पर कहने में कुछ हिचक रहे हैं। कॉलियर न उसकी मनःस्थिति भाँपकर चुप रहना ही ठीक समझा और वह कमरे के बाहर देखता हुआ चुपचाप सिगार पीता हुआ डॉ मैक्स के मुँह से कुछ सुनने के इन्तजार में बैठा रहा।

अन्त में जब डॉ मैक्स से न रहा गया तो उन्होंने आहिस्ता-आहिस्ता कहना शुरू किया 'आपने अभी मीडियमों और भविष्यवक्ताओं के बारे में जो कुछ कहा उससे मुझे ऐसा लगता है कि मुझे आप-जैसे आदमी की ही जरूरत है। आप जंगल में भी काफ़ी दिनों तक रह चुके हैं, इसलिए आप एक संयत और शान्त स्वभाव के व्यक्ति भी अवश्य होंगे। मैं आपकी खुशामद नहीं कर रहा हूँ। मैं सिर्फ़ यह कहना चाह रहा हूँ कि आप ऐसे व्यक्ति हैं, जो कोई अतिप्राकृत प्रसंग देखकर घबराता नहीं। मिसाल के तौर पर आप यदि किसी मृत या अन्य भूतों को देख लें तो शायद घबरायेंगे नहीं।

कॉलियर को डॉ मक्स की बात सुनकर आश्चर्य हुआ। पर उसने कहा '*शायद नहीं।*'

'बल्कि, अलौकिक और अतिप्राकृत प्रसंग देखकर शायद आप उसके बारे में कुछ जानकारी और खोजबीन करने के लिए भी तैयार हो जायेंगे।

'हाँ शायद।'

'एक जमाना था कॉलियर जब मेरी मानसिक शक्ति और दिलेरी भी तुम्हारी-जैसी ही थी। लोग मेरी दृढ़ता और कर्मशक्ति के क़ायल थे। पर, आज इस शहर में मेरे-जैसा डरपोक और दब्बू आदमी दूसरा न होगा। पर, बहुत ज्यादा साहसी और बहादुर बनने की कोशिश मत करो। नहीं तो तुम्हारा अन्त भी या तो क़ब्र में होगा या किसी पागलखाने में। उम्मीद है, इस चेतावनी से तुम डर *नहीं गये होगे।*"

कॉलियर ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप सिगार पीता रहा।

कुछ क्षण चुप रहने के बाद डॉ मैक्स ने फिर कहना शुरू किया कुछ वर्षों से मेरा और पत्नी का जीवन काफ़ी विपद्ग्रस्त बना हुआ है। और जिन कारणों से हमारा जीवन विपद्ग्रस्त बना है, उन्हें सुनोगे तो तुम हमपर हँसे बिना नहीं रहोगे। समझोगे हम दोनों पागल हो गये हैं। हक़ीक़त यह है कि हम दोनों अगर पागल नहीं हुए हैं तो जल्दी ही हो जायेंगे। जैसे-जैसे वक्त बीतता जाता है, हमारे पागल होने का समय निकट आता जाता है।

'आप इस बारे में मुझसे क्या चाहते हैं ?' कॉलियर ने शान्त स्वर में पूछा।

'अगर आप वाक़ई इतने निडर और हिम्मती हैं, जितना कहते हैं तो मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप हमारी विपत्ति को दूर करें।

'पर आपकी विपत्ति का कारण क्या है आख़िर ?

"इस बारे में मेरा पहले से कुछ कहना उचित नही होगा। बेहतर यह होगा कि आप खुद अपनी आँखो से घटनाओ को देखकर वस्तुस्थिति का अध्ययन करें। आइए, मेरे साथ आइए।"

दोनो ड्राइगरूम से निकलकर बरामदा पार करके एक बडे कमरे में पहुँचे, जो एक प्रयोगशाला-जैसा लगता था। एक मेज़ पर काँच की कुछ नलियाँ रखी हुई थी, जिसमें तरह-तरह के रंगीन द्रव पदार्थ रखे हुए थे।

डॉ मैक्स ने कहा, "इन नलियो में कई नायाब द्रव पदार्थ हैं। मेरे पास कई और नलियाँ भी थी, पर वे नष्ट हो गयी। अब आपसे प्रार्थना है कि आप आज की रात इस प्रयोगशाला में ही बितायें। आप यहाँ पडे सोफे पर सो सकते हैं। अगर आपको कभी अकेलापन महसूस हो, तो मुझे आवाज़ दे दीजिएगा। मैं आ जाऊँगा। मेरी आँखें एक आवाज़ से ही खुल जाती हैं। और हाँ, यदि आप सोने के लिए तैयार न हों, तो मैं आपसे ज्यादा आग्रह नहीं करूँगा।"

कॉलियर वास्तव में इतना साहसी नही था, जितना उसने डॉ मैक्स को बताया था। पर, वह यह दिखाने के लिए कि वह सचमुच भूतों और जिनो से नही डरता, सारी रात प्रयोगशाला में बिताने के लिए राज़ी हो गया।

सोफे पर लेटने के बाद कॉलियर को पता चला कि रात-भर इस कमरे में सोना बडा मुश्किल होगा। कमरे में रासायनिक पदार्थों की तेज़ गन्ध फैली थी। नलियों में विभिन्न रोगियो के रोग के कीटाणुओ के नमूने थे शायद। सारे घर में पूर्ण शान्ति व्याप्त थी, जो कॉलियर को बडी डरावनी मालूम हो रही थी।

पर, कुछ देर बाद कमरे में फैली गन्ध और डरावने वातावरण के बावजूद कॉलियर को नीद आने लगी, और वह सपनो से खाली नीद में सो गया।

रात में सहसा उसकी आँखें खुल गयी। कमरे में ज़ोर का एक धमाका हुआ था। इस धमाके को सुनकर वह सोफ़े से उठ खडा हो गया, और चारो तरफ देखने लगा। शुरू में तो उसे कुछ दिखाई नही दिया, लेकिन फिर उसने किसी वस्तु को दीवार के सहारे चलते देखा। उसके रोंगटे खडे हो गये, और दिल ज़ोर-ज़ोर से धडकने लगा।

जब उसके होशोहवास कुछ ठीक हुए, तो उसने एक आदमी की धुँधली-सी शक्ल अपने सामने देखी। यह आदमी फिलिपाइन्स का लगता था। वह धीरे-धीरे चलकर नलियो की ओर बढ रहा था। नलियो के पास पहुँचकर, उसने प्रत्येक नली का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया, और फिर कॉलियर को देखकर और कन्धे उचकाकर अन्तर्धान हो गया।

कॉलियर ने ग़ौर किया कि उस आदमी के बायें हाथ में सिर्फ़ चार उँगलियाँ थी। यदि वह धमाके के साथ प्रकट होकर सहसा विलीन न हो जाता, तो उसे यही लगता कि चार उँगलियोंवाला यह आदमी डॉ मैक्स का कोई नौकर है

जो कमरे में कोई खास मक्खी कैसे आया है। पर, उसके सहसा प्रकट होने और सहसा विलीन होने से स्पष्ट था कि वह कोई जिन्दा आदमी नहीं एक भूत था।

कॉलियर ने कमरे की बत्ती जलायी। सारे कमरे को गौर से देखा। उस आदमी के आने और जाने का कोई प्रमाण कहीं मौजूद नहीं था। शेष रात उसने सोफ़े पर बैठे बितायी। न मालूम वह चार उँगलियोंवाला आदमी कब आ जाये?

सुबह पाँच बजे डॉ मैक्स ने प्रयोगशाला में प्रवेश किया और कॉलियर को सोफ़े पर बैठे देखकर पूछा, 'उसे देखा?

'हाँ'' और कॉलियर ने रात की सारी घटना सुना दी। डॉ मैक्स उसके साथ अपने कमरे में आये और कॉलियर को एक कुरसी पर बैठने को कहकर बोले, 'इससे पहले कि आप अपनी छुट्टी पूरी करके वापस लड़ाई के मैदान में जायें मेरी प्रार्थना है कि आप इस अलौकिक घटना को समझकर उसका कोई तर्कसंगत कारण पेश करें। पिछले तीन वर्षों से चार उँगलियोंवाले इस भूत की वजह से मेरी और मेरी पत्नी की नींद हराम हो गयी है, और हम एक रात भी पूरी नींद नहीं सो सके हैं। वह रोज़ आधी रात को प्रकट होकर मुझे झँझोड़कर उठा देता है। फिर सोने के कमरे से मेरी प्रयोगशाला में जाता है और वहाँ सब मक्खियों का मुआयना कर कन्धे उचकाकर गायब हो जाता है। रोज़ बिना नागा ऐसा ही होता है, और मैं कुछ नहीं कर पाता।

''उसे क्या चाहिए?

'उसे अपनी चार उँगलियाँ चाहिए।

''आह!

'१९४२ में जब इस शहर पर हमला हुआ था तब इस शहर के अधिकांश लोग शहर छोड़कर पहाड़ियों की तरफ़ भाग गये थे। पर, कुछ अभागे लोग भाग नहीं पाये और यहीं अटके रह गये। जब अमेरिकनों ने यहाँ से जापानियों को भगाया तो इन अभागे लोगों ने जापानियों के जुल्म की रोंगटे खड़े कर देनेवाली कहानियाँ सुनायीं। जापानी सैनिक बच्चों को ऊपर उछालकर उन्हें अपनी बायनेटों पर सँभालते थे। किसी की नाक काटी गयी, किसी के कान। महिलाओं के स्तन काटे गये। जिस अभागे आदमी का भूत रोज़ आकर हमें तंग करता है उसकी चार उँगलियाँ कस्ट डाली गयीं। यह आदमी अपना कटा हुआ हाथ लेकर मेरे पास आया था और चाहता था कि मैं उसके घावों पर पट्टी बाँध दूँ। जब उसका ज़ख्म ठीक हो गया तो उसने मुझसे फ़ीस के बारे में पूछा। मैं जानता था कि वह मेरी फ़ीस देने की स्थिति में नहीं है। पर उसे बुरा न लगे इसलिए मैंने उससे कहा कि यदि वह अपनी चार उँगलियाँ ले आये तो मेरी फ़ीस अदा हो जायेगी।'

"उसने पूछा नही कि आप उसकी चार उँगलियों का क्या करेंगे ?"

"पूछा था। मैंने जवाब दिया, मैं उनके साथ कुछ प्रयोग करूँगा। सारा झगडा यही से शुरू हुआ। मेरी बात सुनकर वह बहुत नाराज हुआ, और कहने लगा कि उसके धर्म के अनुसार यदि आदमी अंगविहीन होकर मरता है, तो उसकी आत्मा को शान्ति नही मिलती, और उसका भूत यहाँ-वहाँ भटकता रहता है। फिर उसने बताया कि उसकी चारो कटी हुई उँगलियाँ उसके पास सुरक्षित है, पर वह उन्हें अपने हाथ में जुडवाना नही चाहता। जब मैंने पूछा कि बिना जोडे वे सुरक्षित नही रह पायेंगी और सड जायेंगी। उसने कहा कि वह उन्हें नमक मिले बर्फ में जमाकर सुरक्षित रखना चाहता है। मैंने उसे समझाया कि इस तरह उसकी उँगलियाँ सुरक्षित नही रहेंगी। उन्हें सुरक्षित रखने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि वह उन्हें मेरे पास छोड जाये, और मैं उन्हे 'फॉरमेलडिहाइड' में भिगोकर रखूँगा, जहाँ वे वर्षों तक अक्षुण्ण रहेंगी। जब उसे मेरी बात पर विश्वास हो गया, तो उसने चारो उँगलियाँ मुझे दे दी। पर, जाते समय कहा, "लेकिन, डॉक्टर, याद रखियेगा कि मरने के बाद मुझे इन उँगलियो की जरूरत पडेगी।" मैंने उसकी बात को हँसी में टाल दिया, "और मामला खत्म हो गया।"

"वे उँगलियाँ अब कहाँ है ?" कॉलियर ने पूछा।

"जापानियों ने भागते-भागते शहर की जिन चीजो को नष्ट किया, उनमें मेरी प्रयोगशाला भी थी। सौभाग्य से वे मेरी सारी प्रयोगशाला को नष्ट नही कर पाये, पर जिन वस्तुओ को उन्होने नष्ट किया, उनमें से दुर्भाग्य से, वे चारो उँगलियाँ भी थी, जो 'फारमेलडिहाइड' की एक नली में रखी हुई थी। जापानियो के जाने के बाद मुझे यह भी मालूम पडा कि वे जाते-जाते उस अभागे व्यक्ति की हत्या भी कर गये थे जिसकी उँगलियाँ मेरे पास सुरक्षित थी, और जिसका भूत अब उन्हें ढूँढने रोज रात को मेरे पास आता है।"

"उसके भूत के अस्तित्व का पता आपको कब और कैसे चला ?"

"उसकी मृत्यु के तीन-चार दिन बाद सोते समय मुझे लगा कि कोई मेरा हाथ झटककर मुझे उठाने की कोशिश कर रहा है। जब मैं उठा, तो मैंने अपने साथ उसी आदमी को खडे पाया, जिसकी चारो कटी हुई उँगलियाँ कभी मेरे पास थी। वह मेरा हाथ पकडकर बडी नाराजगी के साथ मुझे देख रहा था। मुझे यह जानने में देर न लगी कि वह उस आदमी का भूत है, और अपने वायदे के अनुसार अपनी उँगलियाँ माँगने आया है। उस दिन से वह रोज रात को आता है और इसी तरह मुझे तंग करता है। हालाँकि उसके इस तरह आने से मुझे कोई शारीरिक कष्ट नही होता, पर जो मानसिक व्यथा होती है, वह असह्य है, और मैं उसका वर्णन आप से नही कर सकता। मेरी पत्नी भी रोजाना की इस

मानसिक यातना से तंग आ गयी है। हम दोनों अच्छी तरह सो भी नहीं पाते। रात को हमेशा डर लगा रहता है, न जाने वह कब आ जाये, और क्या कर बैठे?

कॉलियर ने डॉक्टर से कहा कि वह एक सप्ताह बाद फिर आयेगा, और फिर रात-भर उसकी प्रयोगशाला में सोयेगा।

अपने सैनिक शिविर में आकर उसने भूतों के बारे में एक पुस्तक को, जो उसके पास सदा रहती थी दुबारा पढ़ा। इस पुस्तक में कहा गया था कि मृत्यु के समय यदि आदमी की कोई इच्छा अपूर्ण रह गयी हो, तो उसका भूत उसे पूरा करने में ही लगा रहता है। और, इसी सिलसिले में वह बार-बार पृथ्वी पर अवतरित होता है। वास्तव में भूत जीवित व्यक्ति का उभयधर्मी प्राणी ही होता है। जिस तरह कछुए को पानी से जमीन पर और जमीन से पानी पर आने में कोई कठिनाई नहीं होती उसी प्रकार भूत को अपना सूक्ष्म शरीर छोड़कर, जीवितावस्थावाला शरीर धारण करने में कोई कठिनाई नहीं होती। भूत लोग ऐसा बदले की भावना से प्रेमोन्माद में या घृणा के कारण करते हैं। जबतक भूत की इच्छा पूरी नहीं होती वह अपना सूक्ष्म शरीर त्याग कर पार्थिव शरीर ग्रहण करता रहता है। जब उसकी इच्छा पूरी हो जाती है, तो उसे अपना सूक्ष्म शरीर त्यागने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

इस मामले में भूत की इच्छा पूरी करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था क्योंकि उसकी चारों उँगलियाँ नष्ट हो चुकी थीं। पर, कोई समझौता इस मामले में अवश्य हो सकता था।

अगले दिन कॉलियर एक अन्त्येष्टि-निर्वाहक के पास पहुँचा और उससे मानव शरीर के किसी मृत आदमी की चार उँगलियों की माँग की। वह उन उँगलियों के लिए अच्छी खासी रकम देने को तैयार था। इस रकम के बदले उसे चार उँगलियाँ मिल गयीं।

डॉक्टर मैक्स की प्रयोगशाला में सोने से पहले कॉलियर ने वे चारों उँगलियाँ एक नली में रख दीं और सोने चला गया।

रात के बारह बजे के करीब एक धमाका हुआ और कुछ क्षण बाद सुपरिचित भूत उसके सामने प्रकट हुआ। इस बार कॉलियर ने उसे साफ-साफ देखा। उसकी आकृति आरम्भ में बड़ी अस्पष्ट थी पर बाद में वह जीते-जागते आदमी जैसी हो गयी। उसने हमेशा की तरह हर नली का मुआयना शुरू किया। जब उसने उस नली को हाथ में लिया जिसमें चार उँगलियाँ रखी थीं तो उसका शरीर उत्सुकता से काँपने लगा। पर जब उसने बारीकी से उन उँगलियों को देखा तो क्रोध और निराशा से वह तिलमिला उठा और उसने नली को फर्श पर दे मारा। इसके बाद वह गायब हो गया।

नली के फर्श पर गिरने की आवाज़ सुनकर पास के कमरे से डॉक्टर मैक्स वहाँ आये, और कॉलियर से पूछने लगे, "क्यों, क्या हुआ ? तुम ठीक तो हो न ?"

कॉलियर ने उसे फर्श पर पड़ी नली दिखायी, जिसमें तीन कटी हुई उँगलियाँ पड़ी थी। कॉलियर को आश्चर्य हो रहा था कि एक उँगली कहाँ गयी ? जब वह अन्त्येष्टि-निर्वाहिक के पास से आया था, तब तो पूरी चार थी। शायद एक रास्ते में गिर गयी।

उसने डॉ मैक्स से कहा, "मैं ठीक तो हूँ, पर थोडा निराश हूँ।" और फिर उसने डॉक्टर मैक्स को बताया कि कैसे चार उँगलियो का इन्तज़ाम करके भूत को सन्तुष्ट करने की कोशिश की थी। डॉक्टर ने सारी बात ध्यानपूर्वक सुनकर कहा, "आपका विचार सचमुच प्रशसनीय है, पर मुझे लगता है कि मेरी यातनाओ का अन्त ऐसी तरकीबो से नही होगा। खैर, अब मैंने तय किया है कि भविष्य मे आपको कभी भी रात में प्रयोगशाला में नही जाने दूँगा। जब मैंने नली के गिरने की आवाज़ सुनी, तो मुझे लगा कि आपको कुछ हो गया है। नही, नही, आप भविष्य में यहाँ नही सोयेंगे।"

अगले दिन कॉलियर ने अन्त्येष्टि-निर्वाहिक को कुछ राशि और देकर उसी आकार की एक और उँगली खरीदी, और उसे लेकर डॉक्टर के घर आया। पर, डॉक्टर उसे अब और प्रयोगशाला में सोने देने के लिए तैयार नही थे।

अन्त में यह तय पाया कि कॉलियर चारो उँगलियाँ एक नली में रख देंगे, और उस नली को प्रयोगशाला में रखकर एक दूसरे कमरे में, जो प्रयोगशाला से काफ़ी दूर था, सोयेंगे। यह भी कि कॉलियर किसी भी हालत में प्रयोगशाला में नही जायेंगे।

उस रात को कॉलियर प्रयोगशाला में नही सोये। पर, आधी रात तक उन्हे नींद नही आयी। वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि भूत आज रात क्या करता है ?

आधी रात के क़रीब हाथ मे एक फ्लैशलाइट लिये डॉ मैक्स उसके कमरे में आये। वे बहुत खुश और सन्तुष्ट नज़र आते थे। उनकी आँखो मे चमक थी, और ओठो पर मुसकराहट। उन्होने कॉलियर को गले से लगाते हुए कहा, "आपका प्रयोग सफल रहा। अब हमें कभी भूत के दर्शन नही होगे। अब वह कभी हमें तग करने नही आयेगा। मैं आपका अहसान कभी नही भूलूँगा। आपने मेरे और मेरी पत्नी के प्राण बचाये हैं।"

"क्या हुआ, बताइए तो।"

"आज आधी रात को वह फिर आया था। आज जब उसने मुझे झँझोडा तो वह पहले से भी ज्यादा नाराज़ नज़र आता था। कल की निराशा ने उसकी

नाराजगी को बता दिया था। उसकी आँखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। पर, प्रयोगशाला में अपनी चारों उँगलियाँ पाने के बाद वह फिर मेरे कमरे में आया, और उसने फिर मुझे झँझोड़ा। पर, इस बार वह मुसकरा रहा था। उसकी आँखों में कृतज्ञता के भाव थे। जब उसने जाते हुए मुझे आखिरी बार नमस्कार किया तो मैंने देखा उसके बायें हाथ में पाँचों उँगलियाँ फिट थीं। इसके मायने यह है कि उसे अब विश्वास हो गया है कि उसे उसकी लापता हुई उँगलियाँ वापस मिल गयी हैं। अब वह कभी नहीं आयेगा।

"मैंने तो सिर्फ एक प्रयास करके देखा था। मुझे खुशी है कि मेरा प्रयोग सफल रहा और आपकी मानसिक यन्त्रणा सदा के लिए दूर हो गयी।

लड़ाई के बाद भी डॉ. मैक्स बराबर कॉलियर से पत्र-व्यवहार करते रहे। वे यह लिखना नहीं भूलते थे कि उन्हें स्थायी शान्ति और सुख प्रदान करने के लिए वह उनके चिर ऋणी रहेंगे। इस घटना के बाद वे दस वर्षों तक जीवित रहे।

अमेरिका लौटने पर कॉलियर ने इस घटना को अनेक समाचारपत्रों में प्रकाशित कराया। उसके विवरण के साथ डॉ. मैक्स और उनकी पत्नी का इस आशय का वक्तव्य भी प्रकाशित होता था कि प्रकाशित विवरण के सभी तथ्य सही हैं, और कॉलियर ने अपनी दिलेरी और चतुराई से उनकी जान बचाकर उनपर भारी अहसान किया।

कहानी कुछ जिद्दी भूतों की

यह कहानी है वेल्स के एक खान-इंजीनियर जॉन बारलेमान उर्फ 'जैक' की, जिसने भूतों की विनाश-लीला को अपनी आँखों से देखा।

जैक वेल्स की ताँबे की एक खान में इंजीनियर था। उसकी आयु २७ वर्ष की थी। वह अविवाहित था, और उसका सारा फालतू वक्त अपने मित्रों के साथ गपशप करते खेलते या शराब पीते बीतता था।

एक दिन उसके परिचित एक कैथ पादरी ने उसे एक अजीब किस्सा सुनाया। उसने कहा कि जैक की खान में काम करनेवाला जायसो नाम का एक मजदूर उसके पास आकर बोला कि कुछ दिनों से कुछ भूत उसके घर के अन्दर उत्पात करते रहते हैं। अगर वह भूत-चिकित्सा करके उन भूतों को वहाँ से भगा सके तो वह उसका बहुत शुक्रगुजार होगा। मैंने उसके घर जाकर भूत-चिकित्सा की पर भूत जायसो के घर से फिर भी नहीं भागे। बेचारा जायसो भूतों के उत्पातों से बहुत परेशान है। उसकी समझ में नहीं आता कि क्या करे?

जैक ने पादरी से कहा कि वह खुद जायसो के घर जाकर देखना चाहता है कि आखिर मामला क्या है? पादरी उस बात

वा। वहाँ उन्होंने शहर के मेयर को भी मौजूद पाया।

वाक्यो के घर में रसोईघर के अलावा सिर्फ दो छोटे कमरे थे। परिवार में की पत्नी के अलावा, आठ से पन्द्रह वर्ष तक की आयु की तीन लडकियाँ थीं। रिवार के सब सदस्यो के चेहरों पर जख्मों के निशान नजर आ रहे थे।

वाक्यो की पत्नी ने घर के एक कोने में रखे हुए पत्थरो, टाइल के टुकडों आदि का एक ढेर दिखाते हुए कहा, "पिछले दस दिनों से भूत हमपर इनसे पथराव करते चले आ रहे हैं। देखिए, क्या हाल कर डाला है उन्होंने हमारा?"

"तुम्हें इस पथराव में कोई खास या अजीब बात नजर आयी?" जैक ने पूछा।

वाक्यो की पत्नी ने कुछ सोचकर कहा, "खास बात यही है कि पथराव घर के अन्दर ही होता है, वाहर विलकुल नही। और, मेरे पति को भूत विलकुल नही सताते।"

जैक ने पादरी और मेयर के साथ सारे घर का निरीक्षण किया, और फिर एक कमरे के वीच में एक कुरसी रखकर मँझली लडकी को, जिसकी आयु वारह वर्ष थी, उसपर वैठने को कहा। उस लडकी के मुँह और सिर पर मार के निशान सवसे ज्यादा थे। फिर ये तीनो दरवाजा वन्द करके उसके सहारे खडे हो गये, कन्धे से कन्धा भिडाये। कमरे की अकेली खिडकी को मजवूती से वन्द कर दिया गया। कमरे में कोई ऐमी जगह नही थी, जहाँ कोई आदमी—छोटा या वडा—छिप सकता हो। तीनों लगातार लडकी को देखे जा रहे थे।

क़रीव वीस मिनट तक कुछ नही हुआ। इसके वाद किसी के फर्श पर कूदने की आवाज़ सुनाई पडी, और दो मुट्ठियो के वरावर वडा पत्थर आकर लडकी के गाल पर लगा। लडकी रोने-चिल्लाने लगी। मेयर ने आगे वढ़कर पत्थर को उठा लिया, और चिल्लाने लगे, "कोई चाल जरूर खेली जा रही है। कोई न कोई चाल जरूर है।" यह कहकर उन्होंने पत्थर को खिडकी में दे मारा।

जैक और पादरी ने कमरे की दीवार, छत और फर्श का अच्छी तरह मुआ-यना किया, पर कही कोई छेद नजर नही आया। यह भी मुमकिन न था कि लडकी ने पत्थर को अपने कपडों में छिपा रखा हो, और तीनों को चकमा देक अपने गाल पर मार लिया हो। जाहिर था कि पत्थर क़मरे की वायी दीवार ओर से आया। पर, वह दीवार एकदम सपाट थी, उसमें कही कोई छेद न थ

जैक, पादरी और मेयर दंग रह गये। भूत ने अपने कमाल-भरे कौशल तीनों को पराभूत कर दिया था। उनके सामने यह मानने के अलावा कोई न था कि यह काम किमी भूत का ही है, किसी आदमी का नही। और वह भी ऐमा धूर्त कि उमपर पादरी महोदय की भूत-चिकित्मा का कोई असर हुआ था।

भूर

पैक ने बाजार से मरहम लाकर लड़की के घावों पर लगाया, जिससे उसके सूजे हुए और जख्मी भागों को कुछ आराम मिला। फिर उसने अपने हाथों से सबको बियर पिलायी और अच्छा खाना खिलाया। उस लड़की को उसने कुछ सस्ते जेवर भी दिये।

घर आकर पैक ने इस घटना के बारे में काफ़ी सोचा पर वह किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका। उसने अनेक भूत-चिकित्सकों से मिलकर बाम्बी के घर के भूतों का 'इलाज' कराने की कोशिश की पर भूतों ने उन सबको मात दे दी, और रह-रहकर घर की मालकिन और लड़कियों को पत्थर मारकर घायल करता रहा। अन्त में भूतों की मार से इन बेचारियों को बचाने के लिए पैक ने कुछ दिन के लिए उन्हें अपने घर में शरण दी।

लड़कियों और बाम्बी को पत्नी के घर से जाते ही भूतों का उपद्रव बन्द हो गया। जब एक सप्ताह बाद वे पुनः अपने घर वापस आयीं तो उन्होंने पाया कि भूतों का उपद्रव जिस प्रकार सहसा आरम्भ हुआ था उसी प्रकार सहसा समाप्त हो गया।

इस कहानी को पेरू के एक समाचारपत्र में प्रकाशित कराते हुए अन्त में पैक ने कहा, 'शायद आप इस कहानी पर विश्वास न करें। मैं भी नहीं करता। पर, मेरे साथ दिक्कत यह है कि मैंने इस कहानी की सारी घटनाएँ अपनी आँखों से देखी थीं घटनाएँ जो तब की भाँति अब भी मेरे लिए अज्ञेय हैं।

एक सन्त, जो भूत बने

मायरलैण्ड के जर्ज इवीस अपनी दो महिला-मित्रों के साथ डब्लिन से एक मित्र के घर रात के खाने पर जा रहे थे। एक महिला-मित्र कार चला रही थी और दूसरी उसके बाजू में बैठी थी। सफ़र क़रीब एक घण्टे का था।

जब इवीस के मित्र का मकान क़रीब बीस मिनट के सफ़र की दूरी पर रह गया तो उन्होंने ग़ौर किया कि कुहरे से ढके रास्ते के बीचोबीच लम्बा लबादा ओढ़े एक आदमी खड़ा है। इवीस को उम्मीद थी कि महिला-ड्राइवर ने भी उस आदमी को देख लिया होगा, और कार को उससे बचाकर ले जायेगी या उसे रास्ते से हटाने के लिए हॉर्न बजायेगी। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ और कार सीधी चलती गयी।

कार जब उस आदमी के पास पहुँची तो इवीस के मुँह से चीख निकलने को हुई पर उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि तभी वह आदमी ग़ायब हो गया। हो सकता है कि वह सड़क के किनारे की ईंटों की दीवार को पार कर गड्ढे में कूद गया हो, पर यह असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य था। इतने अँधेरे में ऐसा कमाल कोई प्रवीण धावक और कूदनेवाला ही दिखा सकता था।

जब कार उस स्थान से पार हो गयी, जहाँ वह आदमी खडा था, तो इवीस उस आदमी का ज़िक्र दोनो महिलाओं से किया। पर, उन्होंने इवीस को बताया क उन्हें कोई आदमी नही दिखाई दिया। इवीस यह सुनकर आश्चर्यचकित रह या, कारण उसे वह आदमी कोहरे के बावजूद साफ-साफ़ सडक के बीचोबीच खडा हुआ दिखाई दिया था। उसने यह मानकर सन्तोष कर लिया कि कार चलाने में व्यस्त होने के कारण महिला-ड्राइवर का ध्यान उस आदमी की ओर नही गया होगा। रहा सवाल दूसरी महिला का, तो हो सकता है वह उस क्षण कहीं और देख रही हो, या सो गयी हो। पर, खुद वह उस आदमी को नहीं भुला सका, और उसकी याद उसे अपने मित्र के घर पहुँचने के बाद भी आती रहीं।

मित्र के घर खाना खाते-खाते इवीस ने अपने मेजबान से उस रहस्यमय आदमी का ज़िक्र किया, जो उसे रास्ते में, लबादा पहने, दिखाई दिया था।

मित्र ने मुसकराकर कहा, "आप पहले आदमी नही है, जिसने उस आदमी को रास्ते के बीचोबीच खडे हुए देखा। अन्य कई लोग भी उसे देख चुके हैं। खुद मैंने उसे ठीक उसी स्थान पर खडे कई बार देखा है।"

"क्या आपको मालूम है कि वह कौन है?" इवीस ने पूछा।

"एक उपाख्यान के अनुसार सैकडों साल पहले यहाँ केविन नाम के एक सन्त रहते थे। उन्होंने जगत् से अपना नाता तोडकर यहाँ की एक गुफा में शरण ली थी, और अपना सारा समय पूजा-ध्यान में व्यतीत करते थे। एक स्थानीय महिला ने उन्हें एक बार गुफा में देख लिया, और उनसे प्रेम करने लगी। सन्त केविन भी भगवान् को भूलकर उससे प्रेम करने लगे। बाद में एक दिन उन्हें अपने किये पर इतना पछतावा हुआ कि उन्होंने सडक से, ठीक उसी स्थान पर जहाँ आपने उनके भूत को देखा था, नीचे गड्ढे में कूदकर आत्महत्या कर ली। व उनका भूत जब-तब दिखाई पड जाता है। पर, महिलाओं से इस भूत को तनी घृणा है कि वह उन्हें कभी नही दिखाई पडता।"

मार्चपास्ट करनेवाले भूत :

स्कॉटलैण्ड की इस कहानी का काल है—१९१५, जब पहले विश्वयुद्ध क आरम्भ हुए एक वर्ष बीत चुका था। पर, ग्लासगो के एक शान्त उपनगर देखकर ऐसा बिलकुल नहीं लगता था कि युद्ध चल रहा है। ब्रिटेन के अन्य नग में युद्ध के आसार स्पष्ट नज़र आते थे, पर इस उपनगर में युद्ध का कोई प्र दिखाई नहीं पडता था।

इसी उपनगर में पुरानी शैली के एक विशाल और भव्य भवन में रहती श्रीमती सिम्पसन। जिस रात की यह बात है, उस रात उन्होंने अपनी सहेली और उसकी भतीजी मावेल को रात के खाने पर आमन्त्रित किया थ

भू

खाना रात के दस बजे के क़रीब ख़त्म हुआ। जब माबेल और उसकी चाची श्रीमती सिम्पसन से विदा लेने लगीं, तो श्रीमती सिम्पसन ने कहा कि उन्हें अपने पति को लिखा एक पत्र डाक में छोड़ना है। उनके पति ब्रिटिश सेना में थे, और उनका ठीक पता श्रीमती सिम्पसन को मालूम नहीं था। वे पत्र सेना के प्रधान कार्यालय की मार्फ़त भेजती थीं।

पत्रपेटी उनके घर से क़रीब सौ गज़ के फ़ासले पर थी। उन्होंने कहा कि वे अपने मेहमानों के साथ घूमती-घूमती पत्र को पत्रपेटी में डाल आयेंगी। इस तरह उनका काम भी हो जायेगा और घूमना भी। रात के खाने के बाद कुछ दूर घूमना उनकी आदतों में शामिल था।

जैसे ही तीनों महिलाएँ मकान से बाहर आयीं, उन्हें सिपाहियों के मार्चपास्ट करने की आवाज़ सुनाई देने लगी। यह एक अजीब बात थी क्योंकि ग्लासगो के आसपास कहीं भी कोई सिपाही नहीं था। मार्चपास्ट की यह आवाज़ क्रमशः बढ़ती गयी और कुछ समय बाद ऐसा लगने लगा जैसे सिपाही उन्हींकी ओर बढ़े चले आ रहे हैं।

डरकर तीनों महिलाएँ घर में घुस गयीं।

पर, मार्चपास्ट की आवाज़ अभी भी कम नहीं हुई। उलटे बढ़ती ही गयी। कुछ मिनट के बाद इस आवाज़ की वजह से मकान के हॉल का जहाँ ये तीनों महिलाएँ बैठी थीं फ़र्श हिलने लगा, और उसमें रखी एक लम्बी मेज़ ऐसे हिलने लगी जैसे भूचाल आ गया हो।

डर के मारे तीनों महिलाओं का बुरा हाल था। इस अजीबोग़रीब और ख़ौफ़नाक घटना का कोई कारण उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

क़रीब तीन-चार मिनट बाद यह आवाज़ धीरे-धीरे कम होने लगी और अन्त में बिलकुल ख़त्म हो गयी। महिलाओं ने राहत की साँस ली और भगवान् को लाख-लाख धन्यवाद दिया। श्रीमती सिम्पसन ख़ास तौर पर खुश-नज़र आती थीं। बाद में जब वे चिट्ठी डालने गयीं, तो उन्होंने चौराहे पर खड़े पुलिस-कान्स्टेबुल से मार्चपास्ट की धड़कानेवाली आवाज़ के बारे में पूछा। पुलिस-कान्स्टेबल ने चकित होकर कहा कि वह पिछले दो घण्टे से ड्यूटी पर है, लेकिन उसे किसी मार्चपास्ट की कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि महिलाओं को वह आवाज़ कैसे सुनाई दे गयी?

इस घटना के कुछ वर्ष बाद माबेल को स्कॉटलैण्ड के एक तान्त्रिक ने बताया कि उस मार्चपास्ट की आवाज़ की तह में वह पत्र था जो श्रीमती सिम्पसन ने अपने पति को लिखा था। अपने पति से मिलने की उत्कट और प्रबल इच्छा ने चमत्कारिक ढंग से उनके और उनके पति के बीच की दूरी को पाट दिया था और वे अपने पति के जो सम्भवतः उस समय किसी मार्चपास्ट का नेतृत्व [illegible]

थे, निकट पहुँच गयी थी। स्कॉटलैण्ड के तन्त्रवाद में इस रहस्यपूर्ण प्रक्रिया को Taradh 'ताराध' कहा जाता है, और इसमें जीवित व्यक्ति सूक्ष्म शरीर धारण करके अपने चाहनेवाले व्यक्ति के पास पहुँच जाता है।

वह खुद अपना भूत बना :

अप्रैल, १९४६ में अमेरिका के गोर्डन बॉरो ने सेना से अलग होने पर पहला काम यह किया कि सेना की नीलामी में एक जीप खरीदी, और उसमें बैठकर कोडी नामक स्थान के निकट स्थित अपने माता-पिता के पशुपालन-केन्द्र से पाँच सौ मील दूर स्थित एक कॉलेज में, जहाँ वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता था, जीप में ही बैठकर जाने का निश्चय किया।

उसके परिवार के सदस्यो ने उसे बहुत समझाया कि यह यात्रा बडी खतरनाक साबित हो सकती है, और वह अपने इरादे को बदल दे। रास्ते में ओलो की वर्षा और तूफान की बहुत सम्भावना थी। जीप के दो ओर से खुले होने के कारण ओलो और तूफान से बचना नामुमकिन था। पर, बॉरो ने किसी की न सुनी, और अपनी दु साहसपूर्ण यात्रा की तैयारियाँ शुरु कर दी। हाँ, इतना उसने अवश्य किया कि अपनी सुरक्षा के लिए काफी गर्म कपडे रख लिये।

यात्रा के सौ मील के प्रारम्भिक चरण में शोशोन नामक स्थान से थर्मोपोलिस तक कोई आबादी नही है, और सिर्फ़ एक-दो दुकानें पडती हैं। इस सुनसान रास्ते को तय करने में बॉरो को पाँच घण्टे का समय लगा। कास्पर नामक स्थान तक का डेढ सौ मील का अगला चरण उसने चार घण्टे में पूरा किया। रास्ते में वर्फ़ पडा था, इसलिए उसके लिए कार को पैंतीस मील फी घण्टा की गति से अधिक चलना सम्भव न था। पर, वह समय पर अपने कॉलेज में पहुँचने के लिए दृढ-प्रतिज्ञ था।

कास्पर के आगे का रास्ता एकदम सीधा होने के अलावा काफी सँकरा भी ०। इसलिए यहाँ उसे कार की रफ्तार काफ़ी कम करनी पडी। दुर्भाग्य से हिम-वर्षा भी आरम्भ हो गयी। अब वह एक हाथ से कार चला रहा था, और दूसरे हाथ से विण्डशील्ड वाइपर को साफ कर रहा था।

टॉरिन्गटन नामक स्थान के बाद सडक दो भागो में बँट जाती है। एक भाग चेयने नगर को जाता है, और दूसरा लारामी को। लारामी सात हज़ार फुट ऊँचे पठार पर, जहाँ न कोई घर है न कोई पशुपालन केन्द्र, बसा है।

इस रास्ते पर जाते हुए उसे एक बस और एक पुलिस-कार मिली। पुलिस-कार का सिपाही बस के ड्राइवर से कह रहा था, "आगे रास्ता बिलकुल बन्द है। रास्ते पर चार इंच मोटी वर्फ जमी है। और अभी और ज्यादा वर्फ पडने की उम्मीद है। अगर कोई रास्ते में फँस गया, तो करीब एक सप्ताह तक वही

लेकिन बस का ड्राइवर आगे जाने को बाकायदा उद्यम को तैयार था। बॉरो भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। उसे उम्मीद थी कि उसकी जीप बर्फ से ढके रास्ते को पार कर लेगी। पर, लगातार अठारह घण्टे से जीप चलाते-चलाते वह काफ़ी थक गया था इसलिए अब उसे कार चलाने में बड़ी कठिनाई अनुभव होने लगी थी। बस उससे काफ़ी आगे निकल गयी थी।

आगे रास्ता और ज्यादा खतरनाक था क्योंकि सँकरा होने के अलावा वह ढलवा भी था। अब उसकी हिम्मत जवाब देने लगी। नींद भी इतनी आ रही थी कि जागे रहने के लिए उसे बार-बार अपने मुँह पर तमाचा मारना पड़ता था।

इस ऊँचाई पर करीब दो फर्लांग आगे जाने के बाद उसे एक आदमी अपने आगे चलता हुआ दिखाई दिया। वह सड़क की बायीं बाजू में चल रहा था और उसके शरीर पर एक भी गरम कपड़ा नहीं था। ऐसे स्थान पर जहाँ से निकटतम निवासस्थान पैंतीस मील की दूरी पर था और जहाँ पाँच इंच मोटी बर्फ़ पड़ रही हो साधारण कपड़े पहने हुए एक आदमी का बर्फ़ पर चलना सचमुच स्तब्धकारी था।

इस आदमी को देखकर बॉरो ने कार रोक दी। वह आदमी मुड़कर कार के पास आया और बॉरो के पास खड़ा होकर उसे देखने लगा। बॉरो का आश्चर्य यह देखकर और भी बढ़ गया कि उस आदमी की शक्ल उससे हूबहू मिलती थी और उसने वैसे कपड़े पहन रखे थे वैसे कपड़े वह अपने दैनिक जीवन में छुट्टी मिलने पर पहना करता था।

उस आदमी ने बॉरो से कहा 'तुम्हें शायद नींद आ रही है। मैं कार चलाऊँ?

'शुक्रिया कहकर बॉरो थोड़ा सरक गया। उस आदमी ने उसकी जगह ले ली और बड़ी होशियारी के साथ जीप चलाना शुरू कर दिया। बॉरो जीप के पिछले हिस्से की सीट पर जाकर सो गया। सोते समय उसे कोई झटका या कष्ट अनुभव नहीं हो रहा था।

जब उसकी आँखें खुलीं तो उसने देखा कि वह आदमी चक्के के पास चुपचाप बैठा है और जीप सड़क के एक किनारे खड़ी है। बर्फ़ीला रास्ता पार हो चुका था और अब जो रास्ता बाकी था वह पूरी तरह निरापद था। काफ़ी देर तक सो लेने के बाद वह भी ताजादम महसूस कर रहा था।

बॉरो ने अपने प्रतिरूप उस आदमी से पूछा, 'क्या आपको आगे जाना है?

'नहीं शुक्रिया! कहकर वह पीछे की ओर पैदल जाने लगा।

'आपका बहुत-बहुत शुक्रिया!'

"उसकी कोई जरूरत नही है," कहकर उसने अपनी रफ्तार और तेज़ कर दी।

वॉरो को लारामी पहुँचने में कोई कठिनाई नही हुई। पर, रास्ते मे उसे अपने प्रतिरूप उस आदमी की याद बराबर आती रही। अगर वह न मिलता, तो उसकी मौत निश्चित थी, क्योंकि लारामी आकर उसने सुना कि उसके आगे आनेवाली बस के सब यात्री शीत के कारण रास्ते मे ही मर गये थे।

उसने अपनी मृत बहन से बाते की.

मेरी वुड की आयु उस समय सात वर्ष रही होगी, पर जो कुछ उसने उस छोटी आयु में देखा-सुना, वह उसे आजीवन याद रहा।

न्यू आर्लेयन्स (अमेरिका) की वेलेन्स स्ट्रीट के एक पुराने घर में रहनेवाले मेरी वुड के परिवार मे तीस से अधिक सदस्य थे। पर, वह सबसे ज्यादा चाहती थी अपनी दादी को। और उसकी दादी सबसे ज्यादा चाहती थी उसकी अनेक चाचियो में से एक—इदा चाची को,।

मेरी वुड हमेशा अपनी दादी के पास ही सोती थी। एक दिन, रात को अपनी दादी की आवाज़ सुनकर उसकी आँखें खुल गयी। जागने पर उसने देखा कि उसकी दादी किसी से धीरे-धीरे बाते कर रही थी। पर, कमाल यह था कि जिससे वे बातें कर रही थीं, वह कमरे मे मौजूद न था। बाहर से आते हुए हलके प्रकाश में कमरे की सब चीजें साफ़-साफ़ दिखाई देती थी।

दादी की, जो उस वक्त काफ़ी दुखी और उदास दिखाई पड रही थी, बातो से मेरी को यह जानने में देर न लगी कि वह उसकी चाची इदा से बातें कर रही थी, वह इदा चाची, जो उस वक्त कमरे में मौजूद नही थी।

करीब दस मिनट तक अदृश्य इदा चाची से बातें करने के बाद दादी ने कहा, "अच्छी बात है, मैं तुम्हारी सारी चीजें तुम्हारी इच्छा के अनुसार बाँट दूँगी। अच्छा, अलविदा, इदा! मुझे तुम्हारी बहुत याद आयेगी।" इसके बाद उन्होंने मेरी वुड से कहा, "तुम्हारी इदा चाची की अभी-अभी मृत्यु हो गयी है। वह मरने से पहले मुझसे कुछ जरूरी बातें करने आयी थी।"

अगले दिन एक तार द्वारा मेरी वुड के परिवार को सूचना मिली कि वहाँ से सौ मील दूर रहनेवाली इदा कल रात दिल का दौरा पडने से चल बसी।

खामोश तबीयतवाला भूत.

आज भी न्यूयॉर्क मे १९०० और १९१५ के बीच बने ऐसे कई घर मौजूद है, जो देखने में असुन्दर लगते हुए भी काफ़ी मजबूत बने हैं, और जिनके कमरे आधुनिक एपार्टमेण्टो के कमरो से कही बड़े हैं। ऐसा ही एक घर एक साल के

लिए विलियम स्लोअन नाम के एक धनी व्यापारी ने किराये पर लिया था। इस दुमंज़िले घर में चार बड़े कमरों और दो छोटे कमरों के अलावा एक बड़ा रसोई घर और एक बड़ा बाथरूम भी था। और उसमें रहनेवाले थे—अकेले विलियम स्लोअन।

जिस रात विलियम स्लोअन उस घर में रहने आये उस रात उन्हें गाढ़ी नींद आ रही थी इसलिए वे घर में आते ही सो गये। पर अगले दिन उन्होंने सोने से पहले कुछ पढ़ने का फ़ैसला किया। पढ़ने से पहले उन्होंने घर के सब दरवाज़े और खिड़कियाँ सावधानी से बन्द कर दिये थे ताकि कोई चोर घर में प्रवेश न कर पाये।

क़रीब एक घण्टे तक पढ़ने के बाद उन्हें नींद आने लगी और उन्होंने सोने की तैयारियाँ शुरू कीं। पर उन्हें पलंग पर लेटे हुए पाँच मिनट ही बीते होंगे कि उन्हें किसी आदमी के सीढ़ियों पर चढ़कर नीचे आने की आवाज़ सुनाई दी। आदमी के क़दम इतने सधे हुए थे कि ज़ाहिर हो जाता था कि वह कोई चोर नहीं है, और इस घर के रास्तों से भलीभाँति परिचित है। विलियम स्लोअन ने लेटे-लेटे पुकारा "कौन है?

कोई जवाब नहीं आया पर चलने की आवाज़ बन्द हो गयी।

विलियम स्लोअन ने उठकर हाथ में टॉर्च ली और घर का चप्पा-चप्पा तलाश किया। उन्हें कहीं कोई आदमी नज़र नहीं आया। अगले दिन सुबह उन्होंने फिर घर का सावधानी से निरीक्षण किया। पर कोई नहीं मिला। तब सवाल यह था कि वह चलने की आवाज़ किसकी थी?

यह आवाज़ उन्हें रोज़ सुनने को मिलती रही। पर इस आवाज़ की एक विशेषता थी कि कभी ऐसा नहीं लगता था कि उस आदमी ने सीढ़ियाँ पार कर ली हों। आवाज़ उसके सीढ़ियाँ पार करने के बीच में ही रुक जाती थी।

विलियम ने कई बार आवाज़ करनेवाले आदमी से बात करने की कोशिश की। पर जैसे ही उनके मुँह से कोई आवाज़ निकलती थी उस आदमी के चलने की आवाज़ बन्द हो जाती थी। एक अच्छी बात यह थी कि यह आदमी कोई उपद्रव या शैतानी नहीं करता था।

एक दिन विलियम ने अपनी मकान-मालकिन से इस घटना का ज़िक्र किया। मकान-मालकिन को उनकी बात सुनकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसने सिर्फ़ इतना ही कहा 'ओह! तो आपको भी उस भूत की आवाज़ सुनाई दे गयी!'

"भूत की आवाज़?

"हाँ नहीं तो क्या कोई ज़िन्दा आदमी होता तो आपकी पकड़ में न आता। या मेरी और मेरे चार लड़कों की पकड़ में न आता। आख़िर हम लोग भी उस घर में कई साल गुज़ार चुके हैं। पर आ—

पहुचानवाला भूत नहा ह ।

"पर, वह है किसका भूत ?"

"हमसे पहले यह मकान एक प्रकाशक के पास था। उनका एक नौकर इस मकान के ऊपरवाले कमरे में मरा था। उसके मरने के बाद, प्रकाशक महोदय यह मकान काफ़ी सस्ते में हमें बेचकर कनाडा चले गये। यह भूत उसी नौकर का है, और अपने मालिक की खोज करने नीचे आता है, पर कोई आवाज़ सुनते ही फ़ौरन रुक जाता है। प्रकाशक महोदय कह रहे थे कि बहुत ही वफ़ादार और खामोश तबीयत का नौकर था। इसीलिए न उसने हमें कोई तकलीफ़ दी, और न उम्मीद है आपको ही देगा।"

एक भूत-कथा, जिसने सारे विश्व को चौंका दिया था :

१९३० में इस अद्भुत घटना के घटने के बाद इसका विवरण अमेरिका ही नही, दुनिया-भर के प्रमुख समाचारपत्रो में प्रकाशित हुआ था, और एक लम्बे अरसे तक उसपर लेख लिखे जाते रहे थे। पर, इसका रहस्य आज तक किसी की समझ में नही आ सका है।

डोनाल्ड रॉकवैल कोलम्बिया फोनोग्राफ कम्पनी की न्यूयॉर्क शाखा के मैनेजर थे। उनके घर में उनकी माँ और पत्नी के अलावा उनकी अठारह-वर्षीया बहन रूथ भी रहती थी। रूपवती और सुशिक्षिता रूथ को अपनी आयु की लड़कियो की तरह जीवन के सुखो से कोई लगाव न था। वह हमेशा नियति और मृत्यु की बातें करती रहती थी। सिडने लेनियर की 'मृत्यु का सौन्दर्य' कविता उसे विशेष रूप से प्रिय थी। पुनर्जन्म, भाग्यवाद, ज्योतिष और मरणोत्तर जीवन सम्बन्धी पुस्तकें उसके निजी पुस्तकालय में काफी संख्या में थी।

११ नवम्बर, १९३० को दुपहर के साढ़े तीन बजे रॉकवैल को तुकाहो के पुलिस-स्टेशन से फोन मिला कि वह आधा घण्टे तक अपना ऑफ़िस छोड़कर कही न जायें, पुलिस उनकी पत्नी को अपने साथ लेकर शीघ्र ही उनके ऑफ़िस में पहुँच रही है।

पुलिस के आने पर रॉकवैल को यह दुखद समाचार सुनने को मिला कि उसकी बहन रूथ ने एक हवाई जहाज़ से कूदकर आत्महत्या कर ली है। रूथ उस छोटे-से हवाई जहाज़ में एक अन्य यात्री के साथ न्यूयॉर्क की हवाई सैर करने गयी थी। उन दिनों ऐसे अनेक छोटे हवाई जहाज़ पाँच डॉलर लेकर यात्रियो को न्यूयॉर्क की हवाई यात्रा कराया करते थे। इन हवाई जहाजो में पायलेट के अलावा सिर्फ़ दो यात्री और बैठ सकते थे।

जहाज़ के पायलेट ने पुलिस को बताया था कि जब रूथ जहाज़ पर सवार हुई थी, तब काफ़ी उद्विग्न थी। जब हवाई जहाज़ ऊपर आया, तो उसने मुड़कर

रूथ को देखा था। उस समय वह हाथ जोड़ और आँखें बन्द किये प्रार्थना-सी कर रही थी। अगले क्षण वह हवाई जहाज की खिड़की से कूद पड़ी। पायलट देखता ही रह गया। विश्व के इतिहास में यह पहला अवसर था जब एक युवती ने हवाई जहाज से कूद आत्महत्या की थी।

रॉकवैल रात को अपनी पत्नी के साथ घर पहुँचे तो घर में पूर्ण शान्ति थी। उनके प्रिय कुत्ते 'रंगून का राजा' ने रोज की भाँति दरवाजे पर आकर रॉकवैल का स्वागत नहीं किया। उसे एक कोने में उदास बैठकर रॉकवैल की पत्नी ने दुपहर के उसके विचित्र व्यवहार के बारे में बताया "क़रीब दो बजे रूथ ने मुझसे कहा कि वह किसी काम से बाहर जा रही है, और शाम तक शायद वापस नहीं आयेगी। जाने से पहले वह अपनी ऊँची कुरसी पर बैठी कोई किताब पढ़ रही थी और 'रंगून का राजा' उसके पाँवों के पास बैठा था। रोज की तरह रूथ उसके बालों में हाथ फेरकर उसे दुलारती जाती थी।

"उसके जाने के बाद क़रीब तीन बजे 'रंगून का राजा' अचानक बेचैन हो गया और ज़ोर-ज़ोर से भौंकता हुआ रूथ के कमरे की ओर भागा। जब वह वापस लौटा तो उसके मुँह में रूथ का तकिया और कोट था। उन्हें फ़र्श पर रखकर उसने अपना सिर उन दोनों चीज़ों पर रख दिया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। मैंने पहली बार एक कुत्ते को आदमियों की तरह रोते देखा।

' मुझे उसके इस कृत्य को देखकर बड़ी हैरानी हुई और मैंने उन चीज़ों को फ़र्श से उठाकर रूथ के कमरे में रख दिया।

"तीन बजे के क़रीब पुलिस ने फ़ोन करके मुझे रूथ की आत्महत्या के बारे में सूचित किया। कमाल की बात यह थी कि रूथ की मृत्यु ठीक उस समय हुई थी जिस समय 'रंगून के राजा' ने रूथ की चीज़ों को अपने सिर के नीचे रखकर रोना-चिल्लाना शुरू किया था।'

रात के नौ बजे के क़रीब 'रंगून के राजा' ने कमरे की खिड़की के पास खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकना शुरू कर दिया। वह कभी खिड़की के पास खड़े होकर भौंकता कभी दरवाज़े के पास खड़े होकर। फिर वह रॉकवैल की पत्नी के घुटनों पर अपने पंजे जमाकर खड़ा हो गया मानो वह किसी अदृश्य वस्तु से उसकी रक्षा कर रहा हो। बीच-बीच में वह सिर मोड़कर भौंकता भी जाता था। रॉकवैल और उसकी पत्नी ने उसे ऐसा विचित्र व्यवहार करते पहले कभी नहीं देखा था।

कुछ क्षण बाद उसने फिर खिड़की के पास आकर ज़ोर-ज़ोर से भौंकना शुरू कर दिया। अब रॉकवैल की पत्नी ने खिड़की से बाहर झाँककर देखा। बाहर सड़क पर कोई न था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किसे देखकर और क्यों भौंक रहा है? उन्होंने उसे बाँधकर रूथ के कमरे में बन्द

कर दिया।

जब वह रूथ के कमरे से वापस लौट रही थी, तो उसकी नजर रूथ की मेज़ पर पडे एक कागज़ पर पडी, जिसमे लिखा था "मैं आज रात को नौ बजे घर के किसी सदस्य से सम्पर्क करने का प्रयत्न करूँगी।"

अब मामला कुछ-कुछ रॉकवैल की पत्नी की समझ में आने लगा। 'रगून के राजा' को अपनी अतीन्द्रिय बोध-शक्ति द्वारा रूथ के देहावसान का ही बोध नही हो गया था, उसने रात के नौ बजे रूथ के अदृश्य भूत को घर में प्रवेश करते भी देख लिया था।

शायद शुरू में वह उसे पहचान नही पाया था, और समझा था कि कोई दुष्ट भूत उसकी घर की स्वामिनी को तग करने आया है। पर, जब उसने पहचान लिया कि वह रूथ ही है, तो वह उसकी कुरसी के पास बैठ गया। रॉकवैल की पत्नी ने देखा वह पहले की भाँति अपना सिर हिला रहा था। शायद कुरसी पर बैठा रूथ का भूत उसके बालो से खेल रहा था।

एक भूत, जिसने अपने घर को चोरो से बचाया :

भूतो के बारे में अकसर ऐसा माना जाता है कि वे पुराने घरो, बीहड और निर्जन स्थानो में ही रहते हैं। पर, यह सच्ची कहानी सिद्ध करती है कि भूत आधुनिक एपार्टमेण्टो में भी पाये जा सकते हैं। यह कहानी है अमेरिका की एक आधुनिक उन्नीस मजिल इमारत की उन्नीसवीं मजिल पर स्थित एक एपार्टमेण्ट में रहनेवाले भूत की।

श्रीमती हापकिन्स को आवश्यकता थी न्यूयॉर्क के एक शानदार इलाके—सेण्ट्रल पार्क वेस्ट—में एक एपार्टमेण्ट की। उनकी खुशी का तब ठिकाना न रहा, जब मामूली कोशिशों के बाद उन्हें पूरी इलाके में उन्नीसवी मजिल पर एक एपार्टमेण्ट मिल गया। वे अगले दिन ही अपने छोटे लडके और उसकी नर्स को लेकर वहाँ आ गयी।

कुछ दिन बाद उनकी नर्स ने उनसे शिकायत की "लगता है, इस एपार्टमेण्ट में हम लोगो के अलावा भी कोई और छिपकर रहता है। अकसर मुझे ऐसा महसूस होता है कि कोई मेरे पीछे खडा है। पर, जब मैं पीछे मुडकर देखती हूँ, तो किसी को नही पाती।"

श्रीमती हॉपकिन्स ने उसे समझाया कि वह उसकी खामखयाली है। घर में छिपकर कोई रहता होता, तो उन्हें भी दिखाई देता। नर्स ने उस समय तो अपनी मालकिन की बात मान ली, पर कुछ दिन बाद फिर उनसे शिकायत की कि कोई रोज रात को उसके दरवाज़े को खटखटाता है। उसने कहा, "मैं अन्धविश्वासी महिला नही हूँ, पर मुझे लगता है कि यहाँ कोई भूत रहता है,

और मैं ऐसी जगह नहीं रह सकती, जहाँ कोई भूत रहता हो।' और वह काम छोड़कर चली गयी।

उस नर्स के जाने के बाद श्रीमती हॉपकिन्स ने जोसफ़ाइन नाम की एक नीग्रो महिला को उसके स्थान पर रखा। पर, कुछ दिन बाद जोसफ़ाइन ने भी वही शिकायतें शुरू कर दीं, जो पहली नर्स किया करती थी। उसका भी यही कहना था कि एपार्टमेण्ट में भूत रहते हैं।

श्रीमती हॉपकिन्स को यह हैरत थी कि भूत उन्हें क्यों नहीं दिखाई देता या तंग करता? उन्होंने जोसेफ़ाइन से कहा यह भूत न मुझे दिखाई देता है, न तंग करता है। और मुझे यह एपार्टमेण्ट पसन्द है। इसलिए मैं तो यहीं रहूँगी। तुम्हें जाना हो तो तुम जाओ।

जोसेफ़ाइन ने कहा मगर आप उस भूत के साथ रह सकती हैं तो मैं क्यों नहीं रह सकती? मगर उसने मेरी इज्जत पर हमला किया तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

मकान-मालकिन और पड़ोसियों से बातचीत करने के बाद श्रीमती हॉपकिन्स को मालूम हुआ कि उनसे पहले इस एपार्टमेण्ट में एक डॉक्टर रहते थे। उनके पास एक नौजवान नौकर था जो डॉक्टर की गैरहाज़िरी में इसी एपार्टमेण्ट में मर गया था। जब वह मरा था तब उसे डॉक्टर से अपनी एक महीने की तनख्वाह के अलावा कुछ और रक़म भी लेनी थी जो उसने उनके पास जमा कर रखी थी। उसका भूत शायद उसी रक़म की खोज में यहाँ मँडराया करता था और चूँकि नौजवान था इसलिए युवतियों से छेड़खानियाँ करने से भी बाज नहीं आता था। श्रीमती हॉपकिन्स का अपने एपार्टमेण्ट के भूत का परिचय पाकर कुछ सन्तोष हुआ।

एक रात जब उनका लड़का और नौकरानी सो रहे थे और वे एक किताब पढ़ रही थीं उन्हें लगा कोई अजनबी उन्हें पुकार रहा है श्रीमती—हॉपकिन्स श्रीमती—हॉपकिन्स।' उन्होंने घड़ी देखी सवा बारह बजे थे। उन्होंने उठकर देखा एपार्टमेण्ट के सब दरवाज़े खुले थे। उन्होंने इमारत के प्रबन्धक को फ़ोन करने की कोशिश की पर लाइन को कटी पाया। बिना एक क्षण की देरी किये उन्होंने सारे दरवाज़े बन्द कर दिये और उनमें ताले लगा दिये।

अगले दिन प्रबन्धक ने उन्हें बताया कि पिछली रात एक चोर ने उन्नीसवीं मंज़िल के दो एपार्टमेण्टों में चोरी की और पूछा कि उनके यहाँ तो कोई चोरी नहीं हुई।

श्रीमती हॉपकिन्स ने मुसकराकर कहा 'नहीं, मेरे यहाँ तो कोई चोरी नहीं हुई। वह उसे यह कैसे बताती कि चोरी होनेवाली थी पर उसके एपार्टमेण्ट में रहनेवाले भूत की मेहरबानी से बच गयी।

प्रेमी, जो अपनी भूतपूर्व प्रेमिका का पति है :

डॉ नान्दोर फोदोर अमेरिका के चोटी के मनोवैज्ञानिक और मानस-रोग-पज्ञ थे। एक बार उनके पास एक बडा अजीब केस आया। यह केस था मृत डॉ का, जिसका भूत अपनी प्रेमिका के पीछे बुरी तरह पडा हुआ था। प्रेमिका का नाम था—एडिथ वर्जर। उसकी मँगनी एक युवा डॉक्टर से हो गी थी, और विवाह छह महीने बाद होनेवाला था। इस बीच डॉक्टर अपने कुछ मित्रों के साथ जापान, इण्डोचीन आदि देशों की सैर पर गया, और वहाँ कोई संक्रामक रोग हो जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

एडिथ और उसकी माँ को यह समाचार सुनकर बडा दुख हुआ। उसकी माँ अपनी बेटी के लिए कोई और वर तलाश करने लगी।

पर, तभी एक ऐसी घटना घटी, जिसकी वजह से उसे यह विचार अस्थायी रूप से, त्यागना पडा। एडिथ ने एक दिन सुबह उठकर अपनी माँ को अपने मुँह और शरीर पर खरोच के कई चिह्न दिखाये। उसका कहना था कि कल रात जब वह सो रही थी, तब उसके भूतपूर्व प्रेमी का सूक्ष्म शरीर उसके पास आकर लेट गया, और प्रेम की भीख माँगने लगा। जब उसने उसे वहाँ से जाने को कहा, तो वह उसे मारने-पीटने लगा। ये खरोंचें इसी कारण पैदा हुई हैं।

माँ ने उसे ढाढस बँधाते हुए कहा कि आज से वह उसके साथ सोया करेगी। तब उसके प्रेमी के भूत का उसके पास आने का साहस नही होगा।

लेकिन रात को एडिथ के अलावा उसकी माँ ने भी डॉक्टर के भूत के उन्मादी आक्रमण के सघात को अनुभव किया। लेकिन उसने भी उस भूत को खूब खरी-खरी सुनायी, और कहा कि उसे उस जैसे शैतान भूतों का इलाज करना आता है।

वह अगले दिन एक भूत-चिकित्सक के पास गयी, और उससे कहा कि झाड-फूँक करके उसकी बेटी पर आये भूत को भगा दे। भूत-चिकित्सक ने झाड-फूँक करके भूत को भगाने के अनेक प्रयत्न किये, पर भूत पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह तीन-चार दिन बाद हाथ में एक हण्टर लेकर प्रकट हुआ, और उस हण्टर से उसने एडिथ और उसकी माँ की खूब पिटाई की। अगले दिन एडिथ की माँ एडिथ को लेकर डॉ फोदोर के पास पहुँची।

डॉ फोदोर ने सारी बातें सुनकर इस मामले को हल करने के लिए एक नयी विधि अपनायी। उन्होंने एडिथ को सम्मोहित करके पूछा, "क्या अपने प्रेमी की मृत्यु के बाद तुमने उसे कभी किसी भी रूप में सपने में देखा था ?"

सम्मोहित एडिथ ने कहा, "हाँ, कई बार देखा था। वह काफ़ी शान्त था।"

"क्या तुम अभी भी उसे चाहती हो ?"

'हाँ,' कुछ हिचक के बाद एडिथ ने उत्तर दिया।

"तब क्या तुम उसकी आज्ञा पालन करने को तैयार हो ?"

'हाँ।'

'तो आज रात जब उसका प्रेत तुम्हारे निकट आये, तो उससे कहना कि तुम उसकी सब इच्छाओं का पालन करने को तैयार हो, और पूछना कि वह क्या चाहता है ?'

उस रात जैसे ही डॉ का भूत उसके शरीर से आकर चिपटा, एडिथ ने उससे वही बात कही जो डॉ फ्रेडोर ने कहने को कहा था। उस समय उसकी माँ भी उसके पास थी। जवाब में भूत ने क्या कहा, यह उसकी माँ ने नहीं सुना, पर अगले दिन एडिथ ने डॉ फ्रेडोर को बताया कि उसका मृत प्रेमी चाहता है कि वह नर्स का पेशा अख्तियार कर अविवाहित रहे और उसके अलावा कभी किसी और पुरुष से शारीरिक सम्पर्क न करे।

डॉ फ्रेडोर ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। काफ़ी सोचकर सिर्फ़ इतना कहा, 'तो तुम वैसा ही करो, जैसा उसने करने को कहा था।'

अब एडिथ की आदतों में बहुत परिवर्तन आ गया। पहले वह बहुत लापरवाह थी अब चीजों को सँभालकर रखने लगी। संगीत का अभ्यास बन्द करके उसने नर्सिंग का कोर्स शुरू कर दिया। लड़कों से मिलना-जुलना और बातें करना बिलकुल बन्द कर दिया। एक बार जब किसी लड़के ने एकान्त में उसका चुम्बन लेने की कोशिश की, तो उसे लगा जैसे उसका प्रेमी नाराज़ नज़रों से उसे देख रहा है, और उस लड़के को पीटने की कोशिश कर रहा है।

कई वर्ष इसी प्रकार बीत गये। एडिथ के माता-पिता यह मानकर चुप बैठ गये कि अब उनकी लड़की के भाग्य में शादी नहीं बदी है, और वह अपना सारा जीवन अपने मृत-प्रेमी से प्रेम करके ही काट देगी।

एडिथ का इस सम्बन्ध में कहना था 'मुझे अपने [illegible] करने में उतना ही सुख प्राप्त होता है, जितना किसी [illegible] करने पर होता।'

इस केस के सम्बन्ध में डॉ फ्रेडोर का [illegible] अपने भूतपूर्व प्रेमी के भूत से ही डरती है। [illegible] करना चाहती। यदि वह दृढ़ निश्चय कर ले कि [illegible] नहीं डरेगी, और उसकी हिंसा का जवाब [illegible] करना बन्द कर देगा। पर उसमें [illegible] युवतियों का फ़ायदा उठाकर उसे [illegible] जीवन में इसलिए है, क्योंकि [illegible]

एक भूत की मनहूस चेतावनी .

मकान काफी बडा था, और हडसन नदी के किनारे बसा था। फिर भी कोई उसे खरीदने को या उसमें रहने को तैयार नही होता था, क्योंकि उस दूसरी ओर एक बडा कब्रिस्तान था, और लोगो का खयाल था कि उसमें : दर्जनों सैनिकों की लाशें गडी हुई हैं, जो सन् १८९० के आसपास इस मकान रहते थे। मकान इतना ही पुराना था।

जिन लोगों ने गेटी-परिवार से पहले इस मकान मे रहने की कोशि की थी, वे सब इन सैनिकों के भूतों के डर से भाग गये थे। उनका कहना कि ये भूत कभी भी चुप नही बैठते, और घर में रहनेवालों को घोर मानसि यातना देते रहते हैं।

लेकिन गेटी-परिवार के सदस्यो को-भूतो से कोई डर नही लगता था। इस घर में आने से पहले भी कई भुतहा घरों में रह चुके थे, और भूतो दोस्ती करने में माहिर थे। उनका खयाल था कि वे इस घर के भूतो से : दोस्ती कर लेंगे।

और अपने इस इरादे के साथ गेटी-परिवार के सदस्य—थियोडोर (पिता हेलन (माता), लेविस और जैक (पुत्र) उस घर में आये।

भूतो ने अपना कमाल पहले ही दिन से दिखाना शुरू कर दिया।

रात को जब परिवार के चारों सदस्यो ने आठ फुट लम्बी और चार ! चौडी, और काफी भारी डाइनिंग-टेबुल पर खाना समाप्त किया, और हेलन उसपर रखी सारी प्लेटें कपबोर्ड में रख दी, तब उस टेबुल ने वहाँ से धीरे-धं चलना आरम्भ कर दिया। वह बिना किसी सहारे के अपने आप दरवाज़े : ओर बढ रही थी। क्रमश उसकी रफ्तार बढने लगी, और दरवाज़े से हॉल : ओर जाते समय उसकी रफ्तार काफी तेज हो गयी थी। घर के सब लं मेज़ की इस घटना को देखकर स्तब्ध थे।

हॉल में पहुँचकर टेबुल दायी ओर मुडी और फिर सीढियो के ऊपर चढ लगी। वह बिलकुल आदमियो की तरह सीढियो पर चल रह थी, अथ पहले एक कदम सीढी पर रखती, और फिर दूसरा। पहली सीढी उस सावधानी से पार की, और इसके बाद तो वह जैसे उडने लगी। सीढी ऊपरी पायदान उसने सेकण्डो में पार कर लिये।

ऊपर के हॉल में पहुँचकर टेबुल कुछ क्षण के लिए रुकी, और उस गुस्से से फर्श पर दो बार अपने पाँव थपथपाये। फिर जैसे उसने वही आर करने का फैसला कर लिया। मालूम होता था वह थक गयी है।

इस प्रकार चलने का यह कमाल टेबुल ने एक बार और दिखाया था

फैबिस और जैक कुरसियों पर बैठे टेबुल पर टप-टप कर रहे थे हेलन एक कोने में बैठी एक स्वेटर बुन रही थी। तभी बिना किसी चेतावनी के टेबुल ने चलना आरम्भ कर दिया। इस बार वह ज्यादा दूर नहीं गयी और कमरे के बीच में आकर रुक गयी।

और कुछ क्षण बाद उसके दो पाँव बारी-बारी से फ़र्श पर टप-टप करके मोर्स-कोड की शैली में कोई सन्देश देने लगे।

हेलन को छोड़कर, गेटी-परिवार के सभी सदस्य मोर्स-कोड (जिसके द्वारा तारघरों में तार प्रेषित किये जाते हैं) पढ़ना और उसका प्रयोग करना जानते थे। थियोडोर गीसेना में रेडियो-ऑपरेटर थे और उन्होंने इस कोड का प्रयोग फैबिस और जैक को सिखाया था। शुरू में तो उन्होंने टेबुल की टप-टप पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया पर जब उसमें से मोर्स-कोड की सांकेतिक भाषा में कोई सन्देश आते सुना तो उनके कान खड़े। उन्होंने सुना टेबुल बार-बार एक ही सन्देश प्रेषित कर रही थी

'तालाब के पास लाश .. तालाब के पास लाश...तालाब के पास लाश "

थियोडोर ने कहा यह क्या बकवास है! तालाब के पास लाश! भला इस सन्देश का क्या मतलब हो सकता है?" और वे हँसने लगे।

पर हेलन डर गयी। उसने कहा 'इस टेबुल के जरिये कोई भूत हमें चेतावनी दे रहा है।'

थियोडोर ने हँसकर कहा 'अच्छा, मान लिया कि इस टेबुल के जरिये कोई भूत कुछ कहना चाह रहा है तो भी जो कुछ वह कह रहा है वह एकदम बकवास है। यह भूत मूर्ख लगता है।

'क्यों? हेलन ने पूछा।

'इसलिए कि हमारे पास जो तालाब है वह इतना गहरा है ही नहीं कि कोई उसमें डूबकर मर सके। हाँ, उसने हवलात क्यों कहा होता तो अलग बात थी।

बात आयी-गयी हो गयी। पर भूतों की अन्य छेड़खानियों के बीच परिवार के लोग टेबुल के उस सांकेतिक सन्देश को बिलकुल भूल गये।

पर चार महीने बाद तालाब के पास स्थित अपने घर के बाड़े की मरम्मत करते हुए थियोडोर की मृत्यु दिल का दौरा पड़ जाने से हो गयी।

कुछ दिन पहले ही एक डॉक्टर ने उनके दिल की जाँच कर उन्हें स्वस्थ और नीरोग पाया था। इसलिए इस आकस्मिक मृत्यु से सबको—खास तौर पर हेलन को—बड़ा आश्चर्य हुआ। वे जब थियोडोर की जाँच करनेवाले डॉक्टर को यह सूचना देने गयीं तो उन्हें मालूम हुआ कि वह डॉक्टर भी चल बसा है।

डाक्टर की पत्नी ने हेलन को बताया कि डाक्टर को मरने की पूर्वसूचना उसे सपने में थियोडोर के भूत द्वारा मौत के एक दिन पहले मिल गयी थी।

पर, हेलन से थियोडोर के भूत ने कभी सम्पर्क नही किया।

सबसे कमीना भूत :

भूत भी तरह-तरह के होते हैं शान्त भूत, लड़ाकू भूत, डरपोक भूत दिलेर भूत, दार्शनिक भूत, चंचल भूत, खिलाडी भूत और कमीना भूत। यह सच्ची कहानी है सबसे कमीने भूत की। और इसे सुना रही हैं, न्यूयॉर्क की शराब की एक मशहूर दुकान की मालकिन—जीन ओवन।

कैलीफोर्निया की नापाघाटी में मेरे पिता का एक बहुत बड़ा फ़ार्म है। वह उन्हें उत्तराधिकार में मिला था। चूँकि वे न्यूयॉर्क में एडवोकेट थे, इसलिए उन्होंने इस फार्म का प्रबन्ध एक बूढ़े आदमी इर्विन को सौंप रखा था, जो अपनी पत्नी और पाँच बेटों के साथ फ़ार्म के एक किनारे में स्थित दो कमरोवाले एक छोटे-से घर में रहता था, और जिसे उसने खुद अपने हाथों से बनाया था।

इस घर में न कोई नल था, न पाखाना। इर्विन के पाँचों बेटों ने बड़े होकर इस घर के पास एक और घर बनाया, जिसमें ये दोनों सुविधाएँ थीं। पर, उनके गुस्सैल और जुल्मी बाप ने उनसे कहा कि वह कभी उन्हें इस घर में नही रहने देगा। उसके डर से एक दिन पाँचों बेटे अपनी माँ को लेकर कहीं चले गये और फिर कभी वहाँ नही आये। उनके जाने के बाद बूढ़ा बीमार रहने लगा और करीब एक सप्ताह की बीमारी के बाद उसकी मृत्यु उसके बनाये हुए घर में हो गयी।

उस कमीने बूढ़े की मृत्यु से आसपास रहनेवाले सभी लोग खुश थे, क्योंकि वह सबको भला-बुरा कहा करता था, और गालियाँ बका करता था। पर, जैसा कि बाद की घटनाओ से स्पष्ट होगा उसका अन्त उसकी मौत के बाद भी नहीं हुआ।

काफी दिनो तक उस बूढ़े के मकान में कोई नहीं रहा। मैंने, और मेरे बाद मेरे पुत्र ने जिस आदमी को फ़ार्म चलाने को दिया, वह उस बूढ़े के लड़कों द्वारा बनाये हुए नये घर में रहता था। बाद में जब मेरे लड़के ने खुद वहाँ रहकर फ़ार्म को आधुनिक ढंग से चलाने का निश्चय किया, तो वह नया घर उसे अपने लिए नाकाफी लगा, कारण उस समय तक उसकी पत्नी डोरोथी एक बच्चे की माँ बन चुकी थी। उसने बूढ़े के दो कमरोंवाले घर को तुड़वाकर उसके स्थान पर एक बड़ा आलीशान घर बनवाकर उसे बूढ़े के लड़कों द्वारा बनाये गये घर से जोड़ने का निश्चय किया।

इस घर के बनने के बाद वह डोरोथी और अपनी पुत्री के साथ वहाँ रहने

लगा। उसे अक्सर काम से कैलीफ़ोर्निया जाना पड़ता था, इसलिए उसने डोरोथी की रक्षा के लिए एक खूँखार क़िस्म के जर्मन कुत्ते को वहाँ छोड़ दिया था जो फ़ार्म की हद में प्रवेश करनेवाले किसी भी आदमी को देखकर भौंकने लगता था।

एक दिन डोरोथी ने अपने पति से कहा, "जब तुम यहाँ रात को नहीं होते तो मुझे बड़ा डर लगता है।

"क्यों वह कुत्ता तो है! वह तो अकेला चार आदमियों के बराबर है।'

'हाँ वह कुत्ता बाहर के किसी आदमी को नहीं आने देता, पर घर में जो एक रहस्यमय आदमी रहता है उससे तो खुद वह भी डरता है।

"घर में रहस्यमय आदमी ? मैं समझा नहीं तुम्हारा मतलब किससे है ?

रातों में कई बार मुझे एक खौफ़नाक क़िस्म के बूढ़े आदमी की छाया अपने चारों ओर मंडराती हुई दिखाई पड़ी है। एक बार तो जब वह छाया दिखाई पड़ी तब वह कुत्ता भी मेरे पास था। पर न जाने क्या था उस छाया में कि उसे देखकर वह कुत्ता भी सहम गया और भौंकना-झपटना सब भूल गया।

'ओह! तो यह बात है! पर मुझे तो वह भूत कभी नहीं दिखाई दिया। पर, तुम चिन्ता न करो। मैं कल कैलीफ़ोर्निया जाऊँगा और वहाँ से कई विश्वसनीय नौकरों को लेकर आऊँगा जो उस भूत की अक्ल ठीक कर देंगे।

डोरोथी का पति सुबह चार बजे कैलीफ़ोर्निया रवाना हो गया।

उसके जाने के बाद डेरोथी को घर के पिछले भाग से धुँआ आता दिखाई दिया। वह भागी-भागी वहाँ पहुँची पर यह देखकर दहलकर रह गयी कि मकान का सारा पिछला भाग जलकर स्वाहा हो चुका है।

वह जल्दी से अपने कमरे में आयी और अपनी बच्ची को गोद में उठाकर वहाँ से पाँच-छह मील दूर स्थित सेण्ट हेलना गाँव के ऑपरेटर से फ़ोन पर बोली कि उसके घर में आग लग गयी है और वह जल्दी से आग बुझानेवालों को वहाँ भेजे। इसके बाद वह बच्ची को गोद में लेकर फ़ार्म के बाहर आकर खड़ी हो गयी क्योंकि आग घर के सब भा। में तेजी से फैलती जा रही थी।

जबतक सेण्ट हेलना गाँव से आग बुझानेवाले लोग फ़ायर एंजिन लेकर आये सारा घर स्वाहा हो चुका था।

डोरोथी और उसके पति का विश्वास है कि यह काम उस कमीने बूढ़े के भूत का ही था। इसलिए जब उन्होंने दुबारा अपने घर का निर्माण करवाया, तो उस स्थान को खाली छोड़ दिया जहाँ पहले बूढ़ा आदमी रहता था।

तब से उस कमीने भूत के जिसे भूतों की दुनिया का सबसे कमीना भूत माना जाता है, दर्शन डोरोथी और मेरे बट को कभी नहीं हुए। या तो उसे इस नयी व्यवस्था से सन्तोष हो गया था या अपनी लगायी आग में वह खुद जल गया था।

प्रथम विश्वयुद्ध के वाद न्यूयॉर्क में जो नये मकान वने उन सवकी एक विशेषता यह थी कि उनमें यूरोप के मकानो की तरह सायवान (Penthouse) अवश्य होते थे। खास तौर पर डॉक्टरो के लिए तेरह लाख डॉलर की लागत से वनी द न्यू मेडिकल आर्ड्स विल्डिंग में भी एक सायवान था। अपने करोडपति पति की मृत्यु के वाद उसकी विशाल जायदाद की एकमात्र उत्तराधिकारिणी एडना के प्रेमी चार्ल्स ग्रेजले को यह सायवान इतना भाया कि उसने उसे किराये पर लेकर वही रहने का निश्चय किया। पर, इमारत के मालिक ने सायवान को किराये पर देने से इनकार कर दिया। इसपर गुस्से में आकर तेरह लाख डालर नकद देकर एडना ने वह इमारत ही खरीद ली।

वस, यही से शुरू होती है इस इमारत के सायवान के भूत की कहानी।

सायवान का एपार्टमेण्ट, जिसमें चार्ल्स और एडना ने रहना शुरू किया, दोमंजिला था। उसे एडना ने ऊपर से एक लाख डॉलर खर्च करके खूव सजाया। यूरोप से कीमती टाइल, परदे, चित्रांकित खिडकियाँ आदि मँगाये गये। अपने विशाल शयन-कक्ष में एडना ने चालीस फुट लम्वा एक भित्ति-चित्र अंकित करवाया, जिसमें चार्ल्स और उसे नग्नावस्था में प्रणय करते हुए दिखाया गया था। चार्ल्स का रहने का कमरा नीचे की मंजिल पर था। उसे एडना के शयन-कक्ष से जोडने के लिए एक गुप्त सीढ़ी वनायी गयी।

इस सजावट में पाँच वर्ष लगे। इस बीच एडना और चार्ल्स के सम्वन्ध निरन्तर विगडते गये, और एक वार तो गुस्से में आकर चार्ल्स ने एडना के मुँह पर फ़ोन का चोंगा भी दे मारा था। इन अप्रिय घटनाओं को भुलाने के लिए एडना अव शराव और नशीली दवाओ पर आश्रित रहने लगी।

फ़ोन-काण्ड के वाद एडना के क्रुद्ध रिश्तेदारो ने चार्ल्स को एपार्टमेण्ट से उनके सामान समेत निकाल फेंका, और कई रक्षक तैनात कर दिये, ताकि वह दुवारा न आ सके। चार्ल्स के पास इमारत के कई एपार्टमेण्टों की डुप्लीकेट चावियाँ थी। वह उनका प्रयोग करके रात में वहाँ छिप जाता था।

जिस रात एडना की मृत्यु अत्यधिक शराव पीने के कारण हुई, उस रात चार्ल्स ने उसके एपार्टमेण्ट में प्रवेश कर, उससे मिलने की आखिरी कोशिश की। पर, रक्षको ने उसे मार-पीटकर वाहर निकाल दिया, और अन्दर नही घुसने दिया। एडना की मृत्यु के दो दिन वाद चार्ल्स भी चल वसा। उसकी लाश सार्वजनिक शवागार में लावारिस हालत में दस दिन तक पडी रही। वाद में उसके एक भाई ने उसकी शिनाख्त कर उसका अन्तिम संस्कार कराया।

एडना और चार्ल्स की मृत्यु के वाद एडना के रिश्तेदारो ने एडना का

हिसाब-किताब देखा तो मालूम पड़ा कि चार्ल्स ने उसकी लाखों डालर की रकम हज़म करके एपार्टमेण्ट के गुप्त खानों में छिपा दी थी। उन्होंने उन खानों की खोज करके रकम को पाने की कई बार कोशिश की, पर असफल रहे।

एडमा का दुर्मंजिला एपार्टमेण्ट कुछ महीनों तक खाली पड़ा रहा। बाद में फ्रास्टन एस्सोप अपनी नवविवाहित पत्नी के साथ जो पहले राजकुमारी मेलिकोव थीं, और अमेरिका के धनी व्यापारी राकफ़ेलर की रिश्तेदार थीं उस एपार्टमेण्ट में रहने आये। यह उन दोनों का प्रेम-विवाह था।

इस एपार्टमेण्ट में आने से पहले दोनों के आपसी सम्बन्ध अत्यन्त प्रगाढ़ और प्रेमपूर्ण थे पर यहाँ आते ही उन दोनों में रोज़ बेकार के झगड़े होने लगे। श्रीमती एस्सोप ने शराब और नशीली दवाओं का सेवन आरम्भ कर दिया और घण्टों हाथ में दर्पण लिये न जाने क्या सोचती रहती थीं। अपने पिता से मिलना जुलना उन्होंने क़रीब-क़रीब बन्द ही कर दिया था। एस्सोप भी जो पहले काफ़ी खुशमिज़ाज थे अब बहुत चिड़चिड़े हो गये थे। इतना ही नहीं उनके चार कुत्ते, जो पहले अत्यन्त शान्त रहा करते थे सारे दिन न जाने किसे देख कर भौंका करते थे। प्रायः वह डर के मारे पलंग के नीचे छिप जाते थे।

एक वर्ष के अशान्त और दुखी वैवाहिक जीवन के बाद श्रीमती एस्सोप अपने पति को छोड़कर चली गयीं। जाते समय उन्होंने कहा कि व किसी भी हालत में अपने पति के पास वापस नहीं लौटेंगी।

एस्सोप का अधिकांश समय अब अपने मित्रों क साथ पीने और जुआ खेलने में बीतने लगा। एक दिन उसका एक मित्र बाथरूम से लौटा तो बुरी तरह कांप रहा था। एस्सोप के बहुत पूछने पर भी उसने नहीं बताया कि उसके डर की क्या वजह है? एक महिला ने बाथरूम से लौटते समय शिकायत की कि बाथरूम जाते समय कोई उसका पीछा कर रहा था। उसका सन्देह था कि उसका पीछा एस्सोप के किसी मित्र ने किया था। पर, जब सब मित्रों ने इनकार किया तो उसने कहा कि वह कभी एस्सोप क एपार्टमेण्ट में नहीं आयेगी।

एस्सोप ने कहा कि वह स्वयं बाथरूम में जाकर देखेगा कि वहाँ कौन है। पर उसका कोई मित्र और कुत्ता उसके साथ जाने को तैयार नहीं हुआ। सब डर के मारे दुबककर बैठ गये। लगता था शायद उन भूत ने जो सम्भवतः चार्ल्स का भूत था, एस्सोप को डराने का निश्चय कर लिया था।

जब एस्सोप के मित्रों ने भूत के कारण उसके एपार्टमेण्ट में आना बन्द कर दिया, तो एस्सोप ने अपना गम मिटाने के लिए और ज्यादा शराब पीना शुरू कर दिया। अन्त में उसे भी अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। चार्ल्स के भूत ने अपने एपार्टमण्ट में रहनेवाले या आनेवाले किसी भी व्यक्ति को चैन से नहीं बैठने दिया।

कौन थी—थियेटर देखनेवाली वह महिला ? :

न्यूयॉर्क का मेट्रोपॉलिटन ऑपेरा न्यूयॉर्क ही नही, अमेरिका के सर्वाधिक विख्यात थियेटरों में से एक है। विश्व के अनेक अग्रणी थियेटरों की भाँति इस थियेटर में भी भूतों का वसेरा है।

१९५५ में एक महिला ने अपने प्रेमी के साथ पहले शो में एक नाटक का प्रदर्शन देखने का निश्चय किया। पर, जब उसका प्रेमी नाटक आरम्भ होने के समय तक नही आया, तो उसने वडी खिन्नता के साथ अपने प्रेमी का टिकट थियेटर के मैनेजर को लौटाकर उसके पैसे वापस ले लिये, और आकर अपनी सीट पर वैठ गयी।

जैसे ही नाटक शुरू हुआ उसने देखा कि उसके पास की सीट पर एक स्थूलकाय महिला आकर वैठ गयी है। महिला ने रेशम की एक भडकीली पोशाक धारण कर रखी थी, और जब-जब वह ताली वजाती थी, तो उसकी पोशाक उसके पासवाली महिला के शरीर से टकराती थी। इतना ही नही, जब-जब उसे किसी कलाकार का अभिनय पसन्द नही आता था, तब-तब वह अपनी कुहनियाँ अपने पास वैठी महिला की पसलियो में मारकर उसका ध्यान उस कलाकार की खामियों की ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती थी। जब वह महिला उस कलाकार की निन्दा करने में उसका साथ नही देती थी, तो वह ज़ोर-ज़ोर से उसके कान में कहती थी, "फ्लैट, फ्लैट, फ्लैट!" उसपर किसी प्रार्थना, किसी धमकी का कोई असर नहीं हुआ, और वह वरावर शोर मचाती और अपने पास वैठी महिला को तग करती रही।

कई वार तो उसने अपने पास वैठी महिला की पसलियो में इतने जोर से कुहनी मारी कि उसकी पसलियो में दर्द होने लगा, और वे सूज गयी। थियेटर से जाने के वाद महिला ने पाया कि उस स्थान पर नीले निशान पड गये हैं।

अव महिला से नही रहा गया। जव मध्यान्तर हुआ तो उसने थियेटर के मैनेजर से जाकर अपने पास वैठी महिला के दुर्व्यवहार की शिकायत की। मैनेजर ने यह शिकायत सुनकर वडा आश्चर्य व्यक्त किया और कहा, "पर श्रीमती जी, आपके पासवाली सीट का टिकट तो अभी तक हमारे पास ही है, हमने उसे किसी को नही वेचा है।"

"मैं यह सव कुछ नही जानती। आप वहाँ खुद आकर देख लीजिए।"

मैनेजर वहाँ आया। मध्यान्तर के वाद नाटक आरम्भ हो चुका था, पर उस स्थूलकाय महिला का कही पता न था। मैनेजर ने आसपास वैठे दर्शको से उस स्थूलकाय महिला के दुर्व्यवहार के वारे में पूछा, पर सवने यही कहा कि उन्होने ऐसी किसी महिला को नही देखा।

मैनेजर शिकायत करनेवाली महिला का अजीब निगाहों से देखता हुआ और कन्धे उचकाता हुआ चला गया।

बाद में थियेटर के एक कर्मचारी ने इस महिला को बताया कि उसके पास जो महिला बैठी थी वह असल में थियेटर के भूतपूर्व डायरेक्टर माही कासाका की मृत पत्नी फ्रान्सिस एस्डा का भूत था जो अपने जीवन-काल में अपने पति के विरोधी निर्देशकों के नाटकों के प्रदर्शन के समय इसी तरह आवाजें कस-कस करके तथा अपने पास बैठे दर्शकों को परेशान करके इन नाटकों के खिलाफ़ वातावरण तैयार किया करती थी।

यह सच्ची कहानी सम्बन्धित महिला ने भूतों और भुतहा स्थानों के बारे में अनेक पुस्तकें लिखनेवाले अमेरिकी लेखक जेम्स रेनॉल्ड्स को सुनायी थी।